CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्री दुर्गा सप्तशती, बीजात्मक दुर्गा सप्तशती, गुप्त सप्तशती नवदुर्गा एवं नवरात्री रहस्य

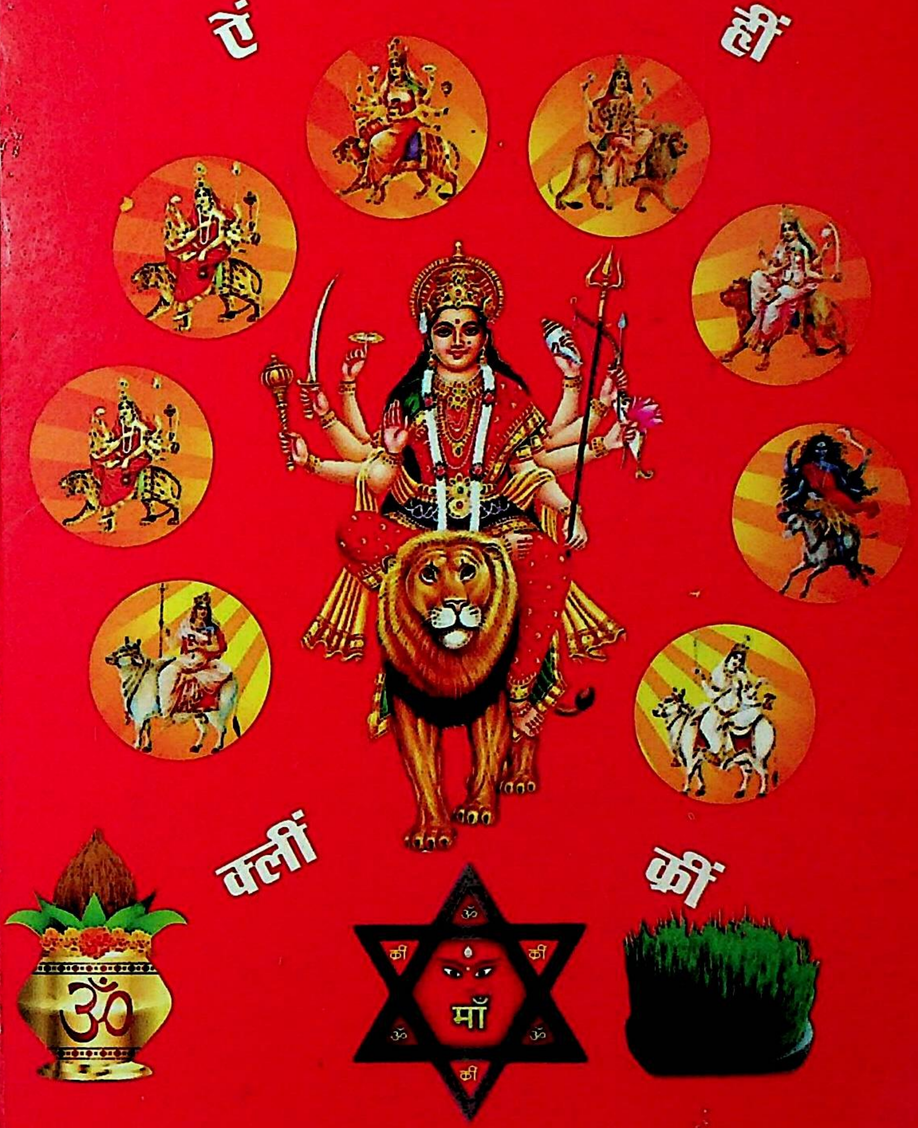

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दुर्गा सप्तशती, नवदुर्गा, नवरात्री
बीजात्मक दुर्गा सप्तशती
गुप्त सप्तशती
रहस्य

प्रकाशक

देव राधा ट्रस्ट, सत्यवाणी चेनल की प्रस्तुति

संकलनकर्ता व प्रस्तुतकर्ता

तांत्रिक बाबा श्री श्री 1008 अघोरी रामदास महाराज (परमेष्ठी गुरू)

अघोरी ननकीराम महाराज (परम गुरू)

सी.ए. डॉ. अशोक कुमार गुप्ता (गुरूजी)

ईमेल :- devradhatrust@gmail.com

फोन :- 7987237885, 9251733747, 9893128047
9977831616 7086680845, 7999492331

देवराधा ट्रस्ट

बैंक ऑफ इंडिया, सेविंग खाता

एकांउट नं. - 901110110005599

आएफएससी कोड - बीकेआईडी 009011

शनि मन्दिर के पास, वी.आई.पी. रोड, बुधनी घाट रोड, बुधनी

तह.:- बुधनी, जिला :- सीहोर (म.प्र.), भारत

प्रथम संस्करण : वर्ष जुलाई 2020

यह बुक केवल ट्रस्ट के सदस्यों के लिए

बिक्रय हेतु नहीं है

मंदिर निर्माण व इस पुस्तक हेतु सहयोग दान राशि 1500 रूपये

यूट्यूब चेनल :- CA DR ASHOK KUMAR GUPTA

पंजीयन कमांक - 01/बी - 113/13-14, दिनांक - 07/01/2014

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देवराधा ट्रस्ट के बारे में

देव राधा ट्रस्ट द्वारा समाज के उत्थान के लिए किये जा रहे कार्य

देव राधा ट्रस्ट 'सत्यवाणी' बुधनी के द्वारा जन हितैषी एवं समाज के उत्थान के लिए विगत कई वर्षों से अनेक समाज सेवी कार्य एवं विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम क्रियान्वित करता आ रहा हैं जिससे हजारो लोग लाभान्वित हुए हैं व निरंतर हो रहें हैं।

जन हितैषी कार्य व प्रशिक्षण के माध्यम से – मनुष्य को शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, बेरोजगारी और अन्य लाईलाज बिमारियों समस्याओं से मुक्ति मिलती है...।

जिन बीमारियों को डाक्टर पकड़ नहीं सकता, ठीक नहीं कर सकता, किसी भी चिकित्सीय जांच में ढुंढ नहीं सकता उन खतरनाक, जानलेवा बीमारियों का इलाज **देवराधा ट्रस्ट** के द्वारा पिछले 20 वर्षों से किया जा रहा है।

पिछले चार वर्षों से यूट्यूब के माध्यम से ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष आध्यामिक प्रवचन भी दे रहे है। जिससे पितृदोष, ज्योतिष, नागदोष, कालसर्पदोष, विभिन्न त्यौहारों का महत्व, दस महाविद्या, श्रीदुर्गासप्तशती का गहन विश्लेषण, कलयुग में श्री भैरव जी व श्री हनुमान जी भक्तों का कार्य जल्दी क्यों करते है। इस पर अनुसंधान कर रहे है।

ज्ञान वर्षा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम :-

- तंत्र को कैसे काटे इस पर व्यक्तिगत प्रशिक्षण दिया जाता है!
- तंत्र को कैसे काटे/हटावे इस पर ऑनलाइन प्रशिक्षण भी दिया जाने लगा है!
- हिंदू धर्म या सनातन धर्म की परंपरा, रीति-रिवाज, मान्यता, परिपाटी, प्रथा को कैसे समय अनुकूल प्रयोग किया जाए!
- अचानक दुर्घटना होना, अचानक आग लगना, अचानक मानसिक स्थिति खराब हो जाना, अचानक बर्बाद हो जाना, इन सब की रोकथाम कैसे करें इस पर प्रशिक्षण दिया जाता है!
- देवी भागवत कथा का प्रवचन कैसे दें! इस पर प्रशिक्षण दिया जाता है!
- घर परिवार को सुखी, संपन्न, खुशहाल, आनंदमय कैसे रखें इसका

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रशिक्षण दिया जाता है!

- हवन कैसे करे। हवन करने का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जाता है। सरल तरीके हवन करने की पद्धति सिखाई जाती है।
- साधना कैसे करे व आश्रम पर साधना कराई जाती है। जिसमें साधक को खाने-पीने की व्यवस्था भी शामिल है। देवी देवताओं की कृपा कैसे मिले। इस विषय पर कार्यक्रम रखे जाते है।
- देवी भागवत कार्यक्रम कराने के लिए सम्पर्क कर सकते है।
- देवी देवताओं के मन्त्र को कैसे बोला जाय इस पर कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। इन सब कार्यक्रम मे शामिल होने के लिए वाट्स एप पर ही सम्पर्क करे – नम्बर 9893128047

मन्दिर निर्माण कैसे करें, मन्दिर का वास्तु कैसे रखे, मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा, अनुष्ठान, पितृरों की मुक्ति, ग्रहशान्ति, अखण्ड रामयण, सुन्दरकाण्ड, शिवपुराण, भागवत कथा, धार्मिक कार्यक्रम और धार्मिक प्रवचन इत्यादि के लिए **देवराधा ट्रस्ट** से सम्पर्क कर सकते है। **देवराधा ट्रस्ट** पुराने मन्दिर जो जीर्ण-शीर्ण है। उनके पुर्ननिर्माण में भी सहयोग प्रदान करता है। ब्राम्हणो को व अन्य जातियों के धर्म प्रेमी बन्धुओं को धार्मिक ज्ञान दिया जाता है। उम्र की कोई सीमा नहीं है।

हर प्रकार की आध्यात्मिक समस्या का हल पूजा पाठ हैं।

देवराधा ट्रस्ट के द्वारा पहले प्रकाशित पुस्तके

1. श्मशान, मरघट, मसान, पूजा पद्धति।
2. हनुमान एवं भैरव साधना सिद्धी।
3. कष्टों से मुक्ति के उपाय।
4. काला जादू कैसे हटावे।
5. यज्ञ एवं अनुष्ठान ।
6. तंत्र से शत्रुनाश
7. सुखी रहने के उपाय

यू-ट्यूब चेनल :- CA DRASHOK KUMAR GUPTA

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पेज नम्बर
1.	सब देवी देवताओं का आव्हान जगत जननी की आरती	01ए, 01बी
2.	आरती जगतजननी की	01
3.	नवरात्रि रहस्य	02
4.	नवरात्रि में पहले दिन से 9 दिन तक कौन–कौन से कार्यक्रम	03
5.	नवरात्रि में ज्योत का महत्व	04
6.	नवरात्रि में कौन–कौन सी चीजों का ध्यान रखना चाहिए	07
7.	सूतक, पातक, यजमान के नियम	08
8.	साधक को सिद्धि क्यों नहीं मिलती	09
9.	सिद्धि किसको मिलती है साधना में सिद्धि से साधक क्यों भटक जाता है	10
10.	दुर्गा सप्तशती की साधना कैसे करें	11
11.	साधना क्यों करना चाहिए	12
12.	शक्ति साधना करने के क्या नियम है	13
13.	किन–किन गलती की वजह से आप दरिद्र हो जाते है	16
14.	माँ की कृपा प्राप्ति के सरल उपाय	16
15.	मासिक धर्म और नवरात्रि	20
16.	नवरात्रि में स्त्रियों के लिए क्या नियम है	22
17.	दुर्गा शब्द का अर्थ क्या है	23
18.	देवी जी शस्त्र से ही क्यों मारती है	25
19.	देवी को आद्यशक्ति क्यों कहा जाता है	27
20.	देवी देवता दिखते क्यों नहीं है	28
21.	माँ दुर्गा के जन्म	28
22.	10 महाविद्या कैसे प्रकट हुई	29
23.	नवदुर्गा की पूजन अर्चन की जानकारी	31
24.	नवरात्रि कितने प्रकार की होती है	32

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

25. तंत्र में तीन रात्रि कौन सी होती है 33
26. नवरात्रि क्यों मनाते हैं 33
27. वर्ष में दो नवरात्रि क्यों 35
28. नौ देवियों के नौ रूप 36
29. शैलपुत्री देवी जी के वारे मैं जानकारी 38
30. घट स्थापना का महत्व 38
31. काली माँ की आरती 40
32. देवी ब्रम्हचरिणी के बारे में जानकारी 40
33. चैत्र नवरात्रि कैसे मनाते हैं 53
34. देवी के वाहन का शुभ अशुभ असर 54
35. देवी ब्रम्हचारणी से लेकर नौ देवी के बारे में जानकारी 41 से 52
36. शैलपुत्री देवी के बारे में जानकारी 55
37. ब्रह्मचारिणी देवी के बारे में जानकारी 56
38. चंद्रघंटा देवी के बारे में जानकारी 57
39. कात्यायनी देवी के बारे में जानकारी 57
40. कालरात्रि देवी के बारे में जानकारी 58
41. महागौरी देवी के बारे में जानकारी 61
42. सिद्धिदात्री देवी के बारे में जानकारी 62
43. नवरात्रि शक्ति उपासना का पर्व क्यों 63
44. नवरात्रि के दिनों में पूजन का विधान 64
45. नवदुर्गा आराधना का क्या महत्व है 65
46. नवरात्रि में उपासना का फल कैसे मिलता है 67
47. नवरात्रि में पहले तीन दिन क्या – क्या करना चाहिए 72
48. चौथे दिन से छठे दिन तक क्या – क्या करना चाहिए 71
49. सातवें और आठवें दिन क्या करना चाहिए 72
50. नवरात्रि के नो वे दिन क्या – क्या करना चाहिए 72
51. नवरात्रि का क्या अर्थ है 72
52. घट स्थापना क्यों की जाती है – घट स्थापना का आध्यात्मीक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

	रहस्य क्या, घट स्थापना का वैज्ञानीक कारण	72
53.	काली माँ की मूर्ति भयानक क्यों	75
54.	चंड मुंड का वध व रक्तबीज का वध	78
55.	महिषासुर का वध	79
56.	शिवजी के शरीर पर शक्ति का पैर का अर्थ	79
57.	कालरात्रि देवी की पूजा का पूरा विधान	82 से 85
58.	दुर्गा सप्तशती के प्रथम अध्याय का अर्थ मधु केटभ राक्षस का अर्थ	86
59.	नवरात्रि क्यों बोलते हैं नव दिन क्यों नहीं बोलते	86
60.	नैवेद्य के बारे में जानकारी	88 से 91
61.	किस देवी जी से क्या प्राप्त होता है	92
62.	स्वाहा देवी कौन है	94
63.	सुधा देवी कौन है	94
64.	दक्षिणा देवी कौन है	95
65.	षष्ठी देवी कौन है	96
66.	भ्रामरी देवी कौन है	97
67.	महाअष्टमी किसे कहते हैं	97
68.	मधु कैटव वध कथा	100
69.	दुर्गा जी के 9 रूप की कथा	101 से 104
70.	यज्ञ के बारे में जानकारी	104 से 111
71.	64 योगियों के नाम	111 से 118
72.	महादुर्गा मंत्र	118
73.	षोडश मातृका के नाम	119
74.	सप्त घृत मातृका के नाम	119
75.	5 लोकपाल के नाम	119
76.	गोरी तिलक मंडल देवताओं के नाम	119
77.	लिंगतो देवताओं के नाम	122
78.	10 दिगपाल देवताओं के नाम	123

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

79. अधि देवताओं के नाम 123
80. प्रत्याधि देवताओं के नाम 123
81. दुर्गाजी के बत्तीस नाम 124
82 सर्वतोभद्र मंडल देवताओं के नाम 124
83. ग्यारी करने के नियम या देवताओं शरिर में बुलाने के नियम 125
84. दुर्गा सप्तशती के हवन का प्रयोग 126 से 128
85. दुर्गा सप्तशती के अध्याय समाप्ति पर हवन की विधि 128 से 133
86. ज्वारे या गेहुं या जौ क्यों उगाये जाते है 134
87. आसुरी शक्तियां कौन-कौन सी 134
88. मूर्ति को पानी में विसर्जन क्यों करते है 135
89. कन्या पूजन के बारे में जानकारी 136 से 142
90. किसी भी माता जी के मंदिर को जागृत करने की प्रक्रिया 142
91. देवीयां शरीर क्यों छोड़ देती है! 144
92. माता जी की आरती में चण्ड-मुण्ड सम्हांरे शोड़ित बीज हरे शब्द आता है इसका अर्थ क्या है 146
93. देव्यथर्वशीर्ष का महत्व 147
94. नवदुर्गा पूजा कब रोके व कब चालु करें 149
95. नवार्ण मंत्र की व्याख्या 151 से 136
96. दुर्गा कवच कैसे सिद्ध करें 156
97. नवरात्री में विवाह क्यों नहीं करते है 157
98. कुल देवी देवता की पूजा क्यों करनी चाहिए 158
99. देवी पूजा में कलावा क्यों बांधा जाता है 160
100. देवी पूजा में सिर क्यों ढके 162
101. देवी को नारियल क्यों चढ़ाया जाता है 162
102. देवी जी के वाहन सिंह व शेर में अन्तर 163
103. खंण्डित मूर्ति की पूजा क्यों नहीं करते है 164

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

104. नवार्ण मंत्र के जप करने की विधि 165 से 169
105. शत्चण्डी के बारे में जानकारी 169
106. चण्डी विधान के बारे में जानकारी 170 से 188
107. नवदुर्गा के सिद्ध मंत्र 189
108. नवग्रह की शान्ति नवदुर्गा के पूजन से कैसे होती है 191
109. नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमो नमः क्यों बोलते है 193
110. महाकाली खप्पर यात्रा 196
111. काली के बीज मंत्र की साधना 197
112. दुर्गा सप्तशती का महत्व 198
113. नव रात्रि व्रत 199
114. दुर्गा सप्तशती पाठ का महत्व 200
115. दुर्गा सप्तशती का अनुष्ठान कैसे करें 203
116. 13 अध्याय की विशेष आहुति 203
117. दुर्गा सप्तशती रहस्य 205
118. शाप विमोचन कैसे करें 207
119. पुस्तक पूजा का मंत्र 211
120. नवरात्रि में पाठ करने की विधि 211
121. दुर्गा सप्तशती की आहुति 215
122. नौ देवीयों की 9 औषधी 216
123. दुर्गा सप्तशती में निष्कीलन व शापोद्धार किसे कहते है 219
124. पाठे विनियोग व जप विनियोग में अन्तर 219
125. कीलन व उत्कीलन क्या होता है 220
126. शापोद्धार क्या होता है 220
127. दुर्गा सप्तशती के पाठ का तरीका 220
128. दुर्गा सप्तशती का पाठ कैसे करें 222
129. दुर्गा सप्तशती के पाठ करने के नियम 223
130. देह रक्षा मंत्र 224
131. सम्पुट शब्द का अर्थ 225

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

132. दुर्गा शब्द का अर्थ	227
133. विशेष मंत्र का अर्थ	228
134. राग व द्वेष का अर्थ	229
135. मधु कैटभ का अर्थ	230
136. महिषासुर की उत्पत्ती कैसे हुई	235
137. महिषासुर वध कथा	236
138. दुर्गा जी का प्राकट्य कैसे हुआ	236
139. धुम्रलोचन का अर्थ	237
140. चण्ड-मुण्ड का अर्थ	238
141. रक्तबीज का अर्थ	239
142. काली महाकाली में क्या अन्तर	240
143. शुम्भ-निशुम्भ वध	241
144. स्त्रीयों को नारियल क्यों नहीं फोड़ना चाहिए	243
स्त्रियों को दण्डवत प्रणाम क्यों नहीं करना चाहिए	244
145. किन-किन मंत्र की आहुति नहीं दी जाती है	244
146. देवी जी की प्राण प्रतिष्ठा कैसे करें	245 से 252
147. कुन्जीका स्त्रोत का अर्थ	253
148. श्री कृष्णकृत देवी की स्तुती	256
149. दुर्गा स्तुति	261
150. अष्टोत्तर शतनाम का अर्थ	262
151. 52 वीर के नाम	266
152. दुर्गा ससश्लोकी	267
153. देवी पुष्पांजली	268
154. वीजात्मक दुर्गा ससशती साधना के नियम	272
155. दुर्गा ससशती के 13 अध्याय का ध्यान	275
156. सिद्ध कुंजिका स्तोत्र	276
157. शाप विमोचन स्तोत्र	278
158. वीजात्मक दुर्गा ससशती	280 से 314

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

159. दुर्गा जी के बत्तीस नाम 315

160. अर्गला स्त्रोत 315

162. देवी कवच 317

163. कीलक 322

164. रात्रि सूक्त 323

165. क्षमा प्रार्थना 324

166. सम्पुट मंत्र 325

167. 51 शक्ति पीठ 326

168. गुप्त नवरात्री 329 से 331

169. गुप्त सप्तशती 332 से 338

170. गुप्त नवरात्री का महत्व 338 से 341

171. गुप्त नवरात्री कैसे मनायें 342

172. स्वहा देवी के बारे में जानकारी 345

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं, ह्रीं श्रीं क्लीं हुं हं, ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रैं ह्रौं ह्रं ह्रः, श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती महाचंडी चामुंडाये 64 योगिनी सहिताए श्री महाकालाय महाविकराल भैरवाय, प्रचंड भूतेश्वर, रोद्र क्षेत्रपालाय, मार्तण्ड भैरवाय काल भैरवाय, बटुक भैरवाय ,स्वर्णाकर्षण भैरवाय, महारौद्राय, वीरभद्राय, कलपांत भैरवाय, कंकाल भैरवाय असितांग भैरवाय, रुर भैरवाय, उन्मुक्त भैरवाय, चंड भैरवाय, कपाल भैरवाय, क्रोध भैरवाय, भीषण भैरवाय, संहार भैरवाय, पाताल भैरवाय, आकाश भैरवाय, 52 भैरवाय 49 मरुद गण 1. मम् व्यापार वृद्धि ह्रां ह्रीं हुं ब्लैं फट् कुरु–कुरु स्वाहा 2. मम् गृहे धन–धान्य सुख समृद्धि, आनंद मंगल पूरय पूरय, श्रीं ह्रीं क्लीं हुं हं फट् कुरु –कुरु स्वाहा 3. मम् गृहे मम् कुटुम्बे, ऋद्धि सिद्धि लक्ष्मी शुभसौभाग्य, देही देही श्रीं ह्रीं क्लीं हुं हं फट् कुरु–कुरु स्वाहा 4. मम् दरिद्र मथ–मथ, हन– हन, श्रीं ह्रीं क्लीं हुं हं फट् कुरु–कुरु स्वाहा 5. मम् पापं मथ–मथ, हन–हन, श्रीं ह्रीं क्लीं हुं हं फट् कुरु–कुरु स्वाहा 6. आरोग्यं, स्वास्थ दोष निवारय निवारय श्रीं ह्रीं क्लीं हुं हं फट् कुरु–कुरु स्वाहा 7. मम सर्व कार्य सिद्धि निर्विघ्नम साधय साधय श्रीं ह्रीं क्लीं हुं हं फट् कुरु–कुरु स्वाहा 8. मम सर्व विघ्न, सर्व कष्ट, सर्व बाधा, सर्व संकट, चूरय–चूरय, विनाशाय–विनाशाय, निवारय–निवारय, श्रीं ह्रीं क्लीं हुं हं फट् कुरु–कुरु स्वाहा 9. मम् सर्वरोग, नाशय–नाशय, हारय–हारय, छिन्दी–छिन्दी,भिन्दी–भिन्दी, श्रीं ह्रीं क्लीं हुं हं फट् कुरु –कुरु स्वाहा 10. परतंत्र, परमंत्र, परयंत्र, परविद्या, परक्रिया उच्चाटनाय, श्रीं ह्रीं क्लीं हुं हं फट् कुरु–कुरु स्वाहा 11. मम् सर्वभय नाशय–नाशय, हारय–हारय, छिन्दी–छिन्दी,भिन्दी–भिन्दी, चूरय–चूरय, विनाशाय–विनाशाय श्रीं ह्रीं क्लीं हुं हं फट् कुरु–कुरु स्वाहा 12. मम जन्म कुंडली दोष, मम ग्रह दोष, मम कालसर्प दोष, मम मंगल दोष, मम पितृ दोष, मम कुलदेवता दोष, मम इष्ट देवता दोष, मम गोत्र देवता दोष, मम ग्रामदेवता दोष, मम आराधना दोष, मम नाग दोष, मम विष दोष, मम पाप कर्म दोष, मम वास्तु दोष, मम धन आगमन दोष, मम स्वास्थ्य दोष, मम समस्त दोषान हर हर, विसर विसर, पच पच, हन हन, कम्पय–कम्पय, मथ–मथ, श्रीं ह्रीं क्लीं हुं हं फट् कुरु–कुरु स्वाहा 13. मारण, मोहन, वशीकरण स्तंभन उच्चाटन कीलन, उद्घासन इति षट्कर्म विनाशनाय स्वाहा 14. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं, ह्रीं श्रीं क्लीं हुं हं, ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रैं ह्रौं ह्रं ह्रः, श्री

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परम गुरू, परमेष्ठी, कुलगुरू आदि गुरू एवं सभी धर्म प्रेमी बन्धु बान्धवों के साथ अदृश्य गुरूजनों को प्रणाम करता हूं। चार धाम का ध्यान करते हुए श्री शिवजी, ब्रह्मा जी ओर विष्णु जी का ध्यान करते हुए, माँ जगतजननी के 51 शक्तिपीठ का ध्यान करते हुए उनको कोटी कोटी प्रणाम करता हूं। सभी पितृ गणनायक, गणपति महाराज को किताब प्रारम्भ करने से पहले सर्वप्रथम गौरीपुत्र विध्नविनाशक हेराम्भ गणनाय गणपति महाराज को अपनी दोनों भार्या रिद्धि–सिद्धि और दोनों पुत्र शुभ–लाभ एवं पुत्री संतोषी सहित ज्ञानमय और जाग्रत यह परिवार हमेशा आपके और हमारे ह्रदय में परिवार सहित विराजमान रहे। मै उन गणेश जी को परिवार सहित सादर प्रणाम करता हूँ।

ऊँ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गणपतये वर वरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा

शब्द, अर्थ, समूह, रस और छंद का मंगल करने वाली श्री सरस्वती जी की मैं वंदन करता हूँ। श्रद्धा और विश्वास के स्वरूप श्री पार्वतीजी और शंकरजी की मैं वंदना करता हूँ। ज्ञानमय, नित्यमय गुरू की मैं वंदना करता हूँ। श्री सीता रामजी के गुणों का बखान करने वाले कविश्वर श्री वाल्मीक जी और कपीश्वर श्री हनुमानजी की मैं वंदना करता हूँ। क्लेशों को हरने वाली और मनुष्यों के कल्याणों को करने वाली एकमात्र श्रीरामचन्द्रजी की प्रियतमा माता सीता जी की मैं वंदना करता हूँ। जिनके चरण कमल ही भव सागर से तरने वालों के लिए एक मात्र नौका है उन श्रीराम को मैं वंदना करता हूँ। जो हमेशा क्षीरसागर में शेषनाग की शय्या पर शयन करते हैं वह लीलामय, मायापति, यज्ञनारायण श्री हरि विष्णु की वंदना करता हूँ। जो भगवती सच्चिदानन्द स्वरूपीणि हैं उन ऐं ह्रीं क्लीं मयी माँ जगदम्बा मंगलमयी कल्याणमयी पराम्बा जगतजननी भगवती दुर्गा को मैं प्रणाम करता हूँ वे हमारी बुद्धि को सत्प्रेरणा प्रदान करने की कृपा करें।

माँ जगतजननी पराम्बा निर्गुण अविनाशी साक्षात ब्रह्म

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सदा आनन्द प्रदान करने वाली वरदायिनी भगवती, महामाया, जगदम्बिका, मंगलमयी, करूणामयी, कल्याणमयी, असुरनाशनी, पर ब्रह्मस्वरूपिणी, परामबा, आदिमाया, भवानी, भक्तवत्सला, भक्तानुसग्रहकारिणी, शरणागत वत्सली, कष्टहारिणी, दुखनिवारणी, दुखहन्त्रि, परमशक्तिशाली, आल्हादीनी, महिषासुर मर्दिनी, चण्डमुण्ड नाशिनि, सिहवाहिनी, क्लेश नाशिनी, पापहारिणी शक्ति माँ दुर्गा जो महात्रिपुर सुंदरी कहलाती हैं उनके चरणों में कोटि–कोटि वंदन एवं शत्–शत् नमन।

ब्रह्मण्ड की समस्त ऋषिमुनि, सप्त ऋषि, समस्त देवगण, यक्ष गंधर्व, किन्नर, अप्सरायें, पन्नग, सर्व, विद्याधर, सिद्ध पुरूषों की आत्मा, 49 मरुदगण को प्रणाम करता हूँ। वास्तु पुरुष, पंचदेव, जल, पृथ्वी, वायु, आकाश और अग्नि, सप्त सागर, सभी पवित्र नदियाँ, दशो दिशाओं, दश दिग्पालो, जलचर, नभचर, उभ्यचर को प्रणाम करता हूँ। यहाँ नारायण के रूप में सभी उपस्थित पुरुष और माँ भगवती नारायणी के रूप में उपस्थित सभी मातृशक्ति को मैं प्रणाम करता हूँ। अखिल ब्रह्माण्ड की अधिष्ठात्री भगवती महामाया जगदम्बिका का ध्यान करता हूँ एवं उनसे आदेश प्राप्त करते हुए मैं आपको माँ भगवती जगदम्बा की विभिन्न लीलाओं को कथा के माध्यम से आपको ज्ञान कराता हूँ। माँ भगवती के रूप और उनकी लीलओं का वर्णन ब्रह्मा विष्णु, महेश भी करने में सक्षम नहीं है। मै तो मनुष्य हूँ। माँ भगवती की कृपा से जो ज्ञान प्राप्त हुआ है आपके सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ।

सी.ए. डॉ. अशोक कुमार गुप्ता
चार्टर्ड एकाउन्टेट
माँ जगतजननी का दास
एम.काम., एम.ए., पीएचडी, एफ.सी.ए.
ज्योतिषाचार्य, तन्त्राचार्य, यज्ञाचार्य, वास्तुशास्त्री
पराशक्ति विशेषज्ञ, मन्त्राचार्य

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आरती –

जगजननी जय! जय! माँ! जगजननी जय! जय!

भयहारिणी, भवतारिणी, भवभामिनि जय जय। (जनजननी जय! जय!!)

तू ही सत्–चित्–सुखमय, शुद्ध ब्रह्मरूपा।

सत्य सनातन, सुन्दर, पर–शिव सुर–भूपा।।1।। (जनजननी जय! जय!!)

आदि अनादि, अनामय, अविचल, अविनाशी।

अमल, अनन्त, अगोचर, अज आनन्दराशी।।2।।(जनजननी जय! जय!!)

अविकारी, अघहारी, अकल कलाधारी।

कर्ता विधि, भर्ताहरि, हर संहारकारी।।3।। (जनजननी जय! जय!!)

तू विधिवधू, रमा, तू उमा महामाया।

मूल प्रकृति, विद्या तू, तू जननी जाया।।4।। (जनजननी जय! जय!!)

राम, कृष्ण तू, सीता, ब्रजरानी राधा।

तू वांछाकल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा।।5।। (जनजननी जय! जय!!)

दश विद्या, नव दुर्गा, नाना शस्त्रकरा।

अष्टमातृका, योगिनि, नव–नव रूप धरा।।6।। (जनजननी जय! जय!!)

तू परधाम निवासिनि, महाविलासिनि तू।

तू ही श्मशान विहारिणि, ताण्डव लासिनि तू।।7।। (जनजननी जय! जय!!)

सुर–मुनि मोहिनि सौम्या, तू शोभाधारा।

विवसन विकट सरुपा, प्रलयमयी, धारा।।8।। (जनजननी जय! जय!!)

तू ही स्नेहसुधामयी, तू अति गरलमना।

रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि तना।।9।। (जनजननी जय! जय!!)

मूलाधार निवासिनि, इह–पर सिद्धिप्रदे।

कालातीता काली, कमला तू वरदे।।10।। (जनजननी जय! जय!!)

शक्ति शक्तिधर तू ही, नित्य अभेदमयी।

भेद प्रदर्शिनि वाणी विमले! वेदत्रयी।। 11।। (जनजननी जय! जय!!)

हम अति दीन दुःखी माँ! विपत जाल घेरे।

हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे।।12।। (जनजननी जय! जय!!)

निज स्वभाववश जननी! दयादृष्टि कीजै।

करुणा कर करुणामयी! चरण शरण दीजै।।13।। (जनजननी जय! जय!!)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नवरात्रि रहस्य –

1. साधक का स्नान/अमावस्या का महत्व/अस्त्रशस्त्र को स्नान।
2. निमंत्रण देवी को।
3. साधक को ध्यान रखने योग्य बातें।
4. साधक की साधना स्थल का चयन, साफ–सफाई, शुद्धता, स्वच्छता, पवित्रता, धुलाई, पुताई आदि।
5. ध्वजा का महत्व।
6. मुहुर्त में घट स्थापना। अखण्ड दीपक प्रज्वलित, ज्वारे लगाना व खेत बोना।
7. पहले दिन का कार्यक्रम – सभी पीठ पर घट स्थापना, पूजन, षोडशोपचार पूजन, यज्ञकुण्ड का पूजन, यज्ञकुण्ड का आकार।
8. स्थान का पूजन (स्थान के देवी देवता का पूजन)
9. ब्राह्मणों का वरण एवं दुर्गा सप्तशती का पाठ।
10. साधना स्थल की सुरक्षा, पीली सरसों चारों तरफ छिड़कना, नीबू की माला, लौंग की माला, नारियल की माला।
11. मुख्य पीठ/प्रधान पीठ पर शहद, घी, श्रृंगार, वस्त्र, त्रिशूल, तलवार रखना।
12. यदि मूर्ति है या मन्दिर हो तो विभिन्न वस्तुओं से स्नान।
13. नवीन वस्त्र, चुनरी, पान का बीड़ा रोजाना।
14. पूजन के बाद नौ देवियों का आवाहन, नौ दीपक, नौ नारियल की बलि, नौ नीबू की बलि, बताशे, मिठाई, लौंग, कपूर, गन्ध, अक्षत, पुष्प से पूजन।
15. गाय का सूखा गोबर के ऊपर गुगल की धूनी।
16. आम के पत्तों की बन्दरवार, केले के पत्ते, पान के पत्ते, अशोक के पत्तों से सजाना, नीम के पत्ते चारों तरफ लगाना।
17. साधक को अपनी सुरक्षा कवच साथ में रखना है।
18. स्त्री से दूर रहना है नौ दिन तक।
19. सभी आवाहित देवी–देवता का हवन, नवग्रह का हवन

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सप्तशती का हवन।

20. पूजन मे सभी देवताओं की स्तुति बोलना –
   1. गणेश पूजन में गणेश अथर्वशीर्ष
   2. कुलदेवी पूजन में देवीपुष्पांजली
   3. 64 योगिनी के पूजन में श्रीसुक्त
   4. रूद्र कलश के पूजन में रूद्राष्टकम्, शिवताण्डव
   5. भैरव के पूजन मे भैरव अष्टोत्तर शतनाम, भैरवाअष्टक
   6. त्रिगुणात्मिका शक्ति का ध्यान
21. रोजाना प्रधान पीठ के ऊपर बैठी देवीजी की आरती।
22. कन्या पूजन व बटुक पूजन।

दूसरे दिन –

1. ज्वारों का पूजन, दीपक पूजन, पीठ पूजन, स्थान के देवी–देवताओं का पूजन।
2. रोजाना प्रधान पीठ, क्षेत्रपाल, कुलदेवी, 64 योगिनी को नीबू की बलि देना।
3. रोजाना हवन, रोजाना आरती, पाठ इच्छानुसार तीसरे दिन, चौथे दिन उपरोक्तानुसार।

पंचम दिन –

1. प्रधान पीठ पर लौंग की माला देना, नीबू की माला, पान के पत्तों की माला, मखाने की माला, खोपरा गोला की माला, यह सब मुण्ड का प्रतीक है। खोपड़ी का प्रतीक है।
2. हलवे से या खीर से हवन या मिश्री यह दिन श्री लक्ष्मी जी के निमित्त होता है। श्रीसुक्त से हवन, श्री लक्ष्मी अष्टकम से हवन, कनकधारा स्त्रोत से हवन।
3. खीर, पुड़ी, नारियल, कमल गट्टे, आँवले, कमल का पुष्प मिल जाये तो यह चढ़ाना है। गुलाब के फूलों से सजाना है। गुड़हल/जासोन के फूलों से सजाना है व चढ़ाना है।
4. इत्र रोजाना छिड़कना है।
5. केशर डालकर दूध की खीर रोजाना बनाकर भोग लगाना है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

6. ज्वारों के दर्शन करना है।

7. ज्वारों को बना हुआ पान चढ़ाना छटवे एवं सातवे दिन रोजाना की तरह पूजन, अर्चन, हवन करते रहना है।

नवरात्रि में अष्टमी को विशेष दिन होता है

1. नारियल या नीबू की माला पहनाना।
2. हवन, खीर, पुड़ी, हलवा, सुपारी, लौंग, नीबू, पान, अंगूर, फल, आँवला, हल्दी, इलायची, जायफल, हवन सामग्री, कालेतिल, घी, मिश्री इत्यादि से हवन करना है।
3. सभी 51 शक्तिपीठ के नाम से हवन करना चाहिए।
4. सभी देवताओं के नाम से 21–21 बार आहुति।
5. सभी सिद्ध मन्त्रों से 108 बार आहुति।
6. कुंजिका स्त्रोत का 108 बार आहुति।
7. और कोई मन्त्र जो ब्राह्मण करवा दे।
8. नवग्रह शान्ति इत्यादि।

विशेष :– पूर्णाहुति अष्टमी समाप्त होने के बाद नवमी आरम्भ होते ही पूर्णाहुति करना है। ज्वारे विसर्जन नवमी को करना है। कन्या पूजन नवमी को करना है। यह एक रहस्य है।

ज्योतः– दीपक, अखण्ड दीपक / ज्वाला –

1. श्री दुर्गा सप्तशती रहस्य में ज्योत का महत्वपूर्ण योगदान है।
2. जब भी अनुष्ठान किया जाता है प्रारम्भ में ज्योत प्रज्वलित करना होती है।

   (अ) या ज्वल ज्वल प्रज्वल अग्नि रूपाय ऊँ ह्रों ह्रीं श्रीं ज्वालादेवी नमः यह मंत्र को बोलना है।

   (ब) शुभम् करोती कल्याणं आयोग्य धन संपदा शत्रु बुद्धि विनाशाय दीप ज्योति नमोस्तुते
3. ज्योत अखण्ड जलाई जाती है। जो नौ दिन तक लगाकर जलती रहती है।
4. यह मिट्टी के दीपक की, पीतल की, कांसे के धातु की, अष्टधातु की, हो सकती हैं।
5. ज्योत घी गाय का, या तिल के तेल का, सरसों के तेल का या

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अन्य खाने वाले तेल की ज्योत जलायी जा सकती हैं।

6. यदि ज्योत बुझ जाती है तो दूसरी ज्योत प्रारम्भ करना चाहिए व दूसरा दीपक, दूसरा तेल, बत्ती भी दूसरी सभी नया लेकर पुनः ज्योत जला देना चाहिए।
7. अखण्ड ज्योत को एक बार प्रज्वलित कर दिया हो उसके बाद हिलाया नहीं जाता हैं।
8. ज्योत के नीचे चावल या अन्न अवश्य रखना चाहिए।
9. **बत्ती बनाने का तरीका :– जो यजमान है उसके सिर से पैर तक कच्चा सूता और कलावा दोनो मिलाकर नापना है। फिर उसकी पांच भाग में मोड़कर बत्ती बनाकर लगाना है।**
10. यह आग्नेय कोण में लगाना चाहिए, ईशान कोण में कलश की स्थापना करना चाहिए।
11. अशुद्ध अवस्था में दीपक को नहीं जलाना चाहिए।
12. मासिक धर्म की अवस्था प्रारम्भ से लेकर सात दिन तक दीपक प्रज्वलित नहीं करना चाहिए।
13. दीपक प्रज्वलित करते समय भगवती जगतजननी का ध्यान करना चाहिए।
14. दीपक/अखण्ड ज्योत जलाते है तो वह इस प्रकार जलानी चाहिए उसकी सुरक्षा रखे क्योंकि कभी–कभी चूहा या छिपकली ज्योत को खीच ले जाते है। जिससे घर में आग लग जाती है। आसन या मन्दिर या मूर्ति, तस्वीर जल जाती है। यह अपशकुन होता है।
15. नकरात्मक ऊर्जा नहीं आती है और देविय कृपा प्राप्त होती है।
16. शनि का कुप्रभाव कम होता है। देशी घी की ज्योत जलाने से धनात्मक ऊर्जा आती हैं।
    समृद्धि आती है, नकारात्मक ऊर्जा समाप्त होती है।
17. घर में क्लेश होता हो तो घी की अखण्ड ज्योत जलाना चाहिए।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

18. ज्ञान बढाने के लिए, बुद्दि का विकास करने के लिए, सकरात्मक ऊर्जा के लिए, शान्ति के लिए घी की अखण्ड ज्योत अवश्य जलाना चाहिए।
19. शुभ मुहुर्त में, सर्वार्थ सिद्धि योग, गुरू पुष्य योग होली, दीपावली, अक्षय तृतीया, अक्षय नवमी, दशहरा, महारात्रि, मोहरात्रि, दारूण रात्रि, महाअष्टमी कालरात्रि, नवदुर्गा में अखण्ड ज्योत अवश्य जलाना चाहिए।
20. ज्योत में कपूर डाल देना चाहिए, सरसो तेल की ज्योत जलाने से पितृ प्रसन्न होते है, शनि प्रसन्न होते है।
21. ज्योत के नीचे धान्य रखने के बाद अष्टदल कमल का चिन्ह बना देना चाहिए।
22. ज्योत लगाते है तो घर पर ताला लगाकर बाहर नहीं जाना चाहिए।
23. साधक मनुष्य को कम्बल के आसन पर या भूमि पर शयन करना चाहिए और रात को उठकर एक दो बार अखण्ड ज्योत अवश्य देखना चाहिए।
24. अखण्ड ज्योत को बढ़ाते समय पहले दूसरा दीपक उसी ज्योत से प्रज्वलित करके रख ले फिर बढावें।
25. दीपक कभी भी बुझाना नहीं चाहिए। उसे स्वतः पूरा जलकर समाप्त होना चाहिए।
26. दीपक से दीपक को नहीं जलाना चाहिए। यदि जलाते हैं तो दरिद्रता एवं बीमारी आती है।
27. अखण्ड दीपक जो मिट्टी का हो, उसे दुबारा प्रयोग नहीं करना चाहिए।
28. अखण्ड ज्योत की रोजाना पूजन करना चाहिए, क्योंकि यह साक्षात ज्वाला देवी भगवती होती है।
29. अखण्ड ज्योत को कभी भी अशुद्ध अवस्था में हाथ नहीं लगाना है, मासिक धर्म, सूतक, पातक, या शौच करके आने के बाद। हमेशा स्नान करके, शुद्ध कपड़े पहनकर ही ज्योत की सेवा करना चाहिए।
30. अग्नि देवता है। पंच महाभूत में से एक है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

31. अखण्ड ज्योत का दीपक कार्य समाप्त होने के बाद ज्योत समाप्त होने के बाद दीपक को नदी/जल में विसर्जन कर देना चाहिएं

32. अखण्ड ज्योत बार–बार बुझना अपशकुन होता हैं इसलिए बहुत ध्यान रखना होता है।

दीपक प्रकाश देता है। प्रकाश ज्ञान देता है। जहाँ ज्ञान होता हे वहाँ सुख समृद्धि होती है।

34. दीपक जलाते समय यह मंत्र बोलना चाहिए –

शुभं करोति कल्याणम आरोग्यम् धन सम्पदा
शत्रुणां भय नाशायं दीपंज्योति नमोऽस्तुते
दीपो ज्योति परंब्रम्हा, दीपो ज्योति जनार्दनः
दीपो हरतु में पापं, संध्यादीप नमोऽसतुते
अग्निज्योति, ज्योर्तिअग्नि स्वाहा,
सूर्यज्योति ज्योतिसूर्या स्वाहा
अग्निर्वर्च्यों र्वच्यो स्वाहा
सूर्य र्वच्चौ ज्योति र्वच्यों स्वाहा
ज्योति सूर्यः सूर्या ज्योति स्वाहा

नवरात्रि में ध्यान रखने योग्य बातें –

मनुष्य के घर में सूतक, पातक नहीं होना चाहिए, तो ही वह नवरात्रि का पालन करें।

सूतक के प्रकार –

1. बच्चे होने का सूतक
2. बच्चे के मरने का सूतक
3. गर्भ में बच्चे मरने का सूतक
4. परिवार में किसी सदस्य की मृत्यु होने का सूतक
5. गौत्र में किसी सदस्य की मृत्यु होने का सूतक
6. गुरू की मृत्यु होने का सूतक
7. यदि सूतक हो जाय तो पूजा खण्डित हो जाती है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देवी जी के अनुष्ठान में जो मनुष्य या परिवार संकल्प ले रहा है यजमान बन रहें है। उनके लिए नियम–

1. स्त्री संग रमण नहीं करना चाहिए, ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें। हो सके तो कम्बल या जमीन पर सोना चाहिए।
2. दाड़ी,बाल, नाखुन नहीं काटना चाहिए। कैंची का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
3. किसी मनुष्य की अर्थी में शामिल नहीं होना चाहिए और न श्मशान जाना चाहिए।
4. किसी सूतक, पातक वाले के घर नहीं जाना चाहिए।
5. काम, क्रोध, मोह, लोभ, एवं माया से दूर रहना चाहिए, निंदा, चुगली, लोभ, असत्य का त्याग कर माँ का गुण गान अधिक से अधिक करना चाहिए।
6. अशुद्ध भोजन ग्रहण नहीं करना चाहिए। अशुद्ध का अर्थ मासिक धर्म युक्त स्त्री के हाथ का बना हुआ भोजन नहीं करना चाहिए।
7. किसी की बुराई निंदा नहीं करनी चाहिए।
8. मुख्य यजमान को एवं मुख्य पाठ कर्ता ब्राह्मण को नांदीश्राद्ध कर्म करके ही पूजा में बैठना चाहिए।
9. मुख्य यजमान को रोजाना कन्या पूजन करना चाहिए एवं सुहागनों एवं ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए।
10. मुख्य यजमान को नियमित रूप से विभिन्न आवाहित देवताओं जो की अपनी–अपनी पीठ पर विराजमान है उनके नाम से और पराम्बा भगवती महामाया के नाम से रोजाना हवन करना चाहिए।
11. मांस, शराब, अण्ड़ा, मछली, प्याज, लहसन और जमीन में उगने वाली गाजर, शलजम, और मसूर का सेवन निषेध है।
12. रोजाना मुख्य यजमान द्वारा देवादिदेव महादेव का रूद्राभिषेक होना चाहिए।
13. रजस्वला स्त्री/मासिक धर्म वाली स्त्री/अछूत स्त्री को पूजा स्थल पर नहीं आना चाहिए क्योंकि उसके शरीर से नकारात्मक ऊर्जा निकलती है। सनातन धर्म के मुताबिक जहां पर देवी देवताओं का वास होता है वहां पर अशुद्धता नहीं होना चाहिए।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रत्येक साधक को सिद्धी क्यों नहीं मिलती –

1. पवित्र मन, आत्मा, निष्कपट आत्मा को ही सिद्धी मिलती है।
2. जो साधक दुर्गा सप्तशती में बताये गये मंत्रों को निष्कीलन कर लेता है उन्हीं को सिद्धी मिलती है।
3. जिसका मन, शरीर, आत्मा शुद्ध हो स्वच्छ हो, पवित्र हो उसी को।
4. मंत्रशक्ति की चेतना को जो मनुष्य समझ सके।
5. मंत्र पढना, मंत्र बोलना, मंत्र सुनना और इससे भी ऊपर है मंत्रों की शक्ति को पहचानना।
6. जिस पर मनुष्य में अहंकार न हो और न ही स्वार्थ हो यही निष्कीलन है।
7. जो मनुष्य अपनी सम्पत्ति को, धन को देवी को अर्पित करके उनमे से जितनी आवश्यकता हो उतना स्वयं उपभोग करे। यानि सभी सम्पत्ति परोपकार में लगा दे जितना जरूरी हो उतना अपने लिए प्रयोग करें यही निष्कीलन है।
8. नवरात्रि, निष्कीलन के दिनों में नियम संयम से, सर्वस्व त्यागपूर्वक माँ भगवती की सेवा में लग जावे।
9. जीवन में शुद्धता, स्वच्छता, पवित्रता का पूर्ण ध्यान रखें सूतक, पातक, मासिकधर्म, खिलाई–पिलाई इत्यादि, शराब, मान्स, पराई स्त्री भोग।

अब कराना क्या है यह समझो –

इस क्रम में करना केवल इतना ही है कि भगवती की मूर्ति अथवा चित्र के सामने बैठकर साधक स्वयं को अपने संपूर्ण अस्तित्व को माता के चरणों में अर्पित कर दे। अब वह यह अनुभव करें कि मैं माँ की पुत्री अथवा पुत्र हूँ इस अखिल सृष्टि में यही मेरा सच्चा सम्बन्ध है। मैं माँ की हूँ अथवा माँ का हूँ और मेरा सब कुछ माता का है। बस अब से मैं माता के निर्देश से उन्हीं के विधान के अनुरूप जीवन यापन करूंगा। यह भावना दृढ़ हो और साधना सघन हो तो फिर सिद्धि में किंचित मात्र भी संदेह नहीं। साधक इस सत्य को भली–भांति समझ ले कि स्वार्थी और

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अहंकारी के लिए सिद्धि का पथ नहीं है। इसलिए इससे शीघ्र ही मुक्त होना अच्छा है। ऐसा करके ही शक्ति के रहस्य को अनुभव किया जा सकता है।

सिद्धि किसको मिलती है रहस्यमय ज्ञान

1. पवित्र आत्मा।
2. बालक याने बच्चे जैसी आत्मा, प्रेम, दया स्नेह हो, लोभ, लालच, मोह, माया से दूर हो।
3. अहंकार और स्वार्थ से दूर हो।
4. कृष्णपक्ष की चतुर्दशी अथवा अष्टमी तिथि को माँ भगवती की सेवा करता हो।
5. मंत्रों को निष्कीलन कर सके।
6. **शिव बन जाय** :– ओघड बन जाय, अधोरी बन जाय, धन–दौलत से मतलब नहीं रखे, त्यागी, तपस्वी हो जाये, महात्मा बन जाय, साधु जैसा व्यवहार हो।
7. सरल हृदय, देवी जिज्ञासु, भक्त को मिलती है।

साधना में सिद्धि से साधक क्यों भटक जाता है रहस्यमय ज्ञान

अपने आपको मिटाना, उस परमपिता में समाहित करना, डूब जाना/मिल जाना साधना है। जैसे नदी–समुद्र में मिलती है। यही उसका अंतिम सत्य है। नाले नदी में मिलते है यही सत्य है। पानी की बूद ज़मीन मे चली जाती है कहीं कोई पता नहीं चलता। ढूढने पर भी नहीं मिलती। एक बीज अपने आपको समाप्त करके वृक्ष को जन्म देता है। फूल तोड़कर भगवान को चढ़ाते हैं आप अपने आपको ईश्वर को चढ़ाओं यानि समर्पण करो, त्याग कर दो। या फिर इतना तड़फो कि जैसे –

1. मछली जल से बाहर निकलने पर ।
2. भूख लगने पर मनुष्य कि जीवआत्मा तड़फती है।
3. प्यास लगने पर जीवात्मा को पानी की आवश्यकता होती है।
4. जैसे माँ अपने पुत्र/पुत्री के बिछड़ने पर तड़फती है।
5. दीपक की बाती दूसरों को प्रकाश देकर स्वयं बुझ जाती है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दुर्गा सप्तशती की साधना कैसे करें –

1. दुर्गा सप्तशती के अनुष्ठान में नवार्ण–मन्त्र, रात्रि–सूक्त, कवच, अर्गला, कीलक, मूल–पाठ, देवी–सूक्त, नवार्ण–मन्त्र यह क्रम रहता है।
2. साधक को अपनी–अपनी गुरु परम्परा का निर्वाह करना चाहिए।
3. जो साधक एक दिन में पूरा पाठ नहीं कर सकते उनके लिए दो विधियाँ है – पहली केरली पद्धति है जिसमें पहले दिन प्रथम चरित्र, दूसरे दिन दूसरा चरित्र (मध्यम) और तीसरे दिन उत्तर चरित्र इस प्रकार तीन दिन में दुर्गा सप्तशती का एक पाठ हो जाता है।
4. दूसरी पद्धति सात दिन में एक पाठ की है इसमे चरित्र परक विभाग नहीं है। प्रत्युत अध्याय परक है। जैसे पहले दिन एक अध्याय, दूसरे दिन दो अध्याय, तीसरे दिन एक अध्याय, चौथे दिन चार अध्याय, पांचवे दिन दो अध्याय, छठे दिन एक और सातवें दिन दो अध्याय। इस प्रकार एक सप्ताह में दुर्गा सप्तशती का एक पाठ पूरा हो जाता है।
5. इस विधि के पाठक्रम में कवच, अर्गला, कीलक, नवार्ण–मन्त्र आदि एक दिन में एक बार ही करने होते हैं। ये विधान–कवचादि–दिन के साथ से है पाठ के हिसाब से नहीं। एक ही दिन में एकाधिक पाठ करने हो तो नवार्ण–मन्त्र के अतिरिक्त कवचार्गलादि प्रथम पाठ में ही करते हैं प्रतिपाठ नहीं करते।
6. कवचादि का महात्म्य बताते हुए शास्त्र कहते हैं –

कीलकं शंकर प्रोक्तं, कवचं ब्रह्मणा कुतम्।
अर्गलं विष्णुना प्रोक्त एतत्त्रितयमुत्तमम्।।

अर्थात – कीलक का उपदेश शंकर ने किया है। कवच का उपदेश ब्रह्मा ने और अर्गला का विष्णु ने उपदेश किया है। ये तीनों ही उत्तम हैं।

और भी कहा है –

अर्गलां दुरितं हन्ति कीलकं फलदं भवेत्।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कवचं रक्षयेन्नित्यं तस्मादेतत्त्रयं पठेत्।।

अर्थात – अर्गला दुष्कर्म को नष्ट करता है। कीलक सफलता देता है और कवच रक्षा करता है। इसलिए इन तीनों का पाठ नित्य करना चाहिए।

7. जो साधक दुर्गा सप्तशती का पाठ पूरा नहीं कर सकते उन्हें तीनों पाठ तो नित्य कर ही लेना चाहिए।
8. साधारण मनुष्य के लिए यदि वह पूरी सप्तशती नहीं पढ़ सकता तो उसे अर्गला, कीलक, कवच तो रोजाना पढ़ना चाहिए।

दुर्गा सप्तशती की साधना कैसे करें –

जो व्यक्ति दुःखी, दरिद्र और अनेक प्रकार की पीड़ाओं से ग्रस्त है और साधना मार्ग में उत्तम मार्गदर्शन के अभाव में प्रवेश नहीं कर सकता हो, वह प्रातः काल या रात्रिकाल किसी विद्वान से आज्ञा प्राप्त कर श्रद्धा पूर्वक **"श्रीदुर्गा सप्तशती"** के पाठ का नियम बना ले और इस नियम को तब तक न तोड़े जब तक कि इच्छित कामना की सिद्धि न हो जाय।

अगर कोई साधक निष्काम भाव से पाठ करता है तो उसके जीवन में आकस्मिक विघ्न–बाधाएँ नहीं आएगी। यदि संस्कृत का ज्ञान न हो, तो हिन्दी में पाठ करें। किन्तु नियम पूर्वक, निश्चित समय व स्थान पर और स्थान की पवित्रता का विशेष ध्यान रखें। इस प्रकार साधक को अभीष्ट की सिद्धि अवश्य प्राप्त होगी।

साधना सिद्धि में पवित्रता का ही विशेष ध्यान रखना है। क्रोध, अहंकार, स्वार्थ को त्याग दें।

पूर्ण पाठ करने मे अस्मर्थ व्यक्तियों के लिए विशेष –

दुर्गति से बचने का सरल सरस मार्ग है भगवती दुर्गा की उपासना। दुर्गति नाशिनी होने के कारण ही इन्हें दुर्गा कहा गया है। इनकी प्रसन्नता **"दुर्गा सप्तशती"** पाठ करने से प्राप्त होती है इसमे संदेह नहीं।

दुर्गा सप्तशती का अनुष्ठान इस युग में सर्व–कामना पूर्ण करने वाला है। जो साधक पूर्ण पाठ करने में असमर्थ है उनके लिए कुछ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सूत्र प्रस्तुत है –

1. **आत्मा उन्नति** के लिए दुर्गा सप्तशती के "तन्त्रोक्त देवी–सूक्त" का पाठ तीन वर्ष तक नियमित करना चाहिए।
2. **आत्म कल्याण** के निमित्त दुर्गा सप्तशती का पूरा पाठ न करके मात्र माँ का स्तवन– रात्रि–सूक्त, शक्रादय स्तुति, नारायणी स्तुति और अन्त में देवी–सूक्त का पाठ किया जाये तो भी भगवती की प्रसन्नता प्राप्त होती है।
3. **कामना सिद्धि** के लिये दुर्गा–सप्तशती का श्राप–मोचन, उत्कीलन व कुन्जिका मन्त्र स्तोत्र का जप सहित पूरा पाठ करना चाहिये।
4. **कामना–पूर्ति** के लिए "तन्त्रोक्त देवी–सूक्त का पाठ "त्रुटि" और "पूर्ति" श्लोक जोड़ कर करना चाहिये।
5. **दुर्गा सप्तशती** मे वर्णित कवच, अर्गला और कीलक का पाठ करने से साधक ज्ञात–अज्ञात परेशानियों से मुक्त रहता है। आदि।
6. **देवी भागवत** अनुसार दुर्गा सनातनी एवं भगवान विष्णु की माया है। इन्हें नारायणी, ईश्वरी और सर्व–शक्ति स्वरूपिणी कहा जाता है। सम्पूर्ण देवियां इन्हीं से प्रकट होती हैं।

शक्ति साधना करने के नियम –

1. नीबू की माला पंचमी को चढ़ाना है। लौंग की माला, पान के पत्ते की माला।
2. रात्री काल में ही रोजाना हवन करना होता है। हवन सामग्री सामर्थ के अनुसार हो सकती है। नीबू से, खीर से, पुड़ी से, शहद से, हलवे से, कोई भी साबुत फलों से, अनार से, आंवले से, लौग से, पीली सरसों से, बिल्व पत्रों से हवन करने से देवीजी बहुत प्रसन्न होती है।
3. एक लाल कलर की चुनरी चढ़ाना होती है।
4. एक साड़ी लाल कलर की चढ़ाना होती है। श्री माताजी को श्रृंगार के समान पूरा चढ़ाना चाहिए।
5. **"श्री कैला माता"** की तरफ से केले के बड़े पत्ते मुख्य कलश के दोनो ओर लगाकर छाया बनाई जाती है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

6. "श्री काली माता" के प्रतिनिधि के रूप में तलवार और खडग मुख्य कलश के पास रखे जाते है।
7. हो सके तो गुलाब के फूल की माला रोजाना चढ़ाना चाहिए। या गुड़हल के फूल की माला।
8. जो देवी कलश पर विराजमान उस देवी को जो वस्तु पसन्द हो उससे हवन करना चाहिए और कलश के पास वह वस्तु जरूर रखना चाहिए।
9. रोजाना नींबू, नारियल एवं पान का बीड़ा की भेट अवश्य देना चाहिए।
10. एक नीबू रोजाना काटना चाहिए।
11. जहाँ पर साधना कर रहे हो वहाँ पर मुख्य दरवाजे पर 21 नीबू की माला और 21 नारियल की माला अवश्य लगाना चाहिए।
12. जहाँ पर श्री देवी जी का मुख्य कलश रखा गया हो वहाँ पर 27 लौंग की माला "श्री कंकाली काली" का नाम लेकर लगाना चाहिए।
13. जब भी हवन करे नहा धोकर, शुद्ध होकर, बिना सिला हुआ कपड़ा पहनकर ही पूजा एवं हवन करें।
14. एक समय सामर्थ के अनुसार फलाहार करें। नमक का प्रयोग न करे तो अच्छा है।
15. साधना के एक दिन पहले जहॉ भी, जिस भी नदी में, जिस स्थान पर स्नान किया जाता है, वहाँ ही, उसी स्थान पर ही ज्वारे के खप्पर विसर्जन करना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि श्री माताजी को जहाँ से आवाहन करके बुलाया जाता है वहीं पर ही विसर्जन करने का विधान है।
16 जहाँ पर साधना करते है वहाँ पर स्त्री का प्रवेश वर्जित होना चाहिए। ज्वारों पर प्रथम पाँच दिन तक किसी भी व्यक्ति की छाया नहीं पड़नी चाहिए।
17. पीली सरसों साधना स्थल के चारों तरफ बिखेर देना चाहिए। जिससे साधना में विघ्न बाधा उत्पन्न नहीं होती है।
18. साधना के एक दिन पहले प्रायश्चित स्नान किया जाना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चाहिए। उसी दिन एक नीबू सुरक्षा के लिए अपने साथ रखना चाहिए। नान्दि श्राद्ध कर्म भी करना चाहिए।

19. एक साधक व्यक्ति को साधना के दौरान रोजाना इत्र का प्रयोग करना चाहिए।

20. एक साधक व्यक्ति को साधना के दौरान प्रथम दिन एवं अन्तिम दिन नौ नीबू की और नौ नारियल की बलि मुख्य कलश के पास या ज्वारे जहाँ पर लगाये हो वहाँ पर देना चाहिए।

21. ज्वारों का खप्पर ले जाते वक्त उन्हें ढोल नगाड़ों के साथ ले जाना चाहिए। मुख्य द्वार पर नारियल फोड़ना चाहिए। आगे पुलिया, तिराहा, चौराहा हो तो वहाँ भी नीबू काटना चाहिए।

22. अखण्ड दीपक अवश्य लगाना चाहिए। चाहे वह घी का हो या तिल के तेल का या साधारण तेल का। खण्डित नहीं होना चाहिए।

23. यदि दीपक खण्डित हो जाय तो उस दीपक को हटाकर नया दीपक, नया तेल, नई बत्ती रखकर दूसरा दीपक लगाना चाहिए।

24. अपने मन को वश में रखने का प्रयास करें। माया, मोह, लोभ, लालच, काम, क्रोध, मद, मत्सर, से दूर रहने का प्रयास करें। इसके लिए पेपर न पढ़े, मोबाइल फोन का उपयोग न करें। किसी से न मिले। सूर्योदय से सूर्यास्त तक मौन रहने की प्रवृति का पालन करें।

25. जिससे विकार उत्पन्न होते है उनसे दूर रहने का प्रयास करें।

26. साधना स्थल से दूर न जावे। एक सेवक की व्यवस्था करें जो कि कुवारा हो या ब्राह्मण हो या पूजा पाठ में विश्वास करने वाला हो परन्तु जब तक सेवा में रहें स्त्री से दूर रहें।

27. सूर्योदय से सूर्यास्त तक मौन रहने की प्रवृत्ति का पालन करें।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किन–किन गलती की वज़ह से आप दरिद्री/कंगाल हो जाते है

1. **सहवासः–** होली, दीपावली, अमावस्या, पूर्णिमा, रविवार, संक्राति, श्राद्ध पक्ष, नवरात्रि, महाशिवरात्रि, कालरात्रि, महारात्रि, मोहरात्रि, दारूण रात्रि, कृष्ण जन्माअष्टमी के दिन, अनुष्ठान के दिन सहवास व सम्भोग नही करना चाहिए।
2. रात को 12 बजे के पहले सहवास कर लेना चाहिए अन्यथा आसुरी प्रवृतियाँ जकड़ लेती हैं।
3. सूर्योदय के समय, संध्यावेला के समय सहवास नहीं करना चाहिए।
4. ऐसा करना पाप कर्म है। इसका फल तो भोगना होगा।

माँ की कृपा प्राप्ति के सरल उपाय

नवरात्रि में माँ की पूजा विशेष फलदायी है। नवरात्रि ही एक ऐसा पर्व है जिसमें महाकाली, महालक्ष्मी और माँ सरस्वती की साधना करके जीवन को सार्थक किया जा सकता है। ऐसी माँ दुर्गा की कृपा प्राप्ति के लिए कुछ सरल उपाय नीचे दिये जा रहे हैं –

1. माँ दुर्गा को तुलसी दल और दूर्वा चढ़ाना निषेद्ध है।
2. अपने घर के पूजा स्थान में भगवती दुर्गा, भगवती लक्ष्मी और माँ सरस्वती के चित्रों की स्थापना करके उनकी फूलों से सजाकर पूजन करें।
3. नौ दिनों तक माता का व्रत रखें। अगर शक्ति न हो तो पहले, चौथे और आठवें दिन का उपवास अवश्य करें। माँ भगवती की कृपा जरूर प्राप्त होगी।
4. नौ दिनों तक घर में माँ दुर्गा के नाम की अखण्ड ज्योत अवश्य जलाएँ।
5. अधिक से अधिक नवार्ण मन्त्र <u>**ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै**</u> का जाप अवश्य करें।
6. इन दिनों में दुर्गा सप्तशती का पाठ अवश्य करें।
7. पूजन में हमेशा लाल रंग के आसन का उपयोग करना उत्तम

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

होता है। आसन लाल रंग का और ऊनी होना चाहिए।

8. लालरंग का आसन न होने पर कंबल का आसन बिछाकर उसी पर लाल रंग का दूसरा कपड़ा डालकर उस पर बैठकर पूजन करना चाहिए।
9. पूजा पूरी होने के पश्चात् आसन को प्रणाम करके लपेटकर सुरक्षित जगह पर रख देना चाहिए।
10. पूजा के समय लाल वस्त्र पहनना शुभ होता है। लाल रंग का तिलक भी जरूर लगाएँ। लाल कपड़ों से आपको एक विशेष ऊर्जा की प्राप्ति होती है।
11. आखिरी दिन घर में रखी पुस्तकें, बाद्य यंत्रों, कलम आदि की पूजा अवश्य करें।
12. अष्टमी व नवमी के दिन कन्या पूजन करें। जो 3 वर्ष से बड़ी और 10 वर्ष से छोटी हो।
13. उपरोक्त नियमों का पालन कर नौ दुर्गा को प्रसन्न करें।
14. 9 दिन घरों घर आहुतियाँ छोड़ी जानी चाहिए। वातावरण की शुद्धि के लिए।
15. देवी पूजन के नाम पर घर में साफ–सफाई करना चाहिए। और घर को जीवाणुओं से क्वारेन्टाइन करेंगे।
16. हमने गोबर को महत्व दिया, हर जगह लीपा और हजारों जीवाणुओं को नष्ट करते है।
17. दीपावली पर घर के कोने–कोने को साफ करते हैं, चूना पोतकर जीवाणुओं को नष्ट करते हैं, पूरे सलीके से विषाणु मुक्त घर बनाते हैं हर दिन कपड़े भी धोकर पहनना चाहिए।
18. अतिसूक्ष्म विज्ञान को समझते हुए आत्मसात करते हुए नवरात्रि में हवन करते है।
19. ऐसी देव संस्कृति में जन्में हैं जहाँ "सूतक" याने क्वारेंटाईन का महत्व है। यह हमारी जीवन शैली है। इसलिए सूतक पातक का ध्यान रखें।

मंत्रों की शक्ति असीम है। यदि साधनाकाल में नियमों का पालन न किया जाए तो कभी–कभी बड़े घातक परिणाम सामने आ जाते हैं। प्रयोग करते समय तो विशेष सावधानी अपनाना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चाहिए। मंत्र उच्चारण की थोड़ी सी त्रुटि सारे साधना पर पानी फेर सकती है। तथा गुरु के द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन साधक ने अवश्य करना चाहिए।

साधक को चाहिए कि वो प्रयोग वस्तुएँ जैसे – आसन, माला, वस्त्र, हवन सामग्री तथा अन्य नियमों जैसे – दिशा स्थान, समय और जप संख्या आदि का दृढतापूर्वक पालन करें, क्योंकि विपरीत आचरण करने मंत्र और उसकी साधना निष्फल हो जाती है। जबकि विधिवत की गई साधना से इष्ट देवता की कृपा सुलभ रहती है। साधना कल में निम्न नियमों का पालन अनिवार्य है –:

1. जिसकी की जा रही हो, उसके प्रति पूर्ण आस्था हो।
2. मंत्र साधना के प्रति दृढ़ इच्छा शक्ति।
3. साधना स्थल के प्रति दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ–साथ साधन का स्थान, सामाजिक और पारिवारिक संपर्क से अलग–अलग हो।
4. उपवास प्रश्रय और दूध–फल आदि का सात्विक भोजन किया जाए तथा श्रृंगार प्रसाधन ओर कर्म व विलासिता का त्याग आवश्यक है।
5. साधना काल में भूमि शयन।
6. वाणी का असंतुलन, कटु–भाषण, प्रलाप, मिथ्या, वाचन आदि का त्याग करें और कोशिश मौन रहने की करें। निरंतर मंत्र जप अथवा इष्ट देवता का स्मरण चिंतन आवश्यक है।

मंत्र साधना में प्रायः विघ्न–व्यवधान आ जाते हैं। निर्दोष रूप में बहुत कम साधक सफल हो पाता है, अन्यथा स्थान दोष, काल दोष, वास्तु दोष और विशेष कर उच्चारण दोष जैसे उपद्रव उत्पन्न होकर साधना के भ्रष्ट हो जाने पर जप तप और पूजा–पाठ निरर्थक हो जाता है। इसके लिए गुरू के निर्देशों का पालन करें।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नियमः—

1. नवरात्रि में रात को ही हवन करें/पाठ करें/रात को जगना चाहिए, भजन गाना चाहिए, नाचना चाहिए।
2. **पूर्णाहुति अष्टमी व नवमी के मिलन के समय पर ही करना चाहिए। रहस्यमय ज्ञान**
3. **नवमी को ज्वारों का विसर्जन करके कन्या पूजन करना चाहिए। रहस्यमय ज्ञान**
4. नियम के अनुसार ज्वारों का विसर्जन व कन्या पूजन/कन्या भोजन कराने के बाद उपवास खोलना चाहिए।
5. साधना के बहुत से नियम है उन नियमों के लिए हमारे द्वारा लिखी गयी **साधना सिद्धी की पुस्तक देखे।** उसमें विस्तृत वर्णन दिया गया है।

1. कन्या पूजन क्यों करना चाहिए इसका उत्तर इसी पुस्तक में हैं
2. ज्वारें क्यों लगाना चाहिए इसका उत्तर इसी पुस्तक में है।
3. नवरात्रि रात को ही क्यो मनाना चाहिए? इसका उत्तर भी इसी पुस्तक में है।
4. पूर्णहुति अष्टमी नवमी के मिलन पर क्यों करना चाहिए ?

नियमः—

1. ब्राह्मण जिसका वरण किया गया वह जब भी शौच के लिए जाता है, उसे स्नान करना चाहिए।
2. साधक मनुष्य जब भी शौच के लिए जावेगा उसको भी स्नान करके ही यज्ञ स्थल पर पहुँचना है।
3. मूत्र विसर्जन के लिए जाते है तब दोनो यजमान व साधक व ब्राह्मण को लिंग को धोना है।
4. जिन कपडो को पहनकर शौच करने गये थे, उन कपड़ो को पहनकर पीठ पूजन, ज्वारों का पूजन और यज्ञ नहीं करना है।
5. 24 घन्टे में एक समय जो पहले दिन निर्धारित होता है उसी समय हमेशा फलाहार करना।
6. एक बार नमक का सेवन कर सकते हो। बार—बार नहीं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नवरात्र और स्त्री मासिक धर्म से सम्बन्धित ज्ञान (रहस्मय ज्ञान)

1. नवरात्र में रात्रीकालीन ही पाठ करना चाहिए।
2. रात को ही जप/तप/हवन/अनुष्ठान करना चाहिए।
3. देवी जी का पूजन दिन में करना चाहिए वह भी सुबह और ज्वारों का विसर्जन भी सुबह करना चाहिए नवमी के दिन।
4. नवरात्र में यदि स्त्री मासिक धर्म से हो जाए तो उसे घर में जगह–जगह नहीं घूमना चाहिए।
5. संध्या वेला के समय, सूर्योदय के समय और घर में या मन्दिर मे जब आरती होती है उस समय या मस्ज़िदों में अज़ान होती है उस घर में या घर की दहलीज़ के बाहर नहीं घूमना चाहिए।
6. मासिक धर्म प्रारम्भ होने वाले दिन से अगले सात दिन तक पूजन करने योग्य स्त्री नहीं होती है इसलिए आठवें दिन सिर धोकर ही पूजा करना चाहिए चाहे चौथे दिन शुद्ध हो गयी हो, पाँचवे दिन शुद्ध हो गयी हो या फिर भी सात दिन तक पूजा योग्य नहीं होती है।
7. **कन्या पूजन में भी आपको छोटी कन्याओं का पूजन करना है। यदि कन्या पूजन में कन्या घर से आपके यहाँ आते समय रास्ते में या आपके यहाँ बैठकर प्रथम बार मासिक धर्म से हो जाय और उसको भी पैर पूज लिये जाते है तो अनिष्ठ होना प्रारम्भ हो जाता है। घर में अपशकुन होने का संकेत है। तीन वर्ष से छोटी कन्या का पूजन नहीं करना चाहिए। रहस्यमय ज्ञान**
8. जिस कमरे में घट स्थापना और अखण्ड जोत लगायी जाती है उस कमरे में मासिक धर्म /अशुद्ध/अपवित्र स्त्री को नहीं जाना चाहिए कम से कम पाँच दिन तक।
9. पूजा करते–करते आपको पता चलता है कि शायद मासिक धर्म से हो गये है तो वह पूजा खण्डित मानी जाती है।
10. एम.सी. पीरियडं रहते हुए कन्या पूजन नहीं करें। कन्याओं का पूजन भी सात दिन के बाद ही करें क्योंकि वह साक्षात् देवीय ही है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

11. कन्याओं के लिए भोजन/भण्डारे के लिए भोजन भी छटवे दिन सिर धोकर बना सकती है।
12. माता रानी के हवन के लिए रोज पूजन यदि पति या भाई या पिता करता हो तो भोग भी छटवे दिन सिर धोकर ही बनाना चाहिए।
13. मासिक धर्म की अवस्था में भोजन बिल्कुल नहीं बनाना है। पानी के हाथ नहीं लगाना है, पति से दूर रहना है, भाई से दूर रहना है, पिता से दूर रहना है।
14. नवरात्रि में जिस कमरे में पति सोता हो उस कमरे में पत्नी को मासिक धर्म की अवस्था में नहीं सोना चाहिए।
15. नवरात्रि में मासिक धर्म से हो जाय तो व्रत उपवास नहीं रखना चाहिए। घर में शुद्धता का, स्वच्छता का, पवित्रता का पूर्ण ध्यान रखें। अन्यथा कंगाल/बरबाद हो जावेगे। दरिद्रता आ जावेगी। बीमारियां आकर जकड़ लेगी।
16. मासिक धर्म की अवस्था में ब्राह्मण को, गाय को, ऋषिमुनि को, त्यागी को, तपस्वी को, दान नही देना चाहिए, पैर नहीं छूना चाहिए पाप लगता है पाप से ताप, ताप से बीमारियाँ, बीमारी से कष्ट, परेशानी, दरिद्रता आती है।
17. मानो या न मानो मेरा धर्म था आपको धर्म का ज्ञान देना, मैने अपना धर्म निभाया, अब आपकी बारी है आपके पास विवेक है, ज्ञान, बुद्धि, दिल, दिमाग दिया है, पागल नहीं हैं, फिर भी नही मानते हो तो कष्ट भुगत रहे है और भी कष्ट बढ़ेगे, जब मौत भी आवेगी, तड़पना होगा। ईश्वर से मौत/मृत्यु की भीख मागेंगे फिर भी वो भी नहीं मिलेगी। जब जागो तब सवेरा है:—
उठो निर्णय लो यदि पाप कर्म पहले कर चुके हो तो उसका प्रायश्चित करों, बारम्बार ईश्वर से माफी मांगो, परिहार कर्म करो। किसी अच्छे ज्ञान, जानकार, सिद्ध पुरुष के पास जाकर।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

साधना काल में स्त्रियों के लिए क्या नियम है स्त्री सूतक मासिक धर्म, महावारी के संबंध में रहस्यमय नियम

1. नव दुर्गा में स्त्री का मासिक धर्म से रहना अच्छा नहीं माना जाता है।
2. मासिक धर्म रहते हुए नवदुर्गा में बाहर नहीं निकलना चाहिए।
3. सूर्यास्त के समय पर बाल खुले करके नहीं घूमना चाहिए। सूर्यास्त के समय पर दहलीज पर खड़े होकर बाल को संवारना नहीं चाहिए।
4. मासिक धर्म रहते हुए देवी जी की झाकी देखने नहीं जाना चाहिए, क्योंकि वहाँ ज्वारे लगाते है और अखण्ड दीपक जलाया जाता है। बहुत से साधक और व्रत उपवास करने वाले मनुष्य भी रहते है। उनके साथ भी दैवीय शक्ति चलती है उनकी नाराजगी की वज़ह से बीमारी लग सकती है, मानसिक बीमारी लग सकती है, भाग्य रूठ सकता है, करम फूट सकता है।
5. यदि कोई स्त्री नवरात्रि में मासिक धर्म से हो जाती है तो वह माँ जगतजन्नी के नाम से उपवास तो रख सकती है, परंतु आठवे दिन सिर धोकर ही पूजा पाठ कर सकती है। दीपक लगा सकती है।
6. स्त्री मासिक धर्म रहते हुए स्त्री को घर में कन्या पूजन नही करना चाहिए, क्योकि कन्याओं के शरीर आत्मा के ऊपर बैठकर ही वह मीठा भोजन खीर, पूडी, हलवा खाने आती है।
7. मासिक धर्म रहते हुए कन्याओं को भोजन को तैयार नही करना चाहिए। स्त्रियों को भण्डारे में भी नहीं जाना चाहिए। भण्डारा में खाना बनाने के लिए भी नही जाना चाहिए। क्योंकि यह मांगलिक कार्यक्रम है। मांगलिक कार्यक्रम में भाग नहीं लेना चाहिए।
8. मासिक धर्म वाली स्त्री को जब तक दिन पूरे न हो जाए मन्दिर की सीढ़ी नहीं चढ़ना चाहिए।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

9. मेरे मतानुसार/विचार के अनुसार प्रत्येक मन्दिर में यह बोर्ड लगाना चाहिए मासिक धर्म से होने वाली स्त्री कृपया आठवे दिन के बाद ही मन्दिर परिसर में प्रवेश करें।

10. जब भी उपवास रखे चाहे पति या पत्नि उस रात सहवास नहीं करना चाहिए। रहस्यमय ज्ञान

11.महिलाएँ अधिकांश नवरात्र रखती है, इसलिए उनको सहवास नहीं करना चाहिए।

12. हार्मोन्स तामसिक प्रकृति होती है, सेक्स करना भी तामसिक है। सेक्स आध्यात्म से दूर रखता है। हार्मोन्स निकलने से शरीर में अशुद्धता आती है

13.नवरात्रि के दौरान राग–द्वेष, काम, क्रोध, अहंकार, तृष्णा का त्याग करना होता है। तभी माँ की कृपा मिलती है। इसलिए काम/सेक्स को भी त्यागना होता है।

14.अमावस्या के दिन से लेकर शुक्लपक्ष की नवमी की रात्रि तक सहवास व संभोग नहीं करना चाहिए अन्यथा वैवाहिक जीवन बर्बाद हो जाता है। रहस्यमय ज्ञान

15.अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति, चतुर्थी, अष्टमी रविवार के दिन, सोलह श्राद्धपक्ष में, व्रत उपवास नवरात्रि के दिन–

1. प्रथम चरित्र का बीजाक्षर रूप में ऐं है।
2. मध्य चरित्र का बीजाक्षर ह्रीं है।
3. उत्तर चरित्र का बीजाक्षर क्लीं है।

तंत्र में हमेशा ऐं ह्रीं क्लीं प्रत्येक तांत्रिक मंत्र के आगे लगा सकते हो।

यह मंत्र तन्त्र की आधारशिला है। नंदा, शाकम्भरी, भीमा, सप्तशती पाठ की महाशक्ति है दुर्गा रक्तदन्तिका व भ्रामरी स्त्रोत के बीज है।

दुर्गा शब्द का अर्थ/दुर्गाजी की मूर्ति का रहस्य/दुर्गा शब्द की व्याख्या

दुर्गा–शब्द का अर्थ इस प्रकार हैः– द–दैत्यनाशक, उ–विघ्ननाशक, र–रोगनाशक, ग–पाप नाशक, आ– शत्रुनाशक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इसलिए दुर्गा को दुर्गतिनाशिनी भी कहा जाता है।

1. **अभय मुद्रा**– देवी जी पहले राक्षसो को अभय प्रदान करती है। वरदान देती है क्योकि वह भक्ति मार्ग में संलग्न हो जाये। जप, तप, होम करें, देवताओं को हविष्य प्रदान करें।
2. **फूल**– एक फूल देकर शत्रुता भंग की जाती है। अहिंसा, सत्याग्रह इत्यादि। वह शत्रुओं को फूल भेजकर मित्रता का ज्ञान देती है।
3. **शंख**– ज्ञान का प्रतीक है। ज्ञान द्वारा, बुद्धि द्वारा, बड़े–बड़े राक्षसों का वध हो सकता है। बुद्धिबल से छल से हराया जा सकता है।
4. **सुदर्शन चक्र**– जब शत्रु को हराने में कोई भी युक्ति काम नहीं आती है तो शस्त्र उठा लेना चाहिए। जब शत्रु नम्रता से, मित्रता से, ज्ञान से किसी से भी नहीं हारे तो शस्त्र से हराना चाहिए इसलिए मां दुर्गा का स्वरूप यही बनाया गया है।

सृष्टि की संचालिका एवं पालनकर्ती भगवती दुर्गा के नाम की कुछ व्याख्या –

1. मातेश्वरी की असंख्य नामों और अनेक रूपों में उनका जगदंबा रूप और दुर्गा नाम सर्वाधिक लोकप्रिय है। आपका यह दुर्गा नाम वास्तव में आपकी सभी सामर्थ्य, शक्तियों, कृत्यों एवं गुणों को पूर्णतया की सीमा तक निरूपित करता है।
2. दुर्गा इन चार वर्णो के सहयोग से बना शब्द ह (दु र् ग् आ)। "दु" अक्षर का भावार्थ दुर्जेय अर्थात जिसको जीता ना जा सके भाव का प्रतीक है। इसके साथ ही "दुःख, दुर्भिक्ष, दुर्गति, दुर्व्यसन, दरिद्रता और दैत्यों की दमनकारी शक्ति" का प्रतीक भी यही दु अक्षर है।
3. "अक्षर र् वर्ण का भावार्थ" इसी प्रकार आधा र् अर्थात र वर्ण "रोग शमनकर्ता" शक्ति का प्रतीक है। "ग वर्ण" ग अक्षर पाप विनाशक और क्षमाकारी गुणों का प्रतीक है। "स्वर आ" मात्रा के रूप में स्वर आ "अधर्म, अन्याय, आलस्य और असुरों की नाशकर्ता शक्ति" का पर्याय है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

4. इस शास्त्रीय स्वरूप निर्धारण के साथ ही प्राचीन ऋषि–मुनियों ने दुर्गा शब्द के अन्य अनेक विवेचना भी किए हैं जो उनके विविध कार्यों के अनुसार है। शक्ति के उपासकों और वीरों के लिए दुर्गम नामक भयंकर दैत्य का वध करने और राक्षसों के बड़े–बड़े दुष्टों का विनाश करने के कारण आपका नाम दुर्गा है। मुक्ति और मोक्ष की आकांक्षा रखने वाले साधकों के लिए आप दुर्गम भवसागर से पार लगाने और दूर्व्यसनों से बचाने वाली एकमात्र शक्ति हैं। सांसारिक सुख वैभव की इच्छा रखने वाले भक्तों के लिए दुर्गा नाम दुर्गम मार्गों को सुगम बनाने, दुःखो का नाशक, दारिद्रय विनाशक, दुर्गत से साक्षात रक्षा करने वाला है। वास्तव में जिसकी जैसी भावना होती है उसी रूप में भगवती दुर्गा के भाव लोक में दर्शन करता है।

प्रश्न– देवताओं ने माँ जगतजननी से पूछा कि आपने इतने सारे अस्त्र, शस्त्र क्यों उठा रखें हैं। आपकी एक हुंकार से ही दानव जब मृत्यु के ग्रास बन जाते है तो आप उनको शस्त्र से ही क्यों मारती हो?

उत्तर– माँ मुस्कुराई, धीमे शब्दो में मीठी वाणी में कहा, जो दानव, हजारों सालों तक त्याग, तपस्या करता हो, उसको मुक्ति और मोक्ष मिलना चाहिए। क्योकि त्याग का फल, तपस्या का फल, साधना का फल हर तपस्या का समाधान है। इसलिए आदि शक्ति भावनी के हाथों में हजारों हाथ, आयुध, शस्त्र है। प्रत्येक समस्या का समाधान शस्त्र नहीं है।

उदाहरण के लिए :– पुत्र– पिता का संबंध

हर परिस्थिति में बच्चे माता– पिता से हठ करेंगे तो काम नहीं बनेगा। कभी– कभी हठ करेंगे तो काम बनेगा। बच्चों के लिए हमेशा क्रोध या डंडे से काम नहीं चलेगा, कभी– कभी उसको प्यार से, दुलार से, समझाकर काम कराना होगा। अलग–अलग तरह की युक्ति और व्यवहार करना होता है। हर समस्या के बहुत से समाधान है इसलिए इतने हाथ और शस्त्र बताये गये हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सभी देवी देवताओं की संयुक्त शक्ति को दुर्गा कहा जाता है।

प्रधान देवता–

श्री महाकाली, महालक्ष्मी, महांसरस्वती

बहुत से साधक लोग सोचते है, की जब चरित्र श्री जगदम्बा का है। तो नाम अन्य देवियों के क्यों ऐसा नहीं है यह तीनों नाम एक ही महात्रिपुरसुन्दरी भगवती दुर्गा के ही हैं।

ब्रह्माजी और सरस्वती जी जगदम्बा की (इच्छाशक्ति) का आश्रय लेकर संसार का उद्भव व निर्माण करते है। इसलिए ब्रह्मा और सरस्वती की आराध्य होने से भगवती का एक नाम (श्री महासरस्वती) है।

विष्णु जी और लक्ष्मी जी भगवती की ज्ञान शक्ति भुवनेश्वरी का आश्रय लेकर जगत का पालन करते है। अनन्त भुवन ब्रह्मांड़ों के अनन्त लक्ष्मी और नारायणो को अपने ऐश्वर्य से पालन करने की शक्ति भगवती प्रदान करती हैं। इसलिए लक्ष्मी और नारायण की आराध्या शक्ति होने के कारण श्री भगवती राज राजेश्वरी का नाम श्री महालक्ष्मी भी हैं।

शंकर जी अपनी रौद्री शक्ति पार्वती जी के साथ भगवती की (क्रिया शक्ति) का आश्रय लेकर संहार करते हैं। समय के तीनों ही काल भूत, भविष्य, वर्तमान अर्थात काल की स्वामिनी होने से भगवती राज राजेश्वरी का एक नाम श्री महाकाली भी हैं।

माया (प्रकृति) और ब्रह्म (ईश्वर) जिनकी योगमाया नामक शक्ति का आश्रय लेकर ही संसारों ब्रह्मांडो की प्रकृति का निर्माण करते है। प्रकृति और पुरूष की आराध्या होने के कारण श्री राज राजेश्वरी का ही एक नाम (श्री महामाया) भी हैं।

उपरोक्त तीनो ही देवता एवं देवियाँ भी भगवती की रची हुई त्रिगुणमयी महामाया से ही प्रकट हुये हैं। और आद्या की उसी मायाशक्ति का आश्रय लेकर ही संसार का सृजन पालन संहार करने में समर्थ होते हैं।

अतः प्रकृति और पुरूष इन दोनो की रचियता और एक मात्र स्वामिनी होने श्री राज राजेश्वरी ही महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती और महामाया है। यह महान नाम उन्हीं महान

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शक्ति भगवती श्री आद्या के ही हैं।

देवी कौन हैं? आद्याशक्ति क्यों कहाँ जाता हैं? देवी के द्वारा अपने स्वयं का वर्णन

भगवती अम्बिका जो अविनाशी है वह न तो पुरूष हैं न स्त्री और न हीं नपुंसक हैं। मैं शक्ति हूँ मैं और ब्रह्मा एक ही हैं, मुझमे और ब्रह्मा में कोई अंतर नहीं हैं। जो वे है वहीं मैं हूँ वही वे हैं जिस प्रकार एक मुख की छाया अलग–अलग प्रकार के दर्पण में अलग–अलग दिखती है उसी प्रकार मैं भी तरह– तरह से दिखती हूँ। विद्या, अविद्या दोनों मेरे ही रूप हैं।

सभी नौ शक्ति मेरे ही रूप हैं। गौरी, ब्राम्ही, रौद्री, वाराही, वैष्णवी, शिवा, वारूणी, कौबेरी नारसिंही और इन्हीं शक्तियों से सृष्टि चलती हैं।

जल में शीतलता, अग्नि में उष्णता, सूर्य में प्रकाश, चंद्रमा में शीतलता, यह सब मैं ही हूँ। मेरी वज़ह से ही अंहकार उत्पन्न होता है। महत्व तत्व को ब्रह्माजी को दे दिया। इस महत्व तत्व की शक्ति को अहंकार भी कहा जाता है। इसी को जगत जननी द्वारा महासरस्वती के रूप में प्रकट कर ब्रह्माजी को भार्या। पत्नी के रूप में दे दिया और कहा गया इसका कभी भी तिरस्कार नहीं करना।

श्री हरि विष्णु को सत्वगुण की प्रधानता के कारण महालक्ष्मी दे दी गई। जो उनके वक्ष स्थल में विराजमान रहेगी। श्री शंकर जी को महाकाली जो गौरी नाम से विख्यात है पत्नी के रूप में दे दी गई है। इसमें तमो गुण की प्रधानता रहेगी। इस प्रकार से ब्रह्मा, विष्णु और महेश को सत्वों गुण, तमोगुण, और रजोगुण से महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती सृष्टि निर्माण के लिए दे दी गई।

जिस प्रकार राधा को कृष्ण से, सीता को राम, लक्ष्मी को श्रीहरि विष्णु से अलग नहीं कर सकते। माया का गुणज्ञान से वेद व्यास को संस्कार से वाणी को हिरण्यगर्भ से, सागर को लहरों से, चंद्रमा को चंद्रिका, से सूर्य को किरण से इसी प्रकार प्रकृति से परमात्मा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

की आध्यशाक्ति अलग नहीं कर सकती। यह शक्ति कभी सोम्य रूप में प्रकट होती है तो कभी उग्र रूप में। बालकों का उद्धार करने के लिए हर संभव सहायता करती है। शक्ति बालको को कभी मिठाई के रूप में कृपा देती है। तो कभी कड़वी औषधि के रूप में भी।

उदा– जिस प्रकार गाड़ी में ईधन न हो तो नहीं चल सकती इसी प्रकार प्रकृति में शक्ति न हो तो सृष्टि नष्ट हो जाएगी।

देवता दिखते क्यों नहीं? रहस्यमय ज्ञान

जितने भी देवता है वह सब अशरीर है। देवताओं की देह नहीं हैं। परमपुरुष परमात्मा का यही सूक्ष्य स्वरूप है उन्हें स्पर्श नहीं किया जा सकता। उन्हें अनुभव कर सकते हैं। महसूस कर सकते है।

उदाहरण – वनस्पति में, गंध में, अग्नि की ज्वाला में, पानी की शीतलता में, वायु में (शब्द स्पर्श) पृथ्वी या धरा में उर्वरकता के रूप में, चंद्रमा की शीतलता में, सूर्य की अग्नि में चारों दिशाओं की व्यापकता में, फल की सुगंध में आकाश में तारे, अपनी सांस का आना–जाना सभी में ईश्वर है। यही शक्ति है। इसी को जगतजननी महामाया आदिशक्ति कहा जाता है। इनको महसूस कर सकते हैं। स्पर्श नहीं किया जा सकता है ईश्वर को महसूस कर सकते हैं।

माँ दुर्गा के जन्म –

पहला, जब उन्होंने राजा दक्ष के यहाँ सती के रूप में जन्म लिया था और फिर वे यज्ञ की आग में कूदकर भस्म हो गई थीं।

**"दुर्गति नाशिनी दुर्गा जय–जय,
काल विनाशिनी काली जय–जय
उमा रमाणी ब्रम्हाणी जय–जय
सीता राधा रूकमणी जय–जय"**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दस महाविद्या कैसे प्रकट हुई –

दूसरा, जब उन्होंने पर्वतराज हिमाचल की पुत्री के रूप में जन्म लिया, तब वे पार्वती कहलाई। दक्ष प्रजापति ब्रह्मा के पुत्र थे। उनकी दत्तक पुत्री थीं सती, जिन्होंने तपस्या करके शिव को अपना पति बनाया, लेकिन शिव की जीवनशैली दक्ष को बिल्कुल ही नापसंद थी। शिव और सती का अत्यंत सुखी दांपत्य जीवन था, पर शिव को बेईज्जत करने का ख्याल दक्ष के दिल से नहीं गया था। इसी मंशा से उन्होंने एक यज्ञ का आयोजन किया जिसमें शिव और सती को छोड़कर सभी देवी–देवताओं को निमंत्रण दिया। जब सती को इस यज्ञ का ज्ञान हुआ तो उन्होंने उस यज्ञ में जाने की ठान ली।

शिव से अनुमति मांगी, तो उन्होंने साफ मना कर दिया। उन्होने कहा कि जब हमें बुलाया ही नहीं है, तो हम क्यों जाएं? सती ने कहा कि मेरे पिता है तो मैं तो बिन बुलाए भी जा सकती हूँ। लेकिन शिव ने उन्हें वहाँ जाने से मना किया तो माता सती को क्रोध आ गया और क्रोधित होकर वे कहने लगीं– मैं दक्ष यज्ञ में जाऊंगी और उसमें अपना हिस्सा लूंगी, नही तो उनका यज्ञ विध्वंस कर दूंगी।

वे पिता और पति के इस व्यवहार से इतनी आहत हुई कि क्रोध से उनकी आँख लाल हो गई। वे उग्र–दृष्टि से शिव को देखने लगीं उन्होंने भयानक अट्टहास किया। शिव भयभीत हो गए। उधर क्रोध से सती जी का शरीर जलकर काला पड़ गया। उनके इस विकराल रूप को देखकर शिव तो भाग चले लेकिन जिस दिशा में भी वे जाते वहां एक न एक भयानक देवी उनका रास्ता रोक देतीं। वे दसों दिशाओं में भागे और 10 देवियों ने उनका रास्ता रोका और अंत में सभी काली में मिल गई। हारकर शिव सती के सामने खड़े हुए। उन्होंने सती से पूछा– कौन हैं ये? सती ने बताया – ये मेरे 10 रूप है।

आपके सामने खड़ी कृष्ण रंग की काली हैं, (सिद्धिदांत्री)

आपके ऊपर नीले रंग की तारा हैं, (सिद्ध विद्या)

पश्चिम में छिन्नमस्ता, मोक्ष देने वाली

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बाएं भुवनेश्वरी, (भोगदात्री)
पीठ के पीछे बगलामुखी, (स्तम्भन, शत्रु नाश)
पूर्व– दक्षिण में धूमावती, शत्रु नाश
दक्षिण–पश्चिम मे त्रिपुर सुंदरी धन देने वाली
पश्चिम–उत्तर में मातंगी (मोहनी विद्या)
उत्तर– पूर्व में षोडशी मोक्षदात्री हैं और मैं खुद भैरवी रूप में अभयदान देने के लिए आपके सामने खड़ी हूँ। माता का यह विकराल रूप देख शिव कुछ भी नहीं कह पाए और वे दक्ष यज्ञ में चली गई।

नवरात्रि

नवरात्रि हिन्दुओं का सर्वाधिक प्रसिद्ध पर्व है। नवरात्रि एक संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ होता है 'नौं रातें' इस नौ रातों और दस दिनों के दौरान, शक्ति/देवी के नौ रूपों की पूजा की जाती हैं। नवरात्रि वर्ष में चार बार आता हैं।

पौष, चैत्र, आषाढ़, अश्विन प्रतिपदा से नवमी तक मनाया जाता है। नवरात्रि के नौ रातों में तीन देवियों–महालक्ष्मी, महासरस्वती या सरस्वती और दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा होती है। जिन्हें नवदुर्गा कहते है। इन नौ रातों और इस दिनों के दौरान, शक्ति/देवी के नौ रूपों की पूजा की जाती है। दुर्गा का मतलब जीवन के दुःख को हटाने वाली होती है। नवरात्रि एक महत्वपूर्ण प्रमुख त्योहार है जिसे पूरे भारत में महान उत्साह के साथ मनाया जाता है।

देश का पहला तंत्र स्कूल
देवराधा ट्रस्ट (पंजीकृत)
बुधनी तहसील, ग्राम बुधनी
जिला सिहोर, मध्यप्रदेश
तन्त्र स्कूल, मन्त्र सिखने का स्कूल
भागवत प्रवचन स्कूल, ज्योतिष सिखाने
का स्कूल वास्तु ज्ञान, साधना स्थली

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नवरात्र में आदि शक्ति नवदुर्गा की पूजा अर्चना करने की विस्तृत जानकारी –

नवरात्र के सभी दिन माँ दुर्गा की पूजा अलग–अलग रूपों में की जाती है। मारकण्डेय पुराण के अनुसार श्री दुर्गा अपने पूर्व जन्म में प्रजापति दक्ष की कन्या के रूप में उत्पन्न हुई थीं। जब श्री दुर्गा का नाम "सती" था। इनका विवाह भगवान शंकर से हुआ था। एक बार प्रजापति दक्ष ने एक बहुत बडे यज्ञ का आयोजन किया। इस यज्ञ में सभी देवताओं को भाग लेने हेतु आमंत्रण भेजा, किन्तु भगवान शंकर को आमंत्रण नहीं भेजा। सती के अपने पिता का यज्ञ देखने और वहाँ जाकर परिवार के सदस्यों से मिलने का आग्रह करते देख भगवान शंकर ने उन्हें वहाँ जाने की अनुमति विशेष परिस्थिति में दे दी। सती ने पिता के घर पहुँचकर देखा कि कोई भी उनसे आदर और प्रेम से बातचीत नहीं कर रहा है। उन्होंने देख कि वहाँ भगवान शंकर के प्रति तिरस्कार का भाव भरा हुआ है। पिता दक्ष ने भी भगवान के प्रति अपमानजनक वचन कहे। यह सब देख कर सती का मन ग्लानि ओर क्रोध से संतप्त हो उठा। वह अपने पति का अपमान न सह सकीं और उन्होंने अपने आपको यज्ञ में जला कर भस्म कर लियां।

अलगे जन्म में सती ने नवदुर्गा के रूप धारण करके जन्म लिया, जिनके नाम हैं –

<u>शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघंटा, कुष्मांडा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदात्री</u>

जब देव और दानव युद्ध में देवतागण परास्त हो गये तो उन्होंने आदि शक्ति का आवाहन किया और एक–एक करके

उपरोक्त नौ दुर्गाओं ने युद्ध भूमि में उतरकर अपनी रणनीति से धरती और स्वर्ग लोक में छाये हुए दानवों का संहार किया। इनकी इस अपार शक्ति को स्थायी रूप देने के लिए

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देवताओं ने धरती पर चैत्र और आश्विन मास में नवरात्रों में इन्हीं देवियों की पूजा अर्चना करने का प्रावधान किया। वैदिक युग की यही परम्परा आज भी बरकरार है। साल में रबि और खरीफ की फसलें कट जाने के बाद अन्न का पहला भोग नवरात्रों में इन्हीं देवियों के नाम से अर्पित किया जाता है। यदि शक्ति दुर्गा के इन नौ स्वरूपों को प्रतिपदा से लेकर नवमी तक देवी के मण्डपों में क्रमवार पूजा जाता है।

दुर्गा सप्तशती के अन्तर्गत देव दानव युद्ध का विस्तृत वर्णन है। इसमें देवी भगवती और माँ पार्वती ने किस प्रकार से देवताओं के साम्राज्य को स्थाप़ित करने के लिए तीनों लोकों में उत्पात मचाने वाले महादानव से लोहा लिया इसका वर्णन आता है। यही कारण है कि आज सारे भारत में हर जगह दुर्गा यानि नवदुर्गाओं के मन्दिर स्थापित हैं और साल में दो बार नौ दिन के लिए उत्तर से दक्षिण तक उत्सव का माहौल होता है।

चन्द्रमास के अनुसार चार नवरात्र होते हैं –

1. आषाढ़ शुक्लपक्ष में "आषाढ़ी" नवरात्र।
2. आश्विन शुक्लपक्ष में "शारदीय" नवरात्र।
3. माघशुक्लपक्ष में "शिशिर" नवरात्र।
4. चैत्र शुक्लपक्ष में "वासन्तिक" नवरात्र।

परम्परा से दो नवरात्र......

"चैत्र" एवं "आश्विन" मास में सर्वमान्य है।

चैत्र मास "मधुमास" एवं आश्विन मास "ऊर्जामास" नाम से प्रसिद्ध है। जो शक्ति के पर्याय हैं।

अतः शक्ति आराधना हेतु इस काल खण्ड को "नवरात्र" शब्द से सम्बोधित किया गया है।

"नवानां रात्रिणां समाहारः" नौ रात्रियों का समूह।

रात्रि का तात्पर्य – अष्टमी व नवमी के मिलन पर हवन क्यों करना चाहिए? रहस्मय ज्ञान।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"विश्रामदात्री" "सुखदात्री" के साथ एक अर्थ "जगदम्बा" भी है।

"रात्रिरुप यतो देवी दिवारुपों महेश्वरः"

तंत्रग्रन्थों में तीन रात्रि – नवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य

1. "कालरात्रि" महा फाल्गुन कृष्णपक्ष चतुर्दशी "महाकाली" की रात्रि
2. "मोहरात्रि" आश्विन शुक्लपक्ष अष्टमी "महासरस्वती" की रात्रि
3. "महारात्रि" कार्तिक कृष्णपक्ष अमावस्या "महालक्ष्मी" की रात्रि एक अंक से सृष्टि का आरम्भ है, सम्पूर्ण माया कि सृष्टि का विस्तार आठ अंक तक ही है।

इससे परे "ब्रह्मा" है जो नौ अंक का प्रतिनिधित्व करता है। अस्तु नवमी तिथि के आगमन पर शिव शक्ति का मिलन होता है। शक्ति सहित शक्तिमान को प्राप्त करने हेतु भक्त को नवधा भक्ति का आश्रय लेना पड़ता है।

जीवात्मा नौ द्वार वाले पुर (शरीर) का स्वामी है।

"नवछिद्रमयो देहः" इन छिद्रों को पार करता हुआ जीव ब्रह्मत्व को प्राप्त करता है।

क्यों मनाते हैं नवरात्रि ?

शक्ति उपासना का पर्व नवरात्रि क्यों मनाई जाती है और माँ दुर्गा की आराधना क्यों की जाती है, इसको लेकर दो कथाएँ प्रचलित हैं।

नवरात्रि की प्रथम कथा – एक कथा के अनुसार लंका युद्ध में ब्रह्माजी ने श्रीराम से रावण वध के लिए चंडीदेवी का पूजन कर देवी को प्रसन्न करने को कहा ओर विधि के अनुसार चंडी पूजन और हवन हेतु दुर्लभ 108 नीलकमल की व्यवस्था भी करा दी। वहीं दूसरी ओर रावण ने भी अमरत्व प्राप्त करने के लिए चंडी पाठ प्रारम्भ कर दिया। यह बात पवन के माध्यम से इन्द्रदेव ने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्रीराम तक पहुँचा दी। इधर रावण ने मायावी तरीके से पूजास्थल पर हवन सामग्री में से एक नीलकमल गायब करा दिया जिससे श्रीराम की पूजा बाधित हो जाए। श्रीराम का संकल्प टूटता नज़र आया।

सभी में इस बात का भय व्याप्त हो गया कि कहीं माँ दुर्गा कुपित न हो जाएँ। तभी श्रीराम को याद आया कि उन्हें कमल–नयन नवकंज लोचन भी कहा जाता है तो क्यों न एक नेत्र को वह माँ की पूजा में समर्पित कर दें। श्रीराम ने जैसे ही तीर से अपने नेत्र को निकालना चाहा तभी माँ दुर्गा प्रकट हुई ओर कहा कि वह पूजा से प्रसन्न हुई और उन्होंने विजयश्री का आशीर्वाद दिया।

दूसरी तरफ़ रावण की पूजा के समय हनुमान जी ब्राह्मण बालक का रूप बना कर वहाँ पहुँच गए और पूजा कर रहे ब्राह्मणों से एक श्लोक, जयादेवी भूर्तिहरिणी में हरिणी के स्थान पर करिणी उच्चारित करा दिया। हरिणी का अर्थ होता है भक्त की पीड़ा हरने वाली और करिणी का अर्थ होता है पीड़ा देने वाली। इससे माँ दुर्गा रावण से नाराज़ हो गई और रावण को श्राप दे दिया। रावण का सर्वनाश हो गया।

नवरात्रि की दूसरी कथा – एक अन्य कथा के अनुसार महिषासुर को उसकी उपासना से खुश होकर देवताओं ने उसे अजेय होने का वर प्रदान कर दिया था। उस वरदान को पाकर महिषासुर ने उसका दुरुपयोग करना शुरू कर दिया और नरक को स्वर्ग के द्वार तक विस्तारित कर दिया। महिषासुर ने सूर्य, चन्द्र, इन्द्र, अग्नि, वायु, यम, वरुण और अन्य देवताओं के भी अधिकार छीन लिए और स्वर्गलोक का मालिक बन बैठा। देवताओं को महिषासुर के भय से पृथ्वी पर विचरण करना पड़ रहा था।

तब महिषासुर के दुस्साहस से क्रोधित होकर देवताओं ने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

माँ दुर्गा की रचना की। महिषासुर का वध करने के लिए देवताओं ने अपने सभी अस्त्र–शस्त्र माँ दुर्गा को समर्पित कर दिए थे जिससे वह बलवान हो गई। नौ दिनों तक उनका महिषासुर से संग्राम चला था और अन्त में महिषासुर का वध करके माँ दुर्गा महिषासुरमर्दिनी कहलाई।

वर्ष में दो बार नवरात्रि क्यों?

नवरात्रि साल में दो बार मनाया जाने वाला इकलौता उत्सव है। एक नवरात्रि गर्मी की शुरुआत पर चैत्र में और दूसरा शीत की शुरुआत पर आश्विन माह में। गर्मी और जाड़े के मौसम में सौरऊर्जा हमें सबसे अधिक प्रभावित करती है। क्योंकि फसल पकने, वर्षा जल के लिए बादल संघनित होने, ठंड से राहत देने आदि जैसे जीवनोपयोगी कार्य इस दौरान सम्पन्न होते हैं। इसलिए पवित्र शक्तियों की आराधना करने के लिए यह समय सबसे अच्छा माना जाता है।

प्रकृति में बदलाव के कारण हमारे तन–मन और मस्तिष्क में भी बदलाव आते हैं। इसलिए शारीरिक और मानसिक संतुलन बनाए रखने के लिए हम उपवास रखकर शक्ति की पूजा करते हैं। एक बार इसे सत्य और धर्म की जीत के रूप में मनाया जाता है, वहीं दूसरी बार इसे भगवान श्रीराम के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है।

नवरात्र वर्ष में चार बार आते है –

1. चैत्र, 2. आषाढ, 3. आश्विन, 4. माघ

देवी भागवत में लिखा गया है –

चैत्र आश्विने तथाषाढ़े, माघे कार्यो महोत्सवः।
नव–रात्रे महाराजः पूजा कार्या विशेषतः।।

इस प्रकार चार नवरात्र में चैत्र एवं आश्विन प्रकट और

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आषाढ़ एवं माघ अप्रकट यानि गुप्त नवरात्र के नाम से जानी जाती है। गुप्त इसलिए की इन नवरात्र में गुप्त गुरु–गम्य सिद्धियाँ प्राप्त करने के लिये साधना–उपासना की जाती है।

वैसे देखा जाये तो चारों नवरात्र चार ऋतुओं की सन्धि–वेला में आती हैं। इस काल में कितने ही लोग बीमार पड़ते हैं और अनेक प्रकार की संक्रामक बीमारियाँ भी फैल जाती है। इसलिए शक्ति अर्जित करने व व्रत–उपवास करके शारीरिक, मानसिक बल प्राप्त करने के लिए सर्व–दुःख–नाशिनी और ऐश्वर्य प्रदायिनी माँ दुर्गा की अपनी गुरु–परम्परानुसार पूजा आराधना की जाती है।

नवरात्रि के नौ रूप होते हैं। नौ देवियों के नौ रूपों में स्त्री जीवन का पूर्ण चित्रण रहस्यमय ज्ञान

एक स्त्री के पूरे जीवनचक्र का चित्रण है नवदुर्गा के नौ स्वरूप मे।

1. जन्म ग्रहण करती हुई कन्या, "शैलपुत्री" स्वरूप है।
2. कौमार्य अवस्था तक "ब्रह्मचारिणी" का रूप है।
3. विवाह से पूर्व तक चन्द्रमा के समान निर्मल होनेसे वह "चंद्रघंटा" समान है।
4. नए जीव को जन्म देने के लिए गर्भ धारण करने पर वह "कुष्माण्डा" स्वरूप में है।
5. संतान को जन्म देने के बाद वही स्त्री "स्कन्दमाता" हो जाती है।
6. संयम व साधना को धारण करने वाली स्त्री "कात्यायनी" रूप है।
7. अपने संकल्प से पति की अकाल मृत्यु को भी जीत लेने से वह "कालरात्रि" जैसी है।
8. संसार (कुटुब ही उसके लिए संसार है) का उपकार करने से "महागौरी" हो जाती है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

9. धरती को छोड़कर स्वर्ग प्रयाण करने से पहले संसार में अपनी संतान को सिद्धि (समस्त सुख–संपदा) का आशीर्वाद देने वाली "सिद्धिदात्री" हो जाती है।

नौ देवियाँ है:–

शैलपुत्री – इसका अर्थ– पहाड़ो की पुत्री होता है। भौतिक एवं आध्यात्मिक इच्छापूर्ति करती है।

ब्रह्मचारिणी– इसका अर्थ– विजय एवं आरोग्य देती है।

चंद्रघंटा– इसका अर्थ– चाँद की तरह चमकने वाली। पाप, ताप व बाधा मुक्ति के लिए इनकी आराधना की जाती है।

कुष्माण्डा– इसका अर्थ– पूरा जगत उनके पैर में है। आयु, यश, बल व ऐश्वर्य।

स्कंदमाता– इसका अर्थ– कार्तिक स्वामी की माता। कुण्ठा, कलह एवं द्वेष की समाप्ति।

कात्यायनी– इसका अर्थ– कात्यायन आश्रम में जन्मी। अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष।

कालरात्री– इसका अर्थ– काल का नाश करने वाली। व्यापार पूर्ति, रोजगार, सर्विस की इच्छा पूर्ति

महागौरी– इसका अर्थ– सफेद रंग वाली माँ। मन पसन्द जीवन साथी व शीघ्र विवाह।

सिद्धिदात्री – इसका अर्थ– सर्व सिद्धि देने वाली। समस्त साधनाओं में सिद्ध व मनोरथ पूर्ति करने।

नौ देवियों के पास अलग–अलग उर्जा है। यदि आप नवरात्र में इन देवियों की पूजा करते हो तो शक्ति अवश्य प्राप्त होती है।

1. **शैल पुत्री** – पन बिजली, विद्युत उर्जा
2. **ब्रह्मचारिणी** – कुण्डलिनी शक्ति
3. **चन्द्रघंटा** – ध्वनि ऊर्जा
4. **कुष्माण्डा** – परमाणु ऊर्जा
5. **स्कन्दमाता** – सौर ऊर्जा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

6. **कात्यायनी** – चुम्बकीय (आकर्षण विकर्षण) ऊर्जा
7. **कालरात्री** – काली शक्ति
8. **महागौरी** – प्रजनन शक्ति
9. **सिद्धिदात्री** – विवेकयुक्त वैज्ञानिक अनुसंधान

इस सभी नौ शक्तियों से यह ब्रह्माण्ड धारित और पोषित हो रहा है। नवदुर्गा हिन्दू धर्म में माता दुर्गा अथवा पार्वती के नौ रूपों को एक साथ कहा जाता है। इन नवों दुर्गा को पापों की विनाशिनी कहा जाता है।

पहला दिन शैलपुत्री देवी की पूजा –

माँ दुर्गा का पहला स्वरूप शैलपुत्री का है। पर्वतराज हिमालय के यहाँ पुत्री के रूप में उत्पन्न होने के कारण इनको शैलपुत्री कहा गया। यह वृषभ पर आरूढ़ दाहिने हाथ में त्रिशूल और बांए हाथ में कमल पुष्प धारण किए हुए हैं। यह नव दुर्गाओं में प्रथम दुर्गा है। नवरात्र पूजन में पहले दिन इन्हीं का पूजन होता है। प्रथम दिन पूजा में योगीजन अपने मन को "मूलाधार चक्र" में स्थित करते हैं। यही से उनकी योग साधना शुरू होती है।

वन्दे वांछितलाभाय चन्द्रार्धकृतशेखराम्।
वृषारुढ़ां शूलधरां शैलपुत्रीं यशस्विनीम्।।

श्रद्धालु जनों की सूचना के लिए यह भी जरूरी है कि दुर्गा पूजन सामग्री में घटस्थापन सबसे महत्वपूर्ण होता है। व्रत और उपवास लेने की परम्परा प्राचीनकाल से ही है। इस व्रत में फलाहार के कोई विशेष नियम नहीं है। युवा हो या युवती बालक हो या वृद्ध सबको ही जगदम्बा की कृपा प्राप्त करने के लिए नवरात्रों में दुर्गा सप्तशती अवश्य पढ़नी चाहिए। घटस्थापन और पूजा पाठ में प्रयोग सामग्री पहले से ही व्यवस्था करके रख लेनी चाहिए –

घटस्थापन हेतु –

गंगाजल, नारियल, लाल कपड़ा, मौली कलावा या लाल

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

धांगा, रोली, चन्दन, पान, सुपारी, धूपबत्ती, घी का दीपक, ताजे फल, फूलमाला, बेलपत्रों की माला, एक थाली में साफ चावल, घटस्थापन के स्थान में केले का खम्ब, घर के दरवाजे पर बन्दनवार के लिए आम के पत्ते, तांबे या मिट्टी का एक घड़ा, चन्दन की लकड़ी, सर्वोषधि, हल्दी की गांठ, 5 प्रकार के रत्न, देवी को स्नान के उपरान्त पहनाने के लिए उसकी मूर्ति के अनुसार लाल कपड़े, मिठाई, बताशा, सुगन्धित तेल, सिन्दूर, कंघा, दर्पण, आरती के लिए कपूर, 5 प्रकार के फल, पंचामृत जिसमें दूध, दही शहद, चीनी और गंगाजल हो, साथ ही पंच गव्य, जिसमें गाय का गोबर, गाय का मूत्र, गाय का दूध, गाय का दही, गाय का घी, भी पूजा सामग्री में रखना आवश्यक है।

दुर्गा जी की स्वर्ण मूर्ति या ताम्रमूर्ति अगर ये भी उपलब्ध न हो सके तो मिट्टी की मूर्ति अवश्य होनी चाहिए जिसको रंग आदि से चित्रित किया हो चूंकि नवदुर्गायें वस्त्र आभूषण और नैवेद्य प्रिय हैं अतः उनको पहनाने के लिए रोज–रोज नये वस्त्र आभूषण जिनमे गले का हार, हाथ की चूड़ियाँ, कंगन, मांग टीका, नथ व कर्णफूल आदि आते हैं का भी आयोजन करके रखना। सभी सामग्री नौ दिन में नवदुर्गाओं को पूजा के दौरान समर्पित की जायेंगी। उपरोक्त सामग्री का संचयन करके रात्रिकाल में देवी का भव्य मंडप बनाकर उसे वस्त्र आभूषण पहनाने के उपरान्त फलफूल आदि अर्पित करके कीर्तन करते हुए माता का गुणगान करें।

यही माता वैष्णव देवी, **कामाख्या सप्तपीठ** और दक्षिण भारत के विभिन्न अंचलों में सदैव विराजमान रहती हैं। शैलपुत्री के रूप में हो चाहे दुर्गा माता के रूप में आप नित्य ही नौ दिन तक अपने घर या देवालय में जाकर नवरात्रों में नवदुर्गाओं की पूजा अर्चना का पुण्य लाभ कमा सकते हैं। अन्त में कपूर और घी के दिये को थाली में सजाकर आरती करनी होगी। दुर्गामाता की आरती सभी जगह प्रचलित है। आरती को कंठस्थ करके भी बोला

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जा सकता है।

काली माँ की आरती

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली।
तेरे ही गुणगायें भारती ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती।।
माता तेरे भक्त जनों पर भीड़ पड़ी है। भारी
दानव दल पर टूट पड़ो माँ करके सिंह सवारी।।
सौ–सौ सिंहों से हैं बलशाली अष्टभुजाओं वाली।
दुखियों के दुःख को निवारती।। ओ मैया–
माँ बेटे का है इस जग में बड़ा ही निर्मल नाता।
पूत कपूत सुने हैं पर ना मातासुनी कुमाता।।
सब पर करूणा दरशाने वाली अमृत बरसाने वाली।
भक्तों के दुखड़े निवारती।। ओ मैया –
नहीं मांगते धन और दोलत ना चाँदी ना सोना।
हम तो मांगे माँ तेरे मन में एक छोटा सा कोना।।
सबकी बिगड़ी बनाने वाली लाज बचाने वाली।
सतियों के सत को संवारती।। ओ मैया––

दूसरा दिन ब्रह्मचारिणी देवी की पूजा –

माँ दुर्गा की नौ शक्तियों मे से दूसरा स्वरूप ब्रह्मचारिणी का है। यहाँ "ब्रह्म" शब्द का अर्थ तपस्या से है। ब्रह्मचारिणी का अ हुआ तप की चारिणी–तप का आचरण करने वाली। ब्रह्मचारि देवी का स्वरूप पूर्ण ज्योतिर्मय एवं अत्यंत भव्य है। इनके बा हाथ में कमण्डल और दांए हाथ में जप की माला रहती है। दुर्गा का यह दूसरा स्वरूप भक्तों और सिद्धों को अनंत फल प्रदा करने वाला है। इनकी उपासना से मनुष्य में तप, त्याग, वैराग सदाचार, संयम की वृद्धि होती है। दुर्गा पूजा के दूसरे दिन इन की उपासना की जाती है। इस दिन साधक का मन "स्वाधिष्ठान

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चक्र में स्थित होता है। इस चक्र में अवस्थित मन वाला योगी उनकी कृपा और भक्ति प्राप्त करता है।

दधाना कपद्माभ्यामक्षमालाकमण्डलू।
देवी प्रसीदतु मयि ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा।

इन नवदुर्गाओं का वास्तविक व्यक्तित्व दुर्गा सप्तशती के देवी कवच में वर्णित है। ये सभी देवियां जिनको भक्तिपूर्वक स्मरण किया जाता है। उनका निश्चय ही उद्धार करती है। देव दानव युद्ध के दौरान इनका जो स्वरूप और सवारी का वर्णन है वह इस प्रकार है जैसे कि चामुण्डा देवी प्रेत पर आरुढ़ होती है बाराही भैंसे पर सवारी करती है। ऐन्द्री का वाहन ऐरावत हाथी है। वैष्णवी देवी गरुड़ पर ही आसन विराजमान होती है। माहेश्वरी वृषभ पर आरुढ़ होती है। कौमारी का वाहन मयूर है। भगवान विष्णु की प्रियतमा लक्ष्मीदेवी कमल के आसन पर विराजमान हैं और हाथों में कमल धारण किये हुए हैं। वृषभ पर आरुढ़ ईश्वरी देवी ने श्वेत रूप धारण कर रखा है। ब्राह्मी देवी हंस पर बैठी हुई हैं और सब प्रकार के आभूषणों से विभूषित हैं। इस प्रकार ये सभी माताएँ सब प्रकार की योगशक्तियों से सम्पन्न हैं। इनके सिवा और भी बहुत सी देवियां हैं जो अनेक प्रकार के आभूषणों की शोभा से युक्त तथा नाना प्रकार के रत्नों से सुशोभित हैं। ये सम्पूर्ण देवियां क्रोध में भरी हुई हैं और भक्तों की रक्षा के लिये रथ पर बैठी दिखायी देती हैं। ये शंख, चक्र, गदा, शक्ति, हल और मुसल, खेटक और तोमर, परशु तथा पाश कुन्त और त्रिशूल एवं उत्तम अस्त्र–शस्त्र अपने हाथों में धारण करती हैं।

देवी का द्वितीय स्वरूप ब्रह्मचारिणी प्रतीक रूप में नवदुर्गाओं की दूसरी ऐसी अमोघ शक्ति है जिसने 108 दुर्गाओं में अपने विभिन्न रूप लेकर इस संसार में महाविद्या ओर महाबल जैसे शास्त्र और शस्त्र का निर्माण किया। जिस प्रकार देवताओं में ज्ञान और वेदों के निर्माण कर्ता ब्रह्मा जी हैं ऐसे ही आज के युग में मंत्र

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शक्ति और रचना विधान का नाम ब्रह्मचारिणी है। इसकी पूजा अर्चना द्वितीया तिथि के दौरान की जाती है। सच्चिदानंदमय ब्रह्मस्वरूप की प्राप्ति कराना आदि विद्याओं की ज्ञाता ब्रह्मचारिणी इस लोक के समस्त चर और अचर जगत की विद्याओं की ज्ञात हैं। इसका स्वरूप श्वेत वस्त्र में लिप्टी हुई कन्या के रूप में है। जिसके एक हाथ मे अष्टदल की माला और दूसरे हाथ में कमंडल विराजमान है।

यह अक्षयमाला और कमंडल धारिणी ब्रह्मचारिणी नामक दुर्गा, शास्त्रों के ज्ञान और निगमागम तंत्र मंत्र आदि से संयुक्त हैं। अपने भक्तों को यह अपनी सर्वज्ञ सम्पन्न विद्या देकर विजयी बनाती है। ब्रह्मचारिणी का स्वरूप बहुत ही सादा और भव्य है।एक हाथ में कमण्डल और दूसरे हाथ में चन्दन माला लिये हुए प्रसन्न मुद्रा में भक्तों को आशीर्वाद दे रहीं हैं। अन्य देवियों की तुलना में वह अतिसौम्य, क्रोध रहित और तुरन्त वरदान देने वाली देवी हैं। नवरात्र के दूसरे दिन सायंकाल के समय देवी के मण्डपों में ब्रह्मचारिणी दुर्गा का स्वरूप बनाकर उसे सफेद वस्त्र पहनाकर हाथ में कमण्डल और चन्दन माला देने के उपरान्त फल—फूल एवं धूप नैवेद्य अर्पित करके आरती करने का विधान है। इस देवी के लिए भी वही जगदम्बा की आरती की जायेगी जो पहली देवी शैलपुत्री के अर्चना और पूजन के दौरान की गई।

तीसरा दिन चन्द्रघण्टा नामक दुर्गा के लिए –

माँ दुर्गा की तीसरी शक्ति का नाम "चन्द्रघण्टा" है। नवरात्र उपासना में तीसरे दिन इन्हीं के विग्रह का पूजन आराधना की जाती है। इनका स्वरूप परम शान्तिदायक और कल्याणकारी है। इनके मस्तक में घण्टे के आकार का अर्धचन्द्र है। इसी कारण इस देवी का नाम चन्द्रघण्टा पड़ा है। इनके शरीर का रंग स्वर्ण के

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

समान चमकीला है। इनका वाहन सिंह है। हमें चाहिए कि हम मन वचन कर्म एवं शरीर से शुद्ध होकर विधि विधान के अनुसार माँ चन्द्रघण्टा की शरण लेकर उनकी उपासना आराधना में तत्पर हों। इनकी उपासना से हम समस्त सांसारिक कष्टों से छूटकर सहज ही परमपद के अधिकारी बन सकते हैं।

पिण्डज प्रवरारुढ़ा चण्डकोपास्त्रकैर्युता।
प्रसादं तनुते महयं चन्द्रघण्टेति विश्रुता।।

तृतीय दुर्गा चन्द्रघण्टा शक्ति के रूप में विराजमान चन्द्रघण्टा मस्तक पर चन्द्रमा को धारण किये हुए है। नवरात्र के तीसरे दिन इनकी पूजा अर्चना भक्तों को जन्मान्तर के कष्टों से मुक्त कर इहलोक ओर परलोक में कल्याण प्रदान करती है। देवी स्वरूप चन्द्रघण्टा बाघ की सवारी करती है। इसके दस हाथों में कमल, धनुष बाण, कमंडल, तलवार, त्रिशूल और गदा जैसे अस्त्र हैं। इसके कंठ में श्वेत पुष्प की माला ओर रत्नजड़ित मुकुट शीर्ष पर विराजमान है। अपने दोनों हाथों से यह साधकों को चिरायु आरोग्य और सुख सम्पदा का वरदान देती है।

देव दानव युद्ध के दौरान देवताओं और राक्षसों में सौ वर्ष तक छलबल और शक्ति बल से युद्ध चलता रहा। राक्षसों के स्वामी महिषसुर नामक दैत्य था। जबकि देवताओं के स्वामी इन्द्र थे। इस युद्ध में कई बार देवताओं की सेना राक्षसों से पराजित हो गई और एक समय ऐसा आया जब देवताओं पर विजय प्राप्त कर महिषसुर स्वयं इन्द्र बन बैठा। सभी देवता जब पराजित हो गये तो ब्रह्मा जी के नेतृत्व में मंत्रणा करने के लिए भगवान विष्णु और भगवान शंकर की शरण में गये। देवताओं ने बताया कि महिषासुर ने सूर्य, इन्द्र, अग्नि, वायु, चन्द्रमा, यम, वरूण तथा अन्य देवताओं के सभी अधिकार छीन लिये हैं और उनको बन्धक बनाकर स्वयं स्वर्गलोक का राजा बन गया है।

देवता महिषासुर के प्रकोप से पृथ्वी पर विचरण कर रहे हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अब हम कहां जायें। ऐसी करूणामयी सुनकर भगवान विष्णु और भगवान शिव अत्यधिक क्रोध से भर गये। इसी समय ब्रह्मा, विष्णु ओर शिव के मुंह से क्रोध के कारण एक महान तेज प्रकट हुआ। और अन्य देवताओं के शरीर से भी एक तेजोमय शक्ति मिलकर एकाकार हो गई। यह तेजोमय शक्ति एक पहाड़ यानि पर्वत के समान थी और उसकी ज्वालायें दशों दिशाओं मे व्याप्त होने लगी। यह तेजपुंज सभी देवताओं के शरीर से प्रकट होने के कारण एक अलग ही स्वरूप लिये हुए था और उसके प्रकाश से तीनों लोक भर गये। तभी भगवान शंकर के तेज से उस देवी का मुख मण्डल प्रकट हुआ। यमराज के तेज से देवी के बाल प्रकट हुए भगवान विष्णु के तेज से देवी की भुजाएँ प्रकट हुई। चन्द्रमा के तेज से देवी के दोनों स्तन उत्पन्न हुए।

इन्द्र के तेज से उसका कटि और उदर प्रदेश प्रकट हुआ। वरूण के तेज से देवी की जंघायें तथा ऊरु स्थल प्रकट हुए। पृथ्वी के तेज से नितम्बों का निर्माण हुआ। ब्रह्मा जी के तेज से देवी के दोनों चरण और सूर्य के तेज से चरणों की उंगलियां और वसुओं के तेज से हाथों की उंगलियाँ पैदा हुई। इसी प्रकार कुबेर के तेज से नासिका यानि नाक का निर्माण हुआ। प्रजापति के तेज से दांतों का, सन्ध्याओं के तेज से दोनों भौए तथा वायु के तेज से दोनों कानों का निर्माण हुआ। इस प्रकार सभी देवताओं के तेज से उस कल्याणकारी देवी जिसका नाम बाद में महिषासुर मर्दिनी पड़ा, का प्रादुर्भाव हुआ। समस्त देवताओं के तेज पुंज से प्रकट हुई देवी को देखकर पीड़ित देवताओं की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। भगवान शिव ने अपने त्रिशूल मे से एक त्रिशूल देवी को दिया। भगवान विष्णु ने अपने चक्र में से एक चक्र देवी को प्रदन किया। इसी प्रकार सभी देवी देवताओं ने अनेक प्रकर अस्त्र–शस्त्र देवी के हाथों मे सजा दिये।

इन्द्र ने अपने वज्र और ऐरावत हाथी से उतर कर एक घण्ट

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देवी को दिया। सूर्य ने अपने रोम कूपों और किरणों का तेज भरकर ढाल, तलवार और दिव्य सिंह यानि शेर को सवारी के लिए उस देवी को अर्पित कर दिया, विश्वकर्मा ने कई अभेद्य कवच और अस्त्र देकर महिषासुर मर्दिनी नामक इस भगवती को सभी प्रकार के बड़े और छोटे अस्त्रों से शोभित किया। थोड़ी देर बाद महिषासुर ने देखा कि एक विशालकाय रूपवान स्त्री अनेक भुजाओं वाली और अस्त्र–शस्त्र से सुसज्जित होकर और शेर पर बैठकर अट्टहास कर रही है। थोड़ी देर बाद महिषासुर की सेना सेनापति आगे बढ़कर देवी के साथ युद्ध करने लगा तो उधर उदग्र नामक महादैत्य भी 60 हजार राक्षसों को लेकर युद्ध में कूद पड़ा। महाहनु नामक दैत्य एक करोड़ रथियों को लेकर अशीलोमा नामक पांच करोड़ सैनिकों को लेकर जब युद्ध करने लगा तो वास्कल नामक राक्षस 60 लाख सैनिकों के साथ युद्ध में कूद पड़ा। सारे देवता एक तरफ इस महायुद्ध को दखने के लिए कोतुहल से खड़े थे। कुछ राक्षसों ने देवी पर अपनी शक्तियों से उत्पन्न अस्त्र–शस्त्र आदि फेके लेकिन देवी भगवती ने राक्षसों द्वारा फेके गये अस्त्र–शस्त्रों को इस प्रकार काट डाला मानो कोई गाजर मूली काट रहा हो।

थोड़ी देर बाद महिषासुर मर्दिनी यानि देवी भगवती अपने शस्त्रों द्वारा राक्षसों की सेना को निशाना बनाने लगी और उनका वाहन शेर भी क्रोधित होकर दहाड़े मारकर राक्षसों की सेना में इस तरह से प्रचण्ड होकर घूमने लगा जैसे कि जंगल में आग लग गई हो। शेर के श्वांस से सैकडों हजारों गण पैदा हो गये उनमे खग भिन्दीपाल, परशु, पटटीस आदि भी राक्षसों की सेना पर टूट पड़े। देवी भगवती ने त्रिशूल, गदा और अन्य शस्त्रों से आक्रमण कर दिया रणचंडीका देवी ने तलवार से सैकड़ों असुरों को एक ही झटके में मौत के घाट उतार दिया। कुछ राक्षस देवी के घण्टे की आवाज से मोहित हो गये देवी ने झट से उन्हें अपने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पाश में बांध कर पृथ्वी पर घसीट कर मार डाला।

देवी की चण्डी ने असुर सेना का इस प्रकार संहार कर दिया मानों तिनके और लकड़ी के ढेर में आग लगा दी हो। इस युद्ध में महिषासुर का वध तो हो ही गया साथ में अनेक अन्य दैत्य और राक्षस भी मारे जिन्होंने तीनों लोकों में आतंक फैला रखा था। सभी देवी देवताओं ने प्रसन्न होकर आकाश से फूलों की वर्षा की। देवी का वाहन शेर भी भयंकर आवाज करता हुआ अपने बालों को हिलाता हुआ झूम रहा था। इस प्रकार सबसे पहले देवी ने देव दानव युद्ध में महिषासुर और अन्य दैत्यों से देवताओं को अभयदान दिलाया। चन्द्रघण्टा की पूजा अर्चना देवी के मण्डपों में बड़े उत्साह और उमंग से की जाती है। इसके स्वरूप के उत्पन्न होने से दानवों का अन्त होना आरम्भ हो गया था। मंडपों में सजे हुए घण्ट और घडियाल बजा **चन्द्रघण्टा की पूजा उस समय की जाती है जब प्रकाश में एक लकीरनुमा चन्द्रमा सायंकाल के समय उदित हो रहा हो।** इसकी पूजा अर्चना करने से न केवल बल ओर बुद्धि का विकास होता है बल्कि युक्ति, शक्ति और प्रकृति भी साधक का साथ देती है। उसकी पूजा अर्चना के बाद जगदम्बा माता की आरती की जाती है।

चौथा दिन कुष्माण्डा नामक दुर्गा के लिए –

माता दुर्गा के चौथे स्वरूप का नाम कुष्माण्डा है। अपनी मन्द हल्की हंसी द्वारा ब्रम्हाण्ड को उत्पन्न करने के कारण इनका नाम कुष्माण्डा पड़ा। नवरात्रों में चौथे दिन कुष्माण्डा देवी के स्वरूप की उपासना की जाती है। इस दिन साधक का मन "अनाहद" चक्र में स्थित होता है। अतः पवित्र मन से पूजा उपासना के कार्य में लगाना चाहिए। माँ की उपासना मनुष्य को स्वभाविक रूप से भवसागर से पार उतरने के लिए सुगम और श्रेयस्कर मार्ग है। माता कुष्माण्डा की उपासना मनुष्य को आधिव्याधियों से विमुक्त

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करके उसे सुख समृद्धि और उन्नति की ओर ले जाती है। अतः अपनी लौकिक पारलौकिक उन्नति चाहने वालों कों कुष्माण्डा की उपासना में हमेशा तत्पर रहना चाहिए।

सुरासम्पूर्णकलशं रुधिराप्लुतमेव च।
दधाना हसतपद्माभ्यां कुष्माण्डा शुभदास्तुमे।।

चौथी दुर्गा कुष्माण्डा त्रिविध तापयुक्त संसार में कुत्सित ऊष्मा को हरने वाली देवी के उदर में पिण्ड और ब्रह्माण्ड के समस्त जठर और अग्नि का स्वरूप समाहित है। कुष्माण्डा देवी ही ब्रह्माण्ड से पिण्ड को उत्पन्न करने वाली दुर्गा कहलाती है। दुर्गा माता का यह चौथा स्वरूप है। इसलिए नवरात्रि में चतुर्थी तिथि को इनकी पूजा होती है। लैकिक स्वरूप में यह बाघ की सवारी करती हुई अष्टभुजाधारी मस्तक पर रत्नजटित स्वर्ण मुकुट वाली एक हाथ में कमंडल और दूसरे हाथ में कलश लिए हुए उज्जवल स्वरूप की दुर्गा है। इसके अन्य हाथों में कमल, सुदर्शन चक्र, गदा, धनुष बाण और अक्षमाला विराजमान है। इन सब उपकरणों को धारण करने वाली कुष्माण्डा अपने भक्तों को रोग, शोक और विनाश से मुक्त करके आयु, यश, बल और बुद्धि प्रदान करती हैं। सप्तशती के चौथे अध्याय में महिषासुर के अन्त के बाद देवताओं द्वारा देवी की स्तुति का वर्णन है। स्वर्ग में जहाँ देवताओं ने अपने गायन नृत्य और स्तुति से अम्बिका का गुणगान किया। वहाँ धरती पर ऋषि मुनियों ने दुर्गा के स्तुति में होम यज्ञ और पाठ करने शुरू कर दिये। दुर्गा के बीज मंत्र ओम् ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे से लाखों बार होम करके दुर्गा माता का इसी तरह से स्वर्ग लोक में देवताओं ने कुष्माण्डा का आवाहन किया।

ओम् जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।।
जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि।
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्ते ते।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मधुकैटभ विद्रा विविधातृवरदे नमः।
रुपं देहि जयं देहि यशोदेहि द्विषो जहि।।
महिषासुरनिर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः।
रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।
रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्डविनाशिनि।
रुपं देहि जयं देहि यशों देहि द्विषो जहि।।
शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।
पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृतानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम्।।

कुष्माण्डा के रूप मे देवी की स्तुति करते हुए ब्रह्मा जी ने कहा कि हे देवी तुम्ही स्वाहा हो तुम्हीं वषट्कार हो। स्वर भी तुम्हारे ही स्वरूप हैं। तुम्ही जीवनदायिनी सुधा हो। नित्य अक्षर प्रणव में अकार, उकार, मकार— इन तीन मात्राओं के रूप में तुम्हीं स्थित हो तथा इन तीन मात्राओं के अतिरिक्त जो बिन्दुरूपा नित्य अर्धमात्रा है, जिसका विशेष रूप से उच्चारण नहीं किया जा सकता वह भी तुम्हीं हो। देवि! तुम्हीं संध्या, सावित्री तथा परम जननी हो। देवि! तुम्हीं इस विश्व ब्रह्माण्ड को धारण करती हो। तुमसे ही इस जगत की सृष्टि होती है। तुम्हीं से इसका पालन होता है और सदा तुम्हीं कल्प के अन्त में सबको अपना ग्रास बना लेती हो। जगन्मयी देवी इस जगत की उत्पत्ति के समय तुम सृष्टिरूपा हो। पालन काल में स्थितिरूपा हो तथा कल्पान्तर के समय संहाररूप धारण करने वाली हो। तुम्हीं महाविद्या महामाया, महामेधा, महास्मृति, महामोहरूपा, महादेवी और महासुरी हो। तुम्हीं तीनों गुणों को उत्पन्न करने वाली सबकी प्रकृति हो। भयंकर कालरात्रि महारात्रि और मोहरात्रि भी तुम्हीं हो। तुम्हीं श्री, तुम्हीं ईश्वरी, तुम्हीं ह्रीं और तुम्हीं बोधस्वरूपा बुद्धि हो। लज्जा, पुष्टि, तुष्टि, शान्ति और क्षमा भी तुम्ही हो। तुम खडगधारिणी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शूलधारिणी, घोररूपा तथा गदा, चक्र, शंख और धनुष धारण करने वाली हो। बाण भुशुण्डी और परिघ–ये भी तुम्हारे अस्त्र हैं। तुम सौम्य और सौम्यतर हो इतना ही नहीं जितने भी सौम्य एवं सुन्दर पदार्थ हैं उन सबकी अपेक्षा तुम अत्यधिक सुन्दरी हो। पर और अपर–सबसे परे रहने वाली परमेश्वरी तुम्हीं हो। सर्वस्वरूपे देवि! कहीं भी सत्–असत् रूप जो कुछ वस्तुएँ हैं और उन सबकी जो शक्ति है वह तुम्हीं हो।

कुष्माण्डा / आदिशक्ति भवानी

नवरात्र पूजन के चौथे दिन कुष्माण्डा देवी के स्वरूप की उपासना की जाती है। कुष्माण्डा माँ दुर्गा का चौथा स्वरूप आइए जानते हैं चौथी देवी माँ कुष्माण्डा के बारे में – नवरात्रि में चौथे दिन देवी को कुष्माण्डा के रूप में पूजा जाता है। अपनी मंद, हल्की हंसी के द्वारा अण्ड यानी ब्रह्मांड को उत्पन्न करने के कारण इस देवी को कुष्माण्डा नाम से अभिहित किया गया है। जब सृष्टि नहीं थी, चारों तरफ अंधकार ही अंधकार था, तब इसी देवी ने अपने हास्य से ब्रह्मांड की रचना की थी। इसीलिए इसे सृष्टि की आदिस्वरूपा या आदिशक्ति कहा गया है।

इस देवी की आठ भुजाएं हैं, इसलिए अष्टभुजा कहलाईं। इनके सात हाथों में क्रमशः कमण्डल, धनुष, बाण, कमल–पुष्प, अमृतपूर्ण कलश, चक्र तथा गदा है। आठवें हाथ में सभी सिद्धियों और निधियों को देने वाली जप माला है। इस देवी का वाहन सिंह है और इन्हें तुम्बड़े / कुम्हड़े / लौकी / कददू की बलि प्रिय है। संस्कृत में कुम्हड़े को कुष्मांड कहते हैं इसलिए इस देवी का कुष्माण्डा कहा जाता है। इस देवी का वास सूर्यमंडल के भीतर लोक में है। सूर्यलोक मे रहने की शक्ति क्षमता केवल इन्हीं मे है। इसीलिए इनके शरीर की कांति और प्रभा सूर्य की ही दैदीप्यमान है। इनके ही तेज से दसों दिशाएं आलोकित हैं। ब्रह्मांड की सभी वस्तुओं और प्राणियों में इन्हीं का तेज व्याप्त है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अचंचल और पवित्र मन से नवरात्रि के चौथे दिन इस देवी की पूजा आराधना करना चाहिए। इससे भक्तों के रोगों और शोकों का नाश होता है। तथा उसे आयु, यश, बल और आरोग्य प्राप्त होता है। यह देवी अल्प सेवा और भक्ति से ही प्रसन्न होकर आशिर्वाद देती है। सच्चे मन से पूजा करने वाले को सुगमता से परम पद प्राप्त होता है। विधि–विधान से पूजा करने पर भक्त को कम समय मे ही कृपा का सूक्ष्म भाव अनुभव होने लगता है। यह देवी आधियों–व्याधियों से मुक्त करती है और उसे सुख समृद्धि और उन्नति प्रदान करती है। अंततः इस देवी की उपासना में भक्तों को सदैव तत्पर रहना चाहिए।

सुरा सम्पूर्ण कलशं रुधिराप्लुतमेव च। दधाना
हस्तपद्माभ्यां कुष्मांडा शुभदास्तु मे।।

पांचवां दिन स्कन्दमाता नामक दुर्गा के लिए –

माँ दुर्गा के पांचवे स्वरूप को स्कन्दमाता कहा जाता है। ये भगवान स्कन्द "कुमार कार्तिकेय" की माता के नाम से भी जाने जाती हैं। इन्हीं भगवान स्कन्द अर्थात कार्तिकेय की माता होने के कारण मां दुर्गा के इस पांचवे स्वरूप को स्कन्दमाता के नाम से जाना जाता है। इनकी उपासना नवरात्रि पूजा के पांचवे दिन की जाती है। इस दिन साधक का मन "विशुद्ध" चक्र में स्थित रहता है। इनका वर्ण शुभ है। कमल के आसन पर विराजमान है। इसलिए इन्हें पद्मासन देवी भी कहा जाता है। इनका वाहन भी सिंह है। नवरात्र पूजन के पांवचे दिन का शास्त्रों में इसका महत्व बताया गया है। इस चक्र में अवस्थित रहने वाले साधक की समस्त बाह्य क्रियाएँ एवं चित्त वृत्तियों का लोप हो जाता है।

सिंहासानगता नितयं पद्माश्रितकरद्वया।
शुभदास्तु सदा देवी स्कन्दमाता यशस्विनी।।

पांचवी दुर्गा स्कन्दमाता श्रुति समृद्धि से युक्त छान्दोग्य उपनिषद के प्रवर्तक सनत्कुमार की माता भगवती का नाम स्कन्द

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

है। अतः उनकी माता होने से कल्याणकारी शक्ति की अधिष्ठात्री देवी को पांचवी दुर्गा स्कन्दमाता के रूप में पूजा जाता है। नवरात्रि में इसकी पूजा अर्चना का विशेष विधान है। अपने सांसारिक स्वरूप में यह देवी सिंह की सवारी पर विराजमान है। तथा चतुर्भुज इस दुर्गा का स्वरूप दोनों हाथों में कमलदल लिये हुए और एक हाथ से अपनी गोद में ब्रह्मस्वरूप सनत्कुमार को थामे हुए है। यह दुर्गा समस्त ज्ञान विज्ञान धर्म कर्म और कृषि उद्योग सहित पंच आवरणों से समाहित विद्यावाहिनी दुर्गा भी कहलाती है। चौथे और पांचवे अध्याय में जब समस्त देवतागण और महेश जी महिषासुर के वध के उपरान्त पूजनीय जगदम्बा को भक्तिपूर्वक नमस्कार करने गये तो देवी भगवती के अद्वितीय आभामंडल को देखकर चकित रह गये। सभी देवताओं ने सिर झुकाकर भगवती दुर्गा को नमस्कार किया।

देवताओं के मुख से पंचम देवी स्कन्दमाता से अभिप्राय, हे देवि! आपके इस अचिन्त्य रूप का... असुरों का नाश करने वाले भारी पराक्रम का, तथा समस्त देवताओं और दैत्यों के समक्ष युद्ध में प्रकट किये हुए आपके आद्भुत चरित्रों का हम किस प्रकार से वर्णन करें। आप सम्पूर्ण जगत की उत्पत्ति में कारण हैं आप में सत्वगुण रजोगुण और तमोगुण ये तीनों गुण मौजूद हैं तो भी दोषों के साथ आपका संसार नहीं जान पड़ता। भगवान विष्णु और महादेवजी आदि देवता भी आपका पार नहीं पाते। आप ही सबका आश्रय हैं। यह समस्त जगत आपका अंशभूत है क्योंकि आप सबकी आदिभूत अव्यक्तता परा प्रकृति है। देवि! सम्पूर्ण यज्ञों में जिसके उच्चारण से सब देवता तृप्ति लाभ करते हैं वह स्वाहा आप ही है। इसके अतिरिक्त आप पितृों की भी तृप्तिका कारण हैं अतएव संत लोग आपको स्वधा भी कहते हैं। देवि! जो मोक्ष की प्राप्ति का साधन है अचिन्त्य महाव्रतस्वरूपा है समस्त दोषों से रहित जितेन्द्रिय तत्व को ही सार वस्तु मानने वाले तथा मोक्ष की

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अभिलाषा रखने वाले मुनिजन जिसका अभ्यास करते हैं वह भगवती परा विद्या आप ही हैं आप शब्दस्वरूपा हैं अत्यन्त निर्मल ऋग्वेद यजुर्वेद तथा उदीग्ध के मनोहर पदो के पाठ से युक्त सामवेद का भी आधारआप ही हैं। आप देवी त्रयी (तीनों वेद) और भगवती (छहों ऐश्वर्यों से युक्त) हैं। इस विश्व की उत्पत्ति एवं पालन का नाश करने वाली हैं। देवि! जिससे समस्त शास्त्रों के सार का ज्ञान होता है वह मेधाशक्ति आप ही हैं। दुर्गम भवसागर से पार उतारने वाली नोकारूप दुर्गादेवी भी आप ही हैं। आपकी कहीं भी आसक्ति नहीं है। कैटभ के शत्रु भगवान विष्णु के वक्ष स्थल में एकमात्र निवास करने वाली भगवती लक्ष्मी तथा भगवान चन्द्रशेखर द्वारा सम्मानित गौरी देवी भी आप ही हैं। आपका मुख मन्द मुस्कान से सुशोभितनिर्मल पूर्ण चन्द्रमा के बिम्ब का अनुकरण करने वाला और उत्तम सुवर्ण की मनोहर कान्ति से कमनीय है तो भी उसे देखकर महिषासुर को क्रोध हुआ और सहसा उसने उस पर प्रहार कर दिया यह बड़े आश्चर्य की बात है। देवि! वहीं मुख जब क्रोध से युक्त होने पर उदयकाल के चन्द्रमा की भांति लाल और तनी हुई भौहों के कारण विकराल हो उठा तब उसे देखकर जो महिषासुर के प्राण नहीं निकले।

स्कन्दमाता / पदमासना / नवरात्रि का पाँचवां दिन

स्कंदमाता की उपासना का दिन होता है। मोक्ष के द्वार खोलने वाली माता परम सुखदायी हैं। माँ अपने भक्तों की समस्त इच्छाओं की पूर्ति करती हैं। स्कंदमाता माँ दुर्गा का पांचवा स्वरूप आइए जानते हैं माँ दुर्गा का पांचवा रूप स्कंदमाता के बारे में इस देवी की चार भुजाएँ हैं। यह दायीं तरफ की ऊपरी वाली भुजा से स्कंद को गोद में पकड़े हुए हैं। नीचे वाली भुजा में कमल का पुष्प है। बायीं तरफ ऊपर वाली भुजा में वरमुद्रा में हैं और नीचे वाली भुजा में कमल पुष्प है। पहाड़ों पर रहकर सांसारिक जीवों में नवचेतना का निर्माण करने वालीं स्कंदमाता नवरात्रि में पाँचवें

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दिन इस देवी की पूजा–अर्चना की जाती है। कहते हैं कि इनकी कृपा से मूढ़ भी ज्ञानी हो जाता है। स्कंद कुमार कार्तिकेय की माता के कारण इन्हें स्कंदमाता नाम से अभिहित किया गया है। इनके विग्रह में भगवान स्कंद बालरूप में इनकी गोद में विराजित हैं। इनका वर्ण एकदम शुभ्र हैं यह कमल के आसन पर विराजमान रहती हैं। इसलिए इन्हें पद्मासना भी कहा जाता है। सिंह इनका वाहन है। शास्त्रों में इसका पुष्कल महत्व बताया गया है। इनकी उपासना से भक्त की सारी इच्छाएँ पूरी हो जाती हैं। भक्त को मोक्ष मिलता है। सूर्यमंडल की अधिष्ठात्री देवी होने के कारण इनका उपासक अलौकिक तेज और कांतिमय हो जाता है। अतः मन को एकाग्र रखकर और पवित्र रखकर इस देवी की आराधना करने वाले साधक या भक्त को भवसागर पार करने में कठिनाई नहीं आती है।

उनकी पूजा से मोक्ष का मार्ग सुलभ होता है। यह देवी विद्वानों और सेवकों को पैदा करने वाली शक्ति है। यानी चेतना का निर्माण करने वाली कहते हैं।

सिंहा सना गता नित्यं पद्माश्रितकरद्वया। शुभदास्तु
सदा देवी स्कंदमाता यशस्विनी।।

चैत्र नवरात्रि –

चैत्र नवरात्र इसे वासन्ती नवरात्र भी कहा जाता है। क्योंकि ये वसंत ऋतु में आते हैं। देवी भागवत ग्रंथ के अनुसार वैसे तो मां दुर्गा का वाहन सिंह है, लेकिन इसी ग्रन्थ मे बताया है कि हर साल नवरात्र पर देवी अलग–अलग वाहनों पर सवार होकर धरती पर आती हैं। देवी के अलग–अलग वाहनों पर सवार होकर आने से देश और जनता पर इसका असर भी अलग–अलग होता पड़ता है।

देवी भागवत ग्रन्थ के अनुसार –

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शशिसूर्ये गजारुढ़ा शनिभौमे तुरंगमें।
गुरौ शुक्रे चदोलायां बुधे नौका प्रकीत्तिता।।

- सोमवार या रविवार को घट स्थापना होने पर मां दुर्गा हाथी पर सवार होकर आती है।
- शनिवार या मंगलवार को नवरात्रि की शुरुआत होने पर देवी का वाहन घोड़ा माना जाता है।
- गुरुवार या शुक्रवार को नवरात्र शुरु होने पर देवी डोली में बैठकर आतीं है।
- बुधवार से नवरात्र शुरू होने पर मां दुर्गा नाव पर सवार होकर आती हैं।

देवी के वाहन का शुभ–अशुभ असर –

माता दुर्गा जिस वाहन से पृथ्वी पर आती हैं, उसके अनुसार सालभर होने वाली घटनाओं का भी आंकलन किया जाता है।

देवी जब हाथी पर सवार होकर आती हैं तो पानी ज्यादा बरसता है। घोड़े पर आती हैं तो पड़ोसी देशों से युद्ध की आशंका बढ़ जाती है। देवी नौका पर आती हैं तो सभी की मनोकामनाएँ पूरी होती हैं और डोली पर आती हैं तो महामारी का भय बना रहता है।

कौन से वाहन पर सवार होकर जाती हैं देवी –

माता दुर्गा आती भी वाहन से हैं और जाती भी वाहन से हैं। यानि जिस दिन नवरात्र का अंतिम दिन होता है, उसी के अनुसार देवी का वाहन भी तय होता है। देवी भागवत के अनुसार –

श्लोक –

शशि सूर्य दिने यदि सा विजया महिषागमने रुज शोककरा।
शनि भौमदिने यदि सा विजया चरणायुध यानि करी विकला।।
बुधशुक्र दिने यदि सा विजया गजवाहन गा शुभ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वृष्टिका।

सुरराजगुरौ यदि सा विजया नरवाहन गा शुभ सौख्य करा।।

- रविवार या सोमवार को देवी भैंसे की सवारी से जाती हें तो देश में रोग और शोक बढ़ता है।
- शनिवार या मंगलवार को देवी मुर्गे पर सवार होकर जाती हैं, जिससे दुख और कष्ट की वृद्धि होती है।
- बुधवार या शुक्रवार को देवी हाथी पर जाती हैं, इससे बारिश ज्यादा होती है।
- गुरुवार को मां दुर्गा मनुष्य की सवारी से जाती है, इससे जो सुख और शान्ति की वृद्धि होती है।

शैलपुत्री –

दुर्गाजी पहले स्वरूप में **"शैलपुत्री"** के नाम से जानी जाती हैं। ये ही नवदुर्गाओं में प्रथम दुर्गा हैं। पर्वतराज हिमालय के घर पुत्री रूप में उत्पन्न होने के कारण इनका नाम शैलपुत्री पड़ा। नवरात्र पूजन में प्रथम दिवस इन्हीं की पूजा और उपासना की जाती है।

शैलपुत्री : माँ दुर्गा का पहला रूप देवी शैलपुत्री का पूजन

नवरात्रि में दुर्गा पूजा के अवसर पर बहुत ही विधि–विधान से माता दुर्गा के नौ रूपों की पूजा उपासना की जाती है। आइए जानते हैं प्रथम देवी शैलपुत्री के बारे में :–

माँ दुर्गा को सर्वप्रथम शैलपुत्री के रूप में पूजा जाता है। हिमालय के वहाँ पुत्री के रूप में जन्म लेने के कारण उनका नामकरण हुआ शैलपुत्री। इनका वाहन वृषभ है, इसलिए यह देवी वृषा रूढा के नाम से भी जानी जाती है। इस देवी ने दाएं हाथ में त्रिशूल धारण कर रखा है। और बांए हाथ में कमल सुशोभित है। यही सती के नाम से भी जानी जाती हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ब्रह्मचारिणी

देवी का यह रूप पूर्ण ज्योतिर्मय और अत्यंत भव्य है। इस देवी के दाएं हाथ में जप की माला है और बाएं हाथ में यह कमण्डल धारण किए हैं। पूर्वजन्म में इस देवी ने हिमालय के घर पुत्री रूप में जन्म लिया था और नारदजी के उपदेश से भगवान को पति रूप में प्राप्त करने के लिए घोर तपस्या की थी। इस कठिन तपस्या के कारण इन्हें तपश्चारिणी अर्थात ब्रह्मचारिणी नाम दिया गया । एक हजार वर्ष तक इन्होंने केवल फल–फूल खाकर बिताए और सौ वर्षो तक केवल जमीन पर रहकर शाक पर निर्वाह किया।

कुछ दिनों तक कठिन उपवास रखे और खुले आकांश के नीचे वर्षा और धूप के घोर कष्ट सहे। तीन हजार वर्षों तक टूटे हुए बिल्व पत्र खाए और भगवान शंकर की आराधना करती रहीं। इसके बाद तो उन्होंने सूखे बिल्व पत्र खाना भी छोड़ दिए। कई हजार वर्षों तक निर्जल और निराहार रह कर तपस्या करती रहीं। पत्तों को खाना छोड़ देने के कारण ही इनका नाम अपर्णा नाम पड गया।

कठिन तपस्या के कारण देवी का शरीर एकदम क्षीण हो गया। देवता, ऋषि, सिद्धगण, मुनि सभी ने ब्रह्मचारिणी की तपस्या को अभूतपूर्व पुण्य कृत्य बताया, सराहना की और कहा– हे देवी आज तक किसी ने इस तरह की कठोर तपस्या नहीं की। यह तुम्हीं से ही संभव थी। तुम्हारी मनोकामना परिपूर्ण होगी और भगवान चंद्रमौलि शिवजी तुम्हें पति रूप में प्राप्त होंगे। अब तपस्या छोड़कर घर लौट जाओ। जल्द ही तुम्हारे पिता तुम्हें बुलाने आ रहे हैं। माँ बंह्मचारिणी देवी की कृपा से सर्वसिद्धि प्राप्त होती है। इस देवी की कथा का सार यह है कि जीवन के कठिन संघर्षों में भी मन विचलित नहीं होना चाहिए।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चंद्रघंटा –

चन्द्रघंटा माँ दुर्गा का तीसरा स्वरूप है आइए जानते हैं तीसरी देवी चन्द्रघंटा के बारे में– इस देवी की कृपा से साधक को अलौकिक वस्तुओं के दर्शन होते हैं। दिव्य सुगंधियों का अनुभव होता है और कई तरह की ध्वनियाँ सुनाई देने लगती हैं। माँ दुर्गा की तीसरी शक्ति हैं चंद्रघंटा। देवी का यह स्वरूप परम शांतिदायक और कल्याणकारी है। इसीलिए कहा जाता है कि हमें निरंतर उनके पवित्र विग्रह को ध्यान में रखकर साधना करना चाहिए। उनका ध्यान हमारे इहलोक और परलोक दोनों के लिए कल्याणकारी और सद्गति देने वाला है। इस देवी के मस्तक पर घंटे के आकार का आधा चंद्र है इसीलिए इस देवी को चंद्रघंटा कहा गया है। इनके शरीर का रंग सोने के समान बहुत चमकीला है। इस देवी के दस हाथ हैं। सवार इस देवी की मुद्रा युद्ध के लिए उद्धत रहने की है। इसके घंटे सी भयानक ध्वनि से अत्याचारी दानव–दैत्य और राक्षस काँपते रहते हैं। इन क्षणों में साधक को बहुत सावधान रहना चाहिए।

कात्यायनी –

माँ दुर्गा के छठे स्वरूप का नाम कात्यायनी है। योगसाधना में इस आज्ञा चक्र का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। कात्यायनी माँ दुर्गा का छठवां स्वरूप आइए जानते हैं छठवीं देवी कात्यायनी के बारे में – नवरात्रि में छठे दिन माँ कात्यायनी की पूजा की जाती है। इनकी उपासना और आराधना से भक्तों को बड़ी आसानी से अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष चारों फलों की प्राप्ति होती है। उसके रोग, शोक, संताप और भय नष्ट हो जाते हैं। जनमों के समस्त पाप भी नष्ट हो जाते हैं। इस देवी को नवरात्रि में छठें दिन पूजा जाता है। कात्य गोत्र में विश्वप्रसिद्ध महर्षि कात्यायन ने भगवती पराम्बा की उपासना की। कठिन तपस्या की। उंनकी इच्छा थी कि उन्हें पुत्र प्राप्त हो। माँ भगवती ने उनके घर पुत्री के रूप में

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जन्म लिया। इसलिए यह देवी कात्यायनी कहलाई। इनका गुण शोधकार्य है। इनकी कृपा से सारे कार्य पूरे हो जाते हैं। यह वैद्यनाथ नामक स्थान पर प्रकट होकर पूजी गई।

माँ कात्यायनी अमोघ फलदायिनी हैं। भगवान कृष्ण को पति रूप में पाने के लिए ब्रज की गोपियों ने इन्हीं की पूजा की थी। यह पूजा कालिंदी यमुना के तट पर की गई थी। इसीलिए यह ब्रजमंडल की अधिष्ठात्री देवी के रूप में प्रतिष्ठित है। इनका स्वरूप अत्यंत भव्य और दिव्य है। यह स्वर्ण के समान चमकीली हैं और भास्वर हैं। इनकी चार भुजाएँ हैं। दायीं तरफ का ऊपर वाला हाथ अभयमुद्रा में है तथा नीचे वाला हाथ वर मुद्रा में। माँ के बाँयीं तरफ के ऊपर वाले हाथ में तलवार व नीचे वाले हाथ में कमल का फूल सुशोभित है। इनका वाहन भी सिंह है। इसलिए कहा जाता है कि इस देवी की उपासना करने से परम पद की प्राप्ति होती है।

चंद्रहासोज्ज्वलकरा शार्दूलवरवाहना। कात्यायनी शुभं दद्याद्देवी दानवघातिनी।।

जिनका हाथ उज्जवल चन्द्रहास (चलवार) से सुशोभित होता है तथा सिंह प्रवर जिनका वाहन है वे दानव संहारिणी दुर्गा देवी कात्यायनी मंगल प्रदान करें।

कालरात्रि –

माँ दुर्गाजी की सातवीं शक्ति कालरात्रि के नाम से जानी जाती हैं। दुर्गापूजा के सातवे दिन माँ कालरात्रि की उपासना का विधान है। इस दिन साधक का मन "सहस्त्रार" चक्र में स्थित रहता है। इसके लिए ब्रह्मांड की समस्त सिद्धियों का द्वार खुलने लगता है। कालरात्रि माँ दुर्गा का सातवां स्वरूप आइए जानते हैं सातवीं देवी कालरात्रि के बारे में– कालरात्रि की उपासना करने से ब्रह्मांड की सारी सिद्धियों के दरवाजे खुलने लगते हैं और तमाम असुरी शक्तियां उनके नाम के उच्चरण से ही भयभीत

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

होकर दूर भागने लगती हैं। नाम से अभिव्यक्त होता है कि माँ दुर्गा की यह सातवीं शक्ति कालरात्रि के नाम से जानी जाती है अर्थात जिनके शरीर का रंग घने अंधकार की तरह एकदम काला है। नाम से ही जाहिर है कि इनका रूप भयानक हैं सिर के बाल बिखरे हुए हैं और गले में विद्युत की तरह चमकने वाली माला हैं अंधकारमय स्थितियों का विनाश करने वाली शक्ति है कालरात्रि। काल से भी रक्षा करने वाली यह शक्ति है।

इस देवी के तीन नेत्र हैं। यह तीनों ही नेत्र ब्रह्मांड के समान गोल हैं। इनकी सांसों से अग्नि निकलती रहती है। यह गर्दभ की सवारी करती हैं। ऊपर उठे हुए दाहिने हाथ की व मुद्रा भक्तों को वर देती है। दाहिनी ही तरफ का नीचे वाला हाथ अभय मुद्रा में हैं। यानि भक्तों हमेशा निडर, निर्भय रहो। बायीं तरफ के ऊपर वाले हाथ में लोहे का कांटा तथा नीचे वाले हाथ में खड्ग है। इनका रूप भले ही भयंकर हो लेकिन यह सदैव शुभफल देने वाली माँ है। इसलिए यह शुभंकरी कहलाई अर्थात इनसे भक्तो को किसी भी प्रकार से भयभीत या आतंकित होने की कतई आवश्यकता नहीं। उनके साक्षात्कार से भक्त पुण्य का भागी बनता है।

कालरात्रि की उपासना करने से ब्रह्मांड की सारी सिद्धियों के दरवाजे खुलने लगते हैं और तमाम असुरी शक्तियां उनके नाम के उच्चारण से ही भयभीत होकर दूर भागने लगती हैं। इसलिए दानव, दैत्य, राक्षस और भूत–प्रेत उनके स्मरण से ही भाग जाते हैं। यह ग्रह बाधाओं को भी दूर करती हैं और अग्नि, जल, जंतु, शत्रु और रात्रि भय दूर हो जाते हैं। इनकी कृपा से भक्त हर तरह के भय से मुक्त हो जाता है। इनका पूजन, अराधना करने पर बकरे की बली देना अनिवार्य है जो बकरे की बली नही दे सकते उनको तुमडे या कुष्माण्ड की बली देना होती है। परन्तु पूर्ण फल की प्राप्ती के लिए बकरे की बली लगती है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एकवेणी जपाकर्णपूरा नग्ना खरास्थिता।
लम्बोष्ठी कर्णिकाकर्णी तैलाभ्यक्तशरीरिणी।।
वामपादो ल्लसल्लोहलता कण्टक भूषणा।
वर्धन मूर्धध्वजा कृष्णा कालरात्रि र्भयंकरी।।

कालरात्रि की पूजा का विधान –

श्री माँ आदि शक्ति के इस सातवें विग्रह को कालरात्रि के नाम से संसार में ख्याति प्राप्त हैं इनकी कालरात्रि की पूजा स्तुति नवरात्रि के सातवे दिन करने का विधान होता है। यह अपने भक्तों को संकट से बचाने तथा स्मरण मात्र से अनेक प्रकार के भय को दूर करने वाली प्रेतिक बाधा को हरने वाली है तथा हर प्रकार से भक्तजनों का कल्याण करती है। यद्यपि इनका रूप बड़ा ही भयानक दिखाई देता है किन्तु यह परम कल्याण प्रद है। अतः किसी को डरने की जरूरत नहीं है।

भक्त को माँ मनवांछित फल देने वाली है। अर्थात माँ की कृपा को प्राप्त करने हेतु श्रद्धालु भक्तों को पहले के दिनों की तरह नित्यादि शचि कर्मो को करते हुए पूजन की जरूरी सामग्री एकत्रित करके तथा सुवासित जल, तीर्थ जल, गंगा जल आदि सहित पंचमेवा व पंचामृत, पुष्प, गंध, अक्षत आदि से विविध प्रकार से पूजन करने का विधान है।

इनकी कृपा से व्यक्ति के जीवन से प्रेतिक भय, दुःख, रोग, शोक आदि दूर रहते हैं। इस संसार में उसे कुछ भी दुर्लभ नहीं रहता है। प्रत्यक्ष व परोक्ष शत्रुओं का नाश होता है। इनकी पूजा में पवित्रता, शुद्धता, संयम, ब्रह्मचर्य का पालन तथा सत्य मार्ग का अनुसरण करने का विधान होता हैं, पूजा में श्रद्धा, विश्वास, शुद्ध भावना होना चाहिए। अहंकार, लोभ, झूठ, क्रोध, मोह का त्याग करने का विधान है। जो व्यक्ति अन्याय व गलत काम करता है, उसे माँ दण्ड भी देने से परहेज नहीं करती हैं। क्योंकि यह प्रत्यक्ष

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रूप में आज कलयुग में भी मुखर है। इनकी साधना यदि शास्त्रीय विधि से की जाए तो तत्काल फल प्राप्त होता है। इसमे तनिक भी संदेह नहीं है। काली कलकत्ते वाली का नाम कौन है जो नहीं जानता? माँ काली की पूजा व अर्चना यद्यपि सम्पूर्ण भारत व विश्व के अन्य देशों में होती है। किन्तु बंगाल व असम में उनकी पूजा बड़े ही धूम–धाम से होती है।

महागौरी –

माँ दुर्गा कि आठवीं शक्ति का नाम महागौरी है। दुर्गापूजा के आठवें दिन महागौरी की उपासना का विधान है। इनकी शक्ति अचूक और सत्य फलदायिनी है। इनकी उपासना से भक्तों के सभी पाप धुल जाते हैं, पूर्वसंचित पाप भी नष्ट हो जाते हैं। महागौरी माँ दुर्गा का अठवां स्वरूप आइए जानते हैं आठवीं देवी महागौरी के बारे मे – यह अचूक फलदायिनी है। महागौरी का पूजन–अर्चन, उपासना–आराधना कल्याणकारी है। इनकी कृपा से अलौकिक सिद्धियां भी प्राप्त होती हैं।

नवरात्रि में आठवें दिन महागौरी शक्ति की पूजा की जाती है। नाम से प्रकट है कि इनका रूप पूर्णतः गौर वर्ण है। इनकी उपमा शंख, चंद्र और कुंद के फूल से दी गई हैं। अष्टवर्षा भवेद् गौरी यानी इनकी आयु आठ साल की मानी गई है। इनके सभी आभूषण और वस्त्र सफेद हैं। इसलिए उन्हें श्वेताम्बरधरा कहा गया है। चार भुजाएं हैं और वाहन वृषभ है इसलिए वृषारूढ़ा भी कहा गया है।

इनके ऊपर वाला दाहिना हाथ अभय मुद्रा है तथा नीचे वाला हाथ त्रिशूल धारण किया हुआ है। ऊपर वाले बांए हाथ में डमरू धारण कर रखा है और नीचे वाले हाथ में वर मुद्रा है। इनकी पूरी मुद्रा बहुत शांत हैं। पति रूप में शिव को प्राप्त करने के लिए महागौरी ने कठोर तपस्या की थी। इसी वज़ह से इनका शरीर काला पड़ गया लेकिन तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इनके शरीर को गंगा के पवित्र जल से धोकर कांतिमय बना दिया। उनका रूप गौर वर्ण का हो गया इसलिए यह महागौरी कहलाई।

श्वेतवृषे समारूढ़ा श्वेताम्बरधरा शुचिः। महागौरी शुभं दद्यान्महादेवप्रमोदया।।

महागौरी के शरीर को पवित्र गंगाजल से मलकर धोया तब इनके वस्त्र और आभूषण आदि भी शुभ्र यानि कि श्वेत ही है। इनकी चार भुजांए हैं। इनका स्वभाव अति शांत है। संकट से मुक्ति मिलती है और धन, सम्पत्ति और श्री की वृद्धि होती है। इस नाड़ी के सूक्ष्म गुण–भावना, पवित्रता, अस्तित्व आनंद इच्छा व मांगल्य हैं इस नाड़ी में किसी भी प्रकार की बाधा होने पर बालस, अंधश्रद्धा, अंधविश्वास, अपराध की भावना, कामुक व अश्लील लेखन या वाचन करना आदि अवगुण आ जाते हैं। समस्त प्रकार के सुखों के लिए आज के दिन माँ को धान के हलवे का भोग लगायें। नारियल अर्पित करें, पूजा के बाद नारियल का दान कर दें, इससे संतान संबंधी परेशानियों से छुटकारा मिलता है।

सिद्धिदात्री –

माँ दुर्गाजी की नौवीं शक्ति का नाम सिद्धिदात्री है। ये सभी प्रकार की सिद्धियों को देने वाली हैं। नवरात्र पूजन के नौवें दिन इनकी उपासना की जाती है। इस दिन शास्त्रीय विधि–विधान और पूर्ण निष्ठा के साथ साधना करने वाले साधक को सभी सिद्धियों की प्राप्ति हो जाती है। सिद्धिदात्री माँ दुर्गा का नौवां रूप आइए जानते हैं नौवीं देवी सिद्धिदात्री के बारे में– भगवान शिव ने भी इस देवी की कृपा से यह तमाम सिद्धियां प्राप्त की थीं। इस देवी की कृपा से ही शिवजी का आधा शरीर देवी का हुआ था। इसी कारण शिव अर्द्धनारीश्वर नाम से प्रसिद्ध हुए।

इस देवी की पूजा नौंवे दिन की जाती है। यह देवी सर्व सिद्धियां प्रदान करने वाली देवी है। उपासक या भक्त पर इनकी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कृपा से कठिन से कठिन कार्य भी चुटकी में संभव हो जाते हैं। हिमाचल के नंदापर्वत पर इनका प्रसिद्ध तीर्थ है। अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व आठ सिद्धियां होती हैं। इसलिए इस देवी की सच्चे मन से विधि–विधान से उपासना–आराधना करने से यह सभी सिद्धियां प्राप्त की जा सकती हैं। भगवान शिव ने भी इस देवी की कृपा से यह तमाम सिद्धियां प्राप्त की थीं। इस देवी के दाहिनी तरफ नीचे वाले हाथ में चक्र, ऊपरे वाले हाथ में गदा तथा बायीं तरफ के नीचे वाले हाथ में शंख और ऊपर वाले हाथ में कमल का पुष्प है। इनका वाहन सिंह है और यह कमल पुष्प पर भी आसीन होती हैं। विधि–विधान से नौंवे दिन इस देवी की उपासना करने से सिद्धियां प्राप्त होती हैं। यह अंतिम देवी है। इनकी साधना करने से लौकिक और परलौकिक सभी प्रकार की कामनाओं की पूर्ति हो जाती है।

माँ के चरणों में शरणागत होकर हमें निरंतर नियमनिष्ठ रहकर उपासना करना चाहिए। इस देवी का स्मरण, ध्यान, पूजन हमें इस संसार की असारता या सार रहित का बोध कराते हैं और अमृत पद की ओर ले जाते हैं।

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारणी तृतीयं चंद्रघंटेति कुष्माण्डेति चतुर्थकम पंचमं स्कन्दमातेती षष्ठम कात्यायनीति च सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम नवमं सिद्धि दात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नवरात्र शक्ति उपासना का पर्व क्यों?

शक्ति की उपासना का पर्व शारदीय नवरात्र प्रतिपदा से नवमी तक निश्चित नौ तिथि, नौ नक्षत्र, नौ शक्तियों की नवधा भक्ति के साथ सनातन काल से मनाया जा रहा हैं सर्वप्रथम श्रीरामचन्द्रजी ने इस शारदीय नवरात्रि पूजा का प्रारंभ समुद्र तट पर किया था ओर उसके बाद दसवें दिन लंका विजय के लिए प्रस्थान किया और विजय प्राप्त की। तब से असत्य, अधर्म पर सत्य धर्म की जीत का पर्व दशहरा मनाया जाने लगा। आदिशक्ति के हर रूप की नवरात्र के नौ दिनों में क्रमशः अलग–अलग पूजा की जाती है। **माँ दुर्गा की नौवीं शक्ति का नाम सिद्धिदात्री** है। ये सभी प्रकार की सिद्धियाँ देने वाली हैं। इनका **वाहन सिंह** है और कमल पुष्प पर ही आसीन होती है। नवरात्रि के नौवें दिन इनकी उपासना की जाती है।

नवदुर्गा और दस महाविद्याओं में **काली ही प्रथम प्रमुख** है। भगवान शिव की शक्तियों में उग्र और सौम्य, दो रूपों में अनेक रूप धारण करने वाली दस महाविद्या अनंत सिद्धियाँ प्रदान करने में समर्थ है। दसवें स्थान पर **कमला वैष्णवी शक्ति** हैं, जो प्राकृतिक संपत्तियों की अधिष्ठात्री देवी, लक्ष्मी हैं। देवता, मानव, दानव सभी इनकी कृपा के बिना पंगु हैं, इसलिए आगम–निगम दोनों में इनकी उपासना समान रूप से वर्णित है।

भक्ति भाव से नवरात्रि मनाएँ, नवरात्रि के पवित्र दिनों का पूजन–विधान –

वैदिक ग्रंथों में वर्णन है कि इस पृथ्वी को बचाएँ रखने के लिए युगों से देव व दानवों में ठनी रही। देवता जो कि परोपकारी कल्याणकारी, धर्म व भक्तों के रक्षक हैं। वहीं दानव अर्थात् राक्षस इसके विपरीत हैं। इसी क्रम में जब रक्तबीज, महिषासुर जैसे दैत्यों ने अपनी ताकत के अभिमान में अत्याचार कर धरती को पीड़ित करने लगे तो देवगणों ने एक अद्‌भुत शक्ति का सृजन कर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसे विविध प्रकार के अमोघ अस्त्र प्रदान किये। जो आदिशक्ति माँ दुर्गा के नाम से सम्पूर्ण ब्रह्मांड में व्याप्त हुई। भक्तों की रक्षा व देव कार्य अर्थात् कल्याण के लिए भगवती दुर्गा ने नौदिनों में नौ रूपों जयंती, मंगला, काली, भद्रकाली, कपालिनी, दुर्गा, क्षमा, शिवा, धात्री, स्वाहा, स्वधा को प्रकट किया। जिन्होंने नौ दिनों तक महाभयानक युद्ध कर शुंभ–निशुंभ, रक्तबीज आदि अनेकों दैत्यों का वध कर दिया।

उन्हीं देवियों की आराधना नौ दिनों तक **विशेष पवित्रता से** की जाती है। नौ देवियों में प्रथम श्री शैलपुत्री, द्वितीय श्री ब्रह्मचारिणी, तृतीय श्री चन्द्रघंटा, चतुर्थ श्री कुष्मांडा, पंचम श्री स्कंदमाता, षष्टम श्री कात्यायनी, सप्तम श्री कालरात्रि, अष्टम श्री महागौरी, नवम श्री सिद्धिदात्री की पूजन व हवनादि यज्ञ क्रियाओं का आयोजन किया जाता है।

नवरात्रों में रंगों का विशेष महत्व है। रंग प्रत्येक व्यक्ति को बड़ी तीव्रता से प्रभावित करते हैं इसलिए नवरात्रि में सफेद व लाल रंग का प्रयोग व कपड़े शुभ माने गए हैं। दूसरे में केशरिया, पीला व हल्का पीला रंग, तीसरे में लाल, चौथे में नीला–सफेद व केसरिया रंग, पाँचवे में हरा, लाल, सफेद, छठें में लाल–सफेद, सातवें में नीला–सफेद, आठवें में लाल– केशरिया– पीला– सफेद– गुलाबी तथा नौवे दिन लाल, सफेद रंग बहुत अच्छे माने जाते हैं।

पूजन के पूर्व जौ बोने का विशेष फल होता है। पाठ करते समय बीच में बोलना या फिर बंद करना अच्छा नहीं है। ऐसा करना ही पड़े तो पाठ का आरम्भ पुनः करें। पाठ मध्यम स्वर व स्पष्ट, शुद्ध चित्त होकर करें। पाठ संख्या का दशांश हवनादि करने से इच्छित फल प्राप्त होता है। **दूर्वा (हरी घास) माँ को नहीं चढ़ाई जाती है।** नवरात्रों में पहले, अंतिम और पूरे नौ दिनों का व्रत अपनी सामर्थ्य व क्षमता के अनुसार रखा जा सकता

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

है। नवरात्रों के व्रत का पारायण (व्रत खोलना) दशमी में करना अच्छा माना गया है। यदि नवमी की वृद्धि हो तो पहली नवमी को उपवास करने के पश्चात् दूसरे दसवे दिन पारायण करने का विधान शास्त्रों में मिलता है।

नौ कन्याओं का पूजन कर उन्हें श्रद्धा के साथ भोजन व दक्षिणा देना अत्यंत श्रेष्ठ होता हैं इस प्रकार भक्त अपना ऐश्वर्य बढाने हेतु सर्वशक्ति रूपा माँ दुर्गा की अर्चना कर सकते हैं।

नौ दुर्गा आराधना का महत्व –

शक्ति उपासना के महत्व के बारे में कहा जाता है कि जगत् की उत्पत्ति, पालन एवं लय तीनों व्यवस्थाएँ जिस शक्ति के आधिन सम्पादित होती हैं वहीं पराम्वा भगवती आदि शक्ति हैं, ये कारी बन कर सृष्टि का सृजन करने से इन्हें सृष्टिरूपा बीज कहा जाता है। 'ह्रीं कारी' देवी को प्रतिपालि का एवं 'क्लीं कारी' काम रूपा शक्ति जगत का लय कर अपने आश्रय में ले लेती है। यही तीन शक्त्यिँ महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती कहलाती है।

इन्हीं के अनन्त रूप हैं लेकिन प्रधान नौ रूपों में नवदुर्गा बन कर आदि शक्ति सम्पूर्ण पृथ्वी लोक अपनी करूणा की वर्षा करती हैं, अपने भक्त और साधकों में अपनी ही शक्ति का संचार करते हुए, करूणा एवं परोपकार के द्वारा संसार के प्राणियों का हित करती है।

प्रथम नवरात्रि को माँ की शैलपुत्री रूप में आराधना की जाती है। वस्तुतः नौ दुर्गा के रूप माता पार्वती के है। दक्ष प्रजापति के अहंकार को समाप्त कर प्रजापति क्रम में परिवर्तन लाने एवं अपने सती स्वरूप को संवरण कर पार्वती अवतार क्रम में नौ दुर्गा की नौ रूपमूर्तियों की उपासना है नवरात्रि उपासना।

यद्यपि शक्ति अवतार को दक्ष यज्ञ में अपने योग बल से सम्पन्न करने से पूर्ण भगवती सती जी ने भगवान शंकर के समक्ष अपनी दस महाविधाओं को प्रकट किया तथा उनके सती जी के दग्ध

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

छाया दे के अंग–प्रत्यंगों से अनेक शक्ति पीठों में आदि शक्ति प्रतिष्ठित हो कर पूजी जाने लगी। पार्वती रूपा भगवती के प्रथम स्वरूप शैलपुत्री की आराधना से साधक की योग यात्रा की पहली सीढ़ी बिना बाधाओं के पार हो जाती है। योगीजन प्रथम नवरात्रि की साधना में अपने मन को मूलाधार चक्र में स्थित शक्ति केन्द्र की जागृति में तल्लीन कर देते हैं।

नवरात्रि आराधना, तन, मन और इन्द्रिय संयम साधना की उपासना है। उपवास से तन संतुलित होता है। तन के संतुलित होने पर योग साधना से इंद्रियाँ संयमित होती हैं। इन्द्रियों के संयमित होने पर मन अपनी आराध्या माँ के चरणों में स्थिर हो जाता हैं वस्तुतः जिसने अपने मन को स्थिर कर लिया वह संसार चक्र से छूट जाता है। संसार में रहते हुए उसके सामने कोई भी सांसारिक विघ्न–बाधाएँ टिक नहीं सकती। वह भगवती दुर्गा के सिंह की तरह बन जाता है। ऐसे साधक भक्त एवं योगी महापुरुष का दर्शन मात्र से सिद्धियाँ मिलने लगती हैं। परन्तु सावधान रहना चाहिए कि सांसारिक उपलब्धि रूपी सिद्धियाँ संसार में भटका देती हैं। अतः उपासक एवं साधकों को यह भी सावधानी रखनी होती है कि उनका लक्ष्य केवल माँ दुर्गा के श्री चरणों में समर्पण है और कुछ नहीं।

उपासना का फल –

निर्गुण, आविनाशी, साक्षात ब्रह्म सद आनंद प्रदान करने वाली, कल्याण स्वरूपिणी भगवती जगदम्बिका मंगलमयी भगवती पर ब्रह्मस्वरूपीणी आदिमाया भवानी की उपासना से वह मनुष्य कृतकृत्य/धन्य हो जाता है। उसके कोई कार्य शेष नहीं रह जाते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

काली जी की उपासना से आपको क्या फल मिलता है?

महाकाली की पूजा सर्वकामनाओं की पूर्ति के लिए की जाती है। विशेष रूप से अत्याचारी शत्रु से रक्षा व वचाव के लिए। माया के जाल से छूटकर **मोक्ष प्राप्ति** के लिए महाकाली की पूजा सर्वश्रेष्ठ है। संसारी जीव असुरों, दुष्टों से रक्षा के लिए माँ की पूजा करते है।

वाद–विवाद, मुकदमें में जीतने के लिए, प्रतियोगिता में प्रतिद्वन्द्वी को परास्त करने लिए, दौड़, कुश्ती आदि युद्ध में, मल्लयुद्ध में किसी भी प्रकार के युद्ध, शास्त्रार्थ में, विजय के लिए काली की उपासना तुरन्त फल देती है।

माँ काली धन नही देती है। वह आवागमन के चक्कर से मुक्ति देती है। **मोक्ष देती है।** सभी संचित पापो का नाश करती है। इसलिए जिसको धन, वैभव चाहिए उनको काली माता की उपासना नहीं करनी चाहिए।

जब भी नवरात्र आता है ऋतुओं का संगम होता है?

नवरात्रि उत्सव देवी अंबा (विद्युत) का प्रतिनिधित्व है। बसंत की शुरुआत और शरद ऋतु की शुरुआत, जलवायु और सूरज के प्रभावों का महत्वपूर्ण संगम माना जाता है। इन दो समय माँ दुर्गा की पूजा के लिए पवित्र अवसर माने जाते हैं। नवरात्रि पर्व, माँदुर्गा की आधारणा भक्ति और परमात्मा की शक्ति की पूजा का सबसे शुभ और अनोखी अवधि माना जाता है।

नवरात्र मे व्रत उपवास कैसे सम्पन्न करना चाहिए–

1. व्रत का अर्थ होता है पवित्र आचरण और आत्म संयम आत्मा को शुद्ध करना।
2. जिव्हा पर नियंत्रण।
3. उपवास सूर्योदय से सूर्योदय तक कुछ भी नहीं खाना। दिन में एक बार माध्याह (दोपहर में) भोजन या दिन में एक बार

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रदोष काल के समय भोजन करना।

4. उपवास रखने वाले को/साधक मनुष्य को/नवरात्र करने वाले को दूसरे का अन्न नहीं खाना चाहिए, पान, मदिरापान, तम्बांकू, मान्स का सेवन नहीं करना चाहिए। अपनी मेहनत से कमाया गया धन से ही साधना काल में या उपवास के समय में भोजन करना चाहिए।
5. ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना चाहिए।
6. दिन में शयन, तेल मालिश, व्यायाम, ईर्ष्या, क्रोध, लोभ, झूठ, चोरी, नही करना चाहिए।
7. क्षमा, दया, सत्य, दान, देवपूजा सत्कर्म करना चाहिए
8. उत्तेजक कार्यो से व्रत कभी भी फलित नहीं होता है। इसलिए क्रोध, सहवास, नहीं करना चाहिए।
9. व्रत को माता–पिता, भाई–बहन, पति–पत्नि द्वारा भी प्रतिनिधि बनाकर कराया जा सकता है यदि बीमार हो जावे तो।
10. यदि नवरात्र के दौरान सूतक हो जाय तो व्रत तो करना चाहिए लेकिन दीपक, पूजन नहीं करना चाहिए।
11. नवरात्र में साधक को फलाहार ही करना चाहिए।
12. स्त्रियों को पति की आज्ञा के बिना व्रत नहीं करना चाहिए। पति की सेवा एवं मानसिक, वाचिक, सेवा द्वारा ही उसे व्रत का फल मिल जाता है।
13. नवरात्र के पहले से ही रजस्वला हो तो व्रत नहीं करना चाहिए परन्तु बाद में बीच में रजस्वला हो जाये तो वृत तो कर सकती है परन्तु पूजन अर्चन नहीं करना चाहिए।
14. सूतक/पातक की अवस्था में उपरोक्त नियम लागू होगे।
15. यदि किसी वजह से रात को मानो उत्तेजना हो जाय या क्रोध की उत्पत्ति हो जाय, या लोभ या मोह में हो जाय तो प्रायश्चित स्वरूप तीन दिन तक अन्न ग्रहण नहीं करना चाहिए या अपना सिर मुड़वाना चाहिए।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नवरात्रि के पहले तीन दिन क्या–क्या करना चाहिए?

नवरात्रि के पहले तीन दिन देवी दुर्गा की पूजा करने के लिए समर्पित किए गए हैं। यह पूजा उसकी ऊर्जा और शक्ति की की जाती है। प्रत्येक दिन दुर्गा के एक अलग रूप को समर्पित है।

1. त्योहार के पहले दिन बालिकाओं की पूजा की जाती है।
2. दूसरे दिन युवती की पूजा की जाती है।
3. तीसरे दिन जो महिला परिपक्वता के चरण में पहुंच गयी है उसकी पूजा की जाती है।
4. देवी दुर्गा के विनाशकारी पहलु सब बुराई प्रवृत्तियों पर विजय प्राप्त करने के प्रतिबद्धता के प्रतीक हैं।

नवरात्रि के चौथा से छठे दिन क्या–क्या करना चाहिए?

व्यक्ति जब **अहंकार, क्रोध, वासना** और अन्य **पशु प्रवृत्ति की बुराई** प्रवृत्तियों पर विजय प्राप्त कर लेता है, वह एक शून्य का अनुभव करता है यह शून्य आध्यात्मिक धन से भर जाता है। प्रयोजन के लिए, व्यक्ति सभी भौतिकवादी, आध्यात्मिक धन और समृद्धि प्राप्त करने के लिए देवी लक्ष्मी की पूजा करता है।

नवरात्रि के **चौथे, पांचवें और छठे दिन** लक्ष्मी–समृद्धि और शान्ति की देवी की पूजा करने के लिए समर्पित है। शायद व्यक्ति बुरी प्रवृत्तियों और धन पर विजय प्राप्त कर लेता है, पर वह अभी सच्चे ज्ञान से वंचित है। ज्ञान एक मानवीय जीवन जीने के लिए आवश्यक है। भले ही वह सत्ता और धन के साथ समद्ध है। इसलिए **नवरात्रि के पांचवें दिन देवी सरस्वती की पूजा** की जाती है। सभी पुस्तकों और अन्य साहित्य सामग्रीयों को एक स्थान पर इकट्ठा कर दिया जाता है और एक दीपक और आवाहन और आशिर्वाद लेने के लिए, देवता के सामने दीपक जलाया जाता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नवरात्रि का सातवां और आठवां दिन क्या–क्या करना चाहिए?

सातवें दिन, कला और ज्ञान की देवी, सरस्वती की पूजा की जाती है। प्रार्थनायें, आध्यात्मिक ज्ञान की तलाश के उद्देश्य के साथ की जाती है। आठवें दिन पर एक यज्ञ किया जाता है। **यह एक बलिदान है जो देवी दुर्गा को सम्मान तथा उनको विदा करता है।**

नवरात्रि के नौवे दिन क्या–क्या करना चाहिए?

नौवां दिन **नवरात्रि समारोह** का अंतिम दिन है। महानवमी के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन पर **कन्या पूजन** होता है। उन नौ कन्याओं की पूजा होती है। जो अभी तक यौवन की अवस्था तक नहीं पहुँचीं हैं। इन नौ लड़कियों को देवी दुर्गा के नौ रूपों का प्रतीक माना जाता है। लड़कियों का **सम्मान तथा स्वागत** करने के लिए उनके **पैर धोए** जाते हैं। पूजा के अंत में लड़कियों को **उपहार के रूप** में नए कपड़े दिए जाते हैं।

दुर्गा बीस हस्ती मंत्र यह शाबर मन्त्र है।

ऊँ ह्रीं श्रीं चामुण्डा, सिंह वाहिनीं, बीस हस्ती भगवती रत्न मण्डित सोनन की माल। उत्तर पथ में आन बैठी, हाथ सिद्ध वाचा ऋद्धि–सिद्धी। धन–धान्य, देहि देहि, कुरु कुरु स्वाहा।

उक्त मंत्र का सवा लाख जप कर सिद्ध कर लें। फिर आवश्यकतानुसार श्रद्धा से एक माला जप करने से सभी कार्य सिद्ध होते हैं। लक्ष्मी प्राप्त होती है। नौकरी में उन्नति और व्यवसाय में वृद्धि होती है। दशांश हवन अवश्य करें। कन्या पूजन अनिवार्य है।

नवरात्रि का अर्थ है –

नवरात्र नौ रात्रि में **नौ रात और दस दिन** काम, क्रोध, मद,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मत्सर, लोभ, मोह आदि जितने भी राक्षसी प्रवृत्ति हैं उनका हनन करना यानि समाप्त करना या इनको छोड़ना।

उदाहरण – जिस प्रकार हम बैटरी को रिचार्ज कर लेते हैं वह चलती रहती है, मोबाइल चलता रहता हैं। ठीक इसी प्रकार यह शरीर चलता–फिरता मोबाइल है। इसमें आत्मा नाम की चिप लगी हुई और इस मोबाइल को चलाने के लिए बैटरी का चार्ज होना भी आवश्यक है। अतः 9 दिन तक हम इस मोबाइल की बैटरी चार्ज करते हैं।

उपासना का फल – नवरात्रि उपवास क्यों किया जाता है?

शुद्धता, स्वच्छता, पवित्रता करने के लिए तन, मन, बुद्धि तीनों की शुद्धि नवदुर्गा के उपवास से हो जाती है। वर्ष में नवरात्र चार होते हैं

शारदीय नवरात्र (अश्विन) क्वार, चैत्र नवरात्र (बसंत) आषाढ़, माघ

उपवास करना चाहिए – विषाक्त पदार्थ से मुक्त

मौन रहना चाहिए – वचन में शुद्धता आती

ध्यान करना चाहिए – आत्म साक्षात्कार मिलता

इस स्थूल संसार में ही सूक्ष्म संसार है,

लहर अपनी पहचान बनाने के लिए समुद्र से अलग रखने की लाख कोशिश करती है, परन्तु अलग नहीं हो पाती। इसी प्रकार शरीर और आत्मा और परमात्मा इस संसार से अलग नहीं हो सकते। उसी मे ही मिलना है फिर गर्भ में उत्पन्न होता है फिर मरना है।

घटस्थापना के पीछे वैज्ञानिक/आध्यात्मिक का क्या रहस्य है? घट स्थापना क्यों की जाती है

कोई भी धार्मिक या आध्यात्मिक अनुष्ठान करने से पूर्व घट स्थापना की जाती है। इसके पीछे यह धारणा है, यह रहस्य है कि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

घट, जल, उसके ऊपर नारियल, जौ, मिट्टी, कुश, पान या आम के पत्ते ये सारी प्रकृति की दी हुई सामग्री हैं जो घट से जोड़कर रखी गयी हैं। यदि ध्यानपूर्वक विचार किया जाय तो मानस पिण्ड भी एक प्रकार का घट ही है।

घट के **मुख** में वासुदेव या भगवान विष्णु विराजमान हैं। **गले में शिव विराजमान** है और मध्य घट में ब्रह्मा का निवास है। ठीक इसी प्रकार हमारे शरीर में भी ब्रह्मा, विष्णु और महेश का त्रिगुणमय तत्व विद्यमान है और उनकी शक्तियां सरस्वती, लक्ष्मी और काली भी विराजमान है।

मनुष्य के शरीर में वाक्य, मन और प्राण की उपस्थिति सदैव रहती है। **वाक्य शक्ति सरस्वती,** मन शक्ति लक्ष्मी और प्राण शक्ति काली की स्वरूप हैं। यह धार्मिक और आध्यात्मिक मान्यता है। वैज्ञानिक मान्यता सिद्ध कर सकना सम्भव इसलिए नहीं है क्योंकि प्राचीन काल में जो भी नियम, सिद्धान्त थे वे आज भी अपनी जगह अकाट्य और अपरिवर्तनीय है। उस समय वे ही एक विज्ञान थे। आज का विज्ञान अभी अधूरा है। सागर में बूंद के समान है।

किसी भी मांगलिक कार्य करने से पहले हम घट स्थापना इसलिए करते हैं कि हम आठ या नौ दिन और रात्रि में अनवरत घट की तरह अध्यात्म में रत रहें। स्थापित रहें और प्रकृति की अनेक सामग्री के साथ अपने आपको जोड़े रखें।

घट के ऊपर स्वास्तिक का चिन्ह बनाकर उसको पूजते हैं यह चार दिशाओं को बताता है। स्वास्तिक गणेश का प्रतीक है। घट स्थापना करते समय साधक अक्षय दीपक भी प्रज्वलित किया जाता है। जो अनुष्ठान पर्यन्त अनवरत जलता रहता है। कोई भी मांगलिक कार्य बिना जल और दीपक के हो नहीं सकता।

हमारे शरीर में भी **पृथ्वी तत्व** है, लेकिन उस पृथ्वी तत्व को जल तत्व और अग्नि तत्व के माध्यम से हम सूक्ष्म और उच्चीकृत

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कर सकते हैं। यही **साधना का, उपासना का रहस्य** भी है।

नवरात्र में क्यों करें घटस्थापना?

किसी भी पूजन कार्यक्रम में घटस्थापना की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। घटस्थापना के बिना किसी भी पूजन कार्यक्रम को सफल नहीं किया जा सकता है। आइये जानते हैं आखिर क्यों करते है। घटस्थापना।

1. मंगलमयी कार्यक्रमों में वेद–पुराणों के अनुसार घट में इस सृष्टि के रचियता भगवान ब्रह्मा का निवास है, घटस्थापना से सभी देवी–देवताओं की पूजा हो जाती है और इसी वजह से घटस्थापना को इतना महत्व दिया जाता है।
2. सभी विधानों में घटस्थापना को विशेष महत्व दिया गया है, घटस्थापना के बाद ही अन्य देवी –देवताओं की पूजा–आराधना की जाती है क्योंकि ये एक तरह से किसी पूजा के लिए संकल्प लेना हुआ।
3. जैसा कि शास्त्रों में माना जाता है **शक्ति और ऊर्जा** के लिए **अग्नि और जल** का होना अनिवार्य है, इसलिए घटस्थापना के समय घट में जल और उसके ऊपर दीपक प्रज्वलित किया जाता है।

   जल में चंदन, पंच–पल्लव, पंचामृत, दूर्वा, सुपारी, साबुत हल्दी, कुश, गोशाला मिट्टी डालें घट के नीचे मिट्टी की वेदी बनाएं और उसमें ज्यो और गेंहू दोनों को मिलाकर बोना चाहिए।
4. घट पर नारियल का मुख नीचे की तरफ रखने से **शत्रु** कि **वृद्धि** होती है। नारियल का मुख ऊपर की तरफ रखने से **रोगों में वृद्धि होती** है, पूर्व की तरफ नारियल का मुख रखने से **धन का विनाश होता** है, इसलिए नारियल की स्थापना सदैव इस प्रकार करनी चाहिए कि **उसका मुख साधक की तरफ** हो।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

काली की मूर्ति भयावह क्यों?

दशमहाविद्याओं में काली कि प्राथमिक्ता सर्वत्र देखी जाती है कालिका पुराण के अनुसार मातंग मुनि के आश्रम में माँ काली का सभी देवताओं ने स्वतन किया था। **महाकाली प्रलय काल से सम्बद्ध होने से अतएव कृष्ण** वर्ण है। वे **शव पर आरूढ़** इसीलिए हैं कि शक्ति के बिना विश्व मृत ही है। शत्रुसंहारक शक्ति भयावंह होती है, इसीलिए **काली की मूर्ति भयावह** है। शत्रु संहार के बाद विजयी योद्धा का अट्टहास भीषणता के लिए होता है, इसलिए महाकाली हँसती रहती है।

आद्यशक्ति माँ महाकाली **अपरोक्ष या परोक्ष बांधाओं को नष्ट करके शक्ति** प्रदान करती है। इस अद्‌भुत शक्ति द्वारा मानव अनेक सफलता प्राप्त करता है। और एक निश्चिन्त जीवन व्यतीत करता है।

देवी का नाम 'काली' पड़ने का कारण –

कालिका पुराण के अनुसार, सभी देवता एक बार हिमालय में मतंग मुनि के आश्रम के पास गए और आद्या शक्ति या महामाया की स्तुति करने लगे। सभी देवताओं द्वारा की गई वंदना तथा स्तुति से देवी अत्यंत प्रसन्न हुई तथा एक काले रंग की विशाल पहाड़ जैसी स्वरूप वाली दिव्य स्त्री देखते ही देखते सभी देवताओं के सम्मुख प्रकट हुई। वह स्त्री देखने में **अमावस्या के अंधकार** जैसी थी इस कारण उस शक्ति का नाम "काली" पड़ा। वास्तव में देवी, शिव पार्वती के देह से उत्पन्न हुई थीं, जिनका पूर्व में सर्वप्रथम **घोर अन्धकार से उत्पत्ति** होने के कारण आद्या काली नाम पड़ा था।

मार्गशीर्ष मास की कृष्ण अष्टमी कालीष्टमी कहलाती है, इस दिन समान्यतः महा–काली की पूजा, आराधना की जाती है या कहें तो पौराणिक काली की आराधना होती है, जो **दुर्गा जी** के नाना रूपों में से एक है। परन्तु तांत्रिक मतानुसार, दक्षिण काली

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

या आद्या काली की साधना कार्तिक अमावस्या या दीपावली के दिन होती है। शक्ति तथा शैव समुदाय इस दिन आद्या शक्ति काली के भिन्न–भिन्न स्वरूपों की आराधना करता है। जबकि वैष्णव समुदाय का अनुसरण करने वाले इस दिन धन–दात्री महा लक्ष्मी की आराधना करते हैं।

काली के प्रादुर्भाव से सम्बन्धित कथा –

कालिका पुराण के अनुसार, देवी काली के दो स्वरूप हैं,

प्रथम **"आद्या शक्ति काली"** तथा द्वितीय केवल पौराणिक **"काली या महा–काली"**

दक्षिण काली जो साक्षात् आद्या शक्ति ही हैं, अजन्मा तथा सर्वप्रथम शक्ति हैं, जिनसे पूर्व में इस चराचर जगत की उत्पत्ति हुई थी, देवी ही चराचर जगत की स्वामिनी हैं।

द्वितीय **"देवी दुर्गा या शिव पत्नी सती, पार्वती"** से सम्बन्धित हैं तथा देवी के विभिन्न अवतारों में से एक हैं, यह वही हैं जिनका प्रादुर्भाव मतंग मुनि के आश्रम में देवताओं द्वारा स्तुति करने पर **अम्बिका के ललाट** से हुआ था तथा जो तमोगुण की स्वामिनी हैं। परन्तु वास्तविक रूप से देखा जाये तो दोनों शक्तियाँ एक ही हैं।

समस्या के समाधान हेतु, सभी देवता एकत्र हो हिमालय में गए और देवी आद्या शक्ति की स्तुति, वंदना करने लगे। परिणामस्वरूप **"कौशिकी"** नाम की एक दिव्य नारी शक्ति जो कि भगवान शिव की पत्नी **"गौरी या पार्वती"** में समाई हुई थीं, लुप्त थीं, समस्त देवताओं के सम्मुख प्रकट हुई। शिव अर्धांगिनी के देह से विभक्त हो, उदित होने वाली वह शक्ति घोर काले वर्ण की थी तथा काली नाम से विख्यात, **देवी दुर्गा (जिन्होंने दुर्गमासुर दैत्य का वध किया था)**, ने शुम्भ और निशुम्भ नाम के दो महा राक्षसों को युद्ध में परास्त किया तथा तीनों लोकों को

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उन दोनों भाइयों के अत्याचार से मुक्त किया।

चण्ड और मुण्ड नामक दैत्यों ने जब देवी दुर्गा से युद्ध करने का आवाहन किया, देवी उन दोनों से युद्ध करने हेतु उद्धत हुई। आक्रमण करते हुए देवी, क्रोध के वशीभूत हो अत्यंत उग्र तथा भयंकर डरावनी हो गई, उस समय उनकी सहायता हेतु **उन्हीं के मस्तक से एक काले वर्ण** वाली शक्ति का प्राकट्य हुआ, जो देखने में अत्यंत ही भयानक, घनघोर तथा डरावनी थी। वह काले वर्ण वाली देवी, **"महा–काली"** ही थी, जिन का प्राकट्य **देवी दुर्गा की युद्ध भूमि में सहायता** हेतु हुई थी।

चण्ड और मुण्ड के संग हजारों संख्या में वीर दैत्य,देवी दुर्गा तथा उनके सहचरियों से युद्ध कर रहे थे, उन महा–वीर दैत्यों में **"रक्तबीज" नाम के एक राक्षस** ने भी भाग लिया था। युद्ध भूमि पर देवी ने रक्तबीज के शरीर से रक्त का स्त्राव होने लगा, परन्तु दैत्य के रक्त की टपकते हुए प्रत्येक बूंद से, युद्ध स्थल में उसी के समान पराक्रमी तथा वीर दैत्य उत्पन्न होने लगे तथा वह और भी अधिक पराक्रमी तथा शक्तिशाली होने लगा। देवी दुर्गा की सहायतार्थ, देवी काली ने दैत्य रक्तबीज के प्रत्येक टपकते हुए रक्त बूंद को, जिह्वा लम्बी कर अपने मुंह पर लेना शुरू किया। परिणामस्वरूप युद्ध क्षेत्र में **दैत्य रक्तबीज शक्तिहीन** होने लगा। अब उसके सहायता हेतु और किसी दैत्य का प्राकट्य नहीं हो रहा था, अंततः **रक्तबीज सहित चण्ड और मुण्ड का वध** कर देवी काली तथा दुर्गा ने तीनों लोकों को भय मुक्त किया। **देवी क्रोध–वश महा–विनाश** करने लगीं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महिषासुर, चण्ड–मुण्ड व रक्तबीज का वध –

श्री मार्कण्डेय पुराण एवं श्रीदुर्गा सप्तशती के अनुसार काली माँ की उत्पत्ति **जगत जननी माँ अम्बा के ललाट** से हुई थी।

कथा के अनुसार शुम्भ–निशुम्भ दैत्यों के आतंक का प्रकोप इस कदर बढ़ चुका था कि उन्होंने अपने बल, छल एवं महाबली असुरों द्वारा देवराज इन्द्र सहित अन्य समस्त देवतागणों को निष्कासित कर स्वयं उनके स्थान पर आकर उन्हें प्राण रक्षा हेतु भटकने के लिए छोड़ दिया। दैत्यों द्वारा आतंकित देवों को ध्यान आया कि **महिषासुर के इन्द्रपुरी** पर अधिकार कर लिया है, तब दुर्गा ने ही उनकी मदद की थी।

दुर्गा का आवाहन –

तब वे सभी **दुर्गा का आवाहन** करने लगे। उनके इस प्रकार आवाहन से देवी प्रकट हुई एवं शुम्भ–निशुम्भ के अति **शक्तिशाली असुर चण्ड** तथा मुण्ड दोनों का एक **घमासान** युद्ध में नाश कर दिया। **चण्ड–मुण्ड के इस प्रकार मारे जाने** एवं अपनी बहुत सारी सेना का संहार हो जाने पर दैत्यराज शुम्भ ने अत्यधिक क्रोधित होकर अपनी सम्पूर्ण सेना को युद्ध में जाने की आज्ञा दी। तत्पश्चात **समस्त शक्तियों से घिरे शिवजी ने देवी जगदम्बा से कहा – "मेरी प्रसन्नता हेतु तुम इस समस्त दानव दलों का सर्वनाश करो।"** तब देवी जगदम्बा के शरीर से भयानक उग्र रूप धारण किए चंडिका देवी शक्ति रूप में प्रकट हुईं। उनके स्वर में सैकड़ों गीदड़ों की भाँति आवाज आती थी। असुरराज शुम्भ–निशुम्भ क्रोध से भर उठे। वे देवी कात्यायनी की ओर युद्ध हेतु बढ़े। अत्यंत क्रोध में चूर उन्होंने देवी पर बाण, शक्ति, शूल, फरसा, ऋषि आदि अस्त्रों–शस्त्रों द्वारा प्रहार प्रारम्भ किया।

देवी ने अपने धनुष से टंकार की एवं अपने बाणों द्वारा उनके

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

समस्त अस्त्रों–शस्त्रों को काट डाला, जो उनकी ओर बढ़ रहे थे। माँ काली फिर उनके आगे–आगे शत्रुओं को अपने शूलादि के प्रहार द्वारा विदीर्ण करती हुई व खट्वांग से कुचलती हुई समस्त युद्धभूमि में विचरने लगीं। सभी राक्षसों **चंड–मुण्डादि को मारने के बाद उसने रक्तबीज को भी मार** दिया।

शिवजी के शरीर पर शक्ति का पैर –

शक्ति का यह अवतार एक रक्तबीज नामक राक्षस को मारने के लिए हुआ था। फिर शुम्भ–निशुम्भ का वध करने के बाद भी जब काली माँ का गुस्सा शान्त नहीं हुआ, तब उनके गुस्से को शान्त करने के लिए भगवान शिव उनके रास्ते में लेट गए और **काली माँ का पैर उनके सीने पर पड़ गया। शिव पर पैर रखते ही माता का क्रोध शान्त होने लगा।**

शिव कौन और काली माँ कौन –

ऐसा चित्रण क्यों कि काली माँ का एक पैर शिवजी की छाती पर?

काली माँ का ऐसा फोटो या मूर्ति क्यों बनायी जाती है?

रहस्यमय ज्ञान

शुम्भ–निशुम्भ और रक्तबीज को मारने के लिए ही काली श्रीदुर्गा देवी जगदम्बा में से प्रकट हुई थीं। शुम्भ–निशुम्भ क्या हैं? शुम्भ–निशुम्भ का अर्थ क्या है? रक्तबीज का अर्थ क्या है, इसी पुस्तक में इसका वर्णन है।

काली की सत्यता – काली हमारे शरीर में भी है और प्रकृर्ति में भी यही है।

काली का निवास – काली हमारे शरीर में मूलबन्ध में निवास करती हैं।

काली का गुण – तामसिकता, कामवासना, क्रूरता, अहंकार और क्रूरता। काली में ममता और प्रेम के गुण नहीं पाये जाते।

काली की ऊर्जा – काली एक नकारात्मक ऊर्जा है यानि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नेगेटिव इनर्जी

काली का भोजन – इंसान का रक्त और वीर्य का ये भक्षण करती है।

नोट :– एक साधारण इंसान पूरे जीवन काल में काली के इन गुणों के आधीन रहता है। काली की वज़ह से ही इंसान में क्रूरता, कामवासना, अहंकार आदि पाये जाते है।

क्रोध भी काला है। काली क्रोध का प्रतीक है। क्रोध अन्धा होता है।

क्रोध मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है जानिए क्रोध से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण तथ्य और इससे होने वाली हानियों को

1. क्रोध को जीतने मौन का रहना सबसे अधिक सहायक है।
2. मूर्ख मनुष्य क्रोध को जोर–शोर से प्रकट करता है, किन्तु बुद्धिमान शान्ति से उसे वश में करता है।
3. क्रोध करने का मतलब है, दूसरों की गलतियों की सजा स्वयं को देना।
4. जब क्रोध आए तो उसके परिणाम पर विचार करो।
5. क्रोध से **धनी व्यक्ति घृणा** और निर्धन तिरस्कार का पात्र होता है।
6. क्रोध मूर्खता से प्रारम्भ और पश्चाताप पर खत्म होता है।
7. जो मन की पीड़ा को स्पष्ट रूप में नहीं कह सकता, उसी को क्रोध अधिक आता है।
8. क्रोध में सिंहासनासीन होने **बुद्धि वहां से खिसक** जाती है।
9. क्रोध मस्तिष्क के **दीपक को बुझा** देता है। अतः हमें सदैव शान्त व स्थिरचित रहना चाहिए।
10. क्रोध से मूढ़ता उत्पन्न होती है, मुढ़ता से स्मृति भ्रांत हो जाती है, **स्मृति भ्रांत** हो जाने से **बुद्धि का नाश** हो जाता है और बुद्धि नष्ट होने पर प्राणी स्वयं नष्ट हो जाता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

11. क्रोध यमराज है।
12. क्रोध एक प्रकार का क्षणिक पागलपन है।
13. क्रोध में कही गयी बातें अक्सर अंत में उल्टी निकलती हैं।
14. जो मनुष्य क्रोधी होने पर क्रोध नहीं करता और क्षमा करता है वह अपनी और क्रोध करने वाले की महासंकट से रक्षा करता है।
15. सुबह से शाम तक काम करके आदमी उतना नहीं थकता जितना क्रोध या चिन्ता से पल भर में थक जाता है।
16. क्रोध में हो तो बोलने से पहले दस तक गिनो, अगर ज्यादा क्रोध में तो सौ तक।
17. क्रोध क्या है? क्रोध भयावह है, क्रोध बहरा है, क्रोध गूंगा है, क्रोध विकलांग है।
18. क्रोध की फुफकार अहं पर चोट लगने से उठती है।
19. क्रोध करना पागलपन है, जिससे सत्संकल्पों का विनाश होता है।
20. क्रोध में **विवेक नष्ट** हो जाता है।

माँ काली का रूप –

माँ काली का रूप सभी रूपों में सबसे ज्यादा भय प्रदान करने वाला माना जाता है। काली शब्द का अर्थ होता है **काल**। क़ाल का **अर्थ समय** से है। काली अपने गुस्से के आगे किसी को नहीं देखती है जो सामने आता है वह विध्वन्स हो जाता है। क्रुर स्वरूप है फिर भी साधकों की मनोकामना पूरी करती है। काली **माँ मौत की देवी** भी है। **अहंकार और बुराईयों** का वध करने वाली है।

जिनके सम्मुख दैत्य क्या? साक्षात् काल! भी नहीं बच सकता है। वह माँ काली इस संसार की रक्षा करती है। ओर अपने श्रद्धालु भक्तों को भूत–प्रेत, राक्षस, बाध, डर, दुःख, दरिद्रता, रोग, पीड़ाओं से बचाकर भक्त को अभय देने वाली है। जिससे भक्त को सुख समृद्धि प्राप्त होती है। दुर्गा के इस सातवें रूप को कालरात्रि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के नाम से जाना जाता है जो इस संसार में आदि काल से सुप्रसिद्ध है।

इन माँ की मूर्ति यद्यपि बड़ी ही विकराल प्रतीत होती है, जो परम तेज से युक्त है जो भक्तो के हितार्थ अति भयानक कालरात्रि के रूप में प्रकट होती हैं। माँ की चार भुजाएँ जिसमें दाहिने हाथ में ऊपर वाला हाथ वर मुद्रा धारण किए हुए जो संसार में भक्त लोगों को निर्भय बना रहा है। बांये हाथ में ऊपर वाले हाथ में कटार और नीचे वाले में लोहे का काटा नुमा अस्त्र धारण किए है। इनके बाल घने काले और बिखरे हुए रौद्र रूप में दिखाई देते हैं। और तीन आँखें हैं जो अत्यंत भयंकर व अतउग्र और ब्रह्माड की तरह ही गोलाकार है जिसमें बादल की बिजली की तरह ही चमक है। यह घने काले अंधकार की तरह प्रतिभासित हो रही है। इनकी नासिकाओं सांस से अग्नि की अति भयंकर ज्वालाएं निकल रहीं है। काल रत्रि के गले मे दिव्य तेज की माला शोभित हो रही है और वह गर्दभारूढ़ है। इनकी अर्चना से सभी प्रकार के कष्ट दूर होते हैं। जीवन में सुख शान्ति की लहर होती है।

कालरात्रि की पूजा का विधान –

श्री माँ शक्ति दुर्गा के इस सांतवे विग्रह को कालरात्रि के नाम से संसार में ख्याति प्राप्त है। इनकी कालिरात्रि की पूजा स्तुति नवरात्रि के सांतवे दिन करने का विधान होता है। वह अपने भक्तों को संकट से बचाने तथा स्मरण मात्र से अनेक प्रकार के भय को दूर करने वाली प्रेतिक बाधा को हरने वाली है तथा हर प्रकार से भक्तजनों का कल्याण करती है। यद्यपि इनका रूप बड़ा ही भयानक दिखाई देता है, किन्तु यह परम कल्याण प्रद है। अतः किसी को डरने की जरूरत नहीं है।

भक्त को माँ इच्छित फल देने वाली है। अर्थात् माँ की कृपा को प्राप्त करने हेतु श्रद्धालु भक्तों को पहले के दिनों की तरह नित्यादि शुचि कर्मों को करते हुए पूजन की जरूरी सामग्री

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एकत्रित करके तथा सुवासित जल, तीर्थजल गंगाजल आदि सहित पंचमेवा व पंचामृत, पुष्प, गंध, अक्षत आदि से विविधि प्रकार से पूजन करने का विधान है।

इनकी पूजा से व्यक्ति के जीवन से प्रेतिक भय, दुःख, रोग, शोक आदि दूर रहते हैं। इस संसार में उसे कुछ भी दुर्लभ नहीं रहता है। प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष शत्रुओं का नाश होता है। इनकी पूजा में पवित्रता, शुद्धता, संयम, ब्रह्मचर्य का पालन तथा सत्य मार्ग का अनुसरण करने का विधान होता है। पूजा में श्रद्धा, विश्वास, शुद्ध भावना होना चाहिए। अहंकार, लोभ, झूठ, क्रोध, मोह का त्याग करने का विधान है। जो व्यक्ति अन्याय व गलत करता है, उसे माँ दण्ड भी देने से परहेज नहीं करती हैं। क्योंकि यह प्रत्यक्ष रूप में आज कलयुग में भी साक्षात हैं। इनकी साधना यदि शास्त्रीय विधि से की जाए तो तत्काल फल प्राप्त होता है। इसमे तनिक भी संदेह नहीं है। काली कलकत्ते वाली का नाम कौन है जो नहीं जानता? माँ काली की पूजा व अर्चना यद्यपि सम्पूर्ण भारत व विश्व के अन्य देशों में होती है। किन्तु बंगाल व असम में उनकी पूजा बड़े ही धूम–धाम से होती है।

माँ कालरात्रि की कथा –

माँ कालरात्रि प्रत्येक भक्त का कल्याण करने वाली है। माँ के विषय में पुराणों में कई कथानक मिलते हैं। जिसमें सबसे प्रमाणिक दुर्गा सप्तशती है, जो दुर्गा के नवरूपों की उत्पत्ति के विषय को बड़े ही सारगर्भित रूप से जानकारी देती है। इसके अतिरिक्त देवी भागवत तथा अन्य पुराणों में भी माँ की कथा व महिमा के अंश प्राप्त होते हैं।

काली रात्रि को काली का ही रूप माना जाता है। काली माँ इस कलियुग में प्रत्यक्ष फल देने वाली हैं, क्योंकि काली, भैरव तथा हनुमानजी ही ऐसे देवता व देवी हैं, जो शीघ्र ही जाग्रत

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

होकर भक्त को मनोवांछित फल देते हैं। काली के नाम व रूप अनेक हैं, किन्तु लोगों की सुविधा व जानकारी के लिए इन्हें भद्रकाली, दक्षिण काली, मातृकाली व महाकाली भी कहा जाता है।

इनका यह प्रत्येक रूप नाम समान रूप से शुभफल देने वाला है। जिससे इन्हें शुभंकारी भी कहते हैं। अर्थात् भक्तों का सदा शुभ करने वाली है। दुर्गा सप्तशती में महिषासुर के वध के समय में भ्रदकाली की कथा का वर्णन मिलता है कि युद्ध के समय महाभयानक दैत्य समूह देवी को रणभूमि में आते देखकर उनके ऊपर ऐसे बाणों की वर्षा करने लगा। जैसे बादल मेरूगिरी के शिखर पर पानी की धार की बरसा रहा हो। तब देवी ने अपने बाणों से उस बाण समूह को अनायास ही काटकर उसके घोड़े और सारथियों को भी मार डाला। साथ ही उसके धनुष तथा अत्यंत ऊँची ध्वजा को भी तत्काल काट गिराया। धनुष कट जाने पर उसके अंगों को अपने बाणों से भेद डाला और भद्रकाली ने शूल का प्रहार किया। उससे राक्षस के शूल के सैकड़ों टुकड़े हो गये। वह महादैत्य प्राणों से हाथ धो बैठा।

इसी प्रकार चण्ड और मुण्ड के वध के लिए माँ विकराल मुखी काली प्रकट हुई। जिसकी कथा के कुछ अंश इस प्रकार हैं। ऋषि कहते हैं – तदन्तर शुम्भ की आज्ञा पाकर वे चण्ड–मुण्ड आदि दैत्य चतुरंगिणी सेना के साथ अस्त्र–शस्त्रों से सुसज्जित हो चल दिये। फिर गिरिराज हिमालय के सुवर्णमय ऊँचे शिखर पर पहुँचकर उन्होंने सिंह पर बैठी देवी को देखा। उन्हें देखकर दैत्य लोग तत्परता से पकड़ने का उद्योग करने लगे। तब अम्बिका ने उन शत्रुओं के प्रति बड़ा क्रोध किया। उस समय क्रोध के कारण उनका मुख काला पड़ गया। ललाट में भौंहें टेढ़ी हो गयीं और वहाँ से तुरंत विकराल मुखी काली प्रकट हुई, जो तलवार और पाश लिये हुई थीं। वे विचित्र खट्वांग धारण किये और चीते के

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चर्म की साड़ी पहने नर–मुण्डों की माला से विभूषित थीं। उनके शरीर का मांस सूख गया था। केवल हड्डियों का ढ़ाचा था, जिससे वे अत्यंत भयंकर जान पड़ती थीं। उनका मुख बहुत विशाल था, जीभ लपलपाने के कारण वे और भी डरावनी प्रतीत होती थीं। उनकी आँखें भीतर को धसी हुई और कुछ लाल थीं। वे अपनी भयंकर गर्जना से सम्पूर्ण दिशाओं को गुंजा रही थी। बडे–बड़े दैत्यों का वध करती हुई वे कालिका देवी बड़े वेग से दैत्यों की उस सेना पर टूट पड़ी और उन सबको भक्षण करने लगीं। आदि कथानक है।

माँ कालरात्रि माता के अनेकों उपयोगी मंत्र तथा स्थान सम्बन्धित ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं जिसमें प्रत्येक मंत्र का अपना महत्व है। जिसमें विभिन्न प्रकार के भय, शुत्र भय, जल भय, रोग भय आदि को दूर करने के मंत्र हैं। माँ अपने श्रद्धालु भक्तों को सभी वांछित वस्तुएँ प्रदान करने वाली हैं। यहाँ काल रात्रि के आराधना के मंत्रों को दिया जा रहा है –

दंष्ट्राकरालबदने शिरोमालाविभूषणे।
चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते।।
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

माता कालरात्रि के महात्म्य को दुर्गा सप्तशती में कई स्थानों पर वर्णित किया है। भक्तों को अभय देने व विभिन्न प्रकार के भयों से मुक्ति देने वाली कालरात्रि का बड़ा ही महात्म्य है। अतः श्रद्धालुओं को वैदिक रात्रि द्वारा अनुष्ठान व व्रत पालन करते हुए माँ कालरात्रि की पूजा बड़े ही निष्ठा से करना चाहिए।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चण्डी सप्तशती प्रथम चरित खंड का अर्थ –

'विष्णु' का कर्णमल या "कान का मैल" है .. **"मधु"** और **"कैटभ"** इन्हीं दोनों से मनरुपी "ब्रह्मा" उद्वेलित होता है। अब **"मधु"** और **"कैटभ"** क्या हैं?

"कर्म" दो प्रकार के हैं... अच्छा और बुरा। '

कठ–भाष्यकार के मत से **"मधु"** हैं **"इष्ट कर्मफल"** मधुमिष्ट कर्मफलम्। इस प्रकार यही **"सुकृति"** है। और **"कैटभ"** कीटवद् भांति इति कीटभः कैटभः से **"दुष्कृति"** का बोध है। क्योंकि कैटभ–ग्रस्त जीव अर्थात् **"कैटभी भावापन्न जीव"** दूसरों को कीटवत् अर्थात् तुच्छ मानता है। यह भाव द्वेष–मूलक है। अतः इन दोनों को **"राग–द्वेष"** कह सकते हैं।

"मधु और कैटभ" का नाश करना अर्थात **"राग और द्वेष"** को "बुद्धिरुपिणी महामाया" की सहायता से मारने का बोध होता है।

नवरात्रि ही क्यों बोलते है? नव दिन क्यों नही?

क्योंकि इसका सम्बन्ध श्रद्धा शक्ति हैं जो काली है वह अमावस्या की काली रात की तरह है। काले अन्धकार से निकलने के कारण काली कहलाती है। माता पार्वती के शरीर से क्रोध स्वरूप जो आकृति प्रकट हुई थी वह काली थी। इसलिए क्रोध काला होता है/अन्धा होता है/कालेपन से कुछ भी नहीं दिखता है। इसी प्रकार काली माँ भी अनन्त है। इसलिए इसका नाम नवरात्रि बोला जाता हैं। ग्रह, नक्षत्र भी ऐसे होते है कि नवरात्रि में विवाह नहीं किया जाता है क्यों नहीं करते है? ग्रह वह नक्षत्र विवाह योग्य, मांगालिक कार्यक्रम के हिसाब से नहीं रहते है केवल शक्ति प्राप्त कर सकते है। शक्ति केवल माता काली के पास है, संहार करने की, दुश्मनों का नाश करने की, इसलिए नवरात्रि शक्ति साधना/शक्ति की पूजा है। शक्ति संचय करने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के लिए मनुष्य को रात्रि में जप, तप, पाठ व हवन करना चाहिए। क्योंकि रात को ही इन शक्तियों की शक्ति बड़ी हुई रहती है।

सृष्टि नौ आधारों वाली है पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिग्, आत्म और मन शब्दों से होने वाली काव्य रचनाएँ **नौ रसों से युक्त** होती है। नवग्रहों के ऊपर विराजमान रहने वाली भगवती के चरणारविन्दों की **नवधा भक्ति के द्वारा अर्चना** होती है।

तुम्हारी नौ संख्याओं वाली **नौ प्रकृतियाँ शैल पुत्री** इत्यादि रूप में है, जो **नव दुर्गा** कहलाती है।

तुम्हारी **पूजा नौ आवरणों** से होती है जिन्हें द्वीप भी कहा जाता हैं

इसी कारण से **नव द्वीपी** भगवती का नाम है

नौ त्रिकोणों से अथवा चक्रों से श्री महा यंत्र बनता है

हे शिवे!! इस लिए तुम्हारा नाम **नव चक्रेश्वरी** भी कहा जाता है।

श्री दुर्गा के अनुष्ठान में फूल पत्तियों का महत्व –

1. अशोक के वृक्ष के पत्ते से बन्दरवार बनाया जाता है।
2. आम के वृक्ष के पत्ते से बन्दरवार व कलश पर
3. केले के पत्ते से सजाया जाता है।
4. पान के पत्ते पूजन में प्रयोग किये
5. नीम की पत्तियों का प्रयोग किया जाता है।
6. गुड़हल/जासौन के फूल की माला का
7. कमल के फूल की माला
8. श्री दुर्गाजी के अनुष्ठान में तुलसी पत्तों का प्रयोग नहीं किया जाता है।

उमा देवी (पार्वती) – गिरिराज हिमाचल और मैना देवी की पुत्री थी

उमा का अर्थ – ऐसा मत करों।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अर्पणा:– बिना पत्तियाँ खाये, निराहार रहकर, बिना अन्न, फल–फूल खाये तपस्या की थी, इससे पार्वती का नाम अपर्णा पड़ा था।

अशोक के वृक्ष के पत्ते भोलेनाथ और पार्वती को इसलिए प्रिय है कि अशोक के वृक्ष के पत्ते का गुच्छा पार्वती ने शिवजी को प्रथम बार वरण करने के फलस्वरूप दिया था।

नवरात्रि

1. श्री देव्यथर्व शीर्षम् का रोज पाठ करने से वाक सिद्धि मिलती है
2. शारदीय नवरात्र में माँ उग्र स्वरूप में रहती है। अतः आराधना बहुत विनयपूर्वक करना चाहिए।
3. देवीपुराण के अनुसार प्रातः काल पूजन और प्रातः काल विसर्जन करने का नियम बताया गया है।
4. 360 शक्तियों का वर्णन है दुर्गा सप्तशती किताब में
5. शक्ति पूजन के साथ भैरव पूजन भी अनिवार्य है।

नैवेद्य का अर्थ

नैवेद्य का अर्थ प्रसाद व भोग से है । किसी भी देवी देवताओं को चढ़ाया हुआ प्रसाद या भोग को ही नैवेद्य कहा जाता है। ऐसे और भी नैवेद्य के रूप में आते है, जैसे– धूप, दीप, फल, मिठाई नैवेद्य का मतलब होता है। जो भी हम निवेदन करते है, भगवान को, जैसे – निवेदन, प्रार्थना, विनती को ही नैवेद्य शब्द दिया गया है। भगवान के सामने केवल जो खाद्य सामग्री हम चढ़ाते है वहीं नैवेद्य है और तो और आप दीपक व धूप भगवान के सामने लगाते है, वह भी नैवेद्य के रूप में ही आता है, नैवेद्य शब्द का सही अर्थ शब्दकोश में दिया गया है। जैसे जो भी वस्तु हो अपने आराध्य को हम निवेदन करते है। निवेदन के बाद कोई भी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वस्तु प्रसाद बन जाता है।

1. देवी देवता को भेंट की या चढाई गई खाद्य सामग्री को नैवेद्य कहते है।
2. देवताओं से निवेदन या विनती करके अर्पण की जाए उसे भी नैवेद्य कहा जाता है।
3. भोग वं प्रसाद भी नैवेद्य के रूप में आता है।
4. नैवेद्य का पर्यावाची शब्द होता है **नैयायिक**

नैवेद्य देवताओं का भोजन है विशेष नैवेद्य घी, चीनी, सफेद अन्न, दहीं, फल इत्यादी नैवेद्य द्रव्य कहे गये है।

1. नैवेद्य भगवान के दक्षिण भाग में रखना चाहिए। आगे या पीछे नहीं, कुछ ग्रंथों का मत है कि पक्का नैवेद्य भगवान के बाएं और कच्चा दाहिने और रखना चाहिए।
2. चढ़ाया हुआ नैवेद्य खाने से पुण्य उदय होते है व पाप कटते है। परन्तु शिव जी का भोग खाने में नीषेध है। वह निर्माल्य कहलाता है। शिव जी को चढ़ाने के उपरान्त नैवेद्य द्रव्य निर्माल्य कहलाता है।

नैवेद्य के बारे में जानकारी

दिन के हिसाब से नैवेद्य –

रविवार – खीर, सोमवार– दूध, मंगलवार – केला, बुधवार – मक्खन, गुरूवार – शक्कर,

शुक्रवार – मिश्रि, शनिवार – गो–घृत (गाय का घी)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

माँ दुर्गा के नौ नैवेद्य नौ दिन का विशेष प्रसाद –

1. प्रथम नवरात्रि के दिन माँ के चरणों में गाय का शुद्ध घी अर्पित करने से आरोग्य का आशीर्वाद मिलता है। तथा शरीर निरोगी रहता है।
2. दूसरे नवरात्रि के दिन माँ को शक्कर का भोग लगाएँ व घर में सभी सदस्यों को दें इससे आयु वृद्धि होती है।
3. तृतीय नवरात्रि के दिन दूध या दूध से बनी मिठाई खीर का भोग माँ को लगाकर ब्राह्मण को दान करें। इससे दुःखों की मुक्ति होकर परम आनन्द की प्राप्ति होती है।
4. माँ दुर्गा को चौथी नवरात्रि के दिन मालपुए का भोग लगाएँ और मन्दिर के ब्राह्मण को दान दें। जिससे बुद्धि का विकास होने के साथ–साथ निर्णय शक्ति बढ़ती है।
5. नवरात्रि के पाँचवे दिन माँ को केले का नैवेद्य चढ़ाने से शरीर स्वस्थ्य रहता है।
6. नवरात्रि के छटवे दिन माँ को शहद का भोग लगाएँ जिससे आपकी आकर्षण शक्ति में वृद्धि होगी।
7. सातवें एवं आठवे नवरात्रि के आठवें दिन माता रानी को नारियल का भोग लगाएँ व नारियल का दान कर दें। इससे संतान सम्बन्धी परेशानियों से छुटकारा मिलता है।
8. नवरात्रि की नवमी के दिन तिल का भोग लगाकर ब्राह्मण को दान दें। इससे मृत्यु भय से राहत मिलेगी साथ ही अनहोनी होने की घटनाओं से बचाव भी होगा।

माह के हिसाब से नैवैद्य –

चैत्र – महुआ, वैशाख – गुड, ज्यैष्ठ – शहद, आषाढ़ – महुए का रस, सावन – दही, भादो – शक्कर
क्वार/अश्विनी – खीर, कार्तिक – दूध, अगहन – खोवा, , पोष – दही, माघ– खीर, फाल्गुन– नारियल

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

घी, शक्कर, इलायची, मखाना, मिश्री, का रोजाना भोग लगाना चाहिए।

तिथि के अनुसार श्री देवीजी को भोग और उसका प्रभाव

गाय का घी	— प्रथम दिन	— निरोगी होवे
चीनी	— द्वितीय दिन	— दीर्घायु होवे
दूध	— तृतीय दिन	— सम्पूर्ण दुःखो का नाश
मालपुआ	— चतुर्थ दिन	— विध्न सामने नहीं आवेंगे
केला	— पंचमी	— बुद्धि का विकास होता है।
मधु	— षष्ठी	— रूप सुन्दर होता है।
गुड़	— सप्तमी	— शोक मुक्त
नारियल	— अष्टमी	— संताप नहीं होगा
धान लावा	— नवमी	— सुख लोक और परलोक में
काले तिल	— दशमी	— यमलोक का भय नहीं
दही	— एकादशी	— आशिर्वाद
चिवड़ा	— द्वादशी	— प्रेम भाजन
चने	— त्रयोदशी	— संतान वान
सत्तू	— चतुर्दशी	— शंकर जी प्रसन्न होते हैं।
खीर	— पूर्णिमा	— पितरों का उद्धार होता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विभिन्न देवियों की पूजा एवं सेवा से अलग–अलग फल की प्राप्ति

कल्याणी नाम की देवीजी की सेवा करने से **राजा को विद्या, विजय, राज्य एवं सुख** मिलता है।

कालिका नाम की देवीजी की सेवा करने से **शत्रु का नाश** करने की शक्ति प्राप्त होती हैं।

चण्डिका नाम की देवीजी की सेवा करने से **ऐश्वर्य एवं धन** की पूर्ति होती है।

शाम्भवी नाम की देवीजी की सेवा करने से मोहित करने, **दुःख दारिद्रय** को हटाने तथा संग्राम में विजय प्राप्त करने की शक्ति प्राप्त होती है।

"**दुर्गा**" नाम की देवीजी की सेवा करने से कठिन कार्य को सिद्ध करने, दुष्ट शत्रु का संहार करने के लिए शक्ति एवं परलौकिक सुख की प्राप्ति होती है। श्री दुर्गा जी के 32 नाम की मालपुए से हवन करने से असाध्य कार्य मे साधा जा सकता है। सफेद तिल और शहद मिलाकर 32 नामावली का हवन करने से विपत्तियों से मुक्ति मिल जाती है। श्री दुर्गा सप्तशती में 32 नाम दिये गये हैं। "**सुभद्रा**" नाम की देवी जी की सेवा करने से मानव के रोग नाश होता है। "**रोहिणी**" नाम की देवीजी की सेवा से मानव के **रोग नाश** होता है।

हवन –

कड़ी–चावल ये यज्ञ करने पर "**शाकम्बरी देवी**" प्रसन्न होती है।

पालक एवं लौकी से हवन करने पर भी शाकम्बरी देवी प्रसन्न होती है।

काली कनेर के फूल से भगवती "**कालिका**" जल्दी प्रसन्न होती है। श्री कालीजी को नीबू की माला पहनाने से प्रसन्नता प्राप्त होती है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सफेद कनेर के फूल से भगवती **''पार्वती''** प्रसन्न होती है
लाल गुलाब के फूल की माला से **''श्रीदेवी''** प्रसन्न होती है।
लाल कनेर के फूल से **''चण्डिका''** प्रसन्न होती है।
लौंग के फूल की माला से चण्डिका प्रसन्न होती हैं।
जटामांसी से यज्ञ करने **''पार्वती देवी''** प्रसन्न होती है।

पुत्र रत्न की प्राप्ति करना हो तो पार्वती माताजी को प्रसन्न करना होता है।

अशोक के वृक्ष को जल चढ़ाने से **''देवी कृपा''** की प्राप्ति होती है।

कृष्ण पक्ष की अष्टमी नवमी चतुर्दशी को पूजा, होम बलिदान से देवीजी प्रसन्न होती हैं।

देवी उपासना में कन्या भोजन एवं ब्राह्मण भोजन का विशेष महत्व होता है। यह कराना अनिवार्य है। कन्याओं को खीर, पुड़ी या हलुआ पुड़ी ही खिलाई जाती है। यथा शक्ति दान, मुद्रा एवं कपड़े देना चाहिए। सौभाग्यवती स्त्री को भोजन एवं सौभाग्य द्रव्य देने से मंत्र सिद्धि होती है।

श्री दुर्गा सप्तशती के पाठ को सुनने से पापो का नाश होता है।
गुड़हल या जवा फूल, घी और शहद से हवन करने से **''देवी''** प्रसन्न होती है।

श्री लक्ष्मीजी का हवन बिल्व पत्र, बिल्व फल, कमल गट्टा, आंवला, तिल, घी, गुड़, जटामांसी, रक्तचन्दन, गुगल से करने से श्री लक्ष्मी जी की कृपा होती है। प्रत्येक माह की दूज, अष्टमी और पूर्णिमा श्री देवी जी के नाम से होती है। श्री देवीजी के एक माह तक 300 मंत्र प्रतिदिन जपने से सब कार्यो की सिद्धि मिलती है। श्री देवीजी के एक माह तक 1100 मंत्र प्रतिदिन जपने एवं दशांश होम करने पर सर्व कार्य सम्पन्न हो जाता है। श्री देवीजी के कुंजिका स्त्रोत का पाठ 108 बार रोज करने से सिद्धि की प्राप्ति एवं इच्छित कार्य सम्पन्न हो जाता है। सूखे मेवे से यज्ञ करने से

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देवीजी बहुत जल्दी प्रसन्न होती है। व्यवसाय बढ जाता है। महिषासुरमर्दिनी स्त्रोत का पाठ करने से श्री देवी जी प्रसन्न होती है। अश्विन मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी के दिन **"श्री देवी भागवत"** ब्राह्मण को दान करनी चाहिए। जिससे देवीजी प्रसन्न होती है।

देवी अग्नि की पत्नी स्वाहा देवी–

ब्राह्मणों और क्षत्रिओं के यज्ञों की हविष्य देवताओं तक नहीं पहुंचती थी, अतः वे सब ब्रह्मा के पास गए। ब्रह्मा उनके साथ श्री कृष्ण की शरण में पहुचें। कृष्ण ने उन्हें प्रकृति की पूजा करने के लिए कहा प्रकृति की कला ने प्रकट होकर उन्हें वर मांगने को कहा। उन्होंने वर स्वरूप सदैव हविष्य प्राप्त करते रहने की इच्छा प्रकट की। उसने देवताओं को हविष्य मिलने के लिए आश्वस्त किया। वह स्वयं श्रीकृष्ण की आराधिका थीं। प्रकृति की उस कला से श्रीकृष्ण ने कहा कि वह अग्नि की पत्नी स्वाहा होगी। उसके माध्यम से देवता तृप्त हो जायेंगे। अग्नि ने वहां उपस्थित होकर उसका पाणिग्रहण किया।

उदा. – जिस प्रकार विषहीन सर्प, वेदहीन ब्राह्मण, पति सेवा विहीन स्त्री, विद्याहीन पुरूष तथा फल एवं शाखा रहित वृक्ष, निंदा के पात्र है वैसे ही कोई भी मंत्र स्वाहा के बिना फलहीन है।

स्वधा देवी पितृों की पत्नी –

ब्रह्माजी ने सप्तपितृों की उत्पत्ति की। चार मूर्तिमान थे और तीन तेज रूप में थे। उनके भोजन के लिए श्राद्ध में श्राद्ध और तर्पण वाला पदार्थ निश्चित कर दिया। ब्राह्मण भोजन और ब्राह्मणों को दिया गया अन्नदान और पदार्थ पितृों तक नहीं पहुंचता था। पीडित होकर पितृ देवता ब्रह्म देव के पास गए और बोले जिस प्रकार आपने देवताओं को हवन की हविष्य पहुँचाने का

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कार्य स्वाहा देवी को सौंपा है उसी प्रकार हमारे लिए भी कोई देवी नियुक्त करें। तब भगवती, ब्रह्माजी के मन से उनकी मानसी कन्या के रूप में प्रकट हुई भगवती, अम्बा की अंगरूपी होने के कारण उनको देवी रूप में सभी देवताओं द्वारा पूजा गया और स्वधा नाम दे दिया गया। और पितृों की पत्नी बना दी गई।

यज्ञ की पत्नी का नाम दक्षिणा–

श्रीमद्‌देवि भागवत की कथा के अनुसार

गौ लोक में भगवान श्रीकृष्ण की गोपीका एक प्रेमी थी। उसका नाम सुशीला था। सुशीला श्रीराधा की प्रधान सखी थी। सुशीला को रती शास्त्र का पूर्ण ज्ञान था। भगवान श्रीकृष्ण भी उससे प्रेम करते थे।

दुर्भावनावश राधा ने सुशीला को गौलोक से चले जाने का उपदेश दिया। अत्यंत कठिन तपस्या कर श्रीलक्ष्मी के विग्रह में दक्षिणा ने स्थान प्राप्त किया। देवताओं ने कठिन से कठिन यज्ञ किए परंतु फल की प्राप्ति नहीं हुई क्योंकि दक्षिणा उपस्थित नहीं थी।

तब सभी देवता ब्रह्माजी के पास गए उनको अपनी समस्या बताई। तत्पश्चात् महालक्ष्मी के विग्रह से मृत्युलक्ष्मी को प्रकट किया और उसका नाम दक्षिणा रख कर यज्ञ संबंधी कार्यो की संपन्नता के लिए देवी दक्षिणा को यज्ञपुरूष के साथ सहधर्मिणी बनाकर दे दिया। इस प्रकार यज्ञ की पत्नी का नाम दक्षिणा हुआ। कुछ समय बाद देवी दक्षिणा गर्भवती हो गई और उनको एक पुत्र जिसका नाम फल रख गया। कर्म करने के पश्चात् तुरन्त दक्षिणा देना चाहिए। भगवती महालक्ष्मी के दक्षिण कंधे से प्रकट हुई थी इसलिए इस देवी का नाम दक्षिणा रखा गया।

षष्ठी देवी

बालकों की यह अधिष्ठात्रि देवी है। इनको देवसेना के नाम से भी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जाना जाता है यह कार्तिकेय स्वामी की पत्नी है। इनका काम बच्चों को दीर्घायु बनाना, पालन पोषण करना व रक्षा करना है।

कथा–

स्वांयभु मनु के पुत्र प्रियव्रत के यहाँ विवाह के बाद भी कई वर्षो तक पुत्र उत्पन्न नहीं हुआ। मुनि कश्यप की सलाह से पुत्र के लिए यज्ञ किया गया। यज्ञोपरान्त प्रियव्रत की पत्नी मालिनी को प्रसाद भक्षण के लिए दी गई जिससे वह गर्भवती हुई। समयानुसार एक बालक मरा हुआ उत्पन्न हुआ। राजा प्रियव्रत उस बालक को लेकर शमशान गए वहां पर अचानक एक दिव्य विमान दिखाई दिया उस विमान में से षष्ठी विराजमान थीं। माता षष्ठी ने राजा प्रियव्रत के हाथ से वह बालक लेकर उसे पुनः जीवित कर दिया। देवता देत्यों से लड़ते–लड़ते त्रस्त हो चुके थें।

तब माता षष्ठी ने ही सेना बनकर देवताओं के पक्ष में युद्ध किया। इन्हीं की कृपा से देवता–दानवों पर विजय हुए। तब से इनकों देवसेना के नाम से जाना जाने लगा। षष्ठी देवी ब्रह्माजी की मानसी कन्या हैं। छठ मय्या के नाम से इन्हें जाना जाता है। संतान प्राप्ति और पुत्र पीड़ा, संतान पीड़ा, सुयोग्य पुत्र इन सब कार्यो के लिए पूजा जाता है। अपने कर्म के प्रभाव से पुरूष अपने कई पुत्रों का पिता होता है। और कुछ लोग पुत्रहीन होते हैं। किसी को मरा हुआ पुत्र होता है। तो किसी की दीर्घजीवी पुत्र शुक्ल पक्ष की षष्ठी को पूजा का विधान हैं। वटवृक्ष के नीचे पूजा करने से विशेष फल मिलता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भ्रामरी देवी का प्रादुर्भाव–

भ्रामरी देवी का अवतार लेकर देवी महामाया ने अरूण नाम दैत्य से देवताओं की रक्षा की थी। अरूण दैत्य, कठोर तपस्या, कठोर नियम, तप किया ब्रह्मा जी की तपस्या, वरदान मिला युद्ध में मुझे कोई न मार सकें, अस्त्र–शस्त्र से मेरी मृत्यु न हो, स्त्री या पुरूष से मेरी मृत्यु न हो, दो व चार पैर वाला प्राणी मेरा वध ना कर सकें। जैसा की होता आया है वर प्राप्त दानव मदहोश हो जाते है। उत्पात मचाते है, आतंक मचाते है स्वर्ग पर शासन करते है, देवी की घोर तपस्या में देवता लोक थम गये। देवी प्रसन्न हुई भ्रामरी से घिरी हुई थी वरदान के अनुसार अरूण दैत्य का नाश देवी ने भ्रामरी से कराया।

ऐसा भी कहा जाता है कि अरूण दैत्य गायत्री माँ का प्रबल उपासक था। वह रोजाना उनकी भक्ति करता था। मंत्र, जप, हवन इत्यादि। आकाशवाणी से यह आदेश आया कि यदि दानव अरूण यदि गायत्री की उपासऩ छोड़ दे तो उसे मारने का रास्ता साफ हो जावेगा। इस कार्य के लिए देव गुरू ब्रहस्पति को नियुक्त किया गया कि वह गायत्री जप करना बंद कर दे। बृहस्पति दानवेन्द्र अरूण के पास गये और माया के प्रभाव से गायत्री की उपासना करना बन्द करा दी। जैसे ही अरूण ने गायत्री की उपासना बंद की, जप करना बंद कर दिया दानव का शरीर निस्तेज हो गया। देवीजी ने अपने शरीर से निकाले हुए असंख्य भ्रामरों से उस अरूण दैत्य की जीवन लीला समाप्त कर दी।

महाअष्टमी किसे कहते है?

दुर्गाष्टमी का हिन्दू धर्म में बड़ा महत्व है। प्रत्येक माह में शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि पर दुर्गा अष्टमी व्रत किया जाता है इस **"मासिक दुर्गा अष्टमी "** भी कहते है। इस दौरान श्रद्धालु दुर्गा माता की पूजा करते है और उनके लिए पुरे दिन का व्रत करते है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मुख्य दुर्गाअष्टमी जिसे 'महाअष्टमी' कहा जाता है।

भोग – अश्विन माह में नौ दिन के शारदीय नवरात्र उत्सव के दौरान पड़ती है। दुर्गा अष्टमी को 'दुर्गाष्टमी' के नाम से जाना जाता है भगवती दुर्गा को उबाले हुए चने, हलवा–पूरी, खीर, पुए आदि का भोग लगाया जाता हैं। इस दिन देवी दुर्गा की मूर्ति का मन्त्रों से विधिपूर्वक पूजन किया जाता है। बहुत से व्यक्ति इस महाशक्ति को प्रसन्न करने लिए हवन आदि भी करते है। शक्तिपीठों में इस दिन बहुत उत्सव मनाया जाता है।

महत्व–

चैत्र शुक्ल अष्टमी का अत्यन्त विशिष्ट महत्व है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नवरात्र पूजा का जो आयोजन प्रारम्भ होता है, वह आज ही के दिन या दूसरे दिन नवमी को पूर्णता प्राप्त करता है। आज के दिन ही आदि शक्ति भवानी का प्रादुर्भाव हुआ था।

भगवती भवानी अजेय शक्तिशलिनी महानतम शक्ति है और यही कारण है कि इस अष्टमी को महाअष्टमी कहा जाता है। महाअष्टमी को भगवती के भक्त उनके दुर्गा, काली, भवानी, जगदम्बा, नवदुर्गा आदि रूपों की पूजा आराधना करते है।

प्रतिमा को शुद्ध जल से स्नान कराकर वस्त्राभूषणों द्वारा पूर्ण श्रृंगार किया जाता है। और फिर विधिपूर्वक आराधना की जाती है। हवन की अग्नि जलाकर धूप, कपूर, घी, गुग्गुल और हवन सामग्री की आहुतियाँ दी जाती है। सिंदूर में एक जायफल को लपेटकर आहुति देने का भी विधान है। धूप, दीप, नैवेद्य से देवी की पूजा करने के बाद मातेश्वरी की जय बोलते हुए 101 परिक्रमाएं दी जाती है।

कुछ क्षेत्रों में गोबर से पार्वती जी की प्रतिमा बनाकर पूजा का विधान भी है। वहाँ इस दिन कुमारियां तथा सुहागिने पार्वती जी की गोबर निर्मित प्रतिमा का पूजन करती है। नवरात्रों के पश्चात इसी दिन दुर्गा जी का विसर्जन किया जाता है। इस पर्व पर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नवमी को प्रांतः काल देवी का पूजन किया जाता है। अनेक पकवान से दुर्गाजी को भोग लगाया जाता है। छोटे बालक–बालिकाओं की पूजा करके उन्हें पूड़ी, हलवा, चने और भेंट दी जाती है।

दुर्गाष्टमी की कथा–

प्राचीन हिन्दू शास्त्रों के अनुसार देवी दुर्गा के नौ रूप है। उन सब रूपों की अवतार कथाएं इस प्रकार है।

1. मधु और कैटभ राक्षस व वध की कथा (महाकाली की उत्पत्ति)

एक बार जब प्रलय काल में सारा संसार जलमय था अर्थात चारों ओर पानी ही पानी दिखाई देता था, उस समय भगवान विष्णु की नाभि से एक कमल उत्पन्न हुआ। उस कमल से ब्रह्मा जी निकले। उसी समय भगवान नारायण के कानों में से जो मैल निकला उससे मधु और कैटभ नाम के दो दैत्य उत्पन्न हुए। जब उन दैत्यों ने चारों और देखा तो उन्हें बह्माजी के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं दिया। वे दोनों कमल पर बैठे ब्रह्माजी पर टूट पड़े, तब भयभीत होकर ब्रह्माजी ने विष्णु की स्तुति की। विष्णु जी की आँखों मे उसी समय महामाया योगानिद्रा के रूप में निवास कर रहीं थी। ब्रह्मा की स्तुति से वे लोप हो गई और विष्णु भगवान नींद से जाग उठे। उनके जागते ही वे दैत्य भगवान विष्णु से लड़ने लगे और उनमें 5000 वर्ष तक युद्ध चलता रहा। अंत में भगवान विष्णु की रक्षा के लिए महामाया ने असुरों की बुद्धि पलट दी। तब वे असुर प्रसन्न हो विष्णुजी से कहने लगे– हम आपके युद्ध कौशल से प्रसन्न है, जो चाहो वह वर मांग लों। भगवान विष्णु बोले– यदि हमें वर देना है तो यह वर दो कि तुम दोनो मेरे हाथों से मारे जाओ दैत्यों ने कहा–तथास्तु । ऐसा कहते ही महाबली दैत्यों का विष्णुजी के हाथों से नाश हो गया। जिसने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

असुरों की बुद्धि को बदला था वह देवी थी 'महाकाली'। यह कथा प्रथम अध्याय में दी गयी है।

2. महालक्ष्मी–

एक समय महिषासुर नाम महाप्रतापी एक दैत्य हुआ। उसने समस्त राजाओं को हराकर पृथ्वी और पाताल पर अपना अधिकर जमा कर सब लोक जीत लिए। जब वह देवताओं से युद्ध करने लगा तो देवता उससे युद्ध मे हारकर भागने लगे और भगवान विष्णु के पास पहुँचे। वे उस दैत्य से बचने के लिए विष्णु जी से प्रार्थना करने लगे। देवताओं की स्तुति करने से भगवान विष्णु और शंकर जी बहुत प्रसन्न हुए और उनके शरीर से एक तेज़ निकला, जिसने 'महालक्ष्मी' का रूप धारण कर लिया। उन्हें सब देवों ने अस्त्र शस्त्र और अलंकार दिए। इन्हें लेकर महालक्ष्मी ने महिषासुर दैत्य को युद्ध में मारकर देवताओं का कष्ट दूर किया।

यह कथा श्री दुर्गा सप्तशती में तीसरे अध्याय में दिया गया।

3. महासरस्वती / चामुण्ड़ा

एक समय शुंभ–निशुंभ नाम के दो बहुत बलशाली दैत्य हुए थे। उन्होंने युद्ध में मनुष्य क्या, सब देवता जीत लिये थे। जब देवताओं ने देखा कि अब वे युद्ध मे नहीं जीत सकते, तब वे स्वर्ग छोड़कर भगवान विष्णु की स्तुति करने लगे। उस समय भगवान विष्णु की शरीर से एक नारी तेज़ प्रकट हुई, यही **महासरस्वती** थी।

महासरस्वती अत्यंत रूपवान थीं। उनका रूप देखकर वे दैत्य मोहित हो गए और उन्होंने सुग्रीव नाम का दूत उस देवी के पास भेजा। उस दूत को देवी ने वापस कर दिया। उसके निराश होकर लौटने पर उन दोनों ने सोच–समझकर अपने सेनापति धूम्राक्ष को सेना सहित भेजा उसे देवी ने सेना सहित मार दिया।

फिर चण्ड–मुण्ड देवी से लड़ने गए और वे भी मारे गए।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तत्पश्चात् रक्तबीज नाम का दैत्य लड़ने आया, जिसके रक्त की एक बूंद जमीन पर गिरने से एक वीर पैदा होता था। उसे भी देवी ने मार डाला। अंत में शुम्भ–निशुम्भ स्वयं चामुण्डा से लड़ने आए और देवी के हाथों मारे गए। सभी देवता, दैत्यों की मुत्यु के बाद बहुत खुश हुए। इस प्रकार देवताओं को फिर खोया हुआ स्वर्ग का राज्य मिला। सप्तम अध्याय में चण्ड–मुण्ड, अष्टम में रक्तबीज, नवम अध्याय में निशुम्भ एवं दशम अध्याय में शुम्भ का वध/संहार हुआ।

4. योगमाया

जब कंस ने वसुदेव–देवकी के छः पुत्रों का वध कर दिया और सातवें बलराम जी रोहिणी के गर्भ में प्रवेश होकर प्रकट हुए, तब आठवाँ जन्म (अवतार) कृष्ण का हुआ। उसी समय गोकुल में **यशोदा जी के गर्भ से योगमाया का जन्म** हुआ जो वसुदेव के द्वारा कृष्ण के बदले में मथुरा लायी गई। जब कंस ने कन्या रूपी योगमाया को मारने के लिए पटकना चाहा तो वह हाथ से छूटकर आकाश में उड़ गई और देवी का रूप धारण कर लियां इसी योगमाया ने कृष्ण के साथ **योगविद्या और महाविद्या** बनकर कंस, चाणूर आदि शक्तिशाली असुरों का संहार कराया।

5. रक्तदन्तिका

एक बार जब पृथ्वी पर वैप्रचित नाम के असुर का उत्पात बढ़ा, उसने मनुष्य की ही नही बल्कि देवताओं तक को बहुत दुःख दिया। पृथ्वी और देवताओं की प्रार्थना पर उस समय देवी दुर्गा ने रक्तदन्तिका नाम से अवतार लिया और असुरों का भक्षण किया। वह देवी असुरों को मारकर रक्तपान किया करती थी। इस कारण इनका नाम रक्तदन्तिका पड़ा। जब देवीजी असुरों को मारकर रक्तपान करती थी तो अभी भी असुरो/शत्रुओं के नाश के लिए रक्तदन्तिका का आवाहन किया जाना चाहिए। अनार के दाने से हवन होता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

6. शाकम्भरी

एक बार पृथ्वी पर लगातार सौ वर्ष तक वर्षा नहीं हुई तब अन्न–जल के अभाव में समस्त प्रजा मरने लगी। इस कारण चारों ओर हाहाकार मच गया। समस्त जीव भूख से व्याकुल होकर मरने लगे। उस समय समस्त मुनियों ने मिलकर देवी भगवती की उपासना की। जिससे दुर्गा जी ने शाकम्भरी नाम से स्त्री रूप में अवतार लिया और उनकी कृपा से वर्षा हुई। इस अवतार में महामाया ने जलवृष्टि से पृथ्वी को हरी साग–सब्जी और फलों से परिपूर्ण कर दिया। जिससे पृथ्वी के समस्त जीवों को जीवनदान प्राप्त हुआ।

7. दुर्गा

दुर्गम नाम का एक राक्षस हुआ। उसके डर से पृथ्वी ही नहीं, स्वर्ग और पाताल लोक के निवासी भी भयभीत रहते थे। ऐसी विपत्ति के समय भगवान की शक्ति ने दुर्ग या दुर्गसैनी के नाम से अवतार लिया। जिसने दुर्गम राक्षस को मारकर हरिभक्तों की रक्षा की। दुर्गम राक्षस को मारने के कारण ही इनका नाम दुर्गा प्रसिद्ध हो गया। दुर्गा जी की पूजा में दुर्गा जी की आरती और दुर्गा चालीसा का पाठ किया जाता है।

8. भ्रामरी

महा अत्याचारी अरुण नाम के एक असुर ने स्वर्ग में जाकर उपद्रव करना शुरू कर दिया। वह देवताओं की पत्नियों का सतीत्व नष्ट करने की कुचेष्टा करने लगा। अपने सतीत्व की रक्षा के लिए देव पत्नियां देवी दुर्गा से प्रार्थना करने लगीं। देव पत्नियों को दुखी देख दुर्गा ने भ्रामरी का रूप धारण करके असंख्य भौंरों के दल के रूप में प्रकट हो काट–काटकर अपने विष से उस असुर को सेना सहित मार गिराया। भ्रामरी के नाम से प्रसिद्ध हुईं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

9. चण्डिका

पृथ्वी पर चण्ड और मुण्ड के दो राक्षस पैदा हुए। वे दोनों इतने बलवान थे कि उन्होंने संसार में अपना राज्य फैला लिया और स्वर्ग के देवताओं को पराजित कर वहाँ भी अपना अधिकार जमा लिया। इस प्रकार देवता दुःखी होकर देवी की स्तुति करने लगे। तब देवी चण्डिका के रूप में प्रकट हुई और चण्ड–मुण्ड नामक राक्षसों को मारकर संसार का दुःख दूर किया। उन्होंने देवताओं को छीना गया स्वर्ग पुनः उन्हें दे दिया। इस प्रकार चारों तरफ सुख का साम्राज्य छा गया।

देवीजी का यज्ञ मंडप एवं यज्ञ वेदी का आकार –

यज्ञ मण्डप सोलह हाथ के विस्तार का होना चाहिए। और वेदी चार हाथ लम्बी चौड़ी और एक हाथ ऊँची होना चाहिए। गोबर से लिपवाना चाहिए। चाक बनाना चाहिए। यज्ञशाला (स्थल) के चारों तरफ झण्डे लगाना चाहिए। चारों तरफ वन्दरवार लगाना चाहिए।

यज्ञ को सफल करने के नियम –

1. देवी पाठ के लिए नौ, पाँच, तीन अथवा एक ही ब्राह्मण का वरण करें।
2. सूर्य के उत्तरायण में रहने पर यज्ञ करने पर सफलता अधिक मिलती है।
3. चन्द्रबली हो तब यज्ञ करना चाहिए। चन्द्रबली का अर्थ शुक्लपक्ष की नवमी से कृष्णपक्ष की सप्तमी तक का समय, सर्वाथ सिद्धि योग में करें।
4. प्रत्येक मंत्र की कम से कम 108 आहुति अवश्य दें। भद्रा तिथि या रिक्ता तिथि नहीं आनी चाहिए। कलियुग में मंत्र सिद्धि के लिए जितनी संख्या लिखी गई है उसका चार गुना जप एवं उसका दशांश होम करना चाहिए।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

5. देवीजी का यज्ञ चारों नवदुर्गा एवं कृष्णपक्ष की अष्टमी के दिन करना चाहिए। पूर्णिमा का दिन भी देवीजी के यज्ञ के लिए अच्छा माना जाता है। यज्ञ के पहले एवं बाद में मुख्य यजमान को किसी पवित्र नदी में स्नान करना अनिवार्य है।

6. खीर, त्रिमधु, किशमिश, अंगूर, केला, गन्ने के टुकड़े, अनार, नीबू, नारंगी, नारियल, तिल, सीजन के फल, आम फल, बेल फल, नींबू, कमल गट्टे, से विशेष हवन करना चाहिए जिससे विशेष आशिर्वाद की प्राप्ति होती है।

7. देवीजी के यज्ञ के बाद कन्या भोजन एवं ब्राह्मण भोजन का विशेष महत्व है। कन्याओं को मीठा भोजन करावें। नमक न खिलावें। यथाशक्ति फल, दक्षिणा एवं श्रृंगार सामग्री भी प्रदान करें।

देवी यज्ञ में प्रतिबन्धित कार्य या वस्तु –

कनेर के पुष्प, धतूरे के फूल, मदार के फूल, माताजी को नहीं चढ़ते हैं और नाही हवन होता है। पत्तल का आसन, बांस की वस्तु का आसन, पत्थर का आसन, लकड़ी की चौकी का आसन, कुर्सी का आसन, बैंच का आसन, घास–फूस का आसन नहीं होना चाहिए। गोबर के कण्डे पर यज्ञ नहीं होता है। यज्ञ करने के लिए फलदार वृक्ष की लकड़ी होना चाहिए। काली माताजी के यज्ञ में अध्याय 03 का 38 नम्बर के श्लोक का मद्य से हवन करना चाहिए। अध्याय 04 के श्लोक नम्बर 24 से 27 तक का हवन शहद से करना चाहिए। अध्याय 08 के श्लोक नम्बर 57 में बकरे के रक्त से या भैसे के रक्त से हवन करना चाहिए। रक्त नहीं मिलने पर कपिकाष्ठ से हवन करना चाहिए। मद्य नहीं हो तो नारियल पानी से हवन करना चाहिए। शहद में कुंकुम घोलकर उससे हवन या रक्त की जगह अनार के रक्त से हवन।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नवरात्रि में देवीजी का हवन करने की विधि (हवन व यज्ञ कैसे करें?)

1. ऊँ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थं गतोऽपि वा,
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षः, सःबाह्माभ्यतरः शुचि।
ऊँ पुनातु पुन्डरीकाक्षः पुनातु पुण्डरीकाक्षः
कलश से बांये हाथ की हथेली में जल लेकर यह मंत्र पढ़ते हुए उस जल को दांए हाथ की अंगुलियों से अपने ऊपर छिड़कें।

2. कलश से जल लेकर तीन बार आचमन करें।
ऊँ ऐं आत्मतत्वं शोधयामि नमः स्वाहा बोलते हुए जल ग्रहण करें।
ऊँ ह्रीं विध्यातत्वं शोधयामि नमः स्वाहा बोलते हुए जल ग्रहण करें।
ऊँ क्लीं शिवतत्वं शोधयामि नमः स्वाहा बोलते हुए जल ग्रहण करें।
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्वं शोधयामि नमः स्वाहा बोलते हुए जल से हाथ धोलें। ऐसा करने से आत्मा का शुद्धिकरण होता है और मंत्र के गलत बोलने, उच्चारण गलत बोलने के प्रभाव को समाप्त किया जाता है।
ऊँ ह्रीं गणेशाय नमः। ऊँ ह्रीं स्तम्भाय नाभी चक्राय नमः
ऊँ ऐं त्रैलोक्य डामराय नमः, बोलते हुए भी जल का तीन बार आचमन करना चाहिए।

3. शिखा पर दाहिना हाथ रखकर निम्न मंत्र पढ़े (कृपया स्त्रियां यह कार्य न करें)
चिद्रूपिणी महामाये दिव्य तेजः समन्विते तिष्ठदेवी शिखा मध्ये तेजो वृद्धि कुरूष्व में।

4. **पृथ्वी पूजन** – ऊँ पृथ्वी त्वया घृता लोका देवि, त्वं विष्णुनांघृता, त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरू चासनम्।

5. **आसन शुद्धि** – निम्न मंत्र पढ़कर आसन पर गन्ध–पुष्प

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

छोड़े ॐ ह्रीं आधार शक्तयै कमलासनायै नमः

6. **चन्दन धारणम्** – ॐ चन्दनस्य महत्त्वपुण्यं पवित्रं पापनाशनम् आपदां हरते नित्यं लक्ष्मीस्तिष्ठति सर्वदा।

7. **रक्षा सूत्रम्** – ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् दक्षिणां श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।

8. **गुरू स्मरण** – गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णु गुरूर्देवो महेश्वरः गुरूःर्साक्षत् परब्रह्म तस्मै श्री गुरूवे नमः

अखण्ड मंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् तत् पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।

ॐ वृं वृहस्पते नमः, ॐ ग्रां गीं ग्रौं सः गुरूवे नमः

ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरूभ्यौ नमः

ॐ हसं ॐ परमपदं तर्पयामी ॐ फट् स्वाहा।

9. **श्री सरस्वती मंत्र** – नीर हार हार धनसार सुधा कराम्भा कल्याणंदा कनक चम्पकदाम् भूषाम्।

उतुगंपीनकुचकुम्भ मनोहरांगी वाणी नमामि मनसा वचसा विभूत्यै।।

10. **दीपपूजनम्** – ॐ अग्नि ज्योंति ज्योति अग्नि स्वाहा,

सूर्यो ज्योति ज्योर्तिःसूर्य स्वाहा,

अग्नि र्वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा,

सूर्यवर्च्चो ज्योति र्वर्च्यः स्वाहा,

ज्योतिः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।

11. **कलश पूजन** – ॐ वरूणाय नमः आवाहयामि स्थापयामि ध्यायामि गन्ध, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्य समर्पयमि। ॐ कलशस्य देवताभ्योनमः ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती, नर्मदे, सिन्धु, कावेरि जले अस्मिन् संन्निधिम कुरु

12. **देवता आवहनम्** –

1. ॐ श्रीमन् महागणाधिपतये नमः
2. ॐ उमा महेश्वराभ्यो नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

3. ऊँ शचि पुरन्दराभ्यो नमः
4. ऊँ वाणी हिरण्यगर्भेभ्यो नमः
5. ऊँ लक्ष्मी नारायणाभ्यांम नमः
6. ऊँ कुल देवताभ्यों नमः
   ऊँ इष्टदेवताभ्यो नमः
7. ऊँ ग्राम देवताभ्यो नमः
8. ऊँ स्थान देवताभ्यो नमः
9. ऊँ स्थापित देवताभ्यो नमः
10. ऊँ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः
11. ऊँ सर्वेभ्यो तीर्थेभ्यो नमः
12. ऊँ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः
13. ऊँ सर्वेभ्यो ऋषिभ्यो नमः
14. ऊँ सर्वेभ्यो सिद्धाये नमः
15. ऊँ नव ग्रह देवताभ्यो नमः
16. ऊँ वास्तु देवताभ्यो नमः
17. ऊँ गुरूभ्यो नमः
18. ऊँ माता पिता चरण कमलेभ्यो नमः

यह नाम बोलते हुए एक–एक चावल का दाना कलश के ऊपर, छोड़ते जावें एतद् कर्म प्रधान देवता श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती त्रिगुणात्मिकायै दैव्यै नमो नमः

13. रक्षा विधानम् पीली सरसो हाथ में रखकर चारों दिशाओं मे फेके –
14. **योनी पूजन** – ऊँ सर्वमंगल मागल्यै शिवे सर्वार्थ साधिके, शरण्यै त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोऽस्तुते
15. आज्याहुतिः हो सके तो निम्न मंत्रों की आहुति घी से देवें ऊँ ब्रह्माये नमः, ऊँ विष्णवे नमः, ऊँ महेश्वराय नमः
   (तीनों मेहराब पर पूजन करना) यज्ञ कुण्ड के ऊपर
16. ऊँ प्रजापतये स्वाहा, ऊँ इन्द्राय स्वाहा, ऊँ अग्नये स्वाहा,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ऊँ सोमाय स्वाहा, ऊँ भूः स्वाहा, ऊँ भुवः स्वाहा, ऊँ स्वः स्वाहा

''ऊँ भूः र्भुवः स्वः'' ये तीनों बीज मंत्र त्रिपुर सुन्दरी से ही उत्पन्न हुए हैं। अतः इन मंत्रों को सम्पुट लगाकर ही हवन करना चाहिए। जिससे 10 गुना फल की प्राप्ति होती है। चाहे दुर्गासप्तशती हो या बीजात्मक दुर्गासप्तशती। या कोई भी मंत्र। जैसे ''ऊँ भूः स्वाहा'' ''ऊँ र्भुवः स्वाहा'' ''ऊँ स्वः स्वाहा'' इन तीन मंत्रों से हमेशा आहुति देना ही चाहिए।

'' ऊँ ऐं'' शब्द श्री महासरस्वती का बीज मंत्र है। वाग्बीज मंत्र है।

''ऊँ ह्रीं '' शब्द श्रीमाया बीज मंत्र है। यह तांत्रिक प्रणव है।

''ऊँ श्रीं'' शब्द श्री महालक्ष्मी का बीज मंत्र है।

''ऊँ क्लीं शब्द यह पंच महाभूतों का मंत्र है। काम बीज महान मंत्र है।

''ऊँ क्रीं'' माता काली का बीजाक्षर मंत्र है।

''ऊँ दुं'' श्री दुर्गा जी का बीज मंत्र है।

ऊकार का अर्थ नारायण है। तत्सत् का अर्थ ब्रह्म है।

हुँ का अर्थ विष्णु है, क्षौ का अर्थ नरसिंह है, भूः का अर्थ महावराह हैं, हसंः का अर्थ विष से है।

विभिन्न मंत्र –

''ऊँ ह्रीं हुं नमः'' छः शक्तियों का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

''ऊँ क्रौं क्षौं रौं नमः'' बारह देवताओं का आशीर्वाद एक साथ प्राप्त होता है।

नौ शक्ति –

ब्राम्ही, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, नारसिही, ऐन्द्री, शिवदूती, चामुण्डा

नव दुर्गा–

शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघंटा, कुष्माण्डा, स्कन्धमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदात्री

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

छः अगंभूता देवी :—

नन्दा देवी, रक्तदंतिका देवी, शाकम्भरी देवी, दुर्गा देवी, भीमा देवी, भ्रामरी देवी

उदय सम्पुट — सम्पुट मंत्र. श्लोक सप्तशती. सम्पुट मंत्र

अस्त सम्पुट —

सम्पुट मंत्र. सप्तशती श्लोक. सम्पुट मंत्र का विपरित पाठ. सम्पुट मंत्र का पाठ. सम्पुट मंत्र का विपरित पाठ

1. घी की धार लगाना

ऊँ प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा,

अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा

ऊँ घृतं घृतपावानः पिबत वासं—वासांपावानः

पिबतं अन्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा दिशः प्रदिशः आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्रभ्यः

2. क्षमाप्रार्थना

ऊँ आवाहनं न जानामि न जानामिपूजनम् विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरी यत्पूजितं मया देव परिपूर्ण तदस्तु मे

यद क्षर पद भ्रष्टं मंत्रहीनं च यद् भवेत तत्सर्व क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।

सष्टांग नमस्कार करें।

3. शुभकामना बोले —

सर्वे भवन्तु सुखीन सर्वे सन्तु निरामयाः

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभागभवेत्

शान्ति अभिसिंचन

कलश का जल लेकर सभी बैठे हुए व्यक्तियों पर एवं पूरे घर में छिड़काव करें। निम्न मंत्र बोलकर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ऊँ द्यौः शान्ति अन्तरिक्ष घुम शान्तिः,
पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्ति विश्वदेवाः शान्ति,
ब्रह्मशान्तिः सर्वघुम शान्तिः
शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।
ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः सर्वारिष्ट सुशान्तिर्भवतु
"दुर्गति नाशिनी दुर्गा जय–जय काल विनाशिनी काली जय जय।
उमा रमा ब्रह्माणी जय–जय, सीता राधा रूक्मिणी जय–जय।"

इस मंत्र की 108 आहुति प्रतिदिन देने से सुख, समृद्धि, शान्ति और निरोगी काया प्राप्त होती है। इस मंत्र की 16 माला रोजाना जप करने से भी सुख, समृद्धि, शान्ति और निरोगी काया प्राप्त होती है।

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा (इस मंत्र का हवन शक्कर खीर, घृत, तिल, चावल, जौ से करना चाहिए)
"विच्चै चामुण्डायै क्लीं ह्रीं ऐं ऊँ, ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै विच्चै चामुण्डायै क्लीं ह्रीं ऐं ऊँ,"

चतु:षष्टी योगिनी नामावली (प्रत्येक नाम से हवन करें) (एक)

ह्रीं श्रीं योगा देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं महायोगा देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं सिद्धियोगा देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं गणेश्वरी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं प्रेताक्षी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं डाकिनी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं काली देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं कालरात्रि देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं निशाचरी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं हुंकारी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं रूद्रवैताली देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं खर्परी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं भूतयामिनी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं उर्ध्वकेशी देव्यै नमः स्वाहा। विरूपाक्षी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं शुष्कांगी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं मांस भोजनी देव्यै नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्वाहा। ह्रीं श्रीं फेत्कारी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं वीर भद्राक्षी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं धुम्राक्षी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं कलहप्रिया देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं रक्ता देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं घोर रक्ताक्षी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं भयंकरी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं चंडिका देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं मारिका देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं चंडी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं वाराही देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं मुण्डधारिणी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं भेरवी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं चक्रपाणी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं क्रोधा देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं दुर्मुखी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं प्रेतवाहिनी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं कंटकी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं दीर्घलंबोष्ठी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं मालिनी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं मंत्र योगिनी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं कालाग्नि देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं मोहिनी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं चक्री देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं कंकाली देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं भुवनेश्वरी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं कुण्डलाक्षी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं जुही देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं लक्ष्मी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं यमदूती देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं करालिनी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं कोशिकी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं भक्षणी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं यक्षी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं कौमारी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं यंत्रवाहिनी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं विशाला देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं कामुकी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं व्याघ्री देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं यक्षिणी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं प्रेतभूषणी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं धूर्जटी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं विकटी देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं घोरा देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं कपाला देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं लांगली देव्यै नमः स्वाहा। (नींबू एवं नारियल से हवन करना।)

चौसठ योगिनी (दो)

सभी नामों के आगे ऊँ ह्रीं श्रीं लगाकर हवन करना है

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ब्रह्माणी देव्यै नमः स्वाहा। चण्डिका देव्यै नमः स्वाहा। रौद्री देव्यै नमः स्वाहा। इन्द्राणी देव्यै नमः स्वाहा। कौमारी देव्यै नमः स्वाहा। वैष्णवी देव्यै नमः स्वाहा। दुर्गा देव्यै नमः स्वाहा। नारसिंही देव्यै नमः स्वाहा। कालिका देव्यै नमः स्वाहा। चामुण्डा देव्यै नमः स्वाहा। शिवदूती देव्यै नमः स्वाहा। वाराही देव्यै नमः स्वाहा। कौशिकी देव्यै नमः स्वाहा। माहेश्वरी देव्यै नमः स्वाहा। शांकरी देव्यै नमः स्वाहा। जयन्ती देव्यै नमः स्वाहा। सर्वमंगला देव्यै नमः स्वाहा। काली देव्यै नमः स्वाहा। कपालिनी देव्यै नमः स्वाहा। शान्ता देव्यै नमः स्वाहा। भ्रामरी देव्यै नमः स्वाहा।

रूद्राणी देव्यै नमः स्वाहा। अम्बिका देव्यै नमः स्वाहा। क्षमा देव्यै नमः स्वाहा। धात्री देव्यै नमः स्वाहा। स्वाहा देव्यै नमः स्वाहा। स्वधा देव्यै नमः स्वाहा। अपर्णा देव्यै नमः स्वाहा। महोदरी देव्यै नमः स्वाहा। घोररूपा देव्यै नमः स्वाहा। महाकाली देव्यै नमः स्वाहा। भद्रकाली देव्यै नमः स्वाहा। भयंकरी देव्यै नमः स्वाहा। क्षेमकरी देव्यै नमः स्वाहा। उग्रचण्डा देव्यै नमः स्वाहा।

चण्डोमा देव्यै नमः स्वाहा। चण्डनायिका देव्यै नमः स्वाहा। चण्डा देव्यै नमः स्वाहा। चण्डवती देव्यै नमः स्वाहा। चण्डी देव्यै नमः स्वाहा। महामोहा देव्यै नमः स्वाहा। प्रियंकरी देव्यै नमः स्वाहा। बालविकरिणी देव्यै नमः स्वाहा। बलप्रमथिनी देव्यै नमः स्वाहा। मनोन्मथिनी देव्यै नमः स्वाहा। सर्वभूतयक्षिणी देव्यै नमः स्वाहा। उमा देव्यै नमः स्वाहा। तारा देव्यै नमः स्वाहा। महानिद्रा देव्यै नमः स्वाहा। विजया देव्यै नमः स्वाहा। जया देव्यै नमः स्वाहा। शैलपुत्री देव्यै नमः स्वाहा। चन्द्रघण्टा देव्यै नमः स्वाहा। स्कन्धमाता देव्यै नमः स्वाहा। कालरात्रि देव्यै नमः स्वाहा। मातंगी देव्यै नमः स्वाहा। कुष्माण्डा देव्यै नमः स्वाहा। कात्यायनी देव्यै नमः स्वाहा। महागौरी देव्यै नमः स्वाहा। बगला देव्यै नमः स्वाहा। ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वपूज्ये देवी मंगल चण्डिके हुं हुं फट् स्वाहा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गजाननादि चतुःषष्टि योगिनी देवि (तीन)

ॐ महाकाल्यै नमः, ॐ महालक्ष्म्यै नमः, ॐ महासरस्वत्यै नमः, ॐ गजाननायै नमः, ॐ सिहमुख्यै नमः, ॐ गृधास्यायै नमः, ॐ काकतुण्डिकायै नमः, ॐ उष्टग्रीवायै नमः, ॐ हयग्रीवायै नमः, ॐ वाराह्मो नमः, ॐ शरभाननायै नमः, ॐ उलूकिकायै नमः, ॐ शिवारावायै नमः, ॐ मयूररयै नमः, ॐ विकटाननायै नमः, ॐ अष्टवक्रायै नमः ॐ कोटराक्ष्यै नमः, ॐ कुब्जायै नमः, ॐ विकटलोचनायै नमः, ॐ शुष्कोदर्ये नमः, ॐ ललजिव्हायै नमः, ॐ अश्वदंष्टायै नमः, ॐ वानराननायै नमः, ॐ रूक्षाक्ष्यै नमः, ॐ केकराक्ष्यै नमः, ॐ वृहतुण्डायै नमः, ॐ सुराप्रियाये नमः, ॐ कपाल हस्तायै नमः, ॐ रक्ताक्ष्यै नमः, ॐ शुक्यै नमः, ॐ शैन्वयै नमः, ॐ कपोतिकायै नमः, ॐ पाशहस्तायै नमः, ॐ दण्डहस्तायै नमः, ॐ प्रचण्डायै नमः, ॐ चण्डविक्रमायै नमः, ॐ शिशुघ्न्यै नमः, ॐ पापहन्त्रये काल्यै नमः, ॐ रूधिरपायिन्यै नमः, ॐ वसाधरायै नमः, ॐ गर्भभक्षायै नमः, ॐ शवहस्तायै नमः, ॐ आन्त्रमालिन्यै नमः, ॐ स्थूलकेश्यै नमः, ॐ वृहतकुक्ष्यै नमः, ॐ सर्पास्यायै नमः, ॐ प्रेतवाहनायै नमः, ॐ दन्दशूककरायै नमः, ॐ क्रोच्ययै नमः, ॐ मृगशीर्षायै नमः, ॐ वृषाननायै नमः, ॐ व्यातास्यायै नमः, ॐ धूम्रनिःश्वासायै नमः, ॐ व्योमकचरणोर्ध्वदृशे नमः, ॐ तापिन्यै नमः, ॐ शोषणीदृष्टये नमः, ॐ स्थूलनासिकायै नमः, ॐ मार्जायै नमः, ॐ कटपूतनायै नमः, ॐ अट्टाहासायै नमः, ॐ कामाक्ष्यै नमः, ॐ मृगाक्ष्यै नमः, ॐ मृगलोचनाय नमः।"

"ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वपूज्ये देवी मंगल चण्डिके हुं हुं फट् स्वाहा।"

64 योगिनीयों के मन्त्र (चार)

1. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री काली नित्य सिद्धमाता स्वाहा।
2. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कपालिनी नागलक्ष्मी स्वाहा।
3. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कुल देवी स्वर्णदेहा स्वाहा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

4. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कुरुकुल्ला रसनाथा स्वाहा।
5. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री विराधिनी विलासिनी स्वाहा।
6. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री विप्रचित्ता रक्तप्रिया स्वाहा।
7. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री उग्र रक्त भोग रूपा स्वाहा।
8. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री उग्रप्रभा शुक्रनाथ स्वाहा।
9. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री दीपा मुक्तिः रक्ता देहा स्वाहा।
10. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री नीला भुक्तिरक्ता स्पर्शा स्वाहा।
11. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री घना महा जगदम्बा स्वाहा।
12. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री बलाका काम सेविता स्वाहा।
13. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री मातृ देवी आत्मविद्या स्वाहा।
14. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री मुद्रा पूर्णा रजतकृपा स्वाहा।
15. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री मिता तंत्र कौला दीक्षा स्वाहा।
16. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री महाकाली सिद्धेश्वरी स्वाहा।
17. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कामेश्वरी सर्वशक्ति स्वाहा।
18. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री भगमालिनी तारिणी स्वाहा।
19. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री नित्यकलींना तंत्रार्पिता स्वाहा।
20. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री भैरुण्ड तत्त्व उत्तमा स्वाहा।
21. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री वह्निवासिनी शासिनी स्वाहा।
22. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री महाव्रजेश्वरी रक्त देवी स्वाहा।
23. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री शिवदूती आदि शक्ति स्वाहा।
24. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री त्वरिता ऊर्ध्वरेतादास्वाहा।
25. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कुलसुंदरी कामिनी स्वाहा।
26. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री नीलपताका सिद्धिदा स्वाहा।
27. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री नित्य जनन स्वरूपिणी स्वाहा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

28. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री विजया देवी वसुदा स्वाहा।
29. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सर्वमंगला तन्त्रदा स्वाहा।
30. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ज्वालामालिनी नागिनी स्वाहा।
31. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री चित्रा देवी रक्तपूजा स्वाहा।
32. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ललिता कन्या शुक्रदा स्वाहा।
33. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री डाकिनी मदसालिनी स्वाहा।
34. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री राकिनी पापराक्षसी स्वाहा।
35. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लाकिनी सर्वतन्त्रेसी स्वाहा।
36. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री काकिनी नागनर्तकी स्वाहा।
37. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री शाकिनी मित्ररूपिणी स्वाहा।
38. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री हाकिनी मनोहारिणी स्वाहा।
39. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री तारा योग रक्ता पूर्णा स्वाहा।
40. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री षोडशी लतिका देवी स्वाहा।
41. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री भुवनेश्वरी मंत्रिणी स्वाहा।
42. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री छिन्नमस्ता योनिवेगा स्वाहा।
43. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री भैरवी सत्य सुकरिणी स्वाहा।
44. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री धूमावती कुण्डलिनी स्वाहा।
45. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री बगलामुखी गुरु मूर्ति स्वाहा।
46. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री मातंगी षोड़शवर्षिय युवती स्वाहा।
47. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कमला शुक्ल संस्थिता स्वाहा।
48. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री प्रकृति ब्रह्मेन्द्री देवी स्वाहा।
49. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री गायत्री नित्यचित्रिणी स्वाहा।
50. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री मोहिनी माता योगिनी स्वाहा।
51. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री सरस्वती स्वर्गदेवी स्वाहा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

52. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री अन्नपूर्णी शिवसंगी स्वाहा।
53. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री नारसिंही वामदेवी स्वाहा।
54. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री गंगा योनि स्वरूपिणी स्वाहा।
55. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री अपराजिता समाप्तिदा स्वाहा।
56. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री चामुंडा परि अंगनाथ स्वाहा।
57. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री वाराही सत्येकाकिनी स्वाहा।
58. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री कौमारी क्रिया शक्तिनी स्वाहा।
59. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री इन्द्राणी मुक्ति नियन्त्रिणी स्वाहा।
60. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ब्रह्माणी आनन्दा मूर्ति स्वाहा।
61. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री वैष्णवी सत्य रूपिणी स्वाहा।
62. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री माहेश्वरी पराशक्ति स्वाहा।
63. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री लक्ष्मी मनोरमायोनि स्वाहा।
64. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं श्री दुर्गा सच्चिदानंद स्वाहा।

समस्त योगिनियां अलौकिक शक्तिओं से सम्पन्न हैं तथा इंद्रजाल, जादू, वशीकरण, मारण, स्तंभन इत्यादि कर्म इन्हीं की कृपा द्वारा ही सफल हो पाते हैं।

प्रमुख रूप से आठ योगिनियां हैं जिनके नाम इस प्रकार है :–

1. सुर–सुंदरी योगिनी, 2. मनोहरा योगिनी, 3. कनकवती योगिनी, 4. कामेश्वरी योगिनी, 5. रति सुंदरी योगिनी 6. पद्मिनी योगिनी, 7. नतिनी योगिनी और 8. मधुमती योगिनी।

चौसठ योगिनियों के नाम (पांच)

1. बहुरूप, 2. तारा, 3. नर्मदा, 4. यमुना, 5. शांति, 6. वारुणी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

7. क्षेमंकरी, 8. ऐन्द्री, 9. वाराही 10. रणवीरा, 11. वानर–मुखी, 12. वैष्णवी, 13. कालरात्रि, 14. वैद्यरूपा, 15. चर्चिका, 16. बेतली, 17. छिन्नमस्तिका, 18. वृषवाहन, 19. ज्वाला कामिनी, 20. घटवार, 21. करालकाली, 22. सरस्वती, 23. विरूपा, 24. कौवेरी, 25. भलुका, 26. नारसिंही, 27. बिरजा, 28. विकान्ता, 29. महालक्ष्मी, 30. कौमारी, 31. महामाया, 32. रति, 33. करकरी, 34. सर्पश्या, 35. यक्षिणी, 36. विनायकी, 37. विंध्यवासिनी, 38. वीर कुमारी, 39. माहेश्वरी, 40. अम्बिका, 41. कामिनी, 42. घटाबरी, 43. स्तुती, 44. काली, 45. उमा, 46. नारायणी, 47. समुद्री, 48. ब्रह्मिनी, 49. ज्वाला मुखी, 50. आग्रेयी, 51. अदिति, 52. चन्द्रकान्ति, 53. वायुवेगा, 54. चामुण्डा, 55. मूरति, 56. गंगा, 57. धूमावती, 58. गांधार, 59. सर्व मंगला, 60. अजिता, 61. सूर्यपुत्री, 62. वायु वीणा, 63. अघोर और 64. भद्रकाली।

महादुर्गा मंत्र

ऊँ ऐं क्लीं महादुर्गे, नवाक्षरी, नवदुर्गे, नव आत्मिके, नव चण्डी, महामाये, महायोग निद्रे, जय मधु कैटभ विद्राणि, महिषासुर मर्दिनी, धुम्रलोचन संहंत्री, चण्ड मुण्ड विनाशिनी, रक्तबीजान्तके, निशुम्भ ध्वंसनी, शुम्भ दर्पन्धी, देवी अष्टादश बाहुके, कपाल खटांग, शूल खडग धारिणी, छिन्नमस्तक धारिणी, रूधिर मांस भोजनी, समस्त भूत प्रेतादियोग ध्वंसनी, ब्रह्मोनांदिस्तुति, देवी मां रक्ष–रक्ष, मम् सर्व शत्रुन्, खादय–खादय, हिसंय–हिसंय, मारय–मारय, भिन्दी– भिन्दी, छिन्दी– छिन्दी, उच्चाटय– उच्चाटय, द्रावय– द्रावय, शोषय– शोषय, नाशय– नाशय, ह्रीं फट, हुं फट, ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै स्वाहा। इस मंत्र का जप तप एवं हवन करने से व्यक्ति को सभी प्रकार की सुख सम्पत्ति एवं शान्ति प्राप्त होती है और शत्रु का नाश होता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

षोडश मातृका नामावली हवन

ऊँ गोर्ये नमः, ऊँ पद्मायै नमः, ऊँ शच्यै नमः, ऊँ मेधायै नमः, ऊँ सावित्र्यै नमः, ऊँ विजयायै नमः, ऊँ जयायै नमः, ऊँ देवसेनायै नमः, ऊँ स्वधायै नमः, ऊँ स्वाहायै नमः ऊँ मातृभ्यौ नमः ऊँ लोकमातृभ्यो नमः, ऊँ घृत्यै नमः, ऊँ पुष्टयै नमः, ऊँ तुष्टयै नमः, ऊँ आत्मनः कुलदेवताभ्यो नमः

पूजन व हवन करना होता है

सप्तघृतमातृका नामावली हवन

ऊँ श्रिये नमः, ऊँ लक्ष्म्यै नमः, ऊँ घृत्यै नमः, ऊँ मेघायै नमः, ऊँ पुष्टयै नमः, ऊँ श्रद्धायै नमः, ऊँ सरस्वत्यै नमः, **पूजन व हवन करना होता है**

पंच लोकपाल हवन

ऊँ गणपतये नमः स्वाहा, ऊँ दुर्गायै नमः स्वाहा, ऊँ वायव्यै नमः स्वाहा, ऊँ अन्तरिक्षाय नमः स्वाहा, ऊँ अश्विनाभ्याम् नमः स्वाहा।

पूजन व हवन करना होता है

गौर तिलक मंडल देवतानां

ऊँ गोर्ये नमः, ऊँ महाविष्णवे नमः, ऊँ महालक्ष्म्यै नमः, ऊँ महेश्वराय नमः, ऊँ महामायायै नमः, ऊँ ऋग्वेदाय नमः, ऊँ यजुर्वेदाय नमः, ऊँ सामवेदाय नमः, अथर्ववेदाय नमः, अद्भ्यो नमः ऊँ जलोद्भवाय नमः, ऊँ ब्रह्मणे नमः, ऊँ प्रजापतये नमः, ऊँ शिवाय नमः, ऊँ अनन्ताय, परमेष्ठिने नमः, ऊँ धात्रे नमः, ऊँ अर्य्यम्णे नमः, ऊँ मित्राय नमः, ऊँ वरूणाय नमः, ऊँ अंशुमते, भगाय नमः, ऊँ इन्द्राय नमः, विवश्वते नमः, ऊँ पूष्णे नमः, ऊँ पर्जन्याय, त्वष्ट्रे, नमः, ऊँ दक्षयज्ञाय, देववस्वे नमः, ऊँ महासुताय, सुधर्मणे नमः, ऊँ शंखपदे नमः, ऊँ महाबिहवे नमः, ऊँ वपुष्मते,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महेरणाय नमः, ऊँ विश्वावसवे नमः, ऊँ सुपर्णवे विष्टराय, रूद्रदेवता नमः, ऊँ ध्रुवाय नमः, ऊँ धराय नमः, ऊँ सोमाय नमः, ऊँ आपवत्साय नमः, ऊँ नलाय नमः ऊँ अनिलाय प्रत्यूषाय, प्रभासाय नमः, ऊँ आवर्ताय नमः, ऊँ सांवर्ताय नमः, ऊँ द्रोणय नमः, ऊँ पुष्कराय, ह्वीकार्य्ये, ह्रीं यै नमः, ऊँ कात्यायन्यै नमः, ऊँ चामुण्डायै नमः, ऊँ महादिव्यायै नमः, ऊँ महाशब्दायै नमः, ऊँ सिद्धिदायै ऐं नमः, ऊँ श्रीं श्रिये नमः, ऊँ लक्ष्म्यै नमः ऊँ श्रियै नम, सुधायै नमः, ऊँ मेघायै नमः, ऊँ प्रज्ञायै नमः, ऊँ मत्यै नमः, ऊँ स्वाहायै नमः, ऊँ सरस्वत्यै नमः, ऊँ पद्मायै नमः, ऊँ शच्यै नमः, ऊँ सुमेधायै, नमः ऊँ सावित्र्यै नम, ऊँ विजयायै नमः, ऊँ देवसेनायै नमः, ऊँ स्वधायै नमः, ऊँ मात्रे नमः, ऊँ गायत्री नमः, ऊँ लोकमात्रे नमः, ऊँ घृत्यै नमः, ऊँ पुष्टयै नमः, ऊँ तुष्टयै नमः, ऊँ आत्म कुल देवतायै नमः, ऊँ गणेश्वयैं नमः, ऊँ कुलमात्रये नमः, ऊँ शान्त्यै नमः, ऊँ जयन्त्यै नमः, ऊँ मंगलायै नमः, ऊँ काल्यै नमः, ऊँ भद्रकाल्यै नमः, ऊँ कापिलिन्यै नमः, ऊँ दुर्गायै नमः, ऊँ क्षमायै नमः, ऊँ शिवायै नमः, ऊँ स्वधा नमः, ऊँ स्वाभ्यांम नमः, ऊँ दीप्यमानायै नमः, ऊँ दीप्तायै नमः, ऊँ सूक्ष्मायै नमः, ऊँ विभूत्यै नमः, ऊँ विमलायै, परायै नमः, ऊँ अमोघायै नमः, ऊँ विद्युतायै नमः, ऊँ सर्वतोमुख्यै नमः, ऊँ आनन्दायै नमः, ऊँ नंदिन्यै नमः, ऊँ शक्त्यै नमः, ऊँ महासूक्ष्मायै नमः, ऊँ करालिन्यै नमः, ऊँ भारत्यै नमः, ऊँ ज्योतिष्मत्यै नमः, ऊँ ब्राह्मये नमः, ऊँ माहेश्वर्य नमः, ऊँ कोमार्ये नमः, ऊँ वैष्णव्ये नमः, ऊँ वाराह्यो नमः, ऊँ इन्द्राण्यै नमः, ऊँ चंडिकायै नमः, ऊँ बुद्धयै नमः, ऊँ लज्जायै नमः, ऊँ वपुष्मत्यै नमः, ऊँ कान्त्यै नमः, ऊँ रत्यै नमः, ऊँ प्रीत्यै नमः, ऊँ कीर्त्यै नमः, ऊँ प्रभायै नमः, ऊँ काम्यायै नमः, ऊँ कान्तायै नमः, ऊँ ऋद्धये नमः, ऊँ दयायै नमः, ऊँ शिवदूत्यै नमः, ऊँ श्रद्धायै नमः, ऊँ क्षमायै नमः, ऊँ क्रियायै नमः, ऊँ विद्यायै नमः, ऊँ मोहिन्यै नमः, ऊँ यशोवत्यै नमः, ऊँ कृपावत्यै नमः, ऊँ सलीलायै नमः, ऊँ सुशीलायै नमः, ऊँ ईश्वयै नमः, ऊँ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सिद्धेश्वयै नमः, ॐ द्वैपायनाय नमः, ॐ भरद्वाजाय नमः, ॐ गोतमाय नमः, ॐ सुमन्तवे नमः, ॐ देवलाय नमः, ॐ व्यासाय नमः, ॐ वसिष्ठाय नमः, ॐ च्यवनाय नमः, ॐ कण्वाय नमः, ॐ मैत्रेयाय नमः, ॐ विश्वामित्राय नमः, ॐ वामदेवाय नमः, ॐ सुमन्ताय नमः, ॐ जैमिनये नमः, ॐ कृतवे नमः, ॐ पिप्पलादय नमः, ॐ पाराशराय नमः, ॐ गर्गाय नमः, ॐ वैशम्पाय नमः, ॐ दक्षाय नमः, ॐ मार्कण्डेयाय नमः, ॐ मृकण्डाय नमः, ॐ लोमेशाय नमः, ॐ पुलहाय नमः, ॐ पुलस्त्याय नमः, ॐ वृहस्पतये नमः, ॐ जमदग्नये नमः, ॐ जामदग्न्याय नमः, ॐ दलम्याय नमः, ॐ शिलोष्छनाय नमः, ॐ गालवाय नमः, ॐ याज्ञवल्काय नमः, ॐ दुर्वाससे नमः, ॐ सौरभाये नमः, ॐ जावालये नमः, ॐ वाल्मीकाये नमः, ॐ बम्हचार्य नमः, ॐ इन्द्रप्रमितये नमः, ॐ देवमित्राय नमः, ॐ जाजलये नमः, ॐ शाकल्याय नमः, ॐ मुद्गलाय नमः, ॐ जातुकर्ण्याय नमः, ॐ बलाकाय नमः, ॐ कृपाचार्याय नमः, ॐ सुकर्मणे नमः, ॐ कोशल्याय नमः, ॐ ब्रह्माग्नये नमः, ॐ गार्हष्पत्याग्नये नमः, ॐ ईश्वराग्नये नमः, ॐ दक्षिणाग्नये नमः, ॐ आहवानीयाग्नये नमः, ॐ सप्तजिव्हाग्नये नमः, ॐ इध्मजिव्ह्मग्नये नमः, अप्रवर्ग्याग्नये नमः, वडवाग्नये नमः, ॐ जाठराग्नये नमः, ॐ लोकिकाग्नये नमः, ॐ सूर्याय नमः, ॐ वेदांगाय नमः, ॐ भानवे नमः, ॐ इन्द्राय नमः, ॐ खगाय नमः, ॐ गभस्तिने नमः, ॐ यमाय नमः, ॐ अंशुमते नमः, ॐ हिरण्यरेतसे नमः, ॐ दिवाकराय नमः, ॐ मित्राय नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ शम्भवे नमः, ॐ गिरिशयाय नमः, ॐ अजैकपदे नमः, ॐ अर्हिर्बुध्नयाय नमः, ॐ पिनाक नमः, ॐ प्राणयै नमः, ॐ अपराजिताय नमः, ॐ भुवानाधीश्वराय नमः, ॐ कपालिने नमः, ॐ विशाम्पतये नमः, ॐ रूद्राय नमः, ॐ वीरभद्राय नमः, ॐ अश्वनीकुमारभ्यां नमः, ॐ आवहाय नमः, ॐ प्रवहाय नमः, ॐ उद्वहाय नमः, ॐ सम्वहाय नमः, ॐ विवहाय नमः, ॐ परिवहाय

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नमः, ऊँ धरायै नमः, ऊँ अग्नयै नमः, ऊँ वायंव्यै नमः, ऊँ आकाशाय नमः, ऊँ हिरण्यनाभाय नमः, ऊँ पुष्पेजयाय नमः, ऊँ द्रोणाय नमः, ऊँ श्रृंगिणे नमः, ऊँ वादराणाय नमः, ऊँ अगस्त्याय नमः, ऊँ मनवे नमः, ऊँ कश्यपाय नमः, ऊँ धौम्याय नमः, ऊँ भृगवे नमः, ऊँ वीतिहोत्राय नमः, ऊँ मधुन्दसे नमः, ऊँ वीरसेनाये नमः, ऊँ कृतवृष्णवे नमः, ऊँ अत्रये नमः, ऊँ मेधातिथये नमः, ऊँ अरिष्टनेमये नमः, ऊँ अंगिरसाय नमः, ऊँ इन्द्रप्रमदाय नमः, ऊँ इध्मबाहवे नमः, ऊँ नारदाय नमः, ऊँ अरिष्टसेनाये नमः, ऊँ अरूणाय नमः, ऊँ सनकाय नमः, ऊँ सनन्दनाय नमः, ऊँ सनातनाय नमः, ऊँ सनत्कुमाराय नमः, ऊँ कपिलाय, कर्दमाय, मरीचये नमः, ऊँ प्रचेतये, उत्तमाय नमः, ऊँ दधीचये नमः, ऊँ श्राद्ध देवताम्यो नमः, ऊँ गणदेवेभ्यो नमः, ऊँ विद्याधरेभ्यो नमः, ऊँ अप्सरेभ्यो नमः, ऊँ यक्षभ्यो नमः, ऊँ रक्षेभ्यो नमः, ऊँ पिशाचेभ्यो नमः, ऊँ गुह्मकेभ्यो नमः, ऊँ सिद्धदेवताभ्यो नमः, ऊँ औषधीभ्यो नमः, ऊँ भूतग्रामाय नमः, ऊँ चतुर्विदभूतग्रामाय नमः **पूजन व हवन करना होता है**

लिंगतो भद्र देवताहोमः

ऊँ शिवाय नमः, ऊँ तत्पुरूषाय नमः, ऊँ अधोराय नमः, ऊँ सर्वजाताय नमः, ऊँ वामदेवाय नमः, ऊँ असितांग भेरवाय नमः, ऊँ रूर भैरवाय नमः, ऊँ चण्ड भैरवाय नमः, ऊँ क्रोध भैरवाय नमः, ऊँ उन्मत्त भैरवाय नमः, ऊँ कपाल भैरवाय नमः, ऊँ भीषण भैरवाय नमः, ऊँ संहार भैरवाय नमः, ऊँ भवाय नमः, ऊँ शर्वाय नमः, ऊँ पशुपतये नमः, ऊँ ईशानाय नमः, ऊँ रूद्राय नमः, ऊँ उग्राय नमः, ऊँ भीमाय नमः, ऊँ महते नमः, ऊँ कर्कोटकाय नमः, ऊँ शंखपालाय नमः, ऊँ कम्बलाय नमः, ऊँ अश्वतराय नमः, ऊँ शूलाय नमः, ऊँ चन्द्रमौलिने नमः, ऊँ चन्द्रमसे नमः, ऊँ वृषभध्वजाय नमः, ऊँ त्रिलोचनाय नमः, ऊँ शक्तिधराय नमः, ऊँ महेश्वराय नमः, ऊँ शूलपाणये नमः, ऊँ पृथ्वियै नमः, ऊँ भूम्यै

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नमः, ॐ हैहयाय नमः, ॐ माल्यवते नमः, ॐ महारूद्राय नमः, ॐ कालाग्निरूद्राय नमः, ॐ द्वादशआदित्येभ्यो नमः, ॐ मृत्युरोगाभ्यां नमः, ॐ वैनायक्यै नमः, ॐ शाकुन्तलेयाय नमः, ॐ भरताय नमः, ॐ नलाय नमः, ॐ रामाय नमः, ॐ सार्वभैमाय नमः, ॐ नैषधाय नमः, ॐ विन्ध्याचलाय नमः, ॐ हेमकूटाय नमः, ॐ गन्धमादनाय नमः, ॐ कुलाचलाय नमः, ॐ हिमाचलाय नमः, ॐ कमलासनाय नमः, ॐ अश्विनीकुमारभ्याय नमः, ॐ विश्वेभ्योदेवेभ्यो नमः, ॐ पितृभ्यो नमः, ॐ नागेभ्यो नमः, ॐ इन्द्राय नमः, ॐ अग्नये नमः, ॐ यमाय नमः, ॐ नैऋतये नमः, ॐ वरूणाय नमः, ॐ वायवे नमः, ॐ कुबेराय नमः, ॐ ईशानाय नमः, ॐ वज्राय नमः, ॐ शक्तये नमः, ॐ दण्डाय नमः, ॐ खड्गाय नमः, ॐ पाशाय नमः, ॐ अंकुशाय नमः, ॐ त्रिशूलाय नमः, ॐ गदायै नमः, ॐ कश्यपाय नमः, ॐ अत्रये नमः, ॐ भरद्वाजाय नमः, ॐ विश्वामित्राय नमः, ॐ गौतमाय नमः, ॐ जमदग्नये नमः, ॐ वसिष्ठाय नमः, ॐ भृगवे नमः

पूजन व हवन करना होता है

दश दिग्पाल हवन नामावली –

ॐ इन्द्राय नमः, ॐ अग्नये नमः, ॐ यमाय नमः,
ॐ नैऋत्यै नमः, ॐ वरूणाय नमः, ॐ वायव्यै नमः,
ॐ कुबेराय नमः, ॐ ईशानाय नमः, ॐ ब्रह्मणे नमः, ॐ सर्पेभ्यो नमः

पूजन व हवन करना होता है

अधिदेवता हवन

ॐ त्र्यंबकाय नमः, ॐ उमायै नमः, ॐ स्कन्दाय नमः,
ॐ विष्णवे नमः, ॐ ब्रह्मणे नमः, ॐ इन्द्राय नमः, ॐ यमाय नमः,
ॐ कालाय नमः, ॐ चित्रगुप्ताय नमः

पूजन व हवन करना होता है

प्रत्याधिदेवता हवन

ॐ अग्नेय नमः, ॐ अद्भ्योः नमः, ॐ पृथ्व्यै नमः,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भगवती दुर्गा के बत्तीस नाम का जप और हवन करना चाहिए

दुर्गा, दुर्गातिशमनी, दुर्गापद्वि, निवारिणी, दुर्गमच्छेद़िन, दुर्गसाधिनी, दुर्गनाशिनी, दुर्गतोद्वारिणी, दुर्गनिहन्त्री, दुर्गमापहा, दुर्गमज्ञानदा, दुर्गदैत्यलोकदवानला, दुर्गमा, दुर्गमालोका, दुर्गमात्मस्वरूपिणी, दुर्गमार्गप्रदा, दुर्गमविद्या, दुर्गमाश्रिता, दुर्गमज्ञान संस्थाना, दुर्गमध्यानभासिनी, दुर्गमोहा दुर्गमगा, दुर्गमार्थस्वरूपिणी, दुर्गमासुर संहंत्री, दुर्गम आयुधधारिणी, दुर्गमांगी, दुर्गमता, दुर्गम्या, दुर्गमेश्वरी। दुर्गभिमा, दुर्गभा, दुर्गदारिणी सभी प्रकार की आपत्तियों का विनाश होता है। सभी प्रकार के भय से मुक्ति मिलती है।

सर्वतोभद्रमण्डल देवता हवन

ऊँ ब्रह्मणे नमः, ऊँ सोमाय नमः, ऊँ ईशानाय नमः ऊँ इन्द्राय नमः, ऊँ अग्नये नमः, ऊँ यमाय नमः, ऊँ नैऋत्ये नमः, ऊँ वरूणाय नमः, ऊँ वायवे नमः, ऊँ अष्टवसुभ्यों नमः, ऊँ एकादश रूद्रभ्यो नमः, ऊँ द्वादशादित्सेभ्यो नमः, ऊँ आश्विभ्यां नमः, ऊँ सर्पेपितृ ऊँ विश्वेभ्यो नमः, ऊँ सप्तयक्षैभ्यौ नमः, ऊँ अष्टकुल नागेभ्यो नमः, ऊँ गंधर्वा असरेभ्यौ नमः, ऊँ स्कन्दाय नमः, ऊँ नन्दीश्वराय नमः, ऊँ शूलाय नमः, ऊँ महाकालाय नमः, ऊँ प्रजाप्रतिभ्यों नमः ऊँ दुर्गोये नमः, ऊँ विष्णवे नमः, ऊँ स्वधासहित पितृभ्यो नमः, ऊँ मृत्युरोगाभ्यो नमः, ऊँ गणपतये नमः, ऊँ अभद्यो नमः, ऊँ मरूदभ्यो नमः, ऊँ पृथ्वीव्ये नमः, ऊँ गंगादि नदिभ्यौ नमः, ऊँ सप्तसागरेभ्यौ नमः, ऊँ मेरवे नमः, ऊँ गदायै नमः, ऊँ त्रिशूलाय नमः, ऊँ वज्राय नमः, ऊँ शक्तये नमः, ऊँ दण्डाय नमः, ऊँ खड्गाय नमः, ऊँ पाशाय नमः, ऊँ अंकुशाय नमः, ऊँ गौतमाय नमः, ऊँ भारद्वाजाय नमः, ऊँ विश्वामित्राय नमः, ऊँ कश्यपाय नमः, ऊँ जमदग्नये नमः, ऊँ वशिष्ठाय नमः, ऊँ अत्रये नमः, ऊँ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अरून्धत्यै नमः, ऊँ ऐन्द्रयै नमः, ऊँ कोमार्य नमः, ऊँ ब्रह्माणी नमः, ऊँ वाराही नमः, ऊँ चामुण्डायै नमः, ऊँ वैष्णव्यै नमः, ऊँ महोश्वर्य नमः, ऊँ वैनायक्यै नमः।"

ग्यारी कराने के नियम (देवताओं को शरीर में बुलाने के नियम)

1. जिसके शरीर में देवी, देवता, बाबा, पीर या वीर आते हो कुल देवता या कुल देवी के भाव आते हो, उन व्यक्तियों को प्रत्येक अमावस्या पर किसी पवित्र नदी में पवित्र घाट या बहते पानी में स्नान करना चाहिए।
2. ग्रहण के बाद मृत्यु और बच्चे पैदा होने की सूतक समाप्ति के बाद, नदी में स्नान करना चाहिए।
3. जब भी स्नान करने के लिए जावें वहाँ पर साथ में एक सेवक को अवश्य लेकर जावें जिसे उनके बारे में ज्ञान हो।
4. जहाँ पर भी स्नान किया जाता है वहाँ की नदी माता को नारियल, नीबू, श्रृंगार का सामान अवश्य भेंट दें।
5. अपने शरीर में आने वाली अदृश्य शक्तियों का आवाहन जल में खड़े होकर करें। जितने भी आते हों उनसे उनका नाम पूछें, ओर उनकी पूजा का विधान भी पूछें।
6. प्रत्येक शक्ति के नाम से कण्डे में धूप छोड़े या उनसे वचन के साथ कण्डे में धूप छुड़ावें।
7. घाट के घट्य्या के नाम से भी अगरबत्ती लगाकर नारियल अवश्य फोड़ें।
8. जितने भी देवता बुलावें उनको माला पहनाकर, इत्र लगाकर, तिलक लगाकर, चुनरी ओढ़ाकर पूरा मान सम्मान करें फिर बातचीत करें।
9. किसी के भी साथ जोर जबरदस्ती न करें।
10. शक्ति के आने के बाद शक्ति जो भी आदेश दे उनका पालन कड़ाई से करें अन्यथा वह काम नहीं करते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्री दुर्गा सप्तशती का हवन एवं विभिन्न प्रयोग

1. मोक्ष की प्राप्ति के लिए खीर से हवन करना चाहिए।
2. मारण के लिए उड़द से हवन करना चाहिए।
3. मोहन के लिए मधु शहद और खीर को मिलाकर हवन करना चाहिए।
4. उच्चाटन के लिए शहद, घी और दूध को मिलाकर हवन करना चाहिए।
5. स्तम्भन के लिए मातुलिंगी फल से हवन करना चाहिए।
6. वशीकरण के लिए पीली सरसों से हवन करना चाहिए।

विभिन्न पदार्थ से हवन करने से विभिन्न फल की प्राप्ति होती है

विभिन्न प्रकार के हवन अलग–अलग कार्यो के लिए अलग–अलग प्रकार से हवन

क्या हवन करने से कुछ भी प्राप्त किया जा सकता है? क्या हवन करने से व्यक्ति सुखी होता है?

1. मोक्ष की प्राप्ति के लिए खीर से हवन।
2. मारण के लिए उड़द से
3. मोहन के लिए मधु और खीर को मिलाकर
4. उच्चाटन के लिए शहद, घी और दूध को मिलाकर
5. स्तम्भन के लिए मातुलिंगी फल से
6. वशीकरण के लिए पीली सरसो से
7. विशेष आशीर्वाद के लिए खीर, त्रिमधु, किशमिश, अंगूर, केला, गन्ने, के टुकड़े, अनार, नींबू, नारंगी, नारियल, तिल, ऋतु के फल, आम फल, बेल फल, नींबू, कमल गट्टे से
8. कड़ी–चावल से यज्ञ करने पर "शाकम्बरी देवी" प्रसन्न होती है।
9. पालक एवं लौकी से हवन करने पर भी शाकम्बरी देवी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रसन्न होती है।

10. काली कनेर के फूल से भगवती "कालिका" जल्दी प्रसन्न होती हैं।
11. गुड़हल या जवा फूल, घी और शहद से हवन करने से "देवी" प्रसन्न होती है।
12. "श्री लक्ष्मीजी" का हवन बिल्व पत्र, बिल्व फल, कमल गट्टा, आंवला, तिल, घी, गुड़, जटामांसी, रक्तचन्दन, गुगल से श्री लक्ष्मीजी की कृपा होती है।
13. प्रत्येक माह की दूज, अष्टमी और पूर्णिमा श्री देवीजी के नाम से होती है।
14. सूखे मेवे से यज्ञ करने से देवीजी बहुत जल्दी प्रसन्न होती हैं। व्यवसाय बढ़ जाता है।
15. केवल गाय के घी से 40 दिन तक हवन करने से मानव धनवान होता है और भोगी भी बनता है।

अचल सम्पत्ति प्राप्त करने के लिए

कमल, कुमुद, लाल फूल, श्वेत कमल, नील कमल, एवं लाल कमल इन छः फूलों को कुंकुम में मिलाकर शुक्लपक्ष में हवन करने से अचल सम्पत्ति प्राप्त होती है और संसार में सुखी जीवन व्यतीत करता है। यदि इन छः फूलों को चंदन में मिलाकर शुक्लपक्ष में हवन करने से पुत्र, दासी तथा दास से युक्त होकर मानव दीर्घकाल तक जीवित रहता है। यदि इन छः फूलों को कपूर में मिलाकर शुक्लपक्ष में हवन करने से कामदेव के समान हो जाता है। और आनन्दपूर्ण जीवन संसार में व्यतीत करता है।

वशीकरण के लिए लाल फूल से हवन करना चाहिए।

लक्ष्मी प्राप्ति के लिए कमल के फूल से हवन करना चाहिए।

दीर्घ आयु के लिए दुर्वा से हवन करना चाहिए।

रोगनाश के लिए गुड़ से हवन करना चाहिए। वस्त्र प्राप्ति के लिए वस्त्र से हवन करना चाहिए।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

धान्य प्राप्ति के लिए धान्य से हवन करना चाहिए। सर्वसिद्धि के लिए पुत्रजीवी के फल से हवन करना चाहिए। पुत्र प्राप्ति के लिए अश्वथ समिधा पीपल के पेड़ की लकड़ी से हवन करना चाहिए।

शत्रुनाश के लिए – नमक एवं घी से हवन करना चाहिए।

वाक्सद्धि के लिए पलाश के फूल से हवन करना चाहिए। कवित्व प्राप्त के लिए कपूर अगरू और गुग्गल को मिलाकर हवन करना चाहिए।

राजा को वशीकरण करने के लिए – सरसों तथा पटसन से हवन करना चाहिए। अन्न वृद्धि के लिए अन्न में घी मिलाकर हवन करना चाहिए।

लम्बी उम्र प्राप्त करने के लिए – लाजा और घी को मिलाकर हवन करना चाहिए।

हवन के बाद यज्ञाचार्य को यथाशक्ति दक्षिणा, कपड़े, धातु और अनाज का दान दिया जाता है।

श्री दुर्गा सप्तशती हवन

प्रथम अध्याय समाप्ति पर –

ऊँ सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै ऐं बीजाधिष्ठाये महाकालिकायै नमः महाआहुति होमं समर्पयामी स्वाहा

तीन घी से आहुति देना है – ऊँ अम्बे स्वाहा, ऊँ अम्बिके स्वाहा, ऊँ अम्बालिके स्वाहा, अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वाहा

द्वितीय अध्याय समाप्ति पर –

ह्रीं सांगाये सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायैं सवाहनायै श्री महालक्ष्मी अष्टाविशंति वर्णात्मिकाये लक्ष्मी बीजाधिष्ठायै नमः महाआहुति होमं समर्पयामी स्वाहा।

तीन घी से आहुति देना है – ऊँ अम्बें स्वाहा, ऊँ अम्बिके स्वाहा, ऊँ अम्बालिके स्वाहा, अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वाहा।

तृतीय अध्याय समाप्ति पर –

ऊँ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनि दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठायै नमः महाआहुति होमं समर्पयामी स्वाहा

तीन घी से आहुति देना – ऊँ अम्बें स्वाहा ऊँ अम्बिके स्वाहा, ऊँ अम्बालिके स्वाहा। अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वाहा।

चतुर्थ अध्याय समाप्ति पर –

ह्रीं जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनि दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनारायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठायै नमः महाआहुति

होमं समर्पयामी स्वाहा

तीन घी से आहुति देना – ऊँ अम्बें स्वाहा ऊँ अम्बिके स्वाहा, ऊँ अम्बालिके स्वाहा। अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वाहा।

पंचम अध्याय समाप्ति पर –

क्लीं जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनि दुर्गा क्षमा शिवाधात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै धूम्राक्ष्यै विष्णु मायादि चतुर्विशं देवताभ्यौ नमो नमः महाआहुति होम समर्पयामी स्वाहा

तीन घी से आहुति देना है – ऊँ अम्बें स्वाहा ऊँ अम्बिके स्वाहा ऊँ अम्बालिके स्वाहा। अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वाहा।

षष्ठम अध्याय समाप्ति पर –

क्लीं जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनि दुर्गा क्षमा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै धूम्राक्ष्यै विष्णु मायादि चतुर्विशं देवताभ्यौ नमो नमः महाआहुति होमं समर्पयामी स्वाहा।

तीन घी से आहुति देना है – ऊँ अम्बे स्वाहा ऊँ अम्बिके स्वाहा ऊँ अम्बालिके स्वाहा । अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वाहा।

सप्तम अध्याय समाप्ति पर –

ऊँ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनि दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते सांगायै सायुधायै सशक्ताकायै सपरिवारायै सवाहनायै काली चामुण्डादेव्यै कर्पूर बीजाधिष्ठायै नमः महाआहुति होमं समर्पयामी स्वाहा।

तीन घी से आहुति देना है – ऊँ अम्बे स्वाहा ऊँ अम्बिके स्वाहा ऊँ अम्बालिके स्वाहा । अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वाहा।

अष्टम अध्याय समाप्ति पर –

ऊँ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनि दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै भैरव्यै तारादेव्यै नमः महाआहुति होमं समर्पयामी स्वाहा।

तीन घी से आहुति देना है – ऊँ अम्बे स्वाहा ऊँ अम्बिके स्वाहा ऊँ अम्बालिके स्वाहा । अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वाहा।

नवम अध्याय समाप्ति पर –

ऊँ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनि दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै भैरव्यै तारादेव्यै नमः महाआहुति होमं समर्पयामी स्वाहा। अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वाहा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तीन घी से आहुति देना है – ॐ अम्बे स्वाहा ॐ अम्बिके स्वाहा ॐ अम्बालिके स्वाहा। अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वाहा।

दशम अध्याय समाप्ति पर –

ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनि दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै भैरव्यै तारादेव्यै नमः महाआहुति होमं समर्पयामी स्वाहा। अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वाहा।

तीन घी से आहुति देना है – ॐ अम्बे स्वाहा ॐ अम्बिके स्वाहा ॐ अम्बालिके स्वाहा। अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वाहा।

एकादश अध्याय समापित पर –

क्लीं जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनि दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठाये गरूणवाहिनी नारायणी देव्यै नमः महाआहुति होमं समर्पयामी स्वाहा। अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वहा।

तीन घी से आहुति देना है – ॐ अम्बे स्वाहा ॐ अम्बिके स्वाहा ॐ अम्बालिके स्वाहा। अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वाहा।

द्वादश अध्याय समाप्ति पर –

क्लीं जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनि दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै वर प्रदायै वैष्णवो देव्यै नमः महाआहुति होमं समर्पयामी स्वाहा। अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वहा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तीन घी से आहुति देना है – ऊँ अम्बे स्वाहा ऊँ अम्बिके स्वाहा ऊँ अम्बालिके स्वाहा । अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वाहा।

त्रयोदश अध्याय समाप्ति पर –

क्लीं जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनि दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै श्री विद्यायै नमः महाआहुति होमं समर्पयामी स्वाहा। अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वहा।

तीन घी से आहुति देना है – ऊँ अम्बे स्वाहा ऊँ अम्बिके स्वाहा ऊँ अम्बालिके स्वाहा। अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वाहा।

देवी कृपा प्राप्ति के लिए ''सात्विक साधक'' के लिए प्रत्येक अध्याय के अंत में अध्याय पूर्ण की महाआहुति में प्रयोग होने वाली सामग्री –

प्रथम अध्याय के अंत मे – मधु से हवन
द्वितीय अध्याय के अंत मे – गुगल से हवन
तृतीय अध्याय के अंत में – भैस के घी से हवन
चतुर्थ अध्याय के अंत मे – गन्ध अक्षत से हवन
पंचम अध्याय के अंत में – पके केले के टुकड़े से या ईख से हवन
षष्ठ अध्याय के अंत में – पके केले के टुकड़े से या ईख से हवन
सप्तम अध्याय के अंत में – पके केले के टुकड़े से या ईख से हवन
अष्टम अध्याय के अंत में – लाल चन्दन के चूरे से हवन
नवम अध्याय के अंत में – खीर गन्ध एवं पुष्प से हवन

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दशम अध्याय के अंत में – खीर गन्ध एवं पुष्प से हवन
एकादश अध्याय के अंत में – खीर गन्ध एवं पुष्प से हवन
द्वादश अध्याय के अंत में – "सियार" मांस से हवन
त्रयोदश अध्याय के अंत में – गोरोचन एवं गेंदे के पत्ते से हवन
यह सब सामान पान के पत्ते पर रखकर हवन कुण्ड में छोड़ना होता है ।

यज्ञ में प्रयोग सामग्री

पंचामृत – गाय का घी, दूध, दही, शक्कर, शहद
पंचगव्य – गाय का गोबर, मूत्र, दूध, घी, दही
पंचरत्न – स्वर्ण, रजत, ताम्र, प्रवाल, मोती
पंच पल्लव – पीपल, आम, गुलर, बड़, बेलपत्री
सप्तधान्य – जौ, उड़द, मूंग, गेहु, चावल, चना, कंगनी, बाजरा, ज्वार, मक्का
अष्टगंध – अगर, तगर, केशर, गोरोचन, कस्तुरी, कुंकुम, लालचन्दन, सफेद चन्दन
सर्वोषधि – कूट, जटामांसी, काली हल्दी, पीली हल्दी, मुरा, शिलाजीत, चन्दन, वच, चम्पक, नागरमोथा
मुन्थादान – मोती, स्वर्ण, कांस्यपात्र, घृत, श्वेतफूल, श्वेत वस्त्र, कपूर, मिश्री, श्वेत चन्दन, हाथीदांत, दक्षिणा, कमल गट्टा, तिल, शहद, अनार, लोंग, पान के पत्ते, आंवला, नींबू, नारियल, इलायची, सुपारी, जायफल, जावित्री, मेनपफल, बाजुफल, पंचमेवा, गन्ना, मिठाई, खीर, लाजा, धानी, दूध, मीठा फल, विभिन्न प्रकार के फूल ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ज्वारे क्यों बोये जाते हैं?

प्रकृति के साथ चेतना के उत्सव को नवरात्रि कहते हैं। इसलिए ज्वारे बोये जाते हैं। प्रकृति में कितनी चेतना है यह ज्वारे से पता चलता है।

आठ आसुरी शक्तियाँ –

1. मोह – महिषासुर
2. काम – रक्तबीज (तृष्णा)
3. क्रोध – धूम्रलोचन
4. लोभ – शुम्भ–निशुम्भ राक्षस का दूत
5. मद मत्सर्य – चण्ड–मुण्ड (प्रकृति, निवृति)
6. राग द्वेष – मधु–कैटभ
7. ममता – निशुम्भ
8. अहंकार – शुम्भ

अष्टमी तिथि तक इन "दुर्गुणो" रुपी "दैत्यो" का संहार करके "नवमी तिथि" को "प्रकृति पुरूष का एकाकार होना ही "नवरात्र का आध्यात्मिक" रहस्य है।

दस राक्षस दस विकार –

1. जब तक मनुष्य मे मन से ये 10 विकार नहीं निकलते हैं तब तक मनुष्य पुण्यात्मा नहीं बन सकता। उदाहरण के लिए – काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद्, ईर्ष्या, राग, द्वेष, तृष्णा, अहंकार
2. किसान परिश्रम, खेती, उन्नतबीज खेत तैयार करना, पानी देना, खाद डालना, रखवाली करना, फल–फूल का समय आ गया उसी वक्त नींद लग जाना और जंगली पशुओं द्वारा खेत को खा जाना मेहनत की परन्तु अंत में सो गए।
3. अखिल ब्रह्माण्ड के जड़ चेतन, कण–कण में, अणु–अणु में देवीजी किसी न किसी रूप में निश्चित् रूप से उपस्थित हैं।
4. प्राणियों में शरीर रूप में, स्वभाव रूप में गुण–दुर्गण रूप में, छाया रूप में यह सब देवीजी के ही प्रभाव या अंश है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

5. संसार मे देवीजी किसी न किसी रूप में सर्वत्र विराजमान हैं।
6. काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद्, मत्सर, अहंकार ये सभी राक्षस बहुत बलशाली है। इस पर विजय देवता भी नहीं पाये हैं, केवल माँ जगतजननी आदिशक्ति भवानी जिन्होंने सृष्टि बनायी है, अधिष्ठात्री देवी हैं। सत्व, रज, तम ये तीन गुण ही प्राणियों के देह धारण करने में सर्वथा कारण बनते हैं।

प्रश्नः— ज्वारे अच्छे नहीं आना / पीले आने का अर्थ ज्वारे उगते ही नहीं हों।

आधे उगते हो ज्वारे खराब हो जाना।

उत्तरः— ज्वारे के बारे मेरी जिन्दगी का अनुभव—

1. ज्वारे दो कुण्ड़ो मे लगाना चाहिए।
2. एक कुण्ड़ों में स्वास्तिक चिन्ह बनाकर दूसरे कुण्ड में त्रिशूल चिन्ह बनाकर लगाना चाहिए।
3. गाय का गोबर, काली मिट्‌टी, सूखा कण्ड़ा मिलाकर तैयार की जाती है।
4. ज्वारे एक दिन पहले गला देना चाहिए।
5. प्रतिपदा के दिन विशेष मुर्हुत में खेत बोना चाहिए। आरती, पूजन, भोग, श्रृंगार का सामान, मिठाई, नीबू की बलि इत्यादि चढ़ाना चाहिए।
6. ज्वारे अच्छे नहीं आते है तो समझों जगतजननी नाराज है। पीले आ रहे तो समझो किसी कि गन्दी छाया पड़ गयी हैं। ज्वारें उग ही नहीं रहे हो तो समझों भयंकर नाराजगी है। आधे उगते हो तो समझो आधी कृपा है। याने ज्वारों को देखकर पता लगाया जा सकता है अनिष्ठ का।

मूर्तियों को पानी में क्यों विसर्जित करते है

विराजी माता विदा होकर फिर अपने धाम चले जाएंगे। पीछे रह जाएगा एक सूनापन। लोग पूजन— अर्चन कर माता की प्रतिमा को नदी, तालाब और समंदर में विसर्जित कर देगें। इस

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दौरान एक सवाल मन में उठता है कि प्रतिमाओं को पानी में ही क्यों बहाया जाता है? क्या इनकी विदाई का कोई और मार्ग नहीं है?

माता दुर्गा नौ दिन हमारे घर में रहती है। उत्सव के आखिरी दिन हम इनकी प्रतिमाओं को नदी, तालाब या किसी अन्य जल स्त्रोत में विसर्जित कर देते है। दर असल यह एक परम्परा ही नहीं हैं, इसके पीछे बहुत बड़ी वैज्ञानिकता और दर्शन छिपा है। वास्तव में जल से सारी सृष्टि की उपत्ति हुई है और जल ही पूरी सृष्टि का मूल है। जल बुद्धि का प्रतीक है और गणपति इसके अधिपति है। प्रतिमाएँ नदियों की मिट्टी से बनती है।

हम अपनी शुद्ध बुद्धि से यह कल्पना करते है कि इसमें भगवान विराजित है। अंतिम दिन हम प्रतिमाओं को जल में इसी लिए विसर्जित कर देते हैं। क्योंकि वे जल के किनारे की मिट्टी से बने है। और हमारी श्रद्धा से ही उसमें परमात्मा विराजित है।

पानी को इस सृष्टि में सबसे पवित्र तत्व माना गया है क्योंकि उससे ही सबकी उत्पत्ति हुई है। पानी को ही ब्रह्मा भी कहा जाता है। प्रतिमाओं को हम विसर्जित करते समय यही सोचते है कि भगवान अपने धाम को वापस जा रहे है। यानी प्रतिमा अपने वास्ताविक स्थान परमात्मा से मिलने जा रही है।

कन्या पूजनः—

निम्न कन्या का पूजन नहीं करना चाहिए—

अंग में कमी, अंग में छेद हो, दुर्गन्ध युक्त, नीच कुल में उत्पन्न, अंधी, तिरछी नज़र, कानी, कुरूप

बहुत रोमवाली, रोगिणी तथा रजस्वला कन्या, अत्यंत दुर्बल, एक वर्ष की, विधवा स्त्री से जिसका जन्म हुआ हो, विवाह से पहले माता के गर्भ में आ चुकी कन्या।

माँ भगवती जगत जननी कन्या के ऊपर बैठकर भोजन करने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आती है। ऐसा माना जाता हैं। इसलिए हम जानते है कि माता जी बिना अंग वाली नहीं है। कोई भी माता विकलांग नहीं है। इसलिए अंग की कमी वाली कन्या का पूजन श्रीमद् देवि भागवत् में निषेध है।

कन्या पूजन का महत्व –

1. एक वर्ष वाली कन्या संध्या।
2. दो वर्ष वाली कन्या सरस्वती होती है यह निर्धनता निवारण करती है।
3. तीन वर्ष वाली कन्या त्रिधामूर्ति का प्रतीक है यह धन, धान्य परिवार वृद्धि मे सहायक होती है।
4. चार वर्ष वाली कन्या कालिका होती है यह शत्रु नाश का कार्य करती है।
5. पाँच वर्ष वाली कन्या सुभगा मानी जाती है यह भक्त को आरोग्य बिमारी से मुक्ति और शारीरिक कष्टो से मुक्ति देती है।
6. छः वर्ष वाली कन्या कालिका स्वरूप मानी गई है इसके पूजन से शत्रुओं का नाश होता है।
7. सात वर्ष वाली कन्या चण्डिका होती है इसके पूजन से ऐश्वर्य, वैभव, धन, समृद्वि एवं भौतिक सुख सभी प्राप्त होता है।
8. आठ वर्ष वाली कन्या शाम्भवी का रूप होती है यह विजय और राजसम्मान दोनो प्रदान करती है।
9. नौ वर्ष वाली कन्या दुर्गा स्वरूप होती है जो परलौलिक सुख, मोक्ष, एवं देवलोक प्रदान करती है
10. दस वर्ष वाली कन्या अपराजिता मानी गई है जो सभी इच्छाओं की पूर्ति समय–समय पर करती रहती है
11. ग्यारह वर्ष वाली कन्या रूद्राणी।
12. बारह वर्ष वाली कन्या भैरवी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

13. तेरह वर्ष वाली कन्या महालक्ष्मी।
14. चौदह वर्ष वाली कन्या पीठनायिका।
15. पन्द्रह वर्ष वाली कन्या क्षेत्रया।
16. सोलह वर्ष वाली कन्या अम्बिका कहलाती है।
17. साधको को छः वर्ष की कन्या से लेकर नवें तक की कुमारी साधको को "अभीष्ट सिद्धि" प्रदान करती हैं। धर्म, अर्थ, काम की सिद्धि मिलती हैं। जो पुरूष प्रतिदिन नौ दुर्गा के समय पर कुमारी कन्याओं को भोजन कराता हो उसकी "कार्यसिद्धि" में कुछ भी सन्देह नहीं रहता है।
18. "पुत्र की प्राप्ति" के लिए भी कन्या पूजन करना चाहिए। परन्तु कन्या को अन्न वस्त्र उनकी प्रसन्नता से सम्बन्धित तथा धन–दान अवश्यक करना चाहिए। पुत्र एवं पौत्र में वृद्धि होती है। कन्या पूजन करने वाले परिवार को "सुख समृद्धि शान्ति और निरोगी" सभी सिद्धियाँ मिलती है। जहाँ कुमारी पूजन होता है उस "स्थान को पवित्र स्थान" माना जाता है। सम्पूर्ण कर्मो का फल प्राप्त करने के लिए कुमारी पूजन करना चाहिए। खाना, पीना, दक्षिणा, फल, वस्त्र, अन्न दान, और कन्या प्रसन्न हो ऐसा काम करना चाहिए। जो कन्या भोजन कराता है वह त्रिभुवन को तृप्त एवं त्रिभुवन को वश में करता है। उसकी विघ्न बाधा समाप्त हो जाती है।
19. कुमारी पूजन शत्रुओं का नाश करती है। धन, आयु, और बल में वृद्धि करती है। कुमारी पूजन "दुःख एवं दारिद्रय के नाश" के लिए करना चाहिए। कुमारी पूजन से रोग, भूत, बेताल और सर्पादि से होने वाला भय मिट जाता है।
20. कुमारी पूजन से असुर, दुष्ट नाग, दुष्ट ग्रह, गन्धर्व, डाकिन, यक्ष, राक्षस परेशान नही करते है और सभी देवता भूः, भूवः, स्वः भैरवगण और सभी देवी देवता प्रसन्न होते है

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और "परमशान्ति" मिलती है। समस्त कार्य की सिद्धि के लिए "ब्राह्मण कन्या" का पूजन करना चाहिए। यश प्राप्ति को लिए "क्षत्रिय की कन्या" का पूजन करना चाहिए। धन प्राप्ति के लिए "वैश्य बनिया" की कन्या का पूजन करना चाहिए। पुत्र प्राप्ति के लिए "शूद्र की कन्या" का पूजन करना चाहिए।

अंग भंग वाली कन्या, कुरूप कन्या, या विवाह के पहले उत्पन्न कन्या का पूजन नहीं करना चाहिए।

अब कुमारी पूजन का विधान कहते हैं –

इसके बाद यजमान अधिक अंग और कम अंग और खराब लक्षण वाली कन्याओं 2 वर्ष से लेकर 10 वर्ष की आयु वाली बटुक सहित 10 कन्याओं का पूजन करें।

कुष्ठरोग ग्रस्त, व्रत, अन्धी, कानी, केकराक्षी, कुरुपा, रोगयुक्ता दासी पुत्री और दुष्टा कन्या का पूजन वर्जित है। अभिष्ट साधक की मनोकामना पूर्ति हेतु ब्राह्मणकन्या, यशोवृद्धि के लिये क्षत्रिय कन्या, धनलाभ के लिये वैश्य कन्या तथा पुत्र प्राप्ति के लिये शूद्र कन्या का पूजन करना चाहिए।

दो वर्ष की कन्या–कुमारी, 3 वर्ष की–त्रिमूर्ति, 4 वर्ष की–कल्याणी, 5 वर्ष की–रोहिणी, 6 वर्ष की–कालिका, 7 वर्ष की–चण्डिका, 8 वर्ष की–शाम्भवी, 9 वर्ष की–दुर्गा तथा 10 वर्ष की कन्या सुभद्रा कही जाती है।

एक वर्ष की कन्या में प्रीति का अभाव होने से पूजन में अयोग्य तथा 11 वर्ष वाली कन्या पूजन में वर्जित है।

अब उनके आवाहनादि के लिये शंकराचार्य द्वारा संप्रोक्त मन्त्र कहता हूँ –

'मन्त्राक्षरमयी' से लेकर 'कन्यामावाह्याम्यहम् पर्यन्त मन्त्र का उच्चारण करते हुये उन कुमारियों का आवाहन करना चाहिए। फिर –

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

1. ऊँ जगत्पुज्ये ... नमोस्तुते पर्यन्त मन्त्र से कुमारी का
2. ऊँ त्रिपुरा त्रिपुराधाराम् से त्रिमूर्ति का
3. ऊँ कालात्मिकाकलातीता से कल्याणी का
4. ऊँ अणिमाणिदिगुणाधराम् से रोहिणी का
5. ऊँ कामचारां शुभां कान्ताम् से कालिका का
6. ऊँ चण्डवीरां चण्डमाया से चण्डिका
7. ऊँ सदानन्दकरीम शान्ताम् से शाम्भवी का
8. ऊँ दुर्गमे दुस्तरे कार्ये से दुर्गा का
9. ऊँ सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां से सुभद्रा का पूजन करना चाहिए।

पुराणोक्त इन मन्त्रों से स्नान की हुई कन्याओं का गन्ध, पुष्प, भक्ष्य, भोज्य, वस्त्र एवं आभूषणों से पूजन करना चाहिए।

कुमारी पूजन मंत्र

1. कुमारस्य च तत्वां निया सृजत्यपिलीलया
काद न पिच देवास्तां कुमारी पूजयाम्यहम्
2. सत्वादिभि स्तरिमूर्तिया तैर हिनानास्वरूपिणी
त्रिकाल व्यापिनी शक्ति स्त्रिमूरर्ति पूजयाम्यहम्
3. कल्याण कारिणीनीतयं भक्तापूजितानिशम्
पूजयामि च तां भक्तक्या कल्याणीं सर्व कामदाम्
4. रोहयन्ती च बीजानि प्राम्जन्मसंचितानिवै
या दैवि सर्वभूतानां रोहिणी पूजयाम्यहम्
5. कालयते सर्वब्रम्ह माण्डंस चराचरम्
कल्पान्त समयेया तां कालिका पूजयाम्यहम्
6. चण्डिका, चण्ड रूपां च चण्ड मुण्ड विनाशिनीम्
तां चण्ड पापहारिणीं चण्डिका पूजयाम्यहम्
7. अकारणात्समुत्पत् तिर्यन्ययै परिकीर्तिता
यस्या तां सुखदा दैवि शाम्भवी पूजायाम्यहम्
8. दुर्गात्त्रायति भक्तंया सदा दुर्गतिवाशिनी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दुर्ज्ञेयासर्वदेवानां तां दुर्गा पूजयाम्यहम्
9. सुमद्राणि च भक्तानां कुरूते पूजिता सदा
अभद्रनाशिनी देव सुभद्रां पूजयाम्यहम्

देवी प्रसन्न कैसे होती है –

नवरात्रि स्त्रियों के सम्मान के साथ आरम्भ करें

स्त्रीणां निन्दां प्रहारं च कौटिल्यं चाप्रियं वचः।
आत्मनों हित मन्विच्छन् देवी भक्तों विवर्जयेत्।।

देवी का भक्त होकर अपना हित चाहने वाले को स्त्रियों की निंदा करने उनको मारने ठगने और उनका दिल दुखाने वाली बातें कहने से बचना चाहिए।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः

जहाँ स्त्रियाँ पूजी जाती है वहाँ देवता रमते है।

और जहाँ इनका अपमान होता हैं वहाँ सभी क्रिया निष्फल होती हैं।

अगर जगतजननी माँ को प्रसन्न करना चाहते है तो इस नवरात्रि में मूर्ति रूपी देवी के साथ–साथ जाग्रत जीवंत स्त्री की भी पूजा की जाय।

उनका और उनकी भावनाओं का भी सम्मान किया जाय।

हर स्त्री और बलिकाओं में देवी का दर्शन किया जाय।

सभी को स्त्री के सम्मान के लिए प्रेरित किया जाय।

माताओं का सम्मान करके उनके अंदर जो स्वभाविक और दैवीय गुण प्रेम, सेवा, समर्पण सृष्टि की अद्भुत कृति होने का जो गौरव है उसे बढ़ाने में सहयोग किया जाय।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देवी–देवता विकलांग क्यों नही? मनुष्य अपाहिज क्यों होता है?

कन्या पूजन में भी शास्त्र में लिखा है विकलांग कन्या का पूजन नहीं किया जाता है क्योंकि देवीजी कोई भी विकलांग नहीं है। देवीजी कन्या के सिर पर बैठकर या उनकी आत्मा पर बैठकर भोजन करती है इसलिए देवीजी के रूप में कन्याओं की पैर पूजने की प्रथा है। यदि कोई कन्या या स्त्री/लड़की विकलांग होती है तो वह ईश्वर द्वारा शापित होती है।

उसकी जन्म पत्रिका में अवश्य दोष या शाप अवश्य होगा उसकी वज़ह से कन्या को विकलांग होना पड़ा। ठीक वैसा ही कोई भी देवता/भगवान विकलांग नहीं है। इसलिए छोटे बच्चे/लड़के का पूजन कर भोजन कराया जाता है, बटुक भैरव के रूप में पूजन किया जाता है। यदि पुरूष/बच्चा विकलांग है, शारीरिक, मानसिक तो यह शापित बच्चा है। उसके पिछले जन्म में पापकर्म अवश्यक किया होगा। इसलिए विकलांग बच्चे और बच्चियों का पूजन नहीं किया जाता है।

किसी भी माताजी मन्दिर को जागृत करने की प्रक्रिया–

मन्दिर बनवाया गया। प्राण प्रतिष्ठा हो गयी, विधि विधान, हवन, पूजन, भण्डारा सब किया गया। मुख्य बात यहाँ प़र आती है कि जागृत कैसे आवेगी कि कोई भी मनुष्य अपनी इच्छा लेकर

1. मन्दिर और मन्दिर परिसर में शुद्धता, स्वस्छता और पवित्रता मेनटेन करें।
2. सूतक पातक वाले मनुष्य को मन्दिर परिसर में प्रवेश न करने दें। ऐसा निर्देश मन्दिर परिसर के बाहर ही बोर्ड पर लगा देना चाहिएं।
3. सूतक के नियम भी लिखें। पातक के नियम भी लिखे।
4. किसी के यहाँ मृत्यु होने पर उसके परिवार वालों को 30 दिन से 41 दिन तक नियम जाति/धर्मानुसार बताया गया

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

है। और बच्चे के पैदा होने पर भी इसी प्रकार का नियम है।

5. मासिक धर्म का भी नियम होता है कि स्त्री एम. सी. पीरियड के दौरान सात दिन बाद ही प्रवेश कर सकती है इसके पहले नहीं। ऐसा बोर्ड मन्दिर परिसर के बाहर लगायें।
6. मन्दिर परिसर मे ताशपत्ती खेलना, जुआ, सट्टा खेलना प्रतिबन्ध होता है।
7. मन्दिर परिसर में शराब, मान्स का सेवन प्रतिबन्ध होता हैं।
8. बीड़ी, सिगरेट, जर्दा, चूना, खैनी पीना प्रतिबन्ध होता हैं।
9. मुंह में गुटका, जर्दा, चूना खाकर (पूजन करना) आरती करना मन्दिर में बैठना प्रतिबन्ध होता है। रोजाना एक नारियल का हवन करना चाहिए।
10. रोजाना निश्चित् समय पर सुबह–शाम आरती होनी चाहिए। अखण्ड दीपक जलते रहना चाहिए।
11. कपूर अवश्य जलाना चाहिए। प्रत्येक त्यौहार पर विशेष यज्ञ होना चाहिए। अखण्ड दीपक जलते रहना चाहिए।
12. नवरात्रि या जयन्ती पर कन्या भोजन का कार्यक्रम होना चाहिए।
13. ग्रहण के बाद मन्दिर की धुलाई होना चाहिए। कलश बदला जाना चाहिए और मन्दिर में तुलसी का पौधा होना चाहिए।
14. मन्दिर में पीपल का वृक्ष अवश्य होना चाहिए।

यदि मन्दिर माता जी का है तो जागृत करने के लिए जो उपाय बताए है उनके अलावा ये उपाय भी करना चाहिए :-

1. श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ करना चाहिए।
2. सप्ताह में एक बार सप्तशती का हवन करना चाहिए।
3. माताजी के मन्दिर में कलश की स्थापना होना चाहिए। एक हवन कुण्ड भी बना हुआ होना चाहिए ताकि सप्तशती का हवन कर सकें।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

4. नीबू, त्रिशूल और तलवार पर लगा हुआ होगा चाहिए।
5. माता जी की कपूर से आरती दोनों समय करना चाहिए।
6. नींबू को काटकर, नीबू की बलि रोजाना देना।
7. सप्ताह में एक बार नारियल की बलि देना।
8. कन्या भोजन माह में एक बार कराते रहना चाहिए।
9. लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए सप्तशती का हवन खीर व हलवे से मन्दिर मे करना चाहिए।
10. शक्ति प्राप्त करने के लिए लौंग से श्रीदुर्गा सप्तशती का हवन करना चाहिए।
11. ज्ञान प्राप्त करने के लिए हवन सामग्री से श्रीदुर्गा सप्तशती हवन करना चाहिए।
12. माह में एक बार श्री रूद्राभिषेक अवश्य करना चाहिए।

देवियाँ क्यों शरीर छोड़ देती है?

1. पवन का शरीर में आना फिर कुछ वर्षो के बाद अचानक आना बन्द हो जाना इसका कारण।
2. अदृश्य शक्ति का शरीर में प्रवेश होता है। यह हर किसी स्त्री या पुरूष के शरीर में नही होता है। कुछ विशेष आत्मा होती है, उन्हीं के शरीर में प्रवेश करती है।
3. नाग कन्या होना, मांगलिक का होना या कालसर्प दोष से युक्त होना या बहुत गरीब होना गुनिया /शापित होना उनका शाप से बचाने के लिए कुल देवी/कुल देवता उनके शरीर में आते हैं।
4. अधिकांश पवन उच्चजाति में नहीं आती है जैसे ब्राह्मण, बनियां, वैश्य, कायस्थ इत्यादि में पवन आती हुई कम देखी गयी है।
5. पवन जिनके यहाँ आती हैं वह अधिकांश मामले में देखे ये है कि बहुत गरीब होते है या क़म पढ़े लिखे होते है या

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आदिवासी जाति से होते है।

6. रजक समाज से होते है या वाल्मिकी समाज से होते है या अहिरवार या अहीर, रैदास, जाटव समाज के होते हैं, इस समाज में ही देवी अधिक आती है ऐसा क्यों?

7. क्योंकि यह बलि प्रथा को मानते हैं इन समाज में विवाह पर, बच्चे होने पर या अन्य धार्मिक कार्यक्रम मे बलि दी जाती रही है।

8. इन जाति में अन्धविश्वास भी अधिक व्याप्त है। भूत–प्रेत, जादू–टोना, देवी भवानी में सामान्य रूप से अन्य जाति के अलावा इनकी गहरी आस्था होती है।

9. बलि देने की वज़ह से ही उनकी कुलदेवी/कुल देवता आज भी शक्तिशाली है और जादू–टोना का कार्य करते है, भूत–प्रेत पकड़ने का कार्य करते है बीमारी दुःखी ऊपरी बाधा दूर करने का कार्य करते है। यह लोग इनका परिवार आज भी हमारी पुरानी परम्परा, मान्यता, रीतिरिवाज को बहुत विश्वास के साथ पालन करते हैं।

10. समृद्ध घरों में देवी/देवता/पवन के रूप में यदि आ भी जाते है तो वह किसी न किसी गलती की वज़ह से शरीर छोड़कर चले जाते है। जैसे पुराने रीतिरिवाज को नहीं मानते हैं। परम्पराओं को तोड़ देते है। परम्पराओं का पालन नहीं करना, कुल देवी/देवता की पूजा नहीं करते है, पितृ को नहीं मानते है। पूजन करना छोड़ देते है। विधि–विधान से पूजन नहीं करते।

11. सूतक के नियम का पालन नहीं करते, पातक के नियम का पालन नहीं करते, चरित्रहीनता की वज़ह से।

12. तीर्थस्थान में जाना, नदी में स्नान, बडे घरों में देवी/देवता का पवन के रूप में आना अच्छा भी नहीं मानते है। उसका मान सम्मान भी नहीं करते इसीलिए शरीर छोड़कर चले

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जाते है। कई बार परिवार के सदस्य उस शक्ति का बन्धन करवा देते हैं।

13. शरीर के बाल आधुनिकता की लहर में कटवाना। हमारे धर्म के पुराणों में लिखी बातों का पालन नहीं करना और उनका पाठ नहीं करना।
14. पुराणों का पाठ नहीं करना, उनका अनुसरण नहीं करना।
15. ईश्वर के प्रति आस्था नहीं होना अर्द्ध आस्तिक, अर्द्धनास्तिक होना।
16. मान्स का सेवन, शराब का सेवन और अनैतिक कार्यो में रूचि रखना।
17. खिलाई पिलाई हो जाती है। गलत अभिमंत्रित वस्तुओं को खिलाया दिया जाता है जिससे आना बन्द हो जाती है।
18. मासिक धर्म के नियमों का कड़ाई से पालन करना होता है।
19. चरित्रहीन नही होना चाहिए।
20. ज्वारों को लगाने में गलती होना, घटस्थापना, गलत मुर्हुत में कर देना, गलत मुर्हुत में पूर्णाहुति करना ।
21. खाने पीने में ध्यान रखना पड़ता हैं।
22. तीर्थ स्थानों पर स्नान नहीं करना/अमावस्या पर नदी में स्नान नही करना/विशेष तीज त्यौहारों पर नदी में (पवित्र) स्नान करना अनिवार्य होता है।

माता दुर्गा जी की आरती मे "चण्डमुण्ड संहारे शोणित बीज हरे" शब्द आता है इसका अर्थ क्या है?

हमे यह मालूम है कि चण्डमुण्ड नाम के दो राक्षस भाई से उनका वध चामुण्ड़ा ने किया था। परन्तु इन चण्ड़, मुण्ड़ नाम का अर्थ क्या होता है।

"शोणित बीज हरे" का अर्थ क्या? बार–बार हम आरती में

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बोलते है "शोणित बीज हरे" तो क्यो बोलते हो। क्यों नहीं सोचा आपने? क्योकि कभी आपने अपने धर्म को समझने का प्रयास नही किया। धर्म के अनुसार चलने की सोचा नहीं ऐसे संस्कार माता–पिता ने नही दिया। यही सबसे बड़ी गलती है जीवन की। तभी तो आप कष्ट में हो।

शोणित का अर्थ होता है रक्त या रक्त जैसा लाल इस हिसाब से शोणित बीज का अर्थ हुआ रक्त बीज को हरने वाली। शक्ति को कोई "पराशक्ति, ज्ञानशक्ति, इच्छाशक्ति, चितशक्ति, जगन्माता, जगदम्बा, जगतजननी" के नाम से स्मरण करते हैं।

"दुर्गति नाशिनी दुर्गा जय जय, काल विनाशिनी काली जय जय,
उमा रमा ब्रह्माणी जय जय, सीता, राधा रूक्मिणी जय जय।"

इस मंत्र को रोजाना 11 माला जपने से माँ जगतजननी की कृपा प्राप्त हो जाती है। पापो से मुक्ति मिलती है। जब पाप कम हो जावेगे तब सुख की प्राप्ति होती है।

" हरे राम हरे राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।"

इस मंत्र का साढ़े तीन करोड़ जप करने से महापाप और पातक सब नष्ट हो जाते है। इस मंत्र की रोजाना 16 माला करने से भव संसार से पार हो जाता है सभी पाप कर्मो, ग्रहो के दोष, और पिछले जन्म के दोषों से भी मुक्ति मिलती है।

देवी अथर्वशीर्ष का महत्व

"श्री देव्यथर्वशीर्षम" के पाठ करने से **"पाँच अथर्वशीर्ष"** के पाठ का फल प्राप्त होता है। चाहे हिन्दी में पढ़ो या संस्कृत में इसका पाठ करने से भक्ति, मुक्ति और मोक्ष की प्राप्ति होती है। यह पाठ दुर्गासप्तशती में मिलता है। प्रत्येक हिन्दु को इसका पाठ अवश्य करना चाहिए। चैत्र, अश्विन, आषाढ़ और माघ की शुक्ल

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पक्ष मे नवरात्र के अवसर पर श्री देवी की विशेष महोत्सव मनाना चाहिए। जो व्यक्ति स्त्रियों की निन्दा करता है उसे **'देवी के क्रोध'** का पात्र बनना पड़ता है और उससे अपने सारे हित का नाश होता है।

"हे शिवे! तुम्ही परब्रह्म परमात्मा की परा प्रकृति हो, तुम्ही से सारे जगत की उत्पत्ति हुई हैं, तुम्ही विश्व की जननी हो।" यह प्रार्थना प्रत्येक साधक को प्रत्येक दिन करना चाहिए।

पराशक्ति की साधना का स्थान ही ऐसा भयंकर है वहाँ दिन में भी जाने से भय होता है। जहाँ नरकंकाल, नरमुण्ड और छिन्न–विच्छिन कंकाल, हड्डियाँ इधर–उधर बिखरे पड़े हो, निर्जन, दुर्गन्ध से परिपूर्ण, सियारो की चिल्लाहट से भयानक डरावना बने हुए श्मशान क्षेत्र मे अमावस्या के घोर अन्धकार में, मृत शरीर के /मुर्दे की छाती पर/वक्षः स्थल पर बैठकर साधना करना होता है। इसमें कितना साहस की आवश्यकता होती है।

ज्वारे और नवदुर्गा का सम्बन्ध आपके भविष्य के साथ –

1. ज्वारे लगाये जाते है नवदुर्गा उपासना में, घरों में व विभिन्न पाण्डालों में लगाये जाते हैं।
2. ज्वारे एक बार लगाया हो तो कम से कम तीन या 5 बार नवरात्र में लगाना अनिवार्य होता हैं।
3. एक बार लगाने के बाद यदि नहीं लगाते है तो दोष उत्पन्न होता है। परिवार में कष्ट आना प्रारम्भ हो जाते है।
4. ज्वारे लगाने का अर्थ है आपके ऊपर माँ की कृपा कितनी है यह ज्ञात हो जाता है।
5. पति की मृत्यु, पत्नी की मुत्यु, बेटे की मृत्यु, अलग–अलग होने के संकेत, व्यवसाय की उन्नति, व्यवसाय बरबादी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इत्यादि बहुत सारे संकेत मिल जाते हैं।

6. ज्वारे में जो जौ बाजार में मिलते है उनकों ही लगाना चाहिए। गेंहु को नहीं लगाना चाहिए।
7. यदि ज्वारे सफेद रंग के होते है तो यह शुभ संकेत है पूजा सफल और कामना/इच्छा पूरी होने का इशारा हैं।
8. यदि ज्वारे हरे कलर के उगे है तो यह बहुत शुभ संकेत माना जाता है। यह खुशहाली और धन धान्य में वृद्धि और आर्थिक संकट से मुक्ति पाने के लिए माना जाता है।
9. दैवीय कृपा है नही, यह इससे पता चल जाता है।
10. अंकुरित जो दो रंग याने हरे और पीले रंग का होना मिश्रित परिणाम देता हैं। इसका अर्थ होता है कार्य में सफलता तो मिलेगी परन्तु संघर्ष करने के बाद।
11. यदि अंकुरित जो उगे ही नही तो समझ लेना चाहिए। कि यह एक वर्ष बहुत कठिनाई भरा है। या जनहानि या प्राकृतिक आपदा का संकेत हैं।
12. यदि जौ धुम्र कलर की उगे तो यह भी शुभ नहीं है यह संकेत देता है घर में क्लेश होगा, विवाद होगा, आपस में सामंजस्य नहीं होगा।
13. अंकुरित जो एक तरफ से उगते है दूसरी तरफ से नही उगते है तो मानकर चले जीवन अधूरा होने वाला है।

नवदुर्गा पूजा कब रोक देना चाहिए

1. किसी के मरने पर, परिवार के सदस्य की मृत्यु होने पर, सगोत्र में परिवार के सदस्य की मौत होने पर नवदुर्गा की पूजा रोक देना चाहिए।
2. चाहे घट स्थापना की गयी हो या ज्वारे रखे गये हो क्योंकि कुल देवी/कुल देवता अपना घर छोड़कर चले जाते है
3. हाँ यदि आपके द्वारा घटस्थापना के पहले/ज्वारे रखने के

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पहले यदि नांदी श्राद्ध कर्म की पूजा की गयी हो तो सूतक नही लगता है।

4. बच्चे के पैदा होने पर या मृत्यु होने पर दोनो ही अवस्था में सूतक शास्त्र के अनुसार लगता है 30 दिन का सूतक कम से कम होता है।
5. यदि घट स्थापना व ज्वारे लगे हुए, और नवरात्रि में ही किसी की मृत्यु हो जाय तो घट व ज्वारे को किसी दूसरे व्यक्ति जो अपनी गोत्र का ना हो उससे नवमी के दिन घट को व ज्वारे विसर्जन करा देना चाहिए।
6. नवरात्रि में घर में ताला नहीं लगाना चाहिए।
7. यदि पहले से संकल्पित नही हो तो उपवास भी नही रखना चाहिए। पाठ भी नहीं करना चाहिए यह अशुद्धता कहलाती है चाहे दूर हो, शहर दूर हो, दूसरे राज्य में फिर भी परिवार के सदस्य की मृत्यु ही कहलाती है
8. नौ दिन का संकल्प लेने के बाद बीच में किसी की मृत्यु हो जाय तो उपवास रख सकते है परंतु पूजा नहीं करनी चाहिए।
9. यदि घर के भगवान की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा की गयी तो ऐसी मूर्तियों में सूतक लगता है। यदि प्राण प्रतिष्ठा नहीं की गयी है तो सूतक नहीं लगता है।

   प्राणप्रतिष्ठा नहीं होने की दशा में घर की मूर्तिया परिवार के सदस्यों की भांति ही रहती है अतः सूतक नही लगता है परन्तु पूजा नही की जाती है। क्योंकि अग्नि प्रज्वलित नहीं की जाती है।
10. घर में रखी मूर्तियों की पूजा बहन, बेटियों से करा सकते हैं परन्तु उन बेटियों से कराना चाहिए जो दूसरे कुल में जा चुकी है विवाह हो चुका हैं। कन्यादान दिया जा चुका हैं।
11. परन्तु किसी लड़की ने अपनी मर्जी से विवाह किया था,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भागकर विवाह किया था, बाद में उसे परिवार वालो ने माफ कर दिया, उस लड़की से भी पूजा नहीं करा सकते क्योंकि वह दूसरे कुल में हस्तांतरण हो गयी हो ऐसा नहीं माना जाता है।

नवार्णमन्त्र की संम्पूर्ण व्याख्या

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चै

1. यह सांसारिक सुख और मोक्ष को देने वाला मन्त्र है।
2. इस मन्त्र का जप किसी भी वर्ण, जाति, धर्म, सम्प्रदाय, मान्यता वाला व्यक्ति कर सकता है।
3. यह भी गायत्री मन्त्र की तरह अपने भीतर गुप्त रूप से 24 वर्णाक्षरों को समेट रखा है।
4. जैसे गायत्री मन्त्र में ब्रह्मा, विष्णु, महेश समाहित हैं वैसे ही नवार्ण में भी ये तीनो देव हैं।
5. यह ब्रह्मस्वरूपिणी महाशक्ति का मन्त्र है, जो सगुणरूप में महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती होती है।

   प्रमुख नौ अक्षरों वाला यह मन्त्र है। इसमें ऊँ लगाने से यह दशार्ण मन्त्र हो जाता है।

मूलमन्त्र – ऐं ह्रीं क्लीं चामण्डायै विच्चै।

यह मूल नवार्ण है। इसी से सप्तशती का सम्पुटित पाठ किया जाता है। इससे देवीजी का हवन भी किया जाता है। (यह गुप्त देवी गायत्री है)

रहस्यमय ज्ञान –

इसमें प्रत्यक्ष 9 स्वर, 4 बिन्दु (म्) और 11 व्यंजन लेकर 24 वर्णक्षर माना है।

1. ऐम् वाग्बीज है जो योनि (जगत्कारण) स्वरूप है।
2. ह्रीम् मायास्वरूप है जिससे सृष्टि बढ़ती घटती रहती है।
3. क्लीम् काम या ब्रह्मा रूप है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

4. अ नारायण का वाचक है।
5. य वायु का वाचक है ।
6. ह देवी का वाचक है।
7. द अग्नि का वाचक है।
8. ई लक्ष्मी का वाचक है।
9. ल इन्द्र का वाचक है।

ऐ, म्, ह, र, ई, म्, क, ल, ई, म्, च, आ, म, उ, म्, ड, आ, य, ऐ, व, इ, च्, च, ए।। ये कुल 24 वर्णाक्षर हैं। इस मन्त्र की साधना चार काल में की जाती है – प्रातः, मध्याह्न, सायं और मध्यरात्रि। अतः नवार्ण मन्त्र को ब्रह्म प्रणव (ॐ) रहित जप कर सिद्ध करना चाहिए।

यह भगवती महाशक्ति का ब्रह्ममय विग्रह है। इसी तरह देवीकवच भी त्रिकाल पाठ करने से सिद्ध होता है। केवल एक काल पाठ से इसका व्यापक लाभ नहीं हो पाता। दुर्गासप्तशती का अंग पाठ के रूप में करने से कवच, अर्गला और कीलक अपना पूर्ण फल देते हैं।

विशेष :– जप माला के पहले मनके पर ॐ लगाना चाहिए और एक सौ आठवें पर ॐ लगाना चाहिए।

नवार्ण महामन्त्र का महत्व –

यद्यपि समस्त देवी देवताओं के तांत्रिक मन्त्रों की गिनती की जाये तो सात करोड़ तांत्रिक महामन्त्र हैं। उन सभी महामन्त्रों का सिरमौर समस्त मन्त्रों का राजा श्री नवार्ण महामन्त्र ही है।

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे

इस महामन्त्र प्रथम बीजमन्त्र से ज्ञान की अधिष्ठात्री योगमाया को "ऐं" स्वरूप में, मध्यम बीजमन्त्र में भगवती की त्रिगुणात्मक महामाया को "ह्रीं" स्वरूप में और तृतीय बीज में

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आदिशक्ति को "क्लीं" रूप जपा गया है। ककार महाविद्या दक्षिणा काली वाचक है। ल कार श्री विद्या षोडशी वाचक है।

"अति सौम्याति रौद्रायै"

नवार्ण महामन्त्र की अधिष्ठात्री तो स्वयं श्री भगवती ही है। इसलिए नाम श्री चामुण्डा उच्चारित किया गया हैं

महाकाली आदिशक्ति

क्योंकि श्री आद्या कालका का चण्डिका स्वरूप दशभुजा दशचरण और दस मस्तक मय दश महाविद्या मय है। नेति नेति कहकर उस आद्या स्वरूप का वेद भी पार पाते नहीं, वो वेदान्तियों का विषय है। इसलिए सर्व साधारण को भी श्री आद्या कालिका के श्री चरणों का हृदय में स्मरण हो। इसलिए चण्डमुण्डविनाशिनी चतुर्भुजा श्री चामुण्डा का ही नाम नवार्ण महामन्त्र में आया है।

नवार्ण मंत्र का महत्व –

इस महामन्त्र का अर्थ है महान ज्ञान मयी, महान ऐश्वर्य मयी, महा वात्सल्यमयी भगवती श्री चामुण्डा अपनी अविद्या से मुक्त करके अपने महाविद्या स्वरूप की शरणागति प्रदान करें।

समस्त वैदिक मन्त्रों का राजाधिराज गायत्री मन्त्र है।

समस्त तन्त्र के मन्त्रों का राजाधिराज श्री नवार्ण महामन्त्र है।

समस्त यन्त्रों का राजाधिराज श्री श्रीयन्त्र है क्योंकि समस्त मन्त्र तन्त्र और यंत्रों का सार तत्व तो जगदम्बा श्री राज राजेश्वरी ही हैं। और श्रीयंत्र, श्रीनवार्ण महामन्त्र और श्री गायत्रीमंत्र में तो जगदम्बा स्वयं ही विराजमान रहती है।

नवार्ण मन्त्र का अर्थ –

"ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै"

1. यह सबसे प्रभावशाली मन्त्र है। इस मन्त्र को जपने से महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती तीनों की कृपा प्राप्त होती है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

2. ऊँ ब्रह्मण्ड का मन्त्र है। जिससे सम्पूर्ण जगत व्याप्त हे। "ऐं" यह महासरस्वती का बीज मन्त्र है। यह वाणी, बुद्धि तथा ज्ञान कि देवी हैं। इसके जप से वाणी की सिद्धी होती है। "ह्रीं" यह महामाया का बीज मन्त्र है। जिससे धन, दौलत, ऐश्वर्य, सम्पत्ति मिलती है। "क्लीं" यह काम बीज मन्त्र है। महाकाली का बीज मन्त्र है। यह शत्रुनाश, दुर्गति का नाश करता है। "चामुण्डायै" याने चण्ड (प्रवृर्ति) मुण्ड (निर्वृति) है। काम–क्रोध दोनों है। इन दोनों को मारने वाली शक्ति का नाम ही चामुण्डा है। "विच्चै" समर्पण या नमस्कार है।

अर्थ – संसार के पर ब्रह्म ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती, सम्पूर्ण संकल्पों की अधिष्ठात्री देवी महालक्ष्मी, सम्पूर्ण कर्मो की अधिष्ठात्री देवी महाकाली काम–क्रोध का विनाश करने वाली सच्चिदानंद स्वरूपा चामुण्डा को नमस्कार है, पूर्ण समर्पण है।

षडंगन्यास –

मंत्र साधना में अंग मन्त्र छः होते हैं – 1. हृदय, 2. सिर, 3. शिखा, 4. कवच, 5. नेत्र, 6. अस्त्र, शब्द में चतुर्थी विभक्ति का योग करके अंत में क्रमशः नमः, स्वाहा, वषट्, हुं, वौषट् तथा फट् शब्दों से षडंगन्यास निष्पन्न की जाती है।

हृदयाय नमः क्यों कहा –

हृदय – षडंगन्यास में प्रयुक्त होने वाले नमः शब्द का अर्थ "प्रणाम" है। परमात्मा हृदय में स्थित है। इसे सूक्ष्म तत्वदर्शिनी बुद्धि से देखा जा सकता है। परमात्मा को साधक बुद्धि द्वारा अपने हृदय में प्राप्त कर उसे नमस्कार करता है। इसी तथ्य को दिखाने के लिए षडंगन्यास में "हृदय" पद के साथ "नमः" (हृदयाय नमः) पद का प्रयोग किया जाता है।

सिरसे स्वाहा क्यों कहते हैं?

सिर – षडंगन्यास में प्रयुक्त होने वाले दूसरा शब्द "स्वाहा"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

है। इस शब्द का लक्ष्य के लिए ''समर्पण'' करना है। शिरसे (सिर) सर्वोच्च अंग है। यहाँ परम शिव अर्थात गुरु का निवास है। ''शिरसे'' शब्द के साथ स्वाहा शब्द का प्रयोग किया जाता है। इस न्यास क्रिया में साधक द्वारा ''शिरसे स्वाहा'' मन्त्र के उच्चारण का अर्थ यह है कि ''मैं अपनी इंद्रियों के द्वारा जिन–जिन विषयों का भोग करता हूँ, उनका आहरण कर अपने शिरस्थ परम शिव को समर्पित करता हूँ''।

शिखा के साथ वषट् शब्द का प्रयोग क्यों किया जाता है –

शिखा – मानव शरीर के ''शिखा'' स्थान में परमात्मा ''तेजस'' स्थित है। परमात्मन का यह तेजस साधक के कार्य–कारण समस्त शरीर में भी व्याप्त है। षडगन्यास में शिखा के साथ जिस ''वषट्'' शब्द का प्रयोग किया जाता है, विवरण के अनुसार उसका तात्पर्य हमारे कार्य और कारण शरीर से है। न्यास विधि में ''वषट्'' को शिखा के साथ सम्बन्ध किया जाता है। ''शिखायै वषट्'' कहने का अर्थ है कि ''मैं शिखास्थान में स्थित परमात्मा को अपने समस्त अंगो अर्थात पूरे शरीर को समर्पित करता हूँ''।

हुम क्यों कहते है –

कवच – ग्राहणाथक ''कव'' धातु से ''कवच'' शब्द बनता है। इसका अर्थ ग्रहण करना है। कवच के साथ ''हुं'' शब्द का प्रयोग किया जाता है। ''हुं'' का अर्थ भी ''तेजस'' है। अतः कवच न्यास में ''कवचाय हुं'' कह कर परमात्मा के तेजस द्वारा जीवात्मा या साधक के तेजस को ग्रहण या व्याप्त किए जाने की भावना की जाती है।

नेत्रतया वौषट क्यों कहते हैं –

नेत्र – ''नेत्र'' दृष्टि को कहते हैं। जात्यंग ''वौषट'' का संबंध नेत्र से हैं यहाँ ''वौषट'' शब्द का अर्थ ''दर्शन'' हैं वास्तव नेत्रतया में ''नेत्र'' उस तेजस को कहते हैं जिसके द्वारा नेत्र गोलकों में

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देखने की शक्ति आती हैं वह शक्ति परमात्मा का तेजस ही है। न्यास विधि में "नेत्राभ्यां वौषट्" कह कर साधक परम तेजस रूप परमात्मा का स्मरण करता है।

अस्त्राय फट् क्यों कहते हैं –

अस्त्र – षडंगन्यास विधि में प्रयुक्त "अस्त्राय फट्" में स्थित "अस्त्र" शब्द की निष्पत्ति "असुक्षेपणे" तथा "त्रस चलने" इन दो धातुवो के योग से होती हैं आक्षेपध और चालन (खीचना और चलाना) "अस्त्र" के स्वभाव हैं। अस्त्र के साथ "फट्" का प्रयोग किया जाता है। "फट्" शब्द का अर्थ रक्षा की भावना से देहादि का, ईश्वर को समर्पण करना है। षड्गन्यास विधि में "अस्त्राय फट्" का उच्चारण कर साधक, साधना में आने वाले बाधक तत्वों को अपनी भावना से खींच कर "फट् रूपी आग्नेयास्त्र द्वारा उन्हें वैसे ही दूर फेक देता है, जैसे ज्वलनशील पदार्थों से अस्त्र को संचालित कर उसे तथा उसमें रखे गए पदार्थों को दूर फेक दिया जाता है।

मन्त्र विदों के अनुसार सभी तंत्रों में "हृदयाय नमः:, शिरसे स्वाहा" आदि न्यास के उक्त छः अंग ही अंगमंत्र कहे जाते हैं।

दुर्गा कवच कैसे सिद्ध करें –

सिद्धपीठ या शक्तिपीठ पर रहकर नौ दिन तक नवदुर्गा में रोजाना ग्यारह माला रोज करना है। रात्रि में तुरीय अवस्था में गुगल से दशाशं हवन रोजाना करना है। रोजाना गोलागरी/खोपरा गोला में शहद, घी और मिश्री के साथ गुगल भरकर जलाना है। नौ दिन तक यह कार्य करें, नवमी को ही नौ कन्याओं को मीठा भोजन कराकर यथा शक्ति, यथायोग्य दक्षिणा, फल, गिफ्ट देकर आशीर्वाद लेकर बिदाई करें। इस प्रक्रिया से दुर्गा कवच सिद्ध हो जाता है।

यह हृदय मे धारण करना होता है यानि किसी ताबीज मे,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भोजपत्र पर या ताम्रपत्र पर लिखने की जरूरत नहीं है। हृदय में धारण करने का अर्थ है रोजाना घर से बाहर निकलने के पहले 5 बार इसको बोलना भर है। हृदय में ही कवच धारण रहता है।

आओ हम सब मिलकर अपनी सुरक्षा स्वयं ही करें और नवदुर्गा के समय पर इसको इस प्रक्रिया से हृदय में धारण करें।

नवरात्रि में विवाह क्यों नहीं होते है? नवरात्रि में विवाह क्यों नहीं करते?

नवरात्रि में **शारीरिक सम्बन्ध बनाने** पर मनाही क्यों ? नवरात्रि में स्त्री को सज–धज कर सुगाहिन जैसी रहना चाहिए।

1. घर में देवी का आवाहन होता है घट स्थापना होती है, अखण्ड ज्योत लगायी जाती है, कुलदेवी का पूजन होता है इसलिए सभी सकारात्मक ऊर्जा घर में रहती है उस समय कोई भी नकारात्मक कार्य नही करना चाहिए। सहवास सम्भोग नकारात्मक कार्य है।
2. जिस प्रकार घर परिवार में किसी की मृत्यु होने पर सूतक के नियमों का पालन, शास्त्रानुसार करते हैं उसी प्रकार शास्त्रानुसार नवरात्रि के दुर्गा पूजा के नियम का पालन करना चाहिए।
3. नवरात्रि में पीरियड्स/मासिक धर्म/एम.सी या अशुद्धता/माहवारी/रजस्वला में नवरात्रि के व्रत/उपवास नहीं रखना चाहिए क्योकि कमजोरी/दर्द/चिड़चिडापन/बन्धन महसूस होता है।
4. शरीरिक सम्बन्ध बनाने पर हार्मोन्स शरीर से निकलते हैं जिसकी वजह से नकारात्मक ऊर्जा जल्दी चपेट में ले लेती है। प्रेत बाधा लग सकती है। इस अवस्था में पति पत्नी के मन मे निराशा के भाव उत्पन्न होते है तथा कई बार मानसिक अवसाद/पागलपन की बीमारी भी हो जाती है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

5. नवरात्रि के समय पर अधिकांश पति–पत्नी को अलग–अलग शयन करना चाहिए। पति को बिस्तर पर तथा पत्नी को जमीन पर कम्बल पर सोना चाहिए ताकि सेक्स/कामोत्तेजना से बचा जा सकें।
6. जिस बिस्तर पर पति–पत्नी साधारणतः शारीरिक सम्बन्ध बनाते है उस बिस्तर पर नौ दिन तक नहीं जाना चाहिए क्योंकि वह अशुद्ध होते है।
7. यह नियम इसलिए भी बनाये गये है कि हम मन, कर्म, वचन से अपनी देवी की प्रकृति की जगतजननी की पूजन, अर्चना, ध्यान और सेवा कर सकें।
8. घर की स्त्री को नवरात्रि में हमेशा 16 श्रृंगार करके रहना चाहिए। बिन्दिया से बिछियां तक पूर्ण श्रृंगार करके रहना चाहिए।
9. नवरात्रि में विवाह भी इसलिए नहीं किये जाते है क्योंकि माता जी के पूजन के दिन होते है, शक्ति संचय के दिन होते है, माता देवी हमारे घर आती है।
10. जो मनुष्य घट स्थापना नहीं करता, अखण्ड दीपक नहीं लगाता उसे भी अपनी स्त्री के साथ सहवास नहीं करना चाहिए क्योंकि उसमें भी मातृत्व शक्ति रहती है।
11. नवरात्रि में ग्रह प्रवेश भी नहीं करना चाहिए ।

कुलदेवता/कुलदेवी की पूजा क्यों करनी चाहिए?

हर जाति वर्ग, किसी न किसी ऋषि की संतान है और उन मूल ऋषि से उत्पन्न संतान के लिए वे ऋषि या ऋषि पत्नी कुलदेव/कुलदेवी के रूप में पूज्य है।

पूर्व के हमारे कुलों अर्थात पूर्वजों के खानदान के वरिष्ठों ने अपने लिए कुल देवता अथवा कुलदेवी का चुनाव कर उन्हें पूजित करना शुरू किया था ताकि एक आध्यात्मिक और पारलौकिक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शक्ति कुलों की रक्षा करती रहें। कुछ स्वयंभू आधुनिक मानने वाले और हर बात में वैज्ञानिकता खोजने वालों ने भी अपने ज्ञान के गर्व में अथवा अपनी वर्तमान अच्छी स्थिति के गर्व में इन्हें छोड़ दिया या इन पर ध्यान नहीं दिया। कुल देवता–देवी की पूजा छोड़ने के बाद कुछ वर्षो तक तो कोई खास अंतर नहीं समझ में आता किन्तु उसके बाद जब सुरक्षा चक्र हटता है तो परिवार में दुर्घटनओं, नकारात्मक ऊर्जा, बाहरी बाधाओं का बेरोक–टोक प्रवेश शुरू हो जाता है, उन्नति रूकने लगती है, पीढ़ियाँ अपेक्षित उन्नति नहीं कर पाती, संस्कारों का क्षय, नैतिक पतन, कलह, उपद्रव, अशांति शुरू हो जाती है कुल देवता या देवी हमारे वह सुरक्षा आवरण है जो किसी भी बाहरी बाधा, नकारात्मक ऊर्जा के परिवार में अथवा व्यक्ति पर प्रवेश से पहले सर्वप्रथम उससे संघर्ष करते है और उसे रोकते है।

यह पारिवारिक संस्करों और नैतिक आचरण के प्रति भी समय–समय पर सचेत करते रहते है, यही किसी भी इष्ट को दी जाने वाली पूजा को इष्ट तक पहुंचाते है। यदि इन्हें पूजा नहीं मिल रही होती है तो यह नाराज हो सकते है और उस परिवार को छोड़ देते है। ऐसे में आप किसी भी इष्ट की आराधना करें वह उस इष्ट तक नहीं पहुँचता क्योंकि सेतु कार्य करना बंद कर देता है। बाहरी बाधाएँ, नकारात्मक ऊर्जा बिना बाधा व्यक्ति तक पहुँचने लगती है। कभी–कभी व्यक्ति या परिवारों द्वारा दी जा रहीं इष्ट की पूजा कोई अन्य बाहरी शक्ति लेने लगती है अर्थात पूजा न इष्ट तक जाती है न उसका लाभ मिलता है। सामान्यतया इनकी पूजा वर्ष में एक बार अथवा दो बार निश्चित समय पर होती है यह परिवार के अनुसार भिन्न समय होता है और भिन्न विशिष्ट पद्धति होती है। शादी–विवाह–संतानोत्पत्ति आदि होने पर इन्हें विशिष्ट पूजाएँ भी दी जाती है। यदि यह सब बंद हो जाए तो या तो यह नाराज होते है या कोई मतलब न रख मूकदर्शक हो

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जाते है और परिवार बिना किसी सुरक्षा आवरण के पारलौकिक शक्तियों के लिए खुल जाता है। परिवार में विभिन्न तरह की परेशानियां शुरू हो जाती है। अतः प्रत्येक व्यक्ति और परिवार को अपने कुल देवता या देवी को जानना चाहिए, यथायोग्य उन्हें पूजा प्रदान करनी चाहिए जिससे परिवार की सुरक्षा–उन्नति होती रहे। हिन्दू पारिवारिक आराध्य व्यवस्था में कुल देवता, कुलदेवी का स्थान सदैव से रहा है प्रत्येक हिन्दू परिवार किसी न किसी ऋषि के वंशज है जिनसे उनके गोत्र का पता चलता है बाद में कर्मानुसार इनका विभाजन वर्णो में हो गया विभिन्न कर्म करने के लिए जो बाद से उनकी विशिष्टता बन गया और जाति कहा जाने लगा।

देवी पूजा में – हाथ में मौली (कलावा) क्यों बांधा जाता है?

आपने अक्सर देखा होगा कि....घरों और मंदिरों में पूजा के बाद पंडितजी हमारी कलाई पर लाल रंग का कलावा या मौली बांधते है.... और हम में से बहुत से लोग बिना इसकी जरूरत को पहचानते हुए इसे हाथों में बंधवा लेते है। सिर्फ इतना ही नहीं... बल्कि.... आजकल पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित अंग्रेजी स्कूलों में पढ़े लोग... मौली बांधने को एक ढकोसला मानते है... और उनका मजाक उड़ाते है। हद तो ये है कि... कुछ लोग मौली बांधवाने में अपनी आधुनिक शिक्षा का अपमान समझते है... एंव मौली बंधवाने से उन्हें अपनी सेक्यूलरता खतरे में नजर आने लगती है।

परन्तु, मैं आपकों एक बार फिर ये याद दिला दूँ कि... एक पूर्णतया वैज्ञानिक धर्म होने के नाते हमारे हिंदू सनातन धर्म की कोई भी परंपरा बिना वैज्ञानिक दृष्टि से हो कर नहीं गुजरता और हाथ में मौली धागा बांधने के पीछे भी एक बड़ा वैज्ञानिक कारण है। दरअसल मौली का धागा कोई ऐसा वैसा धागा नहीं होता है बल्कि, यह कच्चे सूत से तैयार किया जाता है और यह कई रंगों

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जैसे, लाल, काला, पीला, अथवा केसरिया रंगों में होती है। मौली को लोग साधारणतया हाथ की कलाई में बांधते है और ऐसा माना जाता है कि हाथ में मौली का बांधने से मनुष्य को भगवान ब्रह्मा, विष्णु व महेश तथा तीनों देवियों– लक्ष्मी, पार्वती एवं सरस्वती की कृपा प्राप्त होती है। कहा जाता है कि हाथ में मौली धागा बांधने से मनुष्य बुरी दृष्टि से बचा रहता हैं क्योंकि भगवान उसकी रक्षा करते है और इसलिए कहा जाता है क्योंकि हाथों में मौली धागा बांधने से मनुष्य के स्वास्थ में बरकत होती है कारण कि इस धागे को कलाई पर बांधने से शरीर में वात, पित्त तथा कफ के दोष में सामंजस्य बैठता है। तथा ये सामंजस्य इसीलिए हो पाता है क्योंकि शरीर की संरचना का प्रमुख नियंत्रण हाथ की कलाई में होता है (आपने भी देखा होगा कि डॉक्टर रक्तचाप एवं हृदय गति मापने के लिए कलाई के नस का उपयोग प्राथमिकता से करते है) इसीलिए वैज्ञानिकता के तहत हाथ में बंधा हुआ मौली धागा एक एक्यूप्रेशर की तरह काम करते हुए मनुष्य को रक्तचाप, हृदय रोग, मधुमेह और लकवा जैसे गंभीर रोगों से काफी हद तक बचाया जाता है एवं इसे बांधने वाला व्यक्ति स्वस्थ्य रहता है। और हाथों के इस नस और उसके एक्यूप्रशेर प्रभाव को हमारे ऋषि मुनियों ने हजारों लाखों साल पहले जान लिया था। परन्तु हरेक व्यक्ति को एक–एक कर हर बात की वैज्ञानिकता समझाना संभव हो नहीं पाता इसीलिए हमारे ऋषि मुनियों ने गूढ़ से गूढ़ बातों को भी हमारी परम्पराओं और रीति–रिवाजों का हिस्सा बना दिया ताकि हम जन्म जन्मांतर तक अपने पूर्वजों के ज्ञान– विज्ञान से लाभान्वित होते रहें।

नोट :– शास्त्रों के अनुसार पुरूषों एवं अविवाहित कन्याओं को दाएं हाथ में एवं विवाहित स्त्रियों के लिए बाएं हाथ में मौली बांधने का नियम है। कलावा बंधवाते समय जिस हाथ में कलावा बंधवा रहे हों उसकी मुठ्ठी बंधी होनी चाहिए और दूसरा हाथ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देवी देवता की पूजा में सिर ढ़क कर क्यों रखना चाहिए? मातारानी को चुनरी क्यों चढ़ाते है?

सिर मनुष्य का सबसे संवदेनशील स्थान होता है ब्रह्मरंध्र सिर के बीचों बीच स्थित होता है। मौसम के मामूली परिवर्तन का दुष्टपरिणाम ब्रह्मरंध्र के भाग से शरीर के अन्य अंगों में जाता है। आकाशीय विघुत तरंगेखुले सिर वाले व्यक्तियों के भीतर प्रवेश कर क्रोध, सिरदर्द, आंखों की कमजोरी आदि रोगों को जन्म देती है। सिर के बालों में रोग फैलाने वाले कीटाणु, जीवाणु चिपक जाते है। रोग फैलाने वाले कीटाणु बालों से शरीर के भीतर प्रवेश कर जाते है। इसी वजह से सिर और बालों को ढंककर रखा जाता है। साफा, पगड़ी, साड़ी का पल्लू, दुपट्टा इत्यादि सिर पर रखा जाता है एवं बांधा जाता है। बालों में कीटाणु आते है यह निश्चित है क्योंकि किसी की मृत्यु पर मुण्डन किया जाता है। नवशिशु का मुण्डन होता है। स्त्रियों को सिर हमेशा ढंककर रखना चाहिए। पुरानी कथाओं में, मन्यताओं मे राजा महाराज देवी–देवता सिर ढंकने के लिए मुकुट का प्रयोग करते थे। बड़े लोगों को मान–सम्मान देने के लिए भी सिर ढंकना चाहिए। सिर के मध्य में सहस्त्रारार चक्र होता है इसे नियंत्रण करने के लिए भी पूजा के समय सिर ढंककर रखा जाता है। भगवान के प्रति, ईश्वर के प्रति मान–सम्मान, समर्पण है उसको अभिव्यक्त करने का माध्यम सिर पर चुनरी होना। मातारानी को चुनरी इसलिए चढ़ाई जाती है। आपको भी सिर ढंककर रखना चाहिए।

नारियल क्यों चढ़ाया जाता हैं– अंहकार का प्रतीक

1. नारियल श्रीफल है और यह सिर (शीश) का प्रतीक है। यह अहं को दर्शाता है इसलिए अपने अंहकार को देवी देवताओं के समक्ष चढ़ाना (सौपना) के लिये इसे चढ़ाया जाता है।
2. नारियल का ऊपरी भाग जिसे माथा बोलते है वह सबसे ऊपर रहता है उसमें बुद्धि का वास होता है। और बुद्धि ही

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सबसे बड़ी है। इसका प्रमाण यह है कि दुर्गा सप्तशती के सातवें अध्याय से तेरहवे अध्याय तक देवी सरस्वती का वर्णन है। वही उस अध्याय की अधिष्ठत्री देवी है।

3. जिसके पास शक्ति होती है उसके पास लक्ष्मी होती है। जिसके पास लक्ष्मी होती है उसके पास अहंकार होता है। जिसके पास सत्ता होती है वह राजा होता है, उसका सर्वत्र बोलबाला होता है। उसके साथ मद होता है। मद अवस्था में वह अत्याचार करता है, गलत काम करता है। इसीलिए नारियल मद और अंहकार का प्रतीक है।

सिंह और शेर :–

प्रत्येक देवी का वाहन अलग–अलग है। देवी दुर्गा सिंह पर सवार है, तो माता पार्वती शेर पर। पार्वती के पुत्र कार्तिकेय का नाम स्कंद भी है इसीलिए वे स्कंद की माता कहलाती है उन्हें सिंह पर सवार दिखाया गया है। कात्यायनी देवी को भी सिंह पर सवार दिखाया गया हैं। देवी कुष्मांडा शेर पर सवार है। माता चंद्रघंटा भी शेर पर सवार है। जिनकी प्रतिपदा और जिनकी अष्टमी को पूजा होती है वे शैलपुत्री और महागौरी वृषभ पर सवारी करती है। माता कालरात्रि की सवारी गधा है तो सिद्धिदात्री कमल पर विराजमान है।

एक कथा अनुसार शिव को पति रूप में पाने के लिए देवी पार्वती ने हजारों वर्ष तक तपस्या की। तपस्या से देवी सांवली हो गई। भगवान शिव से विवाह के बाद एक दिन जब शिव पार्वती साथ बैठे थे तब भगवान शिव ने पार्वती से मजाक करते हुए काली कह दिया। देवी पार्वती को शिव की यह बात चुभ गई और कैलाश छोड़कर वापस तपस्या करने में लीन हो गई। इस बीच एक भूखा शेर देवी को खाने की इच्छा से वहां पहुँचा। लेकिन तपस्या में लीन देवी को देखकर वह चुपचाप बैठ गया। शेर सोचने लगा कि देवी कब तपस्या से उठे और में उन्हें अपना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आहार बना लू इस बीच कई साल बीत गए लेकिन शेर अपनी जगह डटा रहा। इस बीच देवी पार्वती की तपस्या पूरी होने पर भगवान शिव प्रकट हुए और पार्वती गौरवर्ण यानी गौरी होने का वरदान दिया। इसके बाद देवी पार्वती ने गंगा स्नान किया और उनके शरीर से एक सांवली देवी प्रकट हुई जो कौशिकी कहलायी और गौरवर्ण हो जाने के कारण देवी पार्वती गौरी कहलाने लगी।

देवी पार्वती ने उस सिंह को अपना वाहन बना लिया जो उन्हें खाने के लिए बैठा था। इसका कारण यह था कि सिंह ने देवी को खाने की प्रतीक्षा में उन पर नज़र टिकाए रखकर वर्षो तक उनका ध्यान किया था। देवी ने इसे सिंह की तपस्या मान लिया और अपनी सेवा में ले लिया। इसलिए देवी पार्वती के सिंह और वृष दोनों वाहन माने जाते है।

क्यों नहीं की जाती खंडित मूर्ति की पूजा?

हिन्दू धर्म में देवी देवताओं की साकार रूप में मानकर पूजा की जाती है। इस विधि में पत्थर सोने, चाँदी, अष्ट धातु व अन्य धातुओं की मूर्ति बनाकर या फोटो और तस्वीरों के माध्यम से पूजा की जाती है। जब कोई मूर्ति खंडित हो जाती है तो वो शोभनीय नहीं दिखती। यदि ऐसी खंडित मूर्ति की साधक पूजा करता है तो उसका मन उस मूर्ति के खंडित भाग में ज्यादा लगा रहता है। इसी कारण पूजा हमेशा अखंडित मूर्ति की ही करनी चाहिए।

क्या करें खंडित मूर्ति का?

यदि कोई मूर्ति खंडित हो जाती है तो उसे रविवार के अलावा अन्य वार पर सुबह के समय पीपल के पेड़ के नीचे रख देनी चाहिए। खंडित मूर्ति को आप पवित्र जल में विसर्जित भी कर सकते है। सिर्फ शिवजी के खंडित मूर्ति की पूजा की जा सकती है। देवी देवताओं में सिर्फ देवो के देव महादेव ही एक ऐसे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भगवान है जिनके खंडित मूर्ति की भी पूजा की जा सकती है। शिव को निराकार माना जाता है। उनका रूप रंग वेश भक्तों द्वारा प्रदान किया गया है। शिव की पूजा शिवलिंग के रूप में होती है जो निराकार रूप का शक्ति केंद्र है। अतः निराकार के रूप का खंडित होना नहीं माना जाता है।

नवार्ण मंत्र जाप की विधि / नवार्ण मंत्र की साधना

अथ नवार्ण विधि

(सर्व प्रथम हाथ में या आचमनी में जल लेकर विनियोग मंत्र पढ़कर छोड़े)

ॐ अस्य श्री नवार्ण मंत्रस्य
ब्रह्मविष्णुरुद्र ऋषयः,
गायत्री उष्णिक अनुष्टुभ छंदासि,
श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताः,
ऐं बींज ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं, श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः

अब न्यास करें :– वैसे नवार्ण मंत्र के एकादश न्यास हैं लेकिन सरलता की दृष्टि से यहाँ हम कुछ महत्वपूर्ण न्यास ही लेंगे।

ऋष्यादि न्यासः

1. ब्रह्मविष्णुरुद्र ऋषिभ्यों नमः शिरसि।
   (दाये हाथ से शिर को स्पर्श करें)
2. गायत्रि उष्णिक अनुष्टुभ छंदोभ्यो नमः मुखे।
   (दाये हाथ से मुख को स्पर्श करें)
3. महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताभ्यों नमः हृदि!
   (हृदय को स्पर्श करें)
4. ऐं बीजाय नमः गुह्ये! (गुह्य स्थान को स्पर्श करें और हाथ धोये या मानसिक दृष्टी से स्पर्श करें)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

5. ह्रीं शक्तये नमः पादयो (पैर को स्पर्श करें)
6. क्लीं कीलकाय नमः नाभौ! (नाभी को स्पर्श करें)
7. ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे नमः सर्वांगे (शिर से लेकर पैर तक सम्पूर्ण शरीर को स्पर्श करें) नौ बार

कर न्यास –

1. ऊँ ऐं नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः! (तर्जनी से अंगुठे को स्पर्श करें)
2. ऊँ ह्रीं नमः तर्जनीभ्यां नमः! (अंगुठे से तर्जनी को स्पर्श करें)
3. ऊँ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः! (अंगुठे से मध्यमा को स्पर्श करें)
4. ऊँ चामुंडायै अनामिकाभ्यां नमः! (अंगुठे से अनामिका का स्पर्श करें)
5. ऊँ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः! (अंगुठे से करांगुली कनिष्ठका का स्पर्श करें)
6. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः (दोनों हाथ के तलवे और कर पृष्ठ का स्पर्श करें)

हृदयादि न्यास –

1. ऊँ ऐं हृदयाय नमः! (दाहिने हाथ से हृदय को स्पर्श करें)
2. ऊँ ह्रीं शिरसे स्वाहा! (दाहिने हाथ से सिर को स्पर्श करें)
3. ऊँ क्लीं शिखायै वषट्! (दाहिने हाथ से शिखा को स्पर्श करें)
4. ऊँ चामुंडायै कवचाय हुम! (दाहिना हाथ बाये कंधे पर और बाया हाथ दाहिने कंधे पर)
5. ऊँ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट् (दाहिने हाथ की तर्जनी और अनामिका से दोनों आँखें पर और मध्यमा से आज्ञा चक्र पर स्पर्श करें)
6. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे अस्त्राय फट (दाहिने हाथ की तर्जनी और मध्यमा को शिर के ऊपर से घुमाकर बाये हाथ पर ताली बजायें)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अक्षर न्यास –

दाहिने हाथ से उक्त अंग को स्पर्श करें

1. ऊँ ऐं नमः शिखायाम! (शिखा)
2. ऊँ ह्रीं नमः दक्षिण नेत्रे! (दाहिना नेत्र)
3. ऊँ क्लीं नमः वामनेत्रे! (बाया नेत्र)
4. ऊँ चां नमः दक्षिणकर्णे! (दाहिना कान)
5. ऊँ मुं नमः वामकर्णे! (बाया कान)
6. ऊँ डां नमः दक्षिण नासा पुटे! (दाहिना नथुना)
7. ऊँ यैं नमः वामनासापुटे! (बायां नथुना)
8. ऊँ विं नमः मुखे! (मुख)
9. ऊँ च्चें नमः गुह्ये (गुह्य स्थान)

दिग्न्यास –

अब नीचे दिये हुये क्रम से प्रत्येक दिशा में चुटकी बजाये .. अपना मुख पूर्व की तरफ है ऐसा मानकर घडी की सुई की दिशा में क्लाक वाईज डायरेक्शन में चुटकी बजायें।

1. ऊँ ऐं प्राच्यै नमः! (पूर्व)
2. ऊँ ऐं आग्नेयै नमः! (आग्रेय)
3. ऊँ ह्रीं दक्षिणायै नमः! (दक्षिण)
4. ऊँ ऐं नैर्ऋत्यै नमः! (नैऋत्य)
5. ऊँ क्लीं प्रतिच्यै नमः! (पश्चिम)
6. ऊँ क्लीं वायव्यै नमः! (वायव्य)
7. ऊँ चामुण्डायै उदिच्यै नमः! (उत्तर)
8. ऊँ चामुंडायै ऐशान्यै नमः! (ईशान्य)
9. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे उर्ध्वायै नमः! (ऊपर)
10. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे भूम्यै नमः! (नीचे)

अब भगवती दुर्गा जी का अगर पहले ध्यान और पंचोपचार पूजन नहीं किया हो तो अब करें और किया हो तो सीधे मंत्र जाप

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शुरु कर सकते है।

दुर्गा ध्यान –

विद्युद्दाम समप्रभां मृगपति स्कंध स्थितां भीषणां।
कन्याभिः करवाल खेट विलसद्धस्ताभिरा सेवितां।
हस्तैश्चक्र गदासिखेट विशिखांश्चापं गुणं तर्जनी।
बिभ्राणा मनलात्मिकां शशिधरां दुर्गा त्रिनेत्रां भजे।।

ऊँ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः लं पृथ्वी तत्वात्मकं गंधं समर्पयामि
ऊँ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः हं आकाश तत्वात्मकं पुष्पं समर्पयामि
ऊँ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः यं वायु तत्वात्मकं धूपं समर्पयामि
ऊँ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः रं अग्नि तत्वात्मकं दीपं समर्पयामि
ऊँ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः वं जल तत्वात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि
ऊँ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः सं सर्व तत्वात्मकं ताम्बुलं समर्पयामि

नवार्ण मंत्र जाप से पहले अगर सिद्धकुंजिका स्तोत्र का पाठ किया जाये तो अतिउत्तम क्योंकि कुंजिका स्तोत्र से नवार्ण मंत्र जागृत हो जाता है।

अब आप योनी मुद्रा आती हो तो मुद्रा दिखाये और मंत्र जाप शुरु करें –

मंत्र जाप रुद्राक्ष माला, या स्फटिक माला या हकीक माला से या मुंगे की माला से कर सकते हैं। तुलसी माला से कदापि नहीं करना चाहिए।

ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे

मंत्र जाप खत्म होने के बाद नीचे का मंत्र बोलकर आपका जाप भगवती के बाये हाथ में (मानसिक दृष्टीकोण से) समर्पित करें।

ऊँ गुह्याति गुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु में देवि त्वत प्रसादान्महेश्वरी।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अब क्षमा प्रार्थना करें –

आवाहनं न जानामि, न जानामि तवार्चनं
पूजां चैव न जानामि, क्षम्यातां परमेश्वरी
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तीहीनं सुरेश्वरी
यत्पूजितं मया देवी परिपूर्ण तदस्तु मे ।।
अब योनि मुद्रा दिखाकर प्रणाम करें ।

शतचण्डी का अर्थ क्या? शतचण्डी क्या होती है?

जैसा कि इसके शब्द से पता चलता है कि "शत" याने 100, चण्डी याने चण्डी पाठ 100 बार पढ़ना और दशांश हवन करना और 9 कन्याओं को पैर पूजकर मीठा भोजन कराना। चने, खीर, हलवा, पुड़ी खिलाना और कपड़े, श्रृंगार देकर उनकी बिदाई करना। **कन्याओं को नमक नही खिलाना चाहिए।**

शतचण्डी यज्ञ क्यों किया जाता है?

माँ भगवती जगतजननी का शतचण्डी अनुष्ठान इसलिए किया जाता है क्योंकि माँ जगत जननी की कृपा प्राप्त करना होती है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, सुख, समृद्धि, शान्ति सभी प्राप्त होता है।

शतचण्डी यज्ञ कराने का कोन अधिकारी है?

कोई मनुष्य जो माँ भगवती जगत जननी की शरण में जाना चाहता है, उनकी कृपा प्राप्त करना चाहता हो, उनसे प्रेम करता हो, वह अपने **मेहनत की कमाई** से, **जमा पूंजी** से शतचण्डी यज्ञ करा सकता है। इसमें जात–पात, ऊँच–नीच, कुछ भी बन्धन नहीं होता है।

क्या दुर्गा सप्तशती के 100 पाठ याने शतचंडी यज्ञ कराने से तंत्र विद्या समाप्त हो जाती है या तांत्रिक अभिचार समाप्त हो जाते है? यह बड़ा सबसे अधिक पूछा जाने वाला प्रश्न है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यदि विधि–विधान से भी **चंडी पाठ किया** गया और विधि–विधान से **शतचंडी यज्ञ किया गया** तो तांत्रिक अभिचार कर्म समाप्त हो जाते है। विधि विधान याने की नियम कानून के अनुसार सभी सामग्री का प्रयोग करते हुए। यह कार्य उग्र नक्षत्र में प्रारम्भ करें। इसके श्रीदुर्गासप्तशती के दीक्षित ब्राह्माण से ही पाठ व हवन कराया जाय तो समस्या हल हो सकती है।

उग्र नक्षत्र :– भरणी, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वा भाद्रपद।

श्री दुर्गाजी के 108 नाम के पाठ का रोजाना पाठ करने से चारो, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, चारों पुरूषार्थ प्राप्त हो जाते है। मंगलवारी अमावस्या से प्रारम्भ करें, चन्द्रमा शतभिषा नक्षत्र पर हो, तब करने पर विशेष फल मिलता है।

चण्डी विधान –

सर्वप्रथम चण्डी के अनुष्ठान में प्रयुक्त होने वाले नवार्ण मन्त्र का उद्धार कहता हूँ –

वाक् (ऐं), माया (ह्रीं), मदन (क्लीं) फिर दीर्घालक्ष्मी (चा), श्रुति उकार इन्दु (बिन्दु) सहित तन्द्रि (म) अर्थात् (मुं), फिर 'डायै' पद, फिर सदृक्जले (वि), तदन्तर झिण्टीश सहित कूर्म द्वय (च्चे) यह नवार्ण मन्त्र कहा गया है।।

विमर्श – मन्त्र का स्वरुप – ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।।

अब विनियोग कहते हैं – इस नवार्ण मन्त्र के ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर ऋषि हैं। गायत्री, उष्णिग् और अनुष्टुप् छन्द मुनियों ने कहा है तथा महाकाली महालक्ष्मी एवं महासरस्वती ये देवियाँ इसकी देवता हैं, नन्दा, शाकाम्भरी और भीमा इसकी शक्तियाँ है। रक्तदन्तिका दुर्गा और भ्रामरी बीज है। अग्नि, वायु और सूर्य तत्व है। वेदत्रय से उत्पन्न इसका फल है। इस प्रकार साधक की इच्छापूर्ति हेतु सिद्धियों के हेतु इसका विनियोग कहा गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अब ऋष्यादिन्यास कहते हैं – ऋषियों का शिर, छन्दों का मुख तथा देवताओं का हृदय, पर शक्ति और बीज का क्रमशः दोनों स्तन पर तथा तत्वों का पुनः हृदय पर न्यास करना चाहिए।।

विमर्श –

ऋष्यादिन्यास – ब्रह्माविष्णुरुद्रऋषिभ्यों नमः, शिरसे,
गायष्युष्णिगनुष्टुपछन्दोभ्यो नमः, मुखे,
महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताभ्यों नमः हृदि,
नन्दा शाकम्भरी ब्रम्हाणी शक्तिभ्यो नमः, दक्षिणस्तने,
रक्तदन्तिका दुर्गा भ्रामरीबीजेभ्यो नमः वामस्तने,
अग्नि वायु सूर्य तत्त्वेभ्यो नमः, हृदि

एकादशन्यास –

1. **शुद्ध मातृका न्यास** – इसके बाद समस्त अभीष्ट फल देने वाले एकादश न्यासों को करना चाहिए। सर्वप्रथम मातृका का न्यास करना चाहिए जिसके करने से मनुष्य देवसदृश हो जाता है।

विमर्श – ऊँ अं नमः शिरसि, ऊँ आं नमः मुखे, इत्यादि मातृकान्यास के लिये द्रष्टव्य विधि

2. **सारस्वतन्यास** – इसके बाद सारस्वत संज्ञक द्वितीय न्यास करना चाहिए। उसकी विधि इस प्रकार है – मूल मन्त्र के प्रारम्भिक 3 बीजमंत्र के प्रारम्भ में प्रणव तथा अन्त में 'नमः' लगाकर कनिष्टिका आदि पाँच अंगुलियों करतल, करपृष्ठ, मणिबन्ध एवं कोहिनी पर क्रमशः न्यास करना चाहिए। फिर हृदय आदि 6 अंगों पर जाति सहित न्यास करना चाहिए। इस सारस्वत न्यास के **करने से** जड़ता **नष्ट** हो जाती है।

विमर्श – सारस्वतन्यास विधि ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं नमः कनिष्ठिकयों, ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं नमः अनामिकयोंः, इसी प्रकार मध्यमा, तर्जनी, अंगुष्ठ, करतल, करपृष्ठ का न्यास कर लेना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चाहिए। पुनः ऊँकार सहित तीनो बीजों से हृदयादि स्थानो पर न्यास करना चाहिए। यथा –

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हृदयाय नमः, ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं शिरसे स्वाहा, ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं शिखायै वषट् ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं कवचाय हुम् ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं अस्त्राय फट्।।

3. इसके बाद मातृकागण संज्ञक तृतीय न्यास करना चाहिए। उसकी विधि इस प्रकार है प्रारम्भ में मायाबीज (ह्रीं) लगाकर 'ब्राह्मी पूर्वतः मां पातु' से पूर्व, 'माहेश्वरी आग्रेयां मां पातु' से आग्रेय, 'कौमारे दक्षिण मां पातु' से पश्चिम में, 'इन्द्राणि वायव्ये मां पातु' से ईशान में, 'व्योमेश्वरी उर्ध्व मां पातु' से ऊपर, 'सप्तद्वीपेश्वरी भूमौ मां पातु' से भूमि पर तथा 'कामेश्वरी पाताले मां पातु' से 'नीचे न्यास करना चाहिए। इस तृतीयन्यास के करने से साधक त्रैलोक्य विजयी हो जाता है।।

विमर्श – इसका न्यास 'ह्रीं ब्रह्मी पूर्वतः मां पातु पूर्वे, 'ह्रीं माहेश्वरी आग्रेयां मां पातु' इत्यादि प्रकार से करना चाहिए।

4. **षड्वीन्यास** – नन्दजा आदि पदों से युक्त मन्त्रों द्वारा चतुर्थन्यास इस प्रकार करना चाहिए –

'कमलाकुशमण्डिता नन्दजा पूर्वाड्.गं में पातु' इस मन्त्र से पूर्वाड्.ग पर, 'खड्गपात्रकरा रक्तदन्तिका दक्षिणाड्.गं में पातु' से दक्षिणाड्.ग पर, 'पुष्पपल्लवसंयुता शाकम्भरी पृष्ठाड्.गं में पातु' से पृष्ठ पर, 'धनुर्बाणकरा दुर्गा वामाड्.गं में पातु' से वामाड्.ग पर, 'शिरःपात्रकराभीमा मस्तकादि चरणानतं में पातु' से मस्तक से पैरों तक तथा 'चित्रकान्तिभुत् भ्रामरी पादादि मस्तककान्तम से पातु' से पादादि मस्तक पर्यन्त न्यास करना चाहिए। इस चतुर्थन्यास के करने से मनुष्य वृद्धावस्था और मृत्यु से मुक्त हो जाता है।।

5. इसके बाद न्यासों में उत्तम ब्रह्मसंज्ञक पंचमन्यास करना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चाहिए। उसकी विधि इस प्रकार है –

ऊँ सनातनः ब्रह्मा पादादिनाभिपर्यन्तः मां पातु' से पैरों से नाभि पर्यन्त,

'ऊँ जनार्दनः नाभेर्विशुद्धिपर्यन्तं नित्यं मां पातु' से नाभि से विशुद्धि चक्र पर्यन्त,

'ऊँ रुद्रस्त्रिलोचनः विशुर्द्धेब्रह्मरंध्रानतं मां पातु' से विशुद्धिच्चक्र से ब्रह्मरन्ध्र पर्यन्त,

ऊँ हंसः पदद्वद्वं में पातु से दोनों पैरों पर, ऊँ वैनतेयः करद्वय्म में पातु' से दोनों हाथों पर,

'ऊँ वृषभः चक्षुषी में पातु' से नेत्रों पर, ऊँ गजाननः सर्वाड्.गानि में पातु' से सभी अंगो पर और

'ऊँ आनन्दमयो हरिः परापरौ देहभागौ में पातु से शरीर के दोनो भागों पर न्यास करना चाहिए। इस पंचमन्यास को करने से **साधक के सभी मनोरथ पूर्ण हो जाते** है।

6. इसके बाद महालक्ष्मी आदि पद से संयुक्त मन्त्रों द्वारा षष्ठन्यास करना चाहिए। उसकी विधि इस प्रकार है –

षष्ठन्यास विधि –ऊँ अष्टादशभुजान्विता महालक्ष्मी मध्यं में पातु – इस मन्त्र से मध्य भाग पर, 'ऊँ अष्टभुजोर्जिता सरस्वती ऊर्ध्वे में पातु' – इस मन्त्र से अधो भाग पर, 'ऊँ सिंहो हसतद्वय्म में पातु' – इस मन्त्र से दोनों हाथों पर, 'ऊँ परंहंसों अक्षियुग्मं में पातु' – इस मन्त्र से दोनों नेत्रों पर, 'ऊँ दिव्यं महिषमारुढो यमः पदद्वयं में पातु' इस मन्त्र से दोनों पैरों पर, 'ऊँ चण्डिकायुक्तों महेशः सर्वाड्.गानि में पातु'– इस मन्त्र से सभी अड्.गों पर न्यास करना चाहिए। इस षष्ठ न्यास के करने से मनुष्य सद्‌गति प्राप्त करता है।

7. अब इसके बाद मूल मन्त्र के एक–एक वर्णों से सप्तम न्यास करना चाहिए। इसे मूलाक्षर न्यास कहते हैं। इसकी विधि इस प्रकार है –

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वर्णन्यास विधि – ब्रह्मरन्ध्र दोनों नेत्रे, दोनों कान, दोनों नासापुट मुख और गुदा पर एक एक वर्णों के आदि में प्रणव तथा अन्त में, 'नमः' लगाकर न्यास करना चाहिए। इस सप्तमन्यास के करने से साधक के **सारे रोग नष्ट हो जाते हैं।**

विमर्श – सप्तमन्यास विधि – ऊँ ऐं नमः ब्रह्मरन्ध्रे, ऊँ ह्रीं नमः दक्षिणनेत्रे,

ऊँ क्लीं नमः वामनेत्रे, ऊँ चां नमः दक्षिणकर्णे, ऊँ मुं नमः वामकर्णे,

ऊँ डां नमः दक्षिण नासापुटे, ऊँ यै नमः वामनासापुटे, ऊँ विं नमः मुखे, ऊँ च्चें नमः मूलाधारे।।

8. अब विलोमक्रम वर्णन्यास नामक अष्टमन्यास कहते हैं– इस न्यास में विलोम क्रम से गुदा से ब्रह्मारध्रान्त पर्यन्त स्थानोम पर विलोम पूर्वक मन्त्र के एक–एक वर्णों के न्यास का विधान है। इस न्यास से साधक के **समस्त दुःख दूर हो जाते है।।**

विमर्श – विलोमवर्णन्यास विधि – ऊँ च्चें नमः, मूलाधारे ऊँ विं नमः, मुखे, ऊँ यैं नमः, वामनासापुटे, ऊँ डां नमः, दक्षिणनासापुटे, ऊँ मुं नमः, वामकर्णे, ऊँ चां नमः, दक्षिणकर्णे, ऊँ क्लीं नमः वामनेत्रे, ऊँ ह्रीं नमः, दक्षिण नेत्रे, ऊँ ऐं नमः ब्रह्यरन्ध्रे।।

9. अब मन्त्रव्याप्तिरुप नामक नवमन्यास कहते हैं – उसकी विधि इस प्रकार है – शिरे से पाद पर्यन्त मूलमन्त्र का न्यास आठ बार करें। इसी प्रकार क्रमशः आगे, दाहिने भाग में एवं पृष्ठभाग में तथा उसी प्रकार वामभाग में मस्तक से पैरों तक तथा पैरों से मस्तक पर्यन्त प्रत्येक भाग में आठ बार मूल मन्त्र का न्यास करना चाहिए। इस नवम न्यास करने से **साधक को देवत्व की प्राप्ति होती है।।**

विमर्श – नवमन्या विधि – 'ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मस्तकाच्चरणान्तं' पूर्णाङ्.गे (अष्टवारम्) 'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे पादाच्छिरोन्तम्' दक्षिणाङ्.गे (अष्टवारम्), 'ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' पृष्ठे (अष्टवारम्) 'ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै वामाङ्.गे (अष्टवारम्), 'ऊँ एं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे मस्तक से चरण तक आवरण (अष्टवारम्), 'ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे चरणात् मस्तकआदि' (अष्टवारम्)।।

10. इसके बाद दशम षडङ्.गन्यास रुपीं करना चाहिए। मूल मन्त्र का जाति के साथ हृदयादि 6 अङ्गों पर न्यास करना चाहिए। इस दशम न्यास को करने से **तीनों लोक** साधक **के वश में हो जाते हैं**।।

विमर्श – दशमन्यास विधि – 'ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे हृदयाय नमः, 'ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डयै विच्चे शिरसे स्वाहा', (शिरसि), 'ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे शिखायै वषट्' (शिखायाम्), 'ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे कवचाय हुम्' (बाहौ), 'ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्' (नेत्रयोंः), 'ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।।

11. इन उक्त दश न्यासों को कर लेने के पश्चात् फलदायी एकादश न्यास इस प्रकार करना चाहिए – 'खडिगनी शूलिनी घोरा' इत्यादि 5 श्लोकों को पढ़कर आद्य कृष्णतर बीज (ऐं) का ध्यान कर सर्वाङ्.ग में न्यास करना चाहिए। 'शूलेन पाहि नो देवि' इत्यादि 4 श्लोकों का उच्चारण कर सूर्य सदृश आभा द्वितीय बीज (ह्रीं) 5 श्लोकों को पढ़कर स्फटिक जैसी आभा वाले तृतीय बीज (क्लीं) का ध्यान कर सर्वाङ्ग में न्यास करना चाहिए।।

विमर्श – अथ ऐका दश न्यास विधि – तृतीयं क्लीं बींज स्फटिककाभं ध्यात्वा सर्वाङ्.गे न्यासामि।।

विद्वान् साधक को इस के बाद मूलमन्त्र के 1, 1, 1, 4, 2 वर्णों से

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तथा समस्त वर्णों से षडङ्गन्यास करना चाहिए।।

विमर्श – मूलमन्त्र के वर्णों से षडङ्गन्यास विधि इस प्रकार है।
यथा – ऐं हृदयाय नमः, ह्रीं शिरसे स्वाहा, क्लीं शिखायै वषट्
ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।।

अक्षरन्यास – शिखा, दोनों नेत्र, दोनों कान, दोनों नासापुट, मुख एवं गुह्य स्थान में मन्त्र के एक–एक अक्षर का न्यास करना चाहिए। फिर समस्त मन्त्र से आठ बार व्यापक न्यास करना चाहिए।।

विमर्श – अक्षर न्यास विधि – ऐं नमः शिखायाम्, ह्रीं नमः दक्षिणनेत्रे, क्लीं नमः, वामनेत्रे चां नमः दक्षिणकर्णे, मुं नमः वामकर्णे, डां नमः दक्षिणनासापुटे, यै नमः वामनासायाम् विं नमः मुखे, नमः गुह्ये, ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै नमः सर्वांगे।।

अब महाकाली महालक्ष्मी तथा महासरस्वती का ध्यान कहते हैं –

जिन्होंने अपने 10 भुजाओं में क्रमशः खड्ग, चक्र, गदा, बाण, धनुष, परिध, त्रिशूल, भुशुण्डी मुण्ड एवं शंख धारण किया है, ऐसी त्रिनेत्रा, सभी अंगो में आभूषणों से विभूषित, नीलमणि जैसी आभा वाली, दशमुख एवं दश पैरों वाली महाकाली का ध्यान करता हूँ। जिनकी स्तुति मधु कैटभ का वध करने के लिये भगवान् विष्णु के सो जाने पर ब्रह्मदेव ने की थी।।

अपनी 18 भुजाओं में क्रमशः अक्षमाला, परशु, गदा, बाण, बज्र, कमल, धनुष, कमण्डलु, दण्ड शक्ति, तलवार, ढाल, शंख, घण्टा, पानपात्र, त्रिशूल, पाश एवं सुदर्शन धारण करने वाली प्रवाल जैसी शरीर की कान्तिवाली कमल पर विराजमान महिषासुरमर्दिनी महालक्ष्मी का ध्यान करता हूँ।।

इस प्रकार ध्यान कर उपर्युक्त नवार्ण मन्त्र का 4 लाख जप

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करना चाहिए। तदन्नतर विधिवत् पूजित अग्नि में खीर का दशांश होम करना चाहिए।।

इसके बाद जयादि शक्तियों वाले पीठ पर तथा त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल एवं चतुर्विंशति दल, तदनन्तर नूपुर वाले यन्त्र पर देवी का पूजन करना चाहिए।।

विमर्श – पीठ पूजा विधि – में वर्णित चण्डी के तीनों स्वरुपों का ध्यान कर मानसोपचारों से उनका पूजन कर अर्घ्य स्थापित करें। फिर पीठ देवताओं का इस प्रकार पूजन करें :–

पीठमध्ये –

ऊँ आधार शक्त्ये नमः ऊँ प्रकृतये नमः ऊँ कूर्माय नमः

ऊँ शेषाय नमः ऊँ पृथिव्यै नमः ऊँ सुधाम्बुधये नमः

ऊँ मणिद्वीपाय नमः ऊँ चिन्तामणि गृहाय नमः ऊँ श्मशानाय नमः

ऊँ पारिजात्याय नमः ऊँ रत्नवेदिकायै नमः कर्णिकायाः मूले

ऊँ मणिपीठाय नमः कर्णिकोपरि

ततश्चतुर्दिक्षु – ऊँ नानामुनिभ्यो नमः

ऊँ नानादेवेभ्यो नमः, ऊँ शवेभ्यो नमः, ऊँ सर्वमुण्डेभ्यों नमः ऊँ शिवाभ्यो नमः,

ऊँ धर्माय नमः, ऊँ ज्ञानाय नमः, ऊँ वैराग्याय नमः, ऊँ ऐश्वर्याय नमः

चतुष्कोणेषु –

ऊँ अधर्माय नमः, ऊँ अज्ञानाय नमः, ऊँ अवैराग्याय नमः, ऊँ अनैश्वर्याय नमः।

मध्ये – ऊँ आनन्दकन्दाय नमः, ऊँ संविन्नालाय नमः

ऊँ सर्वतत्त्वात्मकपद्माय नमः, ऊँ प्रकृतमयपत्रेभ्यों नमः

ऊँ विकार मय केसरेभ्यों नमः, ऊँ पंचदश बीजाद्य कर्णिकायै नमः

ऊँ अं द्वादश कलात्मने सूर्यमण्डल नमः, ऊँ वं षोडश कलात्मने सोम मण्डलाय नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ऊँ सं दश कलात्मने वहिन मण्डलाय नमः, ऊँ सं सत्त्वाय नमः
ऊँ रं रजसे नमः, ऊँ तं तमसे नमः
ऊँ आं आत्मने नमः, ऊँ अं अन्तरात्मने नमः
ऊँ पं परमात्मने नमः, ऊँ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः।

इसके बाद पूर्वादि आठ दिशाओं में तथा मध्य में जयादि शक्तियो की इस प्रकार पूजा करनी चाहिए –

ऊँ जयायै नमः पूर्वे, ऊँ विजयायै नमः आग्नेय
ऊँ अजितायै नमः दक्षिणे, ऊँ अपराजितायै नमः नैर्ऋत्ये
ऊँ नित्यायै नमः पश्चिमे, ऊँ विलासिन्यै नमः, वायव्ये
ऊँ दोग्ध्यै नमः उत्तरे, ऊँ अधोरायै नमः ऐशान्ये
ऊँ मंगलायै नमः मध्ये।

इसके बाद 'ह्रीं चण्डिका योगपीठत्मने नमः' इस पीठ मन्त्र से आसन देकर मूल मन्त्र से मूर्ति का ध्यान कर आवाहनादि उपचारों से यंत्र पूष्पांजलि सर्मपण कर पर्यन्त चण्डी की विधिवत् पूजा कर उनकी आज्ञा ले व आचरण पूजा करनी चाहिए।

आवरण पूजा का विधान –

त्रिकोण के मध्य बिन्दु में देवी का ध्यान कर मूलमन्त्र से उनकी पूजा करनी चाहिए। फिर त्रिकोण के पूर्व वाले कोण में सरस्वती के साथ ब्रह्मा का, नैर्ऋत्य वाले कोण में महालक्ष्मी के साथ विष्णु का तथा वायव्य कोण में उमा के साथ शिव का पूजन करना चाहिए। उत्तर एवं दक्षिण दिशा में क्रमशः सिंह एवं महिष का पूजन करना चाहिए।

षट्कोण में पूर्वादि 6 कोणों में क्रमशः नन्दजा, रक्तदन्तिका, शाकाम्भरी, दुर्गा, भीमा एवं भ्रामरी का पूजन करना चाहिए। नन्दजा आदि शक्तियों के प्रारम्भ में प्रणव लगाकर उनके नामों के आदि अक्षर में अनुस्वार लगाकर अन्त में नमः लगाकर निष्पन्न मन्त्रों से पूजन करना चाहिए।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

फिर अष्टदल में ब्रह्मणी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, नारसिंही, ऐन्द्री तथा चामुण्डा का पूजन करना चाहिए। तदनन्तर चतुर्विंशति दलों में, विष्णुमाया चेतना, बुद्धि, निद्रा, क्षुधा, छाया, शक्ति, तृष्णा, क्षान्ति जाति, लज्जा, शान्ति, श्रद्धा कान्ति, लक्ष्मी, धृति, वृत्ति, श्रुति, स्मृति, तुष्टि, पुष्टि, दया, माता एवं भ्रान्ति का पूजन करना चाहिए।

नूपुर के बारह कोणों में गणेश, क्षेत्रपाल, बटुक और योगिनियों का, तदनन्तर पूर्वादि दिशाओं में इन्द्रादि दिक्पालों का भी पूजन करना चाहिए। इस प्रकार मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर साधक सौभाग्यशाली बन जाता है।

विमर्श – आवरण पूजा विधि – त्रिकोण के मध्य बिन्दु पर देवी का ध्यान कर मूल मन्त्र से पूजन करने के बाद पुष्पांजलि लेकर **'ॐ संविन्मये पेर देवि परामृतरसप्रिये अनुज्ञां चण्डि के देहि परिवारार्चनाय में'** इस मन्त्र से पुष्पांजलि चढ़ाकर देवी की आज्ञा ले इस प्रकार आवरण पूजा करनी चाहिए। आवरण पूजा में सर्वप्रथम गणेश षंडग्ग का विधान है। अतः त्रिकोण के बाहर आग्नेयादि कोणों में मध्य में तथा चतुर्दिक्षु इस प्रकार प्रथमावरण में षडंग् पूजा करनी चाहिए –

ऐं ह्रदयाय नमः, आग्रेये, ह्रीं शिरसे स्वाहा, ऐशान्ये,
क्लीं शिखायै वषट्, नैऋत्ये, चामुण्डायै कवचाय हुम्, वायव्ये,
विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्, मध्ये, ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट् चतुर्दिक्षु

इसके बाद पुष्पांजलि लेकर 'अभीष्टसिद्धि' मे देहि शरणागतवत्सले भक्त्या समर्पये तुभ्यम प्रथमावरणार्चनम – इस मन्त्र से पुष्पाजंलि देनी चाहिए।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

द्वितीयावरण में त्रिकोण के पूर्वादि कोणों में सरस्वती ब्रह्मादिक की पूजा निम्न रीति से करनी चाहिए। यथा– ऊँ सरस्वतीब्रह्माभ्यां नमः पूर्वकोणे,

ऊँ लक्ष्मीविष्णुभ्यां नमः, नैऋत्यकोणे, ऊँ गौरीरुद्राभ्यां नमः, वायव्यकोणे,

ऊँ सिं सिंहाय नमः, उत्तरे, ऊँ मं महिषाय नमः दक्षिणे,

फिर पुष्पांजलि पर्यान्त मन्त्र पढ़कर द्वितीय पुष्पांजलि समर्पित करनी चाहिए।

इसके बाद तृतीयावरण में षट्कोणों में नन्दजा आदि 6 शक्तियोम की निम्नलिखित मन्त्रों से पूजा करनी चाहिए। यथा– ऊँ नं नन्दजायै नमः पूर्व, ऊँ रं रक्तदन्तिकायै नमः आग्नेयै, ऊँ शां शाकम्भर्यै नमः दक्षिणे, ऊँ दुं दुर्गायै नमः, नैऋत्ये, ऊँ भीं भीमायै नमः पश्चिमे, ऊँ भ्रां भ्रामर्णै नमः वायव्ये।

तदनन्तर पुष्पांजलि दे कर मूल मन्त्र के साथ 'अभीष्टसिद्धि. तृतीयावरणार्चनम' पर्यन्त मन्त्र बोल कर तृतीय पुष्पांजलि समर्पित करनी चाहिए।

चतुर्थ आवरण में अष्टल में पूर्वादि दल के क्रम से ब्रह्माणी आदि 8 मातृकाओं की निम्न नाम मन्त्रों से पूजा करनी चाहिए। यथा –

ऊँ ब्रं ब्रह्मण्यै नमः पूर्वोदले, ऊँ मां माहेश्वर्यै नमः आग्नेयदले ऊँ क्रीं कौमार्यै नमः दक्षिणदले, ऊँ वैं वैष्णव्यै नमः नैर्ऋत्यदले, ऊँ वां बाराह्यै नमः पश्चिमदले, ऊँ नां नारसिंहयै नमः वायव्यदले, ऊँ ऐं ऐन्द्रयै नमः उत्तदले, ऊँ चां चामुण्डायै नमः, ऐशान्यदल इसके पश्चात् पुष्पांजलि लेकर मूल मन्त्र के साथ 'अभीष्टसिद्धि. चतुर्थवरणार्चनम्' पर्यन्त मन्त्र पढ़कर चतुर्थ पुष्पांजलि समर्पित करनी चाहिए।

पंचम आवरण में चतुर्विंशति दल में पूर्वादि क्रम से विष्णु आदि 24 शक्तियों की इस प्रकार पूजा करनी चाहिए। यथा –

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ॐ विं विष्णुमायायै नमः, ॐ चे चेतनायै नमः, ॐ बुं बुद्धयै नमः,
ॐ निं निद्रायै नमः, ॐ क्षुं क्षुधायै नमः, ॐ छां छायायै नमः,
ॐ शं शक्त्यै नमः ॐ तृं तृष्णायै नमः, ॐ क्षं क्षान्त्यै नमः,
ॐ जां जात्यै नमः, ॐ लं लज्जायै नमः, ॐ शां शान्त्यै नमः,
ॐ श्रं श्रद्धायै नमः, ॐ वृं वृत्यै नमः, ॐ लं लक्ष्म्यै नमः
ॐ धृं धुत्यै नमः, ॐ वृं वृत्यै नमः, ॐ श्रुं क्षुत्यै नमः
ॐ स्मृं स्मृत्यै नमः, ॐ तुं तुष्टयै नमः, ॐ पु पुष्टयै नमः,
ॐ दं दयायै नमः, ॐ मां मात्रे नमः, ॐ भ्रां भ्रानत्यै नमः

इसके बाद पुष्पांजलि लेकर मूल मन्त्र के साथ 'अभीष्टसिद्धिं ..षष्ठावरणार्चनम् पर्यन्त मन्त्र पढ़कर षष्ठ पुष्पांजलि समर्पित करनी चाहिए।

षष्ठ आवरण में नूपुर के बाहर आग्नेयादि कोणों में निम्न मन्त्रों से गणेश आदि का पूजन करना चाहिए। यथा –

गं गणपतये नमः, आग्नेये, क्षं क्षेत्रपाल नमः, नैऋत्ये,
बं बटुकाय नमः, वायव्ये, यों योगिनीभ्यों नमः, ऐशान्ये,

इसके बाद पुष्पांजलि लेकर मूल मन्त्र के साथ 'अभीष्टसिद्धि. .. षष्ठवरणार्चनम्' पर्यन्त मन्त्र पढ़कर पुष्पांजलि समर्पित करनी चाहिए।

सप्तम आवरण में नूपुर के पूर्वादि अपनी अपनी दिशाओं में इन्द्रादि दिक्पालों का निम्नलिखित मन्त्रों से पूजन करना चाहिए। यथा –

ॐ लं इन्द्राय नमः पूर्वे, ॐ रं आग्नेये नमः आग्नेये,
ॐ मं यमाय नमः दक्षिणे, ॐ क्षं निर्ऋतये नमः नैर्ऋत्ये,
ॐ वं वरुणाय नमः, पश्चिमे, ॐ यं वायवे नमः, वायव्ये,
ॐ सं सोमाय नमः उत्तरे, ॐहं ईशानाय नमः ऐशान्ये,
ॐ अं ब्रह्मणे नमः पूर्वशानयार्मध्ये, ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः नैर्ऋत्यपश्चिमयोर्मध्ये

तदनन्तर पुष्पांजलि लेकर मूल मन्त्र के साथ 'अभीष्टसिद्धिं -

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सप्तमावरणार्चनम' पर्यन्त मन्त्र बोल कर सत्पम् पुष्पांजलि चढ़ानी चाहिए।

अष्टम आवरण में नूपुर के बाहर पूर्वादि दिशाओं में दिक्पालो के वज्रादि आयुधो की पूजा करनी चाहिए। यथा वं वज्राय नमः,
ऊँ शं शक्तये नमः, ऊँ दं दण्डाय नमः, ऊँ खं खड्गाय नमः,
ऊँ पां पाशय नमः, ऊँ अं अंकुशाय नमः, ऊँ गं गदायै नमः
ऊँ शूं शूलाय नमः, ऊँ चं चक्राय नमः, ऊँ पं पद्माय नमः

फिर पुष्पांजलि लेकर मूल मन्त्र के साथ 'अभीष्टसिद्धिं ... अष्टमावरणार्चनम्' मन्त्र से अष्टम पुष्पांजलि समर्पित करनी चाहिए। इस प्रकार आवरण पूजा के बाद महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती देवताओं की धूप दीपादि उपचारों से विधिवत् पूजा करनी चाहिए।

साधक मूलमन्त्र से संपुटित मार्कण्डेय पुराणोक्त चण्डी पाठ को करने से तथा नवार्ण मन्त्र का जप करने से अभीष्ट सिद्धि प्राप्त करना है।

आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से अष्टमी पर्यन्त मूल मन्त्र का एक लाख जप तथा उसका दशांश होम करना चाहिए।

प्रतिदिन देवी का पूजन तथा सप्तशती का पाठ और साधक को अन्त में ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए। ऐसा करने से वह शीघ्र ही मनोवांछित फल प्राप्त करता है।

अब सप्तशती के तीनों चरित्रों का विनियोग कहते है – सप्तशती के प्रथम चरित्र के ब्रह्मा ऋषि है, गायत्री छन्द तथा महाकाली देवता हैं। वाग्बीज (ऐं) अग्नि तत्त्व तथा धर्मार्थ इसका विनियोग किया जाता है।

मध्यम चरित्र के विष्णु ऋषि, उष्णिक् छन्द तथा महालक्ष्मी देवता कही गई है। दुर्गा (ह्रीं) बीज तथा वायुतत्त्व है तथा धन प्राप्ति हेतु इसका विनियोग होता है।

उत्तर चरित्र कें रुद्र ऋषि कहे गये हैं, त्रिष्टुप छन्द और

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महासरस्वती देवता है। काम (क्लीं) बीज तथा सूर्य तत्वं हैं काम प्राप्ति हेतु इसका विनियोग होता है।

विमर्श – विनियोग विधि –

1. अस्य श्री प्रथम चरित्रस्य ब्रह्मात्रऋषिः गायत्रीछन्दः महाकालीदेवता ऐं बीज अग्स्तित्वं धमार्थे जपे विनियोगः
2. अस्य श्रीमध्यम चरित्रस्य विष्णु ऋषि उष्णिक छन्दः महालक्ष्मी देवता ह्रीं बीजम् वायुस्तत्त्वं धनप्राप्त्यै जपे विनियोगः।
3. अस्य श्रीउत्तरचरित्रस्य रुद्रऋषि स्त्रिष्टृप्छन्दः महासरस्वती देवता क्लीं बींज सूर्यस्तत्त्वम् कामप्रदायै जपे विनियोगः।

अब ऋष्यादिन्यास तथा सप्तशती के पाठ का विधान कहते हैं –

इस प्रकार सप्तशती के ऋषि देवता तथा छन्दादि का विनियोग कर पूर्वोक्त मार्ग से देवी का ध्यान कर, उसके अर्थ का स्मरण करते हुये, पद एवं अक्षरों का स्पष्टरुप में उच्चारण करते हुये, सप्तशतीस्तवन का पाठ करना चाहिए। पाठ की समाप्ति में महालक्ष्मी का ध्यान षडंग्न्यास तथा मूल मन्त्र का 108 बार जप करना चाहिए। फिर देवी को सारा जप निवेदन कर देना चाहिए।

इस विधि से जो व्यक्ति सप्तशती का पाठ करता है वह कभी भी दुःख प्राप्त नहीं करता है। चण्डिका की उपासना करने वाला व्यक्ति धन, धान्य, यश, पुत्र–पौत्र और आरोग्य सहित बहुत वर्षों तक जीवित रहता है।

मनुष्यों के कल्याण के लिये शतचण्डी का विधान कहता हूँ –

शास्त्रोक्त विधान से शतचण्डी का अनुष्ठान करने से राजा के द्वारा उपद्रव दुर्भिक्ष, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, शत्रु का आक्रमण तथा निरन्तर होने वाला विनाश ये सारे उपद्रव नष्ट हो जाते हैं। रोग एवं शत्रुओं का विनाश तो हो जाता है धन और

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुत्रादि की अभिवृद्धि भी होती है।

देवी अनुष्ठान में सभी ब्राम्हणों का नांदी श्राद्ध कर्म कराना अनिवार्य है।

अब शतचण्डी अनुष्ठान का प्रयोग कहते हैं –

शास्त्रोक्त विधि के अनुसार शिवालय अथवा किसी देवी मन्दिर के पास ध्वज एवं तोरण, वन्दनवार से सजे हुए सुन्दर मण्डप, द्वार एवं मध्य में वेदी का और पश्चिम दिशा में अथवा मध्य में कुण्ड का निर्माण करें।

फिर स्नानादि नित्यक्रिया कर (मण्डप में पधार कर 'अमुक कामोऽहं शतचण्डी विधानमहं करिष्ये' इस प्रकार का संकल्प कर गणेश पूजनादि मातृस्थापन, नान्दीश्राद्ध, स्वस्ति वाचनादि कर्म कर) जितेन्द्रिय, सदाचारी, कुलीन, सत्यवादी, चण्डीपाठ में व्युत्पन्न लज्जालु, दयावान् एवं शीलवान् दश ब्रह्माणों का मधुपर्क विधान से वस्त्र, स्वर्ण और जप के लिये आसन और माला दे कर वरण करें और उन्हें भोजन कराए।

वे ब्राह्मण भी यजमान द्वारा प्रदत्त आसन पर बैठकर समाहित चित्त से देवी को स्मरण कर, सप्तशती के मूलमन्त्र से वेदी पर कलश स्थापित कर, उस पर देवों का आवाहन कर, षोडशोपचार से पूजन करें, उसी कलश के आगे बैठकर पूजन करें। उन ब्राह्मणों को हविष्यान्न का भोजन कराते हुए और भूमि में ब्रह्मचर्यपूर्वक शयन करते हुए मन्त्रों के अर्थों में मन लागाकर दस–दस की संख्या में मार्कण्डेय पुराणोक्त सप्तशती का पाठ करना चाहिए। तथा प्रत्येक दस–दस की संख्या में पृथक् पृथक् नवार्ण मन्त्र का जप करें तथा अस्पृश्य का स्पर्श न करना आदि समस्त वर्जित नियमों का भी पालन करें।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अब सर्वतोभद्रमण्डल पर घटस्थापन, पूजन एवं हवन का विधान कहते हैं –

वेदी पर बनाये गये परम रमणीय सर्वतोभद्रमण्डल पर घटस्थापन कर भगवती का विधिवत् आवाहन एवं पूजन करना चाहिए। उसके आगे उपलब्ध विविध उपचारों से कन्या एवं ब्राह्मणों का विधिवत् पूजन करना चाहिए। तदनन्तर पूर्वोक्त आवरण पूजा करनी चाहिए।

इस विधि से 4 दिन तक अनुष्ठान कर 5 वें दिन होम करना चाहिए। सप्तशती 10 आवृत्तियों से प्रत्येक श्लोक से मधुरत्रय (घृत, शक्कर, मधु) सहित खीर, अंगूर, केला, बिजौरा, गन्ने के टुकड़े, नारियल, तिल, आम और अन्य मधुर वस्तुओं से होम करना चाहिए।

इसी प्रकार विधिवत् स्थापित अग्नि में नवार्ण मन्त्र से 10 हजार आहुतियाँ भी देनी चाहिए। फिर आवरण देवताओं का उनके नाम मन्त्रों के आरम्भ में प्रणव तथा अन्त में स्वाहा लगाकर एक–एक आहुति देनी चाहिए। फिर पूर्णाहुति कर विधिवत् देवताओं और अग्नि का विसर्जन करना चाहिए। कुम्भस्थ देवी का पूजन बलिदान प्रदान कर प्रत्येक ब्राह्मण को यथाशक्ति दक्षिणा देना चाहिए।

अब अभिषेक विधान एवं ब्राह्मण भोजन का प्रकार कहते हैं –

होम के अनन्तर समस्त वरण किए गए ब्राह्मणों को चाहिए कि कलश के जल से यजमान का अभिषेक कर आशीर्वाद प्रदान करें। यजमान भी प्रत्येक ब्राह्मणो को दक्षिणा देवें और विविध भक्ष्य भोज्यादि पदार्थों से एकादश की संख्या में ब्राह्मणों को भोजन करावें। उन्हें भी यथाशक्ति दक्षिणा देवें और उनका आशीर्वाद भी ग्रहण करें।

ऐसा करने से संसार वश में हो जाता है। सारे उपद्रव नष्ट हो

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जाते हैं तथा राज्य, धन, यश, पुत्र की प्राप्ति एवं सारे मनोरथों की पूर्ति भी हो जाती है।

अब सहस्त्रचण्डी का विधान कहते हैं –

सहस्त्रचण्डी विधान में शतचण्डी विधान का दस गुना कार्य (पाठ, जप, होम, दक्षिणा, कन्या पूजन, ब्राह्मण वरण और ब्राह्मण भोजन) करना चाहिए। इस अनुष्ठान में विद्वान् और सदाचारी 100 ब्राह्मणों का वरण करना चाहिए। **सभी ब्राम्हणों का नांदी श्राद्ध कर्म कराना चाहिए।**

उनमें से प्रत्येक को 10–10 चण्डीपाठ तथा 10–10 हजार नवार्ण मन्त्र का जप करना चाहिए। इसी प्रकार शुभ लक्षण वाली सौ कन्याओं का मन्त्रों से पूजन करना चाहिए। इस प्रकार 10 दिन पर्यन्त कार्य करने के बाद विधिवत् होम करना चाहिए।

सप्तशती की 100 आवृत्तियों से, एक–एक श्लोक द्वारा तथा एक लाख नवार्ण मन्त्रों द्वारा विधिपूर्वक द्रव्यों से हवन करना चाहिए। फिर ब्राम्हणों को दक्षिणा देने के बाद लक्षण युक्त एक हजार सज्जन और देवी की आराधना में तत्पर ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए।

इस प्रकार विधिवत् सहस्त्रचण्डी करने पर उपासक की सारी कामनायें पूरी होती हैं तथा समस्त दुःख और पाप नष्ट हो जाते हैं। सहस्त्रचण्डी के पाठ से महामारी, दुर्भिक्ष, रोग तथा सभी प्रकार के दुर्व्यसनादि नष्ट हो जाते हैं। चण्डी का विधान। नवरात्र के सातवें दिन माँ कालरात्रि की अर्चना होती है। इनकी पूजा से ग्रह, नक्षत्र, भूत–प्रेत, पिशाच, यक्ष गन्धर्व, राक्षस, सभी प्रकार के भय से मुक्ति मिलती है। यह तंत्र–मन्त्र की आद्या शक्ति है।

इस जगत में धर्म की रक्षा तथा दैत्यों के विनाश के लिए ऋषि–मुनियों ने जब–जब ईश्वर से प्रार्थना की तब–तब उस ईश्वर ने किसी शक्ति को धरा के कल्याण के लिए दैवीय शक्ति

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

को उत्पन्न किया। ऐसे ही परम शक्ति माँ आदि शक्ति दुर्गा भवानी की उत्पत्ति ईश्वरीय इच्छा से हुई जिसमें अनेक देवी देवताओं की शक्ति समाहित है। **माँ श्री दुर्गा की सातवी मूर्ति देवी माँ कालरात्रि की उत्पत्ति नवरात्रि** के सातवें दिन होती है। जो कि देवता सहित इस संसार के मानव का कल्याण करती है। क्योंकि पौराणिक कथानक इस बात का गवाह है कि इस धरा सहित देव समूह को जब आदि काल में वरदान पाकर महिषासुर, शुम्भ, निशुम्भ जैसे महाभयानक राक्षस तरह–तरह से अत्याचारों से पीड़ित करते है तो धर्म इस धरा से गायब होने लगा। धरती मे रहने वाले मानव के आचार–विचार भ्रष्ट हो गए सर्वत्र राक्षसी प्रवृतियों का बोल बाला होने लगा। यज्ञ, दान, परोपकार, धर्म, दया, क्षमा जैसे यशस्वी गुणो का कहीं ठिकाना न रहा। देव पूजन, माता–पिता, गुरू, ब्राह्मणों को भी तिरष्कृत किया जाने लगा। ऐसे महाभयानक अंधकार में सतत् डूबता हुआ समाज तथा दैत्यों के अत्याचार से बचाने के लिए कालरात्रि की प्रतिमा संसार के सामने प्रकट होती है। जो सर्वविधि कल्याण करने वाली और दैत्य समूहों का संहार करके इस धरा के प्राणियों की रक्षा करती हैं तथा देव समुदाय को अभय प्रदान करती है। काली माँ का नाम उनके शक्ति के कारण पड़ा है।

जो सबको मारने वाले काल की भी रात्रि है अर्थात् काल को भी समाप्त कर देती है उनके सम्मुख वह भी नहीं ठहर सकता है। काल की विनाशिका होने से उनका कालरात्रि नाम पड़ा। काल का अर्थ समय से है और समय को भी काल के रूप में जाना जाता है। जिसका अर्थ मृत्यु से है। काल जो सभी को एक दिन मार देता है। उससे भी महाभयानक शक्ति का स्त्रोत माँ काली है। जिनके सम्मुख दैत्य क्या? साक्षात् काल! भी नहीं बच सकता है। वह माँ काली इस संसार की रक्षा करती है। और अपने श्रद्धालु भक्तों को भूत, प्रेत, राक्षस, बाधा, डर, दुःख, दरिद्रता,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रोग, पीड़ाओं से बचाकर भक्त को अभय देने वाली है। जिससे भक्त को सुख समृद्धि प्राप्त होती है। दुर्गा के इस सातवें रूप को कालरात्रि के नाम से जाना जाता है जो इस संसार में आदि काल से सुप्रसिद्ध है।

इन माँ की मूर्ति यद्यपि बड़ी ही विकराल प्रतीत होती है, जो परम तेज से युक्त है जो भक्तों के हितार्थ अति भयानक कालरात्रि के रूप में प्रकट होती है। माँ की चार भुजाएं है जिसमें दाहिने हाथ में ऊपर वाला हाथ वर मुद्रा धारण किए हुए जो संसार में भक्त लोगों को उनकी के अनुसार वरदान देता है तथा नीचे वाला अभय मुद्रा धारण किए हुए लोगों निर्भय बना रहा है। बांये हाथ में ऊपर वाले हाथ में कटार और नीचे वाले में लोहे का काटा नुमा अस्त्र धारण किए हैं। इनके बाल घने काले और बिखरे हुए रौद्र रूप में दिखाई देते हैं। और तीन आँखें हैं, जो अत्यंत भयंकर व अतिउग्र और ब्रह्माण्ड की तरह ही गोलाकार है जिसमें बादल की बिजली की तरह ही चमक हैं, यह घने काले अंधकार की तरह प्रतिभासित हो रही है। इनकी नासिकाओं सांस से अग्नि की अति भयंकर ज्वालाएँ निकल रही हैं। कालिरात्रि के गले में दिव्य तेज की माला शोभित हो रही है और यह गधे की सवारी पर बैठी है। इनकी अर्चना से सभी प्रकार के कष्ट रोग दूर होते हैं। जीवन में सुख शान्ति की लहर होती है।

माँ कालरात्रि की पूजा घर पर नहीं करनी चाहिए। जिस ब्राम्हण से दैवीय पूजा कराई जाती हैं उसका नांदि श्राद्ध कर्म अवश्य कराना चाहिए।

नांदि श्राद्धकर्म का अर्थ ब्राह्मण को सुतक–पातक से मुक्ति दिलाना इस कर्म में ब्राह्मण और यजमान दोनों को अतृप्त आत्मा और पितृों के निमित श्राद्धकर्म करके पूजा करना होती है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

माता कालरात्रि के महात्म्य को दुर्गा सप्तशती में कई स्थानों पर वर्णित किया है। भक्तों को अभय देने व विभिन्न प्रकार के भयों से मुक्ति देने वाली कालरात्रि का बड़ा ही महात्म्य है। अतः श्रद्धालुओं को वैदिक रीति द्वारा अनुष्ठान व व्रत का पालन करते हुए माँ कालरात्रि की पूजा बड़े ही निष्ठा से करना चाहिए।

नवदुर्गा के आसान सिद्ध मन्त्र (नवरात्रि विशेष) –

दुर्गा सप्तशती में कुछ ऐसे सिद्ध मन्त्र हैं, जिनके द्वारा हम अपनी मनोकाना की पूर्ति कर सकते हैं।

कैसे करें जाप :– नवरात्रि के प्रतिपदा के दिन घटस्थापना के बाद संकल्प लेकर प्रातः स्नान कर दुर्गा जी की मूर्ति या चित्र की पंचोपचार या दशोपचार या षोड्षोपचार गंध, पुष्प, धूप दीपक, नैवेद्य निवेदित कर पूजा करें। मुख पूर्व या उत्तर दिशा की ओर रखें। शुद्ध पवित्र आसन ग्रहण कर रुद्राक्ष, चंदन की माला से मन्त्र का जप करें एक माला से पाँच माला तक पूर्ण कर अपना मनोरथ कहें। पूरी नवरात्रि जाप करने से मनोवांछित कामना अवश्य पूरी होती है।

उपरोक्त सारे मन्त्र विधिनुसार करने पर मनुष्य अपने पापों और कष्टों को दूर करके माता के आशीर्वाद का पात्र बन जाता है। नवरात्रि में संयमपूर्वक की गई प्रार्थना और भक्ति माता स्वीकार करती हैं और साथ ही अपने भक्तों के कष्टों का निवारण करते हुए उन्हें मोक्ष प्राप्ति का मार्ग दिखाती हैं।

सर्वकल्याण के लिए –

1. **सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।**
   शरण्येत्र्यंबके गौरी नारायणि नमोस्तुते।।

आरोग्य एवं सौभाग्य प्राप्ति के लिए –

2. **देहि सौभाग्यं आरोग्यं देहि में परमं सुखम्।**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषोजहि।।

बाधा मुक्ति एवं धन–पुत्रादि प्राप्ति के लिए –

3. सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो धन धान्य सुतान्वितः।
मनुष्यों मत्प्रसादेन भविष्यति न संशय।।

सुलक्षणा पत्नी प्राप्ति के लिए –

4. पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्ग संसार सागरस्य कुलोद्भवाम्।।

दरिद्रता नाश के लिए –

5. दुर्गेस्मृता हरसि भीतिम शेष जन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्य दुःख भयहारिणी कात्वदन्या सर्वोंपकार करणाय सदार्द्रचित्ता।।

शत्रु नाश के लिए –

6. ऊँ ह्रीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वाम् कीलय–कीलय बुद्धि विनाशाय ह्रीं ऊँ स्वाहा।।

सर्वविघ्न नाशक मंत्र –

7. सर्वबाधा प्रशमनं त्रेलोक्यस्याखिलेशवरि।
एवमेय त्वया कार्य मस्मद्वैरि विनाशनम्।।

ऐश्वर्य प्राप्ति एवं भय मुक्ति मन्त्र

8. ऐश्वर्य यत्प्रसादेन सौभाग्य–आरोग्य सम्पदः।
शत्रु हानि परो मोक्षः स्तुयसे सान किं जनै।।

विपत्तिनाशक मन्त्र

9. शरणागतदिनार्त परित्राण पारायणे।
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते।।

स्वप्न में कार्य–सिद्धि के लिए

10. दुर्गे देवी नमस्तुभ्यं सर्वकामार्थसाधिके।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मम सिद्धिमसिद्धिं वा स्वप्ने सर्व प्रदर्शय।।

नवग्रहों की पीड़ा दूर करें दुर्गा –

शक्ति एवं भक्ति के साथ सांसारिक सुखों को देने के लिए वर्तमान समय में यदि कोई देवता है तो वह एक मात्र देवी दुर्गा ही है। सामान्यतया समस्त देवी–देवता ही पूजा का अच्छा परिणाम देते हैं। किन्तु कलियुग में दुर्गा एवं गणेश जी ही पूर्ण एवं तत्काल फल देने वाले हैं। कहा भी है – **"कलौ चण्डी विनायकौ।"**

नवग्रहों की पीड़ा एवं दैवी आपदाओं से मुक्ति का एक मात्र साधन देवी की आराधना ही है। वर्तमान समय में कालसर्प एवं मांगलिक दोष के अलावा कुछ दोष ऐसे भी हैं, जिनकी शान्ति संभवतया अन्य किसी साधना अथवा पूजा से कठिन है। जब कुण्डली में नीच शनि, निर्बल गुरु, एवं मंगल से किसी तरह का संयोग बनता है। तब व्यवसाय एवं नौकरी दोनों ही प्रभावित होते हैं। इसी प्रकार जब कुण्डली में राहु एवं चन्द्रमा अपोक्लिम अथवा फड़कर भाव में लग्नेश अथवा नवमेश के साथ अस्तगत अथवा निर्बल होते हैं, तब वक्रदाय योग होता है। विवाह का न होना अथवा विवाह होकर भी टूट जाना अथवा तलाक आदि की स्थिति उत्पन्न होती है।

बुध अथवा सूर्य के साथ गुरु का छठे, आठवें अथवा बारहवें भाव में होकर उच्चगत मंगल से दृष्ट होना रुदाग्र योग बनाता है। जिससे बच्चे पैदा न होना अथवा बच्चा होकर मर जाना आदि पीड़ा होती है। ऐसी स्थिति में दुर्गा तंत्र में आए वर्णन के अनुसार देवी का अनुष्ठान शत–प्रतिशत परिणाम देने वाला होता है। यद्यपि इसका वर्णन शक्ति संगम तंत्र, देवी भागवत, तंत्र रहस्य तथा दक्षिण भारत का प्रधान ग्रन्थ "वलयक्कम" में भी बहुत अच्छी तरह से किया गया है।

जैसे वृषभ राशि वालों को यदि कालसर्प की पीड़ा हो तो

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कंचनलता के पांच पत्ते लेकर उन पर लाल चंदन का लेप करें। अपने सिर के एक बाल को धीरे से उखाड़कर एक पत्ते पर रख कर उसे शेष पाँचों पत्तों से उलटा कर ढँक दें।

पाँच सेर गाय का दूध लेकर उसमे चावल का खीर, बनाएँ। खीर को पाँच भाग में बाँट केले के पत्ते पर रख लें। शेष बचे खीर को अलग बर्तन में रख लें। ध्यान रहे इस कार्य में या तो मात्र पत्तों का प्रयोग करें अथवा ताँबे का बर्तन प्रयोग में लावें। अन्य कोई धातु प्रयुक्त नहीं हो सकती है। तथा उन पर दुर्गा देवी के नवार्ण मन्त्र का 133 बार पाठ करते हुए 133 बार लौंग के फूलयुक्त, दूध की हल्की पतली धार के साथ अभिषेक करें। 27 वे दिन परिणाम सामने होगा।

तांत्रिक ग्रन्थों में यह बताया गया है कि नवदुर्गा नवग्रहों के लिए ही प्रवर्तित हुई हैं –

अर्थात नौ रत्न, नौ ग्रहों की पीड़ा से मुक्ति, नौ निधि की प्राप्ति, नौ दुर्गा के अनुष्ठान से सर्वथा सम्भव है। भगवान राम ने भी इसके प्रभाव से प्रभावित होकर नवधा भक्ति का ही उपदेश दिया है।

तांत्रिक ग्रन्थों में ग्रह व्यवस्था का क्रम निम्न प्रकार बताया गया है –

सूर्यकृत पीड़ा की शान्ति के लिए कात्यायनी, चन्द्रमा के लिए चन्द्रघण्टा, मंगल के लिए शैलपुत्री, बुध के लिए स्कन्दमाता, गुरु के लिए ब्रह्मचारिणी, शुक्र के लिए महागौरी, शनि के लिए कालरात्रि, राहु के लिए कुष्माण्डा तथा केतु के लिए सिद्धिदात्री अर्थात् जिस ग्रह की पीड़ा, कष्ट हो उससे सम्बन्धित दुर्गा के रूप की पूजा विधि–विधान से करने पर अवश्य ही शान्ति प्राप्त होती है। विक्रानता, आयुष्मा, अतिलोम, घृष्णा, मांदिगोठ, विषेंधरी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आदि भयंकर कुयोगों की शान्ति यदि संभव है तो एकमात्र दुर्गा की पूजा ही समर्थ है। जो वास्तव में आदि काल से ही मनुष्य, देवी–देवता अथवा किसी भी प्राणी पर यदि कोई संकट पड़ा है तो उसके लिए सभी ने दुर्गा माता की ही आराधना की है। और माता दुर्गा ने ही सबका उद्धार किया है। इसमें कोई संदेह नहीं कि जादू टोना, रोग, भय, पिशाच, बेताल तथा डाकिनी आदि से मुक्ति प्राप्ति दुर्गा की तांत्रिक पूजा–पद्धति सर्वथा ही सफल है।

दुर्गासप्तशती में 'नमस्तस्यै' पद की पुरावृत्ति का रहस्य –

श्री दुर्गासप्तशती के उत्तरचरित्र में देवताओं द्वारा भगवती विष्णुमाया की अत्यंत सुन्दर स्तुति की गई है।

नमो देव्यै... से प्रारम्भ इस स्तुति में आगे प्रत्येक स्तुति में देवी के विभिन्न भाव–रूपों की जैसा कि चेतना, बुद्धि, निद्रा, क्षुधा, स्मृति, भ्रान्ति, श्रद्धा, लज्जा, शक्ति आदि की स्तुति की गई है। प्रत्येक स्तुति के अंत में 'नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः 'शब्दों' से देवी को प्रणाम किया गया है।

इस स्तुति का तन्मयतापूर्वक पाठ करने से एक विशिष्ट सुखद अनुभूति होती है। प्रत्येक बार इस बारम्बार प्रणाम से भक्त साधक के अंतर में एक विशेष भाव का संचार होता है, जिसे शब्दों में व्यक्त करना सम्भव नहीं है। इस स्तुति का पाठ स्वतंत्र रूप से तंत्रोक्त देवीसूक्त के रूप में भी प्रचलित है।

इसकी रचना ही अपने आप में इतनी सौंदर्य है कि यदि कोई इसका पाठ आध्यात्मिक या भक्तिभाव समझे बिना भी करे तो उसे एक विशेष आनन्द की अनुभूति होती है।

यह कहना अधिक ठीक होगा कि जगदम्बा ने ही अपनी प्रिय संतानों के लिए स्वयं ये रहस्य खोल दिये हैं। इस स्तुति के मंत्रों में तीन बार 'नमस्तस्यै' शब्दों का प्रयोग हुआ है। इसके अतिरिक्त

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एक पद 'नमो नमः' भी प्रयुक्त हुआ है।

प्रथम नमस्तस्यै पद द्वारा माँ के **आधिभौतिक रूप का** दर्शन करके हि प्रथम प्रणाम विहित हुआ है। द्वितीय नमस्तस्यै यह माँ के **सूक्ष्मस्वरूप को लक्ष्य** करके बोला हुआ है। उसीको लक्ष्य करके **उसीकी** उपलब्धि करके जो प्रणाम किया जाता है, वह ही प्रणाम की द्वितीय या सूक्ष्म अवस्था है। इसको मानसिक प्रणाम कहा जाता है।

तृतीय नमस्तस्यै है **यह कारणस्वरूप को प्रणाम** करता है। हमारी माँ जगदम्बा के उसी कारण स्वरूप को लक्ष्य करके, उपलब्धि करके, जो प्रणाम किया जाता है, वह ही तृतीय प्रणाम है। इसीलिए इसको बोद्धिक प्रणाम कहा जाता है।

नमो नमः यह चतुर्थ प्रणाम है। इनके परे, परमात्मा में ही प्रकट होता है। नमो नमः कह कर केवल अपने शरणागत भाव की सहायता से परम प्रेमास्पद परमानन्दस्वरूप परमात्मा में विलीन हो जाते हैं। अर्थात अपने आपको खो देते हैं। यही तुरीय अवस्था या चतुर्थ प्रणाम है।

शुम्भ–निशुम्भ असुरों की जोड़ी के अत्याचार से उत्पीड़ित देवताओं द्वारा इस प्रकार से प्रणाम किये जा सकने से ही, हमारी माँ जगदम्बा ने तुरन्त देर न करते हुए स्वयं रणक्षेत्र में उपस्थित होकर असुर कुल का नाश करके देवताओं के भय को दूर किया था।

यदि इस स्तुति का पाठ बारम्बर करते हो तो तुम भी देवताओं के समान सब प्रकार के आसुरी अत्याचार से मुक्ति पाओगे।

समय बड़ा बलवान है

जीवन में समय की गति सबसे विचित्र है। समय बदलने पर स्थान स्थिति परस्थिति भी पूरी तरह से बदल सकती है और यहाँ तक कि विपरीत भी हो सकती है। साधु, शैतान और शैतान साधु बन सकता है। राजा भिखारी और भिखारी राजा बन सकता,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

धनवान दरिद्र और दरिद्र धनवान हो सकता हैं।

बड़े–बड़े बलशाली महान ज्ञानी तथा धनसम्पन्न मनुष्य भी समय के विपरीत होने पर महान दुःख और कष्ट को भोगते हैं, समय के बदलने पर दाता याचक बन जाता है, बलवान निर्बल बन जाता है, ज्ञानी और पंडित अज्ञानी और मूर्ख बन जाता है। अत्यंत वीर और साहसी योद्धा भय से कायर बन जाता है। पुण्यात्मा पाप कर बैठता है। समय के फेर से ही ज्ञानी ब्राह्मण भी कौवा कागभुशुण्डी बन जाता है। समय के फेर से ही कागभुशुण्डी (कौवा) से भगवान शिव श्रोता बनकर रामकथा सुनने जाने को विवश होते हैं। समय और काल की अद्‌भुत गति में कुछ भी आश्चर्य नहीं करना चाहिए। यह काल चक्र जब ब्रह्मा, विष्णु और महेश को भी संकट में डाल देता है तो सामान्य जीव और मनुष्य उससे कैसे बच सकता है।

प्राणी का कर्म ही भाग्य का निर्माता है। हम जो भी कर्म करते हैं वह हमारे भाग्य और प्रारब्ध के रूप में संचित होता है और विश्व द्वारा निर्धारित समय पर हमें उसका भोग करने के लिए विवश होना पड़ता है। इसलिए हमें चाहिए कि हम धर्म शास्त्रों में दिए संस्कारों के अनुसार आचरण और व्यवहार करते हुए अपने कर्तव्य कर्मों का निर्वाह करते हुए स्वयं के साथ–साथ दूसरों को भी सुख पहुँचाने का प्रयत्न करें।

इसलिए कलयुग में श्री दुर्गा सप्तशती, बीजात्मक दुर्गा सप्तशती, गुप्त सप्तशती कुन्जिका स्तोत्र पाठ रोजना करना चाहिए जिससे मनुष्य के दुःखो का अन्त अवश्य होगा।

नांदि श्राद्धकर्म का अर्थ ब्राह्मण को सुतक–पातक से मुक्ति दिलाना इस कर्म में ब्राह्मण और यजमान दोनों को अतृप्त आत्मा और पितृों के निमित श्राद्धकर्म करके पूजा करना होती है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महाकाली – खप्पर यात्रा –

नवरात्र उत्सवमय महामाया सरस्वती लक्ष्मी महाकाली के अंशरूप नौ दुर्गा और कुलदेवी सहित 64 योगिनी मातृका शक्तियों की भक्तिभाव पूर्ण उपासना से प्रसन्न होकर अंतिम रात्रि पूर्ण होते ही भगवति महाकाली मानव समाज के कल्याण हेतु खप्पर उठाकर नगर परिक्रमा करते हुये दुःख, दरिद्र, रोग व्याधि, भूतप्रेत जैसी तमाम आसुरी शक्तियों को अपने खप्पर में होम करते हुये श्मशान वासी होती हैं।

देश के अलग–अलग भाग में अलग–अलग नाम से इस यात्रा को जाना जाता है। कुछ प्रांतों में महाकाली के उपासक़ अग्नि प्रज्वलित खप्पर उठाते है और श्मशान तक यात्रा स्वरूप जाते है। अंगुली भी स्पर्श हो जाय तो जल जाय ऐसा प्रज्वलित खप्पर हाथ में उठाकर श्मशान तक जाना ये आज के वैज्ञानिक समाज और बुद्धि से बाहर है। उन समय महाशक्ति की पूर्ण उपस्थिति के बगैर ये कदापि संभव नहीं है।

खप्पर यात्रा का दर्शन करने हजारों की भीड़ आती हैं भूतप्रेत की बाधा वालों को उनके रास्ते में सुला दिए जाते हैं जब खप्पर लिए उपासक उनको लांघ के जाते हैं तो ऐसी प्रेतबाधा से सम्पूर्ण मुक्ति मिल जाती है।

ज्यादातर महाकाली माताजी के रौद्र रूप की ही तस्वीर और मूर्तियाँ बनायी जाती हैं, पर वे स्वरूप तो सिर्फ असुरों के वध करते समय भगवती का रूप है बाकी पूजा भक्ति उपासना करने वालों पर तो माता हमेशा प्रसन्न रहती हैं। उन प्रसन्न मुख मुद्रा के कल्याणकारी स्वरूप को ही भद्रकाली कहते हैं और पूजा में वो स्वरूप ही स्थापित करना चाहिए। भारत देश में ऐसे अनेक मन्दिर हैं जहाँ महाकाली माताजी की हंसती हुई वरदायी स्वरूप मूर्ति पूजी जाती है।

भगवती माँ सती ही दस महाविद्या की देवी हैं और वो काली

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्वरूप बनी वो एक प्रसंग जब दक्ष प्रजापति ने शिवजी को यज्ञ में निमंत्रित न करके अपमान किया तब भगवती को क्रोध आया और क्रोधाग्नि उनका स्वरूप काली स्वरूप बना। शिवजी भगवती को रोकने गए पर भगवती ने प्रचंड स्वरूप धारण किया।

काली के बीज मन्त्र की साधना –

(क्रीम) मन्त्र की आपको इस मंत्र के जप और हवन से क्या–क्या लाभ होता है –

आप क्रीम मन्त्र से रोज़ दो माला जप कर सकते हैं। सरसों के तेल और मीठे पान के भोग से आप इसकी साधना से धन लाभ ऊर्जा और आपके मनोबल और कार्य की प्राप्ति और महाकाली माँ के अंश को बिराजमान कर सकते हैं। आप नौ दुर्गा में पूरे 9 दिन इसकी साधना करें। **काली हकीक की माला** और हवन कुण्ड त्रिकोण बनाकर और प्रत्येक मन्त्र की सात आहुति दे काले तिल और घी की 5 माला रोज जब आप यह कार्य करेंगे तो आपकी कुल देवी देवताओं की पितृों पर कृपा होगी। आपके व्यवसाय में काफी उन्नति होगी और आपके हर कार्य में आपकी माता सहायता करेंगी। आपको तंत्र प्रयोग से कोई हानि नहीं होगी। हमेशा माता का वीर आपके समीप होकर आपकी रक्षा करेगा। याद रहे दिशा दक्षिण होगी और **ब्रह्मचर्य का पालन होगा** और याद रहे यह प्रत्येक वर्ष करने से इंसान की उन्नति बहुत आगे जाती है। इसे करने से काफी लाभ होता है और आपके बच्चे बुद्धिमान होते हैं और विकास क्षेत्र में आपको कोई नहीं हटा सकता है। बलवान तांत्रिक भी आपके पीछे नतमस्तक हो जाएगा। जितना समय सोचने में आप और दूसरों में विश्वास करने में लगे होते हैं उतना विश्वास अगर माँ जगत जननी कलयुग की सहायक पर किया जाये तो काफी लाभ प्राप्त होगा। यह मेरा किया हुआ खुदका अनुभव है। हर जातक को, साधक को लाभ हो और मनोकामना और साधना में पूर्ण लाभ हो।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

माता काली की, शिव पर पैर रख हुए, जिव्हा बाहर निकली हुई, माँ काली की पूजा घर पर नहीं करें अन्यथा घर में क्लेश, अशांति, दुःख और पति–पत्नी में झगड़ा अवश्य होगा। इनकी पूजा मंदिर में जा कर चाहे जितने करे कोई कष्ट नहीं होगा बल्कि मुक्ति व मोक्ष अवश्य मिलेगा।

पौराणिक दृष्टि से आठ लोकमाताएँ हैं तथा तन्त्रग्रन्थों में आठ शक्तियाँ हैं –

1. ब्राह्मी – सृष्टिक्रिया प्रकाशित करती है।
2. माहेश्वरी – यह प्रलय शक्ति है।
3. कौमारी – आसुरी वृत्तियों का दमन करके दैवीय गुणों की रक्षा करती है।
4. वैष्णवी – सृष्टि का पालन करती है।
5. वाराही – आधार शक्ति है इसे काल शक्ति कहते हैं।
6. नारसिंही – ये ब्रह्म विद्या के रूप में ज्ञान को प्रकाशित करती है।
7. ऐन्द्री – ये विद्युत शक्ति के रूप में कर्मो को प्रकाशित करती है।

चामुण्डा – प्रवृत्ति (चण्ड) निवृत्ति (मुण्ड) का विनाश करने वाली है। (चण्ड मुण्ड का अर्थ)

तांत्रिक साधना –

तांत्रिक साधना दो प्रकार की होती है – एक वाम मार्गी तथा दूसरी दक्षिण मार्गी। वाम मार्गी साधना बेहद/बहुत कठिन है। वाम मार्गी तंत्र साधना में 6 प्रकार के कर्म बताए गए हैं जिन्हें षट् कर्म कहते हैं।

शान्ति कर्म, वशीकरण, स्तंभन, विद्वेषण, उच्चाटन, मारण ये छः तांत्रिक षट् कर्म।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इसके अलावा नौ प्रयोगों का वर्णन मिलता है –

मारण, मोहनं, स्तंभन, विद्वेषण, उच्चाटन, वशीकरण, आकर्षण, यक्षिणी साधना, रसायन क्रिया तंत्र के ये 9 प्रयोग हैं।

जिससे रोग, कुकृत्य के पाप, ताप और ग्रह आदि की शान्ति होती है। उसको शान्ति कर्म कहा जाता है और जिस कर्म से सब प्राणियों को वश मे किया जाए, उसको वशीकरण प्रयोग कहते हैं तथा जिससे प्राणियों की प्रवृत्ति रोक दी जाये, उसको स्तम्भन कहते हैं तथा दो प्राणियों की परस्पर प्रीति को छुड़ा देने वाला नाम विद्वेषण है और जिस कर्म से किसी प्राणी को देश आदि से पृथक कर दिया जाये, उसको उच्चाटन प्रयोग कहते हैं तथा जिस कर्म से प्राण हरण किया जाए, उसको मारण कर्म कहते हैं।

मन्त्र साधना भी कई प्रकार की होती है। मन्त्र से किसी देवी या देवता को साधा जाता है और मन्त्र से किसी भूत या पिशाच को भी साधा जाता है। मन्त्र का अर्थ है मन को एक तंत्र में लाना। मन जब मंत्र के अधीन हो जाता है तब वह सिद्ध होने लगता है। "मंत्र साधना" भौतिक बाधाओं का आध्यात्मिक उपचार है।

दुर्गा सप्तशती का महत्व –

दुर्गा सप्तशती नामक चमत्कारिक परम दुर्लभ ग्रंथ में देवी भगवती महामाया जगतजननी की असुर संहार करने की कथाओं का वर्णन हैं।

1. नवरात्र में दुर्गा सप्तशती के पाठ से प्रत्येक इच्छा पूरी हो सकती है।
2. 13 अध्याय है। 700 श्लोक हैं। 3 भाग है। 3 चरित्र है।

3. तीन चरित्र है –

प्रथम चरित्र प्रथम अध्याय– देवी महाकाली

मध्यम चरित्र 2 से 4 अध्याय– देवी महालक्ष्मी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उत्तर चरित्र 5 से 13 अध्याय – देवी सरस्वती

महासरस्वती की स्तुति 9 अध्यायों में है जो यह दर्शाती है कि महासरस्वती का महत्व शक्ति और धन से अधिक है। अद्भुत फल देता है। यह पाठ और होम करने से निष्काम उपासना करना चाहिए। जो चमत्कारिक है। इनके पाठ से, श्रवण से, भव सागर पार कर सकते है। प्रारब्ध बदल सकता है, भाग्य बदल सकते है।

यह ग्रंथ मोक्ष प्रदान करता है। मोक्ष का अर्थ होता है इस आवागमन के चक्कर से मुक्ति। सभी प्रकार के ऋणों से, पापो से मुक्ति इसके लगातार पाठन एवं श्रवण से दुर्लभ ज्ञान, रहस्मय ज्ञान की प्राप्ति होती है।

1. 90 श्लोक मारण के है।
2. 90 श्लोक मोहन के है।
3. 200 श्लोक उच्चाटन
4. 200 श्लोक स्तंम्भन के
5. 60 श्लोक विद्वेषण के
6. 60 श्लोक वशीकरण के हैं।

इसके पाठ करने से मारण, मोहन उच्चाटन, स्तम्भन, विद्वेषण, वशीकरण सभी हो जाता है। परन्तु इन श्लोको का अलग–अलग विवेचन याने कौन से मारण के कौन से मोहन के यह ज्ञात नहीं है।

नवरात्र व्रत –

जो लोग सभी नवरात्रों के व्रत नहीं रख सकते, वह तीन व्रत रखें। यह व्रत सप्तमी, अष्टमी और नवमी के कहे गये हैं। ऐसा कहा गया है कि जो यह व्रत रखते है, उन्हें देवी की पूजा करने से सभी नवरात्रों के पुण्य का फल मिल जाता है। देवी पूजन, हवन, कुमारी–पूजन और ब्राह्मण भोजन इन चार कार्यो के सम्पन्न होने से ही नवरात्र व्रत पूरा होता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दुर्गा सप्तशती के पाठ का महत्व –

माँ दुर्गा की आराधना और उनकी कृपा प्राप्त करने के लिए दुर्गा सप्तशती का पाठ सर्वोत्तम है भुवनेश्वरी संहिता में कहा गया है। जिस प्रकार से "वेद" अनादि है, उसी प्रकार "सप्तशती" के 700 श्लोको में देवी–चरित्र का वर्णन है दुर्गा सप्तशती में कुल 13 अध्याय हैं दुर्गा सप्तशती के सभी तेरह अध्याय अलग–अलग इच्छित मनोकामना की पूर्ति करते हैं।

प्रथम अध्याय :–

इसके पाठ से सभी प्रकार की चिंता दूर होती है एवं शक्तिशाली से शक्तिशाली शत्रु का भी भय दूर होता है शत्रुओं का नाश होता हैं। शत्रु दूर करने के लिए

द्वितीय अध्याय:–

इसके पाठ से बलवान शत्रु द्वारा घर एवं भूमि पर अधिकार करने एवं किसी भी प्रकार के वाद विवाद आदि में विजय प्राप्त होती है। शत्रु नाश करने में इसका प्रयोग किया जाता है।

तृतीय अध्याय:–

तृतीय अध्याय के पाठ से युद्ध एवं मुकदमे में विजय, शत्रुओं से छुटकारा मिलता है। कोर्ट कचहरी, पुलिस केस में विजयश्री के लिए प्रयोग।

चतुर्थ अध्याय:–

इस अध्याय के पाठ से धन, सुन्दर जीवन साथी एवं माँ की भक्ति की प्राप्ति होती है। विवाह मांगलिक कार्यक्रम में अड़चने दूर करने के लिए।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पंचम अध्यायः—

पंचम अध्याय के पाठ से भक्ति मिलती है, भय, बुरे स्वप्नों और भूत–प्रेत बाधाओं का निराकरण होता है। ऊपरी बाधा, अद्रश्य शक्ति, नकारात्मक उर्जा से वचाव व रक्षा के लिए इस पाठ का बार–बार श्रवण व पठन करना चाहिए।

छठा अध्यायः—

इस अध्याय के पाठ से समस्त बाधाएँ दूर होती है और समस्त मनवांछित फलों की प्राप्ति होती है। साधक की इच्छा पूर्ति के लिए इस अध्याय का पाठ करना चाहिए।

सातवां अध्यायः—

इस अध्याय के पाठ से हृदय की समस्त कामना अथवा किसी विशेष गुप्त कामना की पूर्ति होती है।

आठवाँ अध्यायः—

अष्टम अध्याय के पाठ से धन लाभ के साथ वशीकरण प्रबल होता है। किसी का वशीकरण करना होता इस अध्याय का बार–बार पठन व मनन करना चाहिए।

नौवां अध्यायः—

नवम अध्याय के पाठ से खोये हुए की तलाश में सफलता मिलती है, सम्पत्ति एवं धन का लाभ भी प्राप्त होता है। घर छोडकर चले गये मनुष्य को बुलाने के लिए इसका पाठ करना चाहिए।

दसवाँ अध्यायः—

इस अध्याय के पाठ के गुमशुदा की तलाश होती है, शक्ति

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और संतान का सुख भी प्राप्त होता है।

ग्यारहवाँ:–

ग्यारहवें अध्याय के पाठ से किसी भी प्रकार की चिन्ता की मुक्ति, व्यापार में सफलता एवं सुख– संम्पत्ति की प्राप्ति होती है। व्यापार को बढ़ाना होतो इसका पाठक हवन करना।

बारहवाँ अध्याय:–

इस अध्याय के पाठ से रोगो से छुटकारा, निर्भयता की प्राप्ति होती है एवं समाज में मान–सम्मान मिलता है। रोगो का नाश करने लिए इस पाठ का हवन व जप करना चाहिए।

तेरहवाँ अध्याय:–

तेरहवे अध्याय के पाठ से माता की भक्ति एवं सभी इच्छित वस्तुओं की प्राप्ति होती है मनुष्य की इच्छाएं अन्नत है और इन्ही की पूर्ति के लिए दुर्गा सप्तशती से सुगम और कोई भी मार्ग नहीं है। इसीलिए नवरात्र के विशेष रूप से दुर्गा सप्तशती के तेरहवें अध्यायों का पाठ करने का विधान है।

श्री दुर्गा सप्तशती में माँ जगत जननी ने बड़े–बड़े दुर्गम दैत्य, असुरों, राक्षसों, दानवों का वध किया उनमे 9 प्रमुख है –

1.मधु (राग), 2. कैटभ (द्वेष), 3.महिषासुर (पशुप्रकृति), 4. धूम्रलोचन (धुंधली दृष्टि), 5. चण्ड (तर्क वितर्की) बेवजह लड़ाई झगड़ा करना, 6. मुण्ड (काम क्रोध), 7. रक्तबीज (तृष्णा), 8. शुम्भ (अहंकार), 9. निशुम्भ (निर्लज्ज)

अध्याय से कामना पूर्ति –

प्रथम– अध्याय पाठ करने से हर प्रकार की चिन्ता मिटाने के लिए यह मंत्र आपको पाठ करना है।

मधु कैटभ वध (राग) (द्वेष)

द्वितीय– अध्याय का पाठ करने से **मुकदमा झगड़ा** आदि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

में विजय पाने के लिए देवताओं के तेज से माँ दुर्गा का अवतरण और **महिषासुर सेना का वध। यह मंत्र का पाठ आपको करना है।**

तृतीय – अध्याय का पाठ करने से शत्रु (पशुवृति) से छुटकारा पाने के लिए महिषासुर और उसके सेनापति का वध

चतुर्थ– अध्याय का पाठ करने से भक्ति, शक्ति तथा दर्शन के लिए अध्याय इन्द्र आदि देवताओं के द्वारा माँ की स्तुति

पंचम– अध्याय का पाठ करने से भक्ति, शक्ति, तथा दर्शन के लिए देवताओं द्वारा माँ की स्तुति और चन्द्र मुण्ड द्वारा शुम्भ के सामने देवी की सुन्दरता का वर्णन

षष्टम– अध्याय का पाठ करने से डर, शक, बाधा हटाने के लिए धुम्रलोचन वध (धुधली दृष्टि)

सप्तम– अध्याय का पाठ करने से हर कामना पूर्ति के लिए चण्डमुण्ड का वध (काम, क्रोध)

अष्टम – अध्याय का पाठ करने से मिलाप वशीकरण के लिए रक्तबीज का वध (तृष्णा)

नवम– अध्याय का पाठ करने से गुमशुदा को ढूंढने के लिए, कामना, पुत्र आदि

दशम – अध्याय का पाठ करने से गुमशुदा को ढूंढने के लिए

एकादश– अध्याय का पाठ करने से व्यापार व सुख सम्पत्ति की प्राप्ति के लिए देवताओं द्वारा देवी की स्तुति और देवी के द्वारा देवताओं को वरदान।

द्वादश– अध्याय का पाठ करने से मान–सम्मान तथा लाभ प्राप्ति के लिए देवी चरित्र के पाठ की महिमा और फल

त्रयोदश– अध्याय का पाठ करने से **भक्ति प्राप्ति** के लिए सुरथ और वैश्य को देवी का वरदान

श्री दुर्गा सप्तशती तत्व चिन्तन –

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मेधासी देवी विदिता अखिल शास्त्र सारा।
दुर्गासि दुर्ग भव सागर नोर संघा।।

श्री दुर्गा सप्तशती में देवता गण श्री भगवती की स्तुति करते हुए कहते है, सारे शास्त्रों का सार तत्व उन सभी शास्त्रों की मेधाशक्ति श्री भगवती आपका पावन चरित्र ही है। इस दुर्गम भवसागर (संसार सागर) से तरने के लिए तो आपका दुर्गा नाम एक जहाज़ के समान है। जिस प्रकार जहाज में बैठा हुआ व्यक्ति समुद्र में रहते हुये भी समुद्र में डूबने के भय से निर्भय रहता है। समुद्र की गम्भीरता उसको डुबाती नहीं अपितु आनन्द का कारण बन जाती है। उसी प्रकार आपके नाम, रूप, लीला, चरित्रों का आश्रय लेने वाला जीव भी उसी तरह तर जाता है।

श्री दुर्गासप्तशती के अनुष्ठान में प्रयोग वनस्पति

1. तूमड़ा/भूरा कद्दू कूष्माण्डा देवी के लिए।
2. लौकी पालक शाकम्भरी देवी।
3. अनार रक्तदन्तिका के लिए।
4. अपर्णा देवी के लिए अशोक के पत्ते।
5. लक्ष्मी देवी के लिए कमल के फूल।
6. कमलात्मिका देवी के लिए, बेल फल व पत्ती।
7. काली माँ के लिए, शहद व लौंग।
8. पाटलावती के लिए, गुलाब के फूल।
9. त्रिपुर सुन्दरी के लिए पान का बीड़ा।
10. श्री वैष्णवी देवी की लिए सेवफल।
11. महाकाली के लिए नींबू। पान के पत्ते, काजल, शहद।
12. केला देवी के लिए केले के पत्ते।
13. नीम के पत्ते, शीतला माता के लिए।
14. बिजौरे का फल महालक्ष्मी के लिए।
15. शाकम्भरी, शताक्षी, तथा दुर्गा फूल, पल्लव कन्द मूल।
16. लक्ष्मी प्राप्ती के लिए आवला, कमल, मालती, कुमुद, लाल

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कनेर

सप्तशती 13 अध्यायों के बीज मंत्र और विशेष आहुति –

1. **महाकाल्यै स्वाहा** – आहुति कमल गट्टा, काली मिर्च, शहद, महुआ, राई
2. **महालक्ष्म्यै स्वाहा** – जायफल, जावित्री, कद्दू, पीली सरसों राई
3. **महालक्ष्म्यै** – उड़द का बड़ा
4. **महालक्ष्म्यै स्वाहा** – पंचमेवा व छुआरा (खारक)
5. **ऊँ महासरस्वत्यै स्वाहा** – शक्कर व गन्ना
6. **ऊँ घुम्राक्ष्यै स्वाहा** – जासौन का फूल / गुडहल
7. **ऊँ चमुण्डायै स्वाहा** – बिल्वफल, पत्र, पालक
8. **ऊँ रक्ताक्ष्यै स्वाहा** – रक्त चंदन, पान के पत्ते पर जो डंठल वाला होगा।
9. **ऊँ भैरवी तारा दैव्यै स्वाहा** – केला, नागरमोथा, अगर तगर
10. **ऊँ भगवत्यै स्वाहा** – बिजौरा नींबू
11. **ऊँ नारायण्यै स्वाहा** – खीर, पूड़ी
12. **ऊँ दुर्गा दैव्यै स्वाहा**– श्री फल

सप्तशती रहस्य –

श्री दुर्गा सप्तशती पाठ करने से मनुष्य को क्या–क्या प्राप्त होता है :– भय हर लेती है, कल्याण होता है, दरिद्रता का नाश, मंगल प्रदान करने वाली, परेशानी दूर होती है, रोग कम हो जाते है, विपत्ती हर लेती है, बाधा को शांत कर देती है, शत्रुओं का स्वतः नाश हो जाता है। यह पाठ नियमित करना होता है।

कुछ भी प्राप्त करना असम्भव नहीं हैं। सभी चीज प्राप्त कर सकता है। धन, धान्य, पुत्र, स्त्री भौतिक विलासिता की वस्तु चारों पुरूषार्थ और सम्पत्ति शाली होता है। अपमृत्यु से भय नहीं रहता हैं। विष से रक्षा होती है, खिलाई–पिलाई निकल जाती है मारण,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, अभिचारिक कर्म नष्ट हो जाते है। नीच किस्म की शक्तियां भी दूर हो जाती है – डाकिनी, शाकिनी, भूत, पिशाच, यक्ष, गंधर्व, राक्षस, वेताल, प्रेत। मान सम्मान मिलता है कीर्ति, सुयश मिलता है आनन्द और परमानन्द मिलता है। **समय समय पर श्री दुर्गा सप्तशती का, बीजात्मक सप्तशती का, गुप्त सप्तशती का हवन भी करते रहना चाहिए।** हवन **भी करते रहना चाहिए।**

मुख्यतः 3 प्रकार के मंत्र होते हैं –

1. वैदिक मंत्र, 2. तांत्रिक मंत्र, 3. शाबर मंत्र।

"सप्तशती–सर्वस्व" के उपासना–क्रम में पहले शापोद्धार करके बाद में षडंगसहित पाठ करने का निर्णय किया गया है। अतः कवच आदि पाठ के पहले ही शापोद्धार कर लेना चाहिये। कात्यायनी–तन्त्र में शापोद्धार तथा उत्कीलन का और ही प्रकार बतलाया गया है।

सप्तशती के अध्यायों का तेराह–एक, बाराह–दो, ग्यारह–तीन, दस–चार, नौ–पाँच तथा आठ–छः के क्रम से पाठ करके अन्त में सातवें अध्याय को दो बार पढ़े। यह शापोद्धार है और पहले मध्यम चरित्रका, फिर प्रथम चरित्र का, तत्पश्चात् उत्तर चरित्र का पाठ करना उत्कीलन है। कुछ लोगों के मत में कीलक मे बताये अनुसार "ददाति प्रतिगृहणाति" के नियम से कृष्णपक्ष की अष्टमी या चतुर्दशी तिथि में देवी को सर्वस्व–समर्पण करके उन्हीं का होकर उनके प्रसाद रूप से प्रत्येक वस्तु को उपयोग में लाना ही शापोद्धार और उत्कीलन है। कोई कहते है – छः अंगों सहित पाठ करना ही शापोद्धार है।

अंगों का त्याग ही शाप है। कुछ विद्वानों की राय में शापोद्धार कर्म अनिवार्य नहीं है, क्योंकि रहस्याध्याय में यह स्पष्टरूप से कहा है कि जिसे एक ही दिन में पूरे पाठ का अवसर न मिले, वह एक दिन केवल मध्यम चरित्र का और दूसरे दिन दो चरित्रों का

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पाठ करें। इसके सिवा, जो प्रतिदिन नियमपूर्वक पाठ करते हैं, उनके लिये एक दिन में एक पाठ न हो सकने पर एक, दो, चार, दो, एक और दो अध्यायों के क्रम से सात दिनों पाठ पूरा करने का आदेश दिया गया है। ऐसी दशा में प्रतिदिन शापोद्धार और कीलक कैसे सम्भव है। अस्तु, जो हो, हमने यहाँ जिज्ञासुओं के लाभार्थ शापोद्धार और उत्कीलन दोनों के विधान दे दिये हैं।

साधक गण समयाभाव होने पर अपनी सुविधानुसार ही पाठ करें पूजा पाठ तप और जपादि में भाव की महत्ता सर्वोपरि मानी गयी है इसलिए केवल भाव शुद्ध रखें।

शॉप विमोचन कैसे करें, जब भी पाठ करे शाप विमोचन करना अनिवार्य

संकल्पित कार्यसिद्ध्यर्थे जपे विनियोग:

ॐ (ह्रीं) रीं रेतः स्वरूपिण्यै मधुकैटभमर्दिन्यै ब्रह्मवसिष्ट विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव।।1।।

ॐ श्रीं बुद्धिस्वरूपिण्यै महिषासुर सैन्यनाशिन्यै ब्रह्मवसिष्ठ विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।2।।

ॐ रं रक्तस्वरूपिण्यै महिषासुरमर्दिन्यै ब्रह्मवसिष्ठ विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।3।।

ॐ क्षुं क्षुधास्वरूपिण्यै देववन्दितायै ब्रह्म वसिष्ठ विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव।।4।।

ॐ छां छायास्वरूपिण्यै दूतसंवादिन्यै ब्रह्मवसिष्ठ विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।5।।

ॐ शं शक्ति स्वरूपिण्यै धूम्रलोचन घातिन्यै ब्रह्मवसिष्ठ विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।6।।

ॐ तृं तृषा स्वरूपिण्यै चण्ड मुण्ड वध कारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठ विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।7।।

ॐ क्षां क्षान्तिस्वरूपिन्यै रक्तबीजवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठ विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।8।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ॐ जां जाति स्वरूपिण्यै निशुम्भ वध कारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठ विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।9।।

ॐ लं लज्जास्वरूपिण्यै शुम्भ वध कारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठ विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।10।।

ॐ शां शान्तिस्वरूपिण्यै देवस्तुत्यै ब्रह्मवसिष्ठ विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।11।।

ॐ श्रं श्रद्धा स्वरूपिण्यै सकल फल दात्र्यै ब्रह्मवसिष्ठ विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।12।।

ॐ कां कान्ति स्वरूपिण्यै राजवर प्रदाये ब्रह्मवसिष्ठ विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।13।।

ॐ मां मातृस्वरूपिण्यै अनर्गल महिम सहिताये ब्रह्म वसिष्ठ विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै सं सर्वैश्वर्य कारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।15।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिवायै अभेद्य कवच स्वरूपिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।16।।

ॐ क्रीं काल्यै कालि ह्रीं फट् स्वाहायै ऋग्वेद स्वरूपिण्यै ब्रह्म वसिष्ठ विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।17।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाकाली–महालक्ष्मी महा सरस्वती स्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः।।18।।

इत्येवं हि महामन्त्रान् पठित्वा परमेश्वर।
चण्डीपाठं दिवा रात्रौ कुर्यादेव न संशयः।।19।।

एवं मन्त्रं न जानाति चण्डीपाठं करोतियः। आत्मानं चैव दातारं क्षीणं कुर्यान्न संशयः।।20।।

इस प्रकार शापोद्धार करने के तदनन्तर अन्तर्मातृका –बहिर्मातृका आदि न्यास करें, फिर श्रीदेवी का ध्यान करके रहस्य में बताये अनुसार नौ कोष्ठों वाले यंत्र में अंगों यन्त्र में महालक्ष्मी आदि का पूजन करें, इसके बाद छः अंगों सहित दुर्गा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सप्तशती का पाठ आरम्भ किया जाता है। कवच, अर्गला, कीलक और तीनों रहस्य ही सप्तशती के छः अंग माने गये हैं। इनके क्रम में भी मतभेद हैं। चिदम्बर–संहिता में पहले अर्गला फिर कीलक तथा अन्त में कवच पढ़ने का विधान है।

किन्तु योगरत्नवाली में पाठ का क्रम इससे भिन्न है। उसमें कवच को बीज, अर्गला को शक्ति तथा कीलक को कीलक संज्ञा दी गयी है। जिस प्रकार सब मन्त्रों में पहले बीज का, फिर शक्ति का तथा अन्त में कीलक का उच्चारण होता है, उसी प्रकार यहाँ भी पहले कवचरूप बीज का, फिर अर्गलारूपी शक्ति को बोला जावेगा।

अमुकशर्मा (अपने गोत्र का उच्चारण करें) अहं ममात्मनः सपुत्रस्त्रीबान्धवस्य श्रीनवदुर्गानुग्रहतो ग्रह कृत राजकृत सर्वविध पीडा निवृत्ति पूर्वकं नैरुज्य दीर्घायुः पुष्टि धनधान्य समृद्धार्थम श्रीनव दुर्गा प्रसादेन सर्वा–पन्निवृत्ति सर्वाभीष्ट फलप्राप्त्यार्थम धर्मार्थ, काम मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्धिद्वारा श्रीमहाकाली–महालक्ष्मी महासरस्वती देवता प्रीत्यर्थ शापोद्धार पुरस्सरं कवचार्गला कीलक पाठ केद तन्त्रोक्त रात्रिसूक्त पाठ देव्यथर्वशीर्ष पाठन्यास विधि सहित नवार्ण जप सप्तशती न्यास–ध्यान सहित चरित्र सम्बन्धित विनियोग न्यास ध्यानपूर्वकं च 'मार्कण्डेय उवाच।।

सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः।

इत्याद्यारभ्य 'सावर्णिर्भविता मनुः इत्यान्तं दुर्गा सप्तशती पाठं तदन्तें

न्यासविधि सहित नवार्ण मन्त्र जपं वेद तन्त्रोक्त देवीसूक्त पाठं रहस्यत्रय पठनं शापोद्धारादिकं च करिष्ये।

इस प्रकार संकल्प करके देवी का ध्यान करते हुए पंचोपचार की विधि से पुस्तक की पूजा करें।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुस्तक पूजा का मन्त्र –

ऊँ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

(वाराहीतन्त्र तथा चिदम्बरसंहिता)

ध्यात्वा देवीं पंचपूजां कृत्वा योन्या प्रणम्य च।
आधारं स्थाप्य मूलेन स्थापयेत्तत्र पुस्तकम्।।

इसके बाद योनिमुद्रा का प्रदर्शन करके भगवती को प्रणाम करें, फिर मूल नवार्णमन्त्र से पीठ आदि में आधारशक्ति की स्थापना करके उसके ऊपर पुस्तक को विराजमान करें। इसके बाद शापोद्धार करना चाहिये। इसके अनेक प्रकार हैं।

ऊँ ह्रीं क्लीं श्रीं क्रां क्रीं चण्डिकादेव्यै शापनाशानुग्रहं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र का आदि और अन्त में सात बार जप करें। यह शापोद्धार मन्त्र कहलाता है। इसके अनन्तर उत्कीलन मन्त्र का जप किया जाता है। इसका जप आदि और अन्त में इक्कीस–इक्कीस बार होता है। यह मन्त्र इस प्रकार है – ऊँ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशति चण्डिके उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा। इसके जप के पश्चात् आदि और अन्त में सात–सात बार मृतसंजीवनी विद्या का जप करना चाहिये। जो इस प्रकार है – ऊँ ह्रीं ह्रीं वं वं ऐं ऐं मृतसंजीवनि विद्ये मृतमुत्थापयोत्थापय क्रीं ह्रीं ह्रीं वं स्वाहा। मारीचकल्प के अनुसार सप्तशती शापविमोचन का मन्त्र यह है –

ऊँ श्रीं श्रीं क्लीं हूं ऊँ ऐं क्षोभय मोहय उत्कीलय उत्कीलय उत्कीलय ठं ठं।

इस मंत्र का आरम्भ में ही एक सौ आठ बार जप करना चाहिये, पाठ के अन्त में नहीं। अथवा रुदयामल महातन्त्र के अन्तर्गत दुर्गाकल्प में कहे हुए चण्डिका शाप विमोचन मन्त्रों का आरम्भ में ही पाठ करना चाहिये। वे मन्त्र इस प्रकार हैं –

ऊँ अस्य श्रीचण्डिकाया ब्रह्म वसिष्ठ विश्वामित्र शाप

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विमोचना मन्त्रस्य वसिष्ठ–नारद संवाद सामवेदाधिपति ब्रह्मा ऋषयः सर्वैश्वर्य कारिणी श्रीदुर्गा देवता चरित्रत्रयं बींज ह्रीं शक्तिः त्रिगुणात्म स्वरूप चण्डिका शापविमुक्तौ मम

मुख्य पाठ विधि –

यह विधि यहाँ संक्षिप्त रूपसे दी जाती है। नवरात्र आदि विशेष अवसरों पर तथा शतचण्डी आदि अनुष्ठानों में विस्तृत विधि का उपयोग किया जाता है। उसमें यन्त्रस्थ कलश, गणेश, नवग्रह, मातृका, वास्तु, सप्तर्षि, सप्तचिरंजीव, 64 योगिनी, 50 क्षेत्रपाल तथा अनन्य देवताओं की वैदिक विधि से पूजा होती है। अखण्ड दीप की व्यवस्था की जाती है।

देवीप्रतिमा की अंगन्यास औरअग्न्युत्तारण आदि विधि के साथ विधिवत् पूजा की जाती है। नवदुर्गापूजा, ज्योतिःपूजा, वटुक–गणेशादि सहित कुमारी पूजा, अभिषेक, नान्दीश्राद्ध, रक्षाबन्धन, पुण्याहवाचन, मंगलपाठ, गुरुपूजा, तीर्थावाहन, मन्त्र–स्नान आदि, आसनशुद्धि, प्राणायाम, भूतशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, अन्तर्मातृकान्यास, बहिर्मातृकान्यास, सृष्टिन्यास, स्थितिन्यास, शक्तिकलान्यास, शिवकलान्यास, हृदयादिन्यास, षोडांन्यास, विलोमन्यास, तत्त्वन्यास, अक्षरन्यास, व्यापकन्यास, ध्यान, पीठपूजा, विशेष अर्घ्य, क्षेत्रकीलन, मन्त्रपूजा, विविध मुद्राविधि, आवरणपूजा एवं प्रधानपूजा आदि का शास्त्रीय पद्धति के अनुसार अनुष्ठान होता है। इस प्रकार विस्तृत विधि से पूजा करने की इच्छा वाले भक्तों को अनन्य पुजा पद्धतियों की सहायता से भगवती की आराधना करके पाठ आरम्भ करना चाहिये।

पाठ विधि आरम्भ –

साधक स्नान करके पवित्र हो आसन–शुद्धि की क्रिया सम्पन्न करके शुद्ध आसन पर बैठे, साथ में शुद्ध पूजन सामग्री और श्रीदुर्गासप्तशती की पुस्तक रखें। पुस्तक को अपने सामने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

काष्ठ आदि के शुद्ध आसन पर विराजमान कर दें। ललाट में अपनी रुचि के अनुसार भस्म, चन्दन अथवा रोली लगा लें, शिखा बाँध लें, फिर पूर्वाभिमुख होकर तत्व–शुद्धि के लिये चार बार आचमन करें। उस समय अग्रांकित चार मन्त्रों को क्रमशः पढ़े –

ॐ ऐं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।।

ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।।

ॐ क्लीं शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।।

तत्पश्चात् प्राणायाम करके गणेश आदि देवताओं एवं गुरुजनों को प्रणाम करें, फिर, पवित्रेस्थो वैष्णव्यै इत्यादि मन्त्र से कुशकी पवित्री धारण करके हाथ में लाल फूल, अक्षत और जल लेकर निम्नांकित रूप से संकल्प करें –

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः। ॐ नमः परमात्मने, श्रीपुराणपुरुषोत्तमस्य श्रीविष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य श्रीब्रह्मणे द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्तैकदेशे पुण्यप्रदेशे बौद्धावतारे वर्तमाने यथानामसंवत्सरे (संवत्सर का नाम) अमुकायने (अयन उत्तरायण / दक्षिणायन का नाम) महामाङ्.गल्यप्रदे मासानाम् उत्तमे अमुकमासे (मास) अमुकपक्षे (पक्ष का नाम) अमुकतिथौ (तिथि का नाम) अमुकवासरान्वितायाम् (वार का नाम) अमुकनक्षत्रे (नक्षत्र का नाम) अमुकराशिस्थिते सूर्ये (सूर्य जिस राशि में हो उसका उच्चारण) अमुकामुकराशिस्थितेषु चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनिषु (शेष सभी ग्रह उस समय जिस राशि पर हो उसका नाम लें) सत्सु शुभे योगे (योग का नाम) शुभकरणे (करण का नाम) एवं गुणविशेषणविशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ (तिथि का नाम लें) सकलशास्त्र श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलप्राप्तिकामः अमुकगोत्रोत्पन्नः (अपने गौत्र का नाम)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अमुक नामाहं (अपना नाम ले) ममात्मनः सपुत्रस्त्री बान्धवस्य ग्रहकृत राजकृत सर्व–विधपीड़ा निवृत्ति पूर्वक नैरूज्यदीर्घायु पुष्टि धन धान्य समृद्धयर्थं देवी कृपा प्रीत्यर्यं च संकल्पं अहं करिष्ये।

कुछ लोग दुर्गा सप्तशती के पाठ के बाद हवन खुद की मर्जी से कर लेते है और हवन सामग्री भी खुद की मर्जी से लेते हैं वे उनकी गलतियों को सुधारे और किसी योग्य ब्राम्हण से इसका विधि–विधान से यज्ञ करावें।

दुर्गा सप्तशती का पाठ कैसे करना चाहिए?

1. प्रथम अध्याय से लेकर अंतिम अध्याय तक 13 अध्याय रोज पाठ करना है। आधा पाठ नहीं करना चाहिए। सम्पूर्ण पाठ करें।
2. चाहे हिन्दी में करें या संस्कृत में या अन्य भाषा में सभी का फल बराबर मिलता है।
3. दुर्गा सप्तशती एक शुद्ध तन्त्रात्मक किताब है, जिसकी जैसी भावना रहती है वैसा फल मिलता है।
4. कभी भी, कहीं पर भी श्मशान में, मन्दिर में, नदी किनारे, जंगल में, घर में, सभी जगह पाठ किया जा सकता है। केवल पूर्ण एकाग्रता से करें।
5. माँ भगवती आद्याशक्ति, आदिशक्ति, भवानी, जगत जननी कण–कण में व्याप्त हैं। प्रत्येक सांस में व्याप्त हैं, आपके शरीर में व्याप्त हैं, आपके शरीर में उर्जारूप में व्याप्त हैं, जल के रूप में व्याप्त है। केवल उसको जाग्रत करना है। जब ध्यान करो तब वह हाजिर है। जहां ध्यान लगाओ वहां आती है।
6. शुद्धता स्वच्छता पवित्रता का ध्यान रखें।
7. सूतक – पातक नियमों का पालन करें।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दुर्गा सप्तशती के वैदिक आहुति की सामग्री अध्याय के अन्त में एवं बीच में

- प्रथम अध्याय – एक पान, देशी घी में भिगोकर, 1 कमलगट्टा, 1 सुपारी, 2 लौंग, 2 छोटी इलायची, गुग्गुल, शहद, यह सब चीजें सुरवा में रखकर खड़े होकर आहुति देना।
- द्वितीय अध्याय, प्रथम अध्याय की सामग्री अनुसार, गुग्गुल विशेष।
- तृतीय अध्याय, प्रथम अध्याय की सामग्री अनुसार श्लोक सं. 38 शहद
- चतुर्थ अध्याय प्रथम अध्याय की सामग्री अनुसार श्लोक सं. 1 से 11 मिश्री व खीर विशेष। **चतुर्थ अध्याय के मंत्र संख्या 24 से 27 तक इन 4 मंत्र की आहुति नहीं करना चाहिए।** ऐसा करने से देह नाश होता है। इस कारण इन चार मंत्रों के स्थान पर ओंम नमः चण्डिकायै स्वाहा बोलकर आहुति देना तथा मंत्रों का केवल पाठ करना चाहिए। इनका पाठ करने से सब प्रकार का भय नष्ट हो जाता है। रहस्यमय ज्ञान।
- पंचम अध्याय प्रथम अध्याय की सामग्री अनुसार श्लोक सं. 9 मंत्र कपूर, पुष्प, व ऋतुफल ही है।
- षष्टम अध्याय प्रथम अध्याय की सामग्री अनुसार, श्लोक सं. 23 भोजपत्र।
- सप्तम अध्याय प्रथम अध्याय की सामग्री अनुसार श्लोक सं. 10 दो जायफल श्लोक संख्या 19 में सफेद चन्दन श्लोक संख्या 27 से इन्द्र जौं।
- अष्टम अध्याय प्रथम अध्याय की सामग्री अनुसार श्लोक संख्या 54 एवं 62 लाल चंदन।
- नवम अध्याय प्रथम अध्याय की सामग्री अनुसार श्लोक संख्या 37 में 1 बेलफल 40 में गन्ना।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

- दशम अध्याय प्रथम अध्याय की सामग्री अनुसार श्लोक संख्या 5 में समुन्द्र झाग 31 में कत्था।
- एकादश अध्याय प्रथम अध्याय की सामग्री अनुसार, श्लोक संख्या 2 से 23 तक पुष्प व खीर, श्लोक संख्या 29 में गिलोय, 31 में भोज पत्र, 39 में पीली सरसों, 42 में माखन मिश्री, 44 में अनार व अनार का फूल, श्लोक संख्या 49 में पालक, श्लोक संख्या 54 एवं 55 में फूल चावल और सामग्री।
- द्वादश अध्याय प्रथम अध्याय की सामग्री अनुसार, श्लोक संख्या 10 में नीबू काटकर रोली लगाकर और पेठा, श्लोक संख्या 13 में काली मिर्च, श्लोक संख्या 16 में बाल–खाल, श्लोक संख्या 18 में कुशा, श्लोक संख्या 19 में जायफल और कमल गट्टा, श्लोक संख्या 20 में ऋतु फल, फूल, चावल और चन्द्रन, श्लोक संख्या 21 पर हलवा और पुड़ी, श्लोक 40 पर कमल गट्टा, मखाने और बादाम, श्लोक संख्या 41 पर इत्र, फूल और चावल।
- त्रयोदश अध्याय प्रथम अध्याय की सामग्री अनुसार श्लोक संख्या 27 से 29 तक फल व फूल।

जनकारी हेतु –

इन नौ औषधियों में वास है नवदुर्गा का माँ दुर्गा नौ रूपों में अपने भक्तों का कल्याण कर उनके सारे संकट हर लेती हैं। इस बात का जीता जागता प्रमाण है, संसार में उपलब्ध वे औषधियाँ, जिन्हें माँ दुर्गा के विभिन्न स्वरूपों के रूप में जाना जाता है। नवदुर्गा के नौ औषधि स्वरूपों को सर्वप्रथम मार्कण्डेय चिकित्सा पद्धति के रूप में दर्शाया गया। चिकित्सा प्रणाली का यह रहस्य वास्तव में ब्रह्माजी ने दिया था जिसके बारे में दुर्गाकवच में संदर्भ मिल जाता है। ये औषधियाँ समस्त प्राणियों के रोगों को हरने वाली हैं। शरीर की रक्षा के लिए कवच समान कार्य करती है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

1 प्रथम शैलपुत्री यानि हरड़ –

नवदुर्गा का प्रथम रूप शैलपुत्री माना गया है। कई प्रकार की समस्याओं में काम आने वाली औषधि हरड़ हिमावती है जो देवी शैलपुत्री का ही एक रूप है। यह आयुर्वेद की प्रधान औषधि है, जो सात प्रकार की होती है। इसमे हरीतिका (हरी) भय को हरने वाली है।

पथया – जो हित करने वाली है।

कायस्थ – जो शरीर को बनाए रखने वाली है।

अमृता – अमृत के समान।

हेमवती – हिमालय पर होने वाली।

चेतकी – चित्त को प्रसन्न करने वाली है।

श्रेयसी (यशदाता) – शिवा यानी कल्याण करने वाली।

2 द्वितीय ब्रह्मचारिणी यानि ब्राह्मी –

ब्राह्मी, नवदुर्गा का दूसरा रूप ब्रह्मचारिणी है। यह आयु और स्मरण शक्ति को बढ़ाने वाली, रूधिर विकारों का नाश करने वाली और स्वर को मधुर करने वाली है।

इसलिए ब्राह्मी को सरस्वती भी कहा जाता है। यह मन एवं मस्तिष्क में शक्ति प्रदान करती है और गैस व मूत्र संबंधी रोगों की प्रमुख दवा है। यह मूत्र द्वारा रक्त विकारों को बाहर निकालने में समर्थ औषधि है। **अतः इन रोगों से पीड़ित व्यक्ति को ब्रह्मचारिणी की आराधना करना चाहिए।**

3 तृतीय चंद्रघंटा यानि चन्दुसूर –

नवदुर्गा का तीसरा रूप है चंद्रघंटा, इसे चन्दुसूर या चमसूर कहा गया है। यह एक ऐसा पौधा है जो धनिये के समान है। इस पौधे की पत्तियों की सब्जी बनाई जाती है, जो लाभदायक होती है। यह **औषधि मोटापा दूर करने में लाभप्रद** है, इसलिए इसे चर्महन्ती भी कहते हैं। शक्ति को बढ़ाने वाली, हृदय रोग को ठीक करने वाली चंद्रिका औषधि है। अतः इस बीमारी से सम्बन्धित

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रोगी को चंद्रघंटा की पूजा करना चाहिए।

4 चतुर्थ कुष्माण्डा यानि पेठा –

नवदुर्गा का चौथा रूप कुष्माण्डा है। इस औषधि से पेठा मिठाई बनती है, इसलिए इस रूप को पेठा कहते हैं। इसे कुम्हड़ा भी कहते हैं जो पुष्टिकारक, वीर्यवर्धक व रक्त के विकार को ठीक कर पेट को साफ करने में सहायक है। मानसिक रूप से कमजोर व्यक्ति के लिए यह अमृत समान है। यह शरीर के समस्त दोषों को दूर कर ह्रदय रोग को ठीक करता है। कुम्हड़ा रक्त एवं गैस को दूर करता है। इन बीमारी से पीड़ित व्यक्ति को पेठा का उपयोग के साथ कुष्माण्डादेवी की आराधना करना चाहिए।

5 पंचम स्कंदमाता यानि अलसी –

नवदुर्गा का पांचवा रूप स्कंदमाता है जिन्हें पार्वती एवं उमा भी कहते हैं। यह औषधि के रूप में अलसी में विद्यमान है। यह **वात, पित्त, कफ, रोगों की नाशक औषधि है।**

"अलसी नीलपुष्पी पावतती स्यादुमा क्षुमा।
अलसी मधुरा तिक्ता स्त्रिग्धपाके कदुर्गरुः।।
उष्णा दृष शुकवातन्धी कफ पित्त विनाशिनी।"

इस रोग से पीड़ित व्यक्ति ने स्कंदमाता की आराधना करना चाहिए।

6 षष्ठम कात्यायनी यानि मोइया –

नवदुर्गा का छठा रूप कात्यायनी है। इसे आयुर्वेद में कई नामों से जाना जाता है जैसे अम्बा, अम्बालिका, अम्बिका। इसके अलावा इसे मोइया अर्थात माचिका भी कहते हैं। यह कफ, पित्त, अधिक विकार एवं कंठ के रोग का नाश करती है। इससे पीड़ित रोगी को इसका सेवन व कात्यायनी की आराधना करनी चाहिए।

7 सप्तम कालरात्रि यानि नागदौन –

दुर्गा का सप्तम रूप कालरात्रि है। जिसे महायोगिनी, महायोगीश्वरी कहा गया है। यह नागदौन औषधि के रूप में जानी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जाती है। सभी प्रकार के रोगों की नाशक सर्वत्र विजय दिलाने वाली मन एवं मस्तिष्क के समस्त विकारों को दूर करने वाली औषधि है। इस पौधे को व्यक्ति अपने घर में लगाने पर घर के सारे कष्ट दूर हो जाते हैं। यह सुख देने वाली एवं सभी विषों का नाश करने वाली औषधि है। इस कालरात्रि की आराधना प्रत्येक पीड़ित व्यक्ति को करना चाहिए।

8 अष्टम महागौरी यानि तुलसी –

नवदुर्गा का अष्टम रूप महागौरी है, जिसे प्रत्येक व्यक्ति औषधि के रूप में जानता है क्योंकि इसका औषधि नाम तुलसी है जो प्रत्येक घर में लगाई जाती है। तुलसी सात प्रकार की होती है – सफेद तुलसी, काली तुलसी, मरुत, दवना, कुढेरक, अर्जक और षटपत्र। ये सभी प्रकार की तुलसी रक्त को साफ करती हैं एवं हृदय रोग का नाश करती है।

"तुलसी सुरसा ग्राम्या सुलभा बहुमंजरी।
अपेतराक्षसी महागौरी शूलघ्नी देवदुन्दुभिः
तुलसी कटुका तिक्ता हुध उष्णाहाहपित्तकृत्।
मरुदनिप्रदो हध तीक्षणाष्णः पित्तलो लघुः।"

इस देवी की आराधना हर सामान्य एवं रोगी व्यक्ति को करना चाहिए।

9 नवम सिंद्धिदात्री यानि शतावरी –

नवदुर्गा का नवम रूप सिद्धिदात्री है, जिसे नारायणी या शतावरी कहते हैं। शतावरी बुद्धि बल एवं वीर्य के लिए उत्तम औषधी है। वह रक्त विकार एवं वात पित्त शोध नाशक और हृदय को बल देने वाली महाऔषधी है।

सिद्धिदात्री का जो मनुष्य नियमपूर्वक सेवन करता है। उसके सभी कष्ट स्वयं ही दूर हो जाते हैं। इससे पीडित व्यक्ति को सिद्धिदात्री देवी की आराधना करना चहिए। इस प्रकार प्रत्येक देवी आयुर्वेद की भाषा में मार्कण्डेय पुराण के अनुसार नौ औषधी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के रूप में मनुष्य की प्रत्येक बीमारी को ठीक कर रक्त का संचालन उचित एवं साफ कर मनुष्य को स्वस्थ्य करती है। अतः मनुष्य को इनकी आराधना एवं सेवन करना चाहिए।

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।
सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमो स्तुते।।

श्री दुर्गा सप्तशती में निष्कीलन अथवा शापोद्धार किसे कहते हैं

बहुत ही आसान है – साधक को देवीजी की सेवा में उपस्थित होकर अपनी मेहनत से कमाया गया धन, सम्पत्ति देवीजी को अर्पित कर, एकाग्रचित मन से प्रार्थना करना है। हे माता आज से सारा धन तथा अपने आप को भी देवी जी को अर्पित कर देना चाहिएं मैं स्वयं और धन अब मेरा नहीं हैं यह भावना रखें। फिर जितना आवश्यक हो उसमें से प्रसाद स्वरूप धन को ग्रहण करें। और धर्म शास्त्र के अनुसार उसका सद्उपयोग करें। और देवीजी के अधीन रहें। यही निष्कीलन और शापोद्धार है। यदि ऐसा नहीं करते हैं तो विनाश निश्चित है। निष्कीलन और शापोद्धार करने से देवीजी के द्वारा ऐश्वर्य, सौभाग्य, आरोग्य, सम्पत्ति, शत्रुनाश तथा परममोक्ष प्राप्त होता है।

जपे विनियोग व पाठे विनियोग में अन्तर

- प्रथम व मध्यम चरित्र में जपे विनियोग है।
- सप्तशती में जपे विनियोग होता है क्योंकि इसका एक–एक मंत्र जपने लायक है।
- धार्मिक ग्रन्थ का विनियोग छोड़ते है तो उत्तर चरित्र में पाठे विनियोग है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कीलन व उत्कीलन क्या होता है?

- स्थान का कीलन याने बांधना।
- उत्कीलन याने उसको शुद्ध करना चाहे मंत्र हो या घर या फैक्ट्री पहले उत्कीलन करते हैं फिर कीलन करते है। यही क्षेत्ररक्षण का कार्य होता है।

शापोद्धार –

देवीजी का कोई भी मंत्र हो पहले शापोद्धार मंत्र की माला करें –

ऊँ ह्रीं क्लीं श्रीं क्रां क्रीं चण्डिका दैव्यै शाप नाशानु ग्रहं कुरु कुरु स्वाहा

इसके बाद उत्कीलन सप्तशति की एक माला –

ऊँ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशती चण्डिके उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा

दुर्गा सप्तशती के पाठ करने का तरीका –

दुर्गा सप्तशती के तन्त्रों में अनेक पाठ भेद पाएँ जाते हैं उनमें से नौ प्रकार से पाठ करते है –

- **चण्डीपाठ** – प्रथम, मध्यम और उत्तर चरित्र साधरणतयः यह पाठ करते हैं।
- **महातन्त्र** – प्रथम, उत्तर, मध्यम चरित्र
- **महाविद्या** – मध्यम, उत्तर, प्रथम चरित्र
- **सप्तशती** – मध्यम, प्रथम, उत्तर चरित्र
- **मृत सन्जीवनी** – उत्तम, मध्यम, प्रथम चरित्र
- **महाचण्डी** – उत्तर, मध्यम, प्रथम चरित्र
- **रूद्रचण्डी (कुमुदिनी)** – प्रत्येक श्लोक के साथ "रूपं देहि... के साथ नवार्ण मन्त्र का प्रतिश्लोक जप।
- **योगिनी** – चौसठ योगिनी के नामोच्चारण के साथ नवार्ण मन्त्र का सम्पुट।
- **पराचण्डी** – "सौः" बीज मन्त्र का सम्पुट लगाकर पाठ किया जाता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चण्डी , महातन्त्र, महाविद्या, सप्तशती, मृत संजीवनी और महाचण्डी पाठ विधि में कामनानुसार सम्पुट लगाने की परम्परा है। प्रयोजनानुसार दुर्गा सप्तशती के तीन चरित्रों का क्रम परिवर्तन करने से सृष्टि, स्थिति एवं संहार क्रम बनता है।

सृष्टि क्रम –

ऊँ ऐं मार्कण्डेय उवाच, सावर्णिः सूर्य–तनयो यो से प्रारम्भ करके "सूर्यात् जनम समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः"। नव चण्डी में इस क्रम को चण्डी–पाठ नाम से जाना जाता है।

गीताप्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित दुर्गा सप्तशती इसी क्रम से प्रकाशित की गई है।

विवाहार्थी, सन्तानार्थी तथा शान्ति–पुष्टि के लिए इस क्रम से पाठ किया जाता है –

प्रथम चरित्र, मध्यम चरित्र, उत्तर चरित्र

स्थित क्रम –

ऊँ क्लीं ऋषिरुवाच – पुरा शुम्भ निशुम्भाभ्यां (उत्तर चरित्र) से प्रारम्भ करके प्रथम, मध्यम चरित्र पर्यन्त। नव चण्डी पाठ में यह मृत–संजीवनी नामक पाठ बताया गया है।

इस प्रकार पाठ करने से सभी कामना पूर्ण होती हैं – उत्तर, मध्यम, प्रथम

संहार क्रम से पाठ करने का तरीका

मुक्ति चाहने वाले तेरहवें अध्याय के अंतिम श्लोक –

सूर्याज्जन्म समासाद्य से श्लोकवार उल्टे क्रम से पाठ करना होता है। जैसे तेरहवे अध्याय का अंतिम श्लोक अट्ठाईसवाँ, सत्ताईसवाँ, छब्बीसवाँ। अध्याय भी उल्टे तेरहवाँ, बारहवाँ, ग्यारहवाँ आदि। मुक्ति कामी इसी क्रम से पाठ करते हैं।

विलोम क्रम –

विलोम क्रम में श्लोकों को भी उल्टा पढ़ा जाता है। जैसे "नुःम ताविभर्णिः वसा" शेष क्रम संहार क्रम की तरह ही है। उग्र

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रयोजन के लिए यह विधि प्राप्त होती है। मारण प्रयोग करना होतो यह विधि अपनाना चाहिए।

कृपया कोई भी पाठ–क्रम अपनाने से पहले किसी विद्वान से या किसी योग्य गुरू का परामर्श अवश्य लें। **कोई साधक पाठ करें और अज्ञानवश दुष्परिणामों की उत्पति हो तो इसके लिए लेखक / संकलनकर्ता उत्तदायी नहीं।**

दुर्गा सप्तशती का पाठ कैसे करें सम्पूर्ण विधि –

1. कलश की स्थापना करें।
2. गणेश, नवग्रह, मातृका, वास्तु, सप्तर्षि, सप्तचिरंजीव 64 योगिनी, 50 क्षेत्रपाल, रूद्र कलश और सर्वतोभद्रमण्डल, कुलदेवी की पीठ बनाकर पूजा करना।
3. अखण्ड दीपक की व्यवस्था करना।
4. देवी प्रतिमा हो तो अंगन्यास के साथ विधिवत पूजन।
5. नवदुर्गा की पूजा, ज्योत की पूजा, बटुक, कुमारी पूजन, अभिषेक, नान्दीश्राद्ध, रक्षा बन्धन, पुण्याहवाचन, मंगलपाठ, गुरूपूजा, तीर्थ का आवाहन, मंत्रस्नान, आसन शुद्धिकरण, प्राणायाम, भूतशुद्धि प्राण–प्रतिष्ठा, मातृक न्यास, सृष्टिन्यास, स्थिति न्यास, शान्तिकला न्यास, शिवकलान्यास, हृदयादिन्यास, षोडशन्यास, विलोमन्यास, तत्वन्यास, अक्षरन्यास, व्यापक न्यास, ध्यान विशेषार्घ्य, क्षेत्रकीलन मूर्तिपूजन, पूजा विधि, मुद्रा विधि, आवरणपूजा, प्रधानपूजा करके सम्पन्न अनुष्ठान होता है।
6. यह सब कार्य करके ही भगवती की आराधना करके पाठ आरम्भ करना चाहिए।
7. शिखा बांधना है। या सिर पर पगड़ी / टोपी / रुमाल बांधे।
8. पूर्वाभिमुख होकर आचमन करें। लाल आसन का प्रयोग करना है।
9. संकल्प लेना है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

10. पुस्तक की पूजा करें, योनी मुद्रा का प्रदर्शन करें।
11. शापोद्धार करें।
12. उत्कीलन करना है
13. मृत संजीवनी विद्या का जाप करना चाहिए।
14. चण्डी शाप विमोचन मंत्रों के 18 मंत्रों का पाठ करना चाहिए।
15. छः अंगों सहित दुर्गा सप्तशती का पाठ आरम्भ करना चाहिए। छ' अंगों का अर्थ है कवच, अर्गला, कीलक और तीनों रहस्य ये सप्तशती के अंग हैं। कवच याने बीज होता है। अर्गला याने शक्तिका और कीलक याने कीलन का पाठ होना चाहिए।

साधक को श्रीदुर्गा सप्तशती की साधना करते समय आसन –

1. आसन लाल उनी हो सकता है।
2. कुश का आसन हो सकता है।
3. आसन अपना स्वयं का होना चाहिए।
4. जप या हवन करने के बाद आसन को उठा लेना चाहिए।
5. अपना आसन किसी अन्य मनुष्य को नहीं देना।

दुर्गा सप्तशती का पाठ करने के कुछ मूलभूत नियम

1. प्रेम पूर्वक भगवती का ध्यान करते हुए पाठ करना।
2. मीठा स्वर हो, अक्षरों का स्पष्ट उच्चारण हो। ऐसे पाठ करना चाहिए या पण्डितजी या ब्राह्मण से पाठ कराना चाहिए परन्तु स्पष्ट उच्चारण हो जो स्पष्ट उच्चारण नहीं कर सकता हो उससे पाठ नहीं करवायें।
3. ऐसे पण्डितजी से, ब्राह्मण से, शास्त्रीजी से या पाठ करने वाला दुर्गा सप्तशती के मंत्रों का अर्थ नहीं जानता उससे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रयोजन के लिए यह विधि प्राप्त होती है। मारण प्रयोग करना होतो यह विधि अपनाना चाहिए।

कृपया कोई भी पाठ–क्रम अपनाने से पहले किसी विद्वान से या किसी योग्य गुरू का परामर्श अवश्य लें। **कोई साधक पाठ करें और अज्ञानवश दुष्परिणामों की उत्पति हो तो इसके लिए लेखक/संकलनकर्ता उत्तदायी नहीं।**

दुर्गा सप्तशती का पाठ कैसे करें सम्पूर्ण विधि –

1. कलश की स्थापना करें।
2. गणेश, नवग्रह, मातृका, वास्तु, सप्तर्षि, सप्तचिरंजीव 64 योगिनी, 50 क्षेत्रपाल, रूद्र कलश और सर्वतोभद्रमण्डल, कुलदेवी की पीठ बनाकर पूजा करना।
3. अखण्ड दीपक की व्यवस्था करना।
4. देवी प्रतिमा हो तो अंगन्यास के साथ विधिवत पूजन।
5. नवदुर्गा की पूजा, ज्योत की पूजा, बटुक, कुमारी पूजन, अभिषेक, नान्दीश्राद्ध, रक्षा बन्धन, पुण्याहवाचन, मंगलपाठ, गुरूपूजा, तीर्थ का आवाहन, मंत्रस्नान, आसन शुद्धिकरण, प्राणायाम, भूतशुद्धि प्राण–प्रतिष्ठा, मातृक न्यास, सृष्टिन्यास, स्थिति न्यास, शान्तिकला न्यास, शिवकलान्यास, हृदयादिन्यास, षोडशन्यास, विलोमन्यास, तत्वन्यास, अक्षरन्यास, व्यापक न्यास, ध्यान विशेषार्ध्य, क्षेत्रकीलन मूर्तिपूजन, पूजा विधि, मुद्रा विधि, आवरणपूजा, प्रधानपूजा करके सम्पन्न अनुष्ठान होता है।
6. यह सब कार्य करके ही भगवती की आराधना करके पाठ आरम्भ करना चाहिए।
7. शिखा बांधना है। या सिर पर पगड़ी/टोपी/रुमाल बांधे।
8. पूर्वाभिमुख होकर आचमन करें। लाल आसन का प्रयोग करना है।
9. संकल्प लेना है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

10. पुस्तक की पूजा करें, योनी मुद्रा का प्रदर्शन करें।
11. शापोद्धार करें।
12. उत्कीलन करना है
13. मृत संजीवनी विद्या का जाप करना चाहिए।
14. चण्डी शाप विमोचन मंत्रों के 18 मंत्रों का पाठ करना चाहिए।
15. छः अंगों सहित दुर्गा सप्तशती का पाठ आरम्भ करना चाहिए। छ' अंगों का अर्थ है कवच, अर्गला, कीलक और तीनों रहस्य ये सप्तशती के अंग हैं। कवच याने बीज होता है। अर्गला याने शक्तिका और कीलक याने कीलन का पाठ होना चाहिए।

साधक को श्रीदुर्गा सप्तशती की साधना करते समय आसन –

1. आसन लाल उनी हो सकता है।
2. कुश का आसन हो सकता है।
3. आसन अपना स्वयं का होना चाहिए।
4. जप या हवन करने के बाद आसन को उठा लेना चाहिए।
5. अपना आसन किसी अन्य मनुष्य को नहीं देना।

दुर्गा सप्तशती का पाठ करने के कुछ मूलभूत नियम

1. प्रेम पूर्वक भगवती का ध्यान करते हुए पाठ करना।
2. मीठा स्वर हो, अक्षरों का स्पष्ट उच्चारण हो। ऐसे पाठ करना चाहिए या पण्डितजी या ब्राह्मण से पाठ कराना चाहिए परन्तु स्पष्ट उच्चारण हो जो स्पष्ट उच्चारण नहीं कर सकता हो उससे पाठ नहीं करवायें।
3. ऐसे पण्डितजी से, ब्राह्मण से, शास्त्रीजी से या पाठ करने वाला दुर्गा सप्तशती के मंत्रों का अर्थ नहीं जानता उससे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पाठ नहीं कराना चाहिए। संकल्प देने के पहले पाठ स्वयं सुन लें।

4. अध्याय के बीच में पाठ को बन्द नहीं करना चाहिए। यदि किसी कारणवश बीच में विराम लग जाय तो पाठ को दुबारा आरम्भ करें।
5. जो मनुष्य दुर्गा सप्तशती के पाठ का मंत्रों का हवन का, स्तुतियों का महत्व नहीं जानता, अर्थ नहीं जानता उससे पाठ नहीं कराना चाहिए।
6. शुद्ध और स्थिरचित से पाठ करना चाहिए।
7. शुद्ध, स्वच्छ व पवित्र होकर पाठ करना चाहिए।
8. इसका वाचिक पाठ होना चाहिए याने बोलकर, स्पष्ट उच्चारण के साथ पाठ होना चाहिए। मन ही मन में नहीं बोलना चाहिए। इसका विशेषतौर से ध्यान रखें।

देह रक्षा मन्त्र –

श्री दुर्गा सप्तशती की किताब मे ही देह की रक्षा का मन्त्र दिये गये हैं। अलग से रक्षा मंत्र की आवश्यकता नहीं होती है।

छः मंत्र देह की रक्षा के लिए दिये गये हैं जो पहले करन्यास के रूप में बोले जाते हैं फिर हृदयान्यास के रूप में बोले जाते हैं फिर ध्यान बोलते हैं दुर्गाजी का जैसे – सप्तशतीन्यास पेज नम्बर 56 दुर्गासप्तशती से पेज नम्बर 57 ध्यान तक कोई भी हवन करें, जप करें, अनुष्ठान करें, पाठ करे यह शरीर की रक्षा के मंत्र बोल सकते हैं चाहे हनुमानजी की पूजा हो या श्री भैरवजी की या देवीजी की।

मनुष्य चाहे तो रोजाना अपनी घट पिण्ड की रक्षा के लिए घर के बाहर निकलने के पहले इन मंत्रों को बोलकर निकले तो इस शरीर की ऊपरी बाधा से, प्रेतों से, पिशाचों से, राक्षसों से, नकारात्मक उर्जाओं से बचाव हो सकता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

क्या पूरी सप्तशती न पढकर संक्षिप्त में कुछ मन्त्र बोल ले तो माँ की कृपा मिलेगी?

हाँ मिलेगी, क्योंकि माँ तो माँ है। उसे कैसे भी याद करो, कहीं भी याद करो, किसी भी प्रकार याद करो वह अवश्य कृपा करेंगी। बस याद ही तो करना है। हर सास में याद करो, हर क्षण याद करो वही तो प्रकृति है, वही वायु है, वही जल है, वही अग्नि है। मन से, दिल से, आत्मा से याद करो। समर्पण भाव से याद करों।

संक्षिप्त मत्र बोलकर यदि ऊँ दुं दुर्गायै नमः, क्रीं कालिकाये नमः, ऊँ चामुण्डादैव्ये, जयमातादी, कुछ भी बोलो परन्तु स्मरण करते रहना है।

श्रीदुर्गा सप्तशती में सम्पुट शब्द का अर्थ –

सम्पुट याने इकट्‌ठा करना है। किसी न किसी पात्र में इकट्‌ठा करना। दूसरे शब्दों में जो मुख्य मंत्र होते हैं दुर्गा सप्तशती में उनके प्रत्येक मंत्र के आगे व पीछे विशेष मंत्र लगाया जाता है उसे सम्पुट कहते है। इससे उस मंत्र को दिशा व बल मिलता है। इन्हीं से मंत्रो का बीज बनता है। यह प्रक्रिया उस मंत्र की शक्ति बढ़ा देता है और एक तरह से तीर का काम करता है। जो पूर्ण शक्ति के साथ निशाने पर लगता है।

क्या सम्पुट लगाना है, कोन से स्वर या बीज उसमे लिया जावेगा यह गुरु ही बताता है। अपनी मर्जी से कोई भी मंत्र सम्पुट नहीं लिया जा सकता, क्योंकि प्राण शक्ति का संचार होता है ओर वह मंत्रों द्वारा जाग्रत होती है।

सम्पुट का अर्थ क्या होता है? (देवी पूजा) –

कटोरे के आकार की वस्तु या हथेली की अंजली या मृतक का कपाल या खोपड़ी या एक पात्र, डिब्बा, सन्दूक मंत्र के साथ सम्पुट लगाते हैं तो इसका अर्थ है हमको हमारे पात्र में वह वस्तु दे दो। वह पात्र लगा दिया है या डिब्बा लगा दिया या पिटारी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लगा दी जो हम सम्पुट के रूप में बोल रहे हैं।

1. सम्पुटः याने इकट्ठा करने लाया गया।
2. आगे लगाया जाय या मंत्र से पीछे सम्पुट लगाया जाय। आगे लगाना, मूल मंत्र, सम्पुट मंत्र।
3. जिसको भुवनेश्वरी देवी की कृपा प्राप्त करना हो उसे रात्रि सूक्त का पाठ करना चाहिए।

- ऊँ ब्रं ब्रं ब्रं ऊँ श्री श्री ऊँ क्लीं ऊँ (ज्ञान)
- ऊँ श्रीं ह्रीं श्रीं (लक्ष्मी)
- ऊँ ऐं क्लीं सौः (विद्या)
- ऊँ श्रीं ह्रीं क्लीं (वशीकरण मोहन)
- ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं (शत्रुनाशः विघ्ननाश)
- ऊँ ह्रीं (रोग नाश)
- ऊँ आं ह्रीं क्लीं

द्रव्य की रक्षा, मंत्र सिद्धि –

प्रथम अध्याय में – क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं दक्षिण कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं

द्वितीय अध्याय में – ऊँ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ऊँ महालक्ष्म्यै नमः

तृतीय अध्याय में – श्री ह्रीं क्लीं

चतुर्थ अध्याय में – ऊँ ह्रीं दुं दुर्गाय नमः

पंचम अध्याय में – ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं सरस्वयै

छटा अध्याय में – ऊँ आं क्रों ह्रीं ऐं क्लीं ह्रौं पद्मावत्यै नमः

सप्तम अध्याय में – ऊँ ह्रीं क्लीं हुं मातंग्यै फट स्वाहा

अष्टम अध्याय में – ऊँ श्रीं क्लीं ह्रीं भवान्यै नमः

नवम अध्याय में – ह्रीं ह्रीं ऊँ नमः शिवाय ह्रीं ऊँ

दशम अध्याम में – त्रीं त्रीं त्रीं हुं हुं स्त्रीं स्त्रीं कामाख्यै प्रसीद प्रसीद त्रीं त्रीं त्रीं हुं हुं स्त्रीं स्त्रीं स्वाहा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एकादश अध्याय में – ऊँ ह्रीं भुवनेश्वरी
द्वादश अध्याय में – ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डयै
त्रयोदश अध्याय में – ह्रीं श्रीं द्रां द्रीं क्लीं क्लुं जं जौं कामेश्वरी वाणदेवतायै

दुर्गा शब्द का अर्थ

द, उ, र, ग, आ

द – दैत्यनाशक, उ – उत्पात नाशक, र – रोग नाशक, ग – शोक नाशक, आ – क्रोध नाशक

अर्थात – माँ दुर्गा की उपासना करने से सभी प्रकार के कष्ट, दुःख, रोग, क्रोध, शोक, ताप का नाश होता है।

सप्तशती का अर्थ –

सप्त याने सात, शती याने 100 इसका अर्थ हुआ 700 सौ श्लोकों को सप्तशती कहा जाता है। माँ भगवती जगतजननी के 700 श्लोकों में पूर्ण कथाएँ हैं। इसलिए दुर्गा सप्तशती कहा जाता है।

शतचण्डी –

चण्डी के 100 पाठ कराने को शतचण्डी कहा जाता है।

प्रश्नः– दुर्गा सप्तशती में आये हुए शब्दो का अर्थ

1. **मारण :–** इसका अर्थ होता है किसी को जान से मारना।
2. **मोहनः–** किसी के मन को मुग्ध करना, जिसको मोहिनी विद्या भी कहते है।
3. **स्तम्भन–** किसी मनुष्य को, मशीन को, वस्तुओं को, रोकने का कार्य।
4. **विद्वेषणः–** दो प्रेमी मनुष्यों में लड़ाई झगड़ा कराना
5. **उच्चाटनः–** किसी मनुष्य के मन को भटकाना या अधिक चंचल कर देना, या अस्थिर कर देना।
6. **वशीकरणः–** किसी मनुष्य, पशु को वश में करना यह सब षट्कर्म की परिभाषा में आते है। यह तंत्र के अंग है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विशेष मन्त्र से कष्टों से मुक्ति –

ऊँ जयन्ती, मंगला, काली, भद्रकाली, कपालिनी
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।

यह मंत्र ग्यारह देवीजी के नाम को मिलाकर बनाया गया है। जो मनुष्य इस मंत्र को बोलता है उसे विजयश्री, बन्धन मुक्ति, सुख मिलता है, क्लेश का नाश, अपराध क्षमा होते है, कल्याण हो जाता है, पितृ प्रसन्न होते हैं, सभी देवता प्रसन्न होते हैं। याने प्रत्येक देवी का अलग–अलग कार्य है। उसको याद करोगे तो वह आपका कार्य अवश्य करेगी। आप याद करके तो देखे। ओर हवन करके क्रियात्मक प्रयोग अवश्य करें। इस मंत्र का हवन नीबू, लौंग, काली मिर्च, इलायची, पीली सरसों, काली राई, मिश्री, उड़द, घी, शहद विभिन्न प्रकार की जड़ी बुटियों के पावडर से हवन करें – (अगर –तगर–छार छबीली–कपूर काचली– कपूर-जायफल– जावित्री– जटामांसी– खोपरा– पंचमेवा)

1. **जयन्ती देवी** – यह देवी आपको सबसे उत्कृष्ट एवं विजयशालिनी बना देती है।
2. **मंगला देवी** – यह देवी को बार–बार बुलाने पर, आवाहन करने पर अपने भक्तों के जन्म–मरण और संसार के बन्धन को दूर करती है। यह मोक्ष प्रदान करती है।
3. **काली** – जो प्रलयकाल में सम्पूर्ण सृष्टि को अपना ग्रास बना लेती है। मोक्ष देने वाली है।
4. **भद्रकाली** – भक्तों को सुख देने वाली है।
5. **कपालिनी** – हाथों में कपाल रखने वाली मुद्रा मुक्ति देती है।
6. **दुर्गा** – जो आपके लिए दुःसाध्य है उसे प्राप्त करवा देती है।
7. **क्षमा** – अपराध क्षमा करने वाली।
8. **शिवा** – कल्याण करने वाली।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

9. **धात्री** – सभी प्रपंच को धारण करने वाली।
10. **स्वाहा** – देवताओं तक हवन की शक्ति पहुँचाने वाली।
11. **स्वधा** – पितृ प्रसन्न होते हैं। आपके द्वारा पितृों के लिए किया गया हवन उन तक पहुँचाने का कार्य करती है।

केवल एक मन्त्र से आपके ग्यारह काम बनते हैं तो याद क्यों नहीं करते। यह बड़ी बिडम्बना है। **मेरा धर्म था आपको दुर्गा सप्तशती का रहस्यमय ज्ञान देना। मानना या नहीं मानना आपके स्व विवेक पर निर्भर करता है।** मानो या न मानो यही सत्य है। यदि आपने पापकर्म कर लिये हैं तो अभी भी समय पर इस पर विचार करें। सोचें और अमल करें, जीवन सुधर जावेगा।

राग और द्वेष क्या है? (मधुकैटभ राक्षस) – इनका नाश कैसे हो सकता है?

जब हमारा लगाव किसी से या कहीं होने लगता है, तो उसे राग या आसक्ति कहते हैं। ये लगाव यूं ही नहीं होता। इसके पीछे वहाँ से मिल रहे सुख होते हैं या सुख मिलने की उम्मीद होती है, चाहे वह घर हो, घरवाले हो, रिश्तेदार हों या फिर सुख–सुविधा के साधन। इसका पता तब लगता है जब सुख मिलना बंद हो जाए या अहम को ठेस पहुँचे। ऐसे में व्यक्ति दुःखी हो जाता है और फिर यहीं से द्वेष जन्म लेता है। जहाँ राग था, अब द्वेष हो गया। बिना राग के द्वेष नहीं होता।

ये राग–द्वेष जिन्दगी भर चलता रहता है। इसकी जड़े मन में इतनी मजबूत हो जाती हैं कि इनके संस्कार जन्म–मरण की वज़ह बनने लगते हैं और आने वाला जन्म इन्हीं पर निर्भर करने लगता है। फिर जन्म वहीं होता है, जहाँ पहले राग या द्वेष था। हो सकता है, जो आज दुश्मन है, अगले जन्म में वही बेटा बन जाए, इस जन्म में जो माँ है, वह बेटी बन जाए, जो आज आपका नौकर है, अगले जन्म में मालिक बन जाए। जिस घर से आज ज्यादा राग है, हो सकता है, कल कुत्ता बनकर उसी घर के आगे बैठे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रहें। कुछ साधक केवल द्वेष दूर करने में लग जाते हैं। जिनसे द्वेष होता है, उन्हें मनाने लगते हैं, लेकिन यह भूल जाते हैं कि जहाँ से राग था, वहीं से द्वेष आता है और जहाँ से द्वेष है, द्वेष के दूर होने पर वहीं से राग भी पैदा होने लगता है। इसलिए हमें द्वेष के साथ–साथ राग को भी दूर करने की कोशिश करनी चाहिए। जब राग ही नहीं रहेगा, तो द्वेष कैसे पैदा होगा? राग दूर करने के लिए अपने सीमित प्रेम को बढ़ाते जाओ, इतना बढ़ाओं कि संसार में सबके लिए एक जैसी प्रेम भावना आ जाए। न किसी के लिए कम, न किसी के लिए ज्यादा। राग–द्वेष समाप्त करने का तरीका है सभी के लिए, सभी से एक समान प्रेम करो। जहाँ पर आसक्ति याने प्रेम होगा याने राग होगा वहाँ पर मधु नामक राक्षस वास करता है। और जहाँ पर द्वेष होगा याने झगड़ा होगा याने किसी से नफरत होगी वहाँ पर कैटभ नामक राक्षस का वास होता है। इसलिए माता की कृपा चाहिए तो राग व द्वेष दोनों से दूर रहना है।

मधुकैटभ / राग–द्वेष प्रथम अध्याय की व्याख्या –

मधुकैटभ वध –

पांच इंद्रियों में आँख और कान सबसे अधिक कल्याण करने वाली मानी जाती है, क्योंकि कानों से सुना जाता है और आँखों से देखने पर प्रसन्नता होती है।

सुनना भी तीन प्रकार का होता है – सात्विक, राजस और तामस

सात्विक सुनना – तीन प्रकार के होते है – उत्तम, मध्यम और निकृष्ण

उत्तम सुनना – देवी–देवताओं की कथा, भजन, एवं चरित्र को सुनना जिससे मोक्ष की प्राप्ति होती है।

मध्यम सुनना – स्वर्ग जिससे मिलता हो वह मध्यम है।

निकृष्ट – अधम सुनना जिससे भोग मिलता हो।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कथा –

श्रीमद्देवी भागवत के कथा अनुसार जब त्रिलोकी जल मग्न थी, उस समय श्रीविष्णु शेषनाग की शैय्या पर सोए हुए थे, तभी उनके कान के मेल से मधुकैटभ नाम के दो राक्षस उत्पन्न हो गए। उन्होंने समुद्र में ही यह सोचा कि हम क्यों उत्पन्न हुए, किसलिए उत्पन्न हुए, जल में ही हम क्यों उत्पन्न हुए, हमारे जन्मदाता कौन है, इत्यादि प्रश्नों को जानने के लिए उन्होंने इस प्रश्न को भगवती महामाया जगजननी की कठोर तपस्या प्रारम्भ कर दी। तपस्या में उनको वाग्बीज (ऐ शब्द की आकृति) आकाश में दिखाई दी, उन्होंने इसी को मंत्र समझकर 1000 वर्षों तक कठिन तपस्या की। कोई भी प्राणी चाहे देव हो, दानव हो या मानव हो यदि वह अपने ध्यान, योग, जप, तप, हवन करता है तो उसका फल अवश्य मिलता है। उस मंत्र के प्रभाव से माँ भगवती जगतजननी भवानी प्रसन्न हो गई और आकाशवाणी हुई कि मैं तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न हूँ। स्वेच्छा से वर मांगो। इस प्रकार मधुकैटभ ने कहा – हमे स्वेच्छा मृत्यु का वरदान दो। माताजी उन्हें तथास्तु कहकर अंर्तध्यान हो गई।

दोनों राक्षस अपने स्वेच्छा का वरदान पाकर बड़े प्रसन्न हुए उन्हे घमंड हो गया कि उन्हें कोई मार नहीं सकता इसलिए उन्होंने अभिमान में आकर देवताओं पर अत्याचार करना प्रारम्भ कर दिया। सर्वप्रथम ब्रह्माजी पर उन्होंने युद्ध करने के लिए दबाव बनाया। ब्रह्माजी चिंतित हो गए और श्रीहरि विष्णु को जो शेषनाग की शैय्या पर वैकुण्ठ में सोए हुए थे उनको जगाया। प्रभु मेरा दुःख दूर करें। ब्रह्माजी के बहुत प्रयास करने पर भी गहरी नींद में सोए हुए विष्णु को जगाने का प्रयास किया। परन्तु वह योगनिद्रा के प्रभाव में आकर सो रहे थे। निद्रा के अधीन होकर वह बेसुध थे। जब निद्रा के अधीन हो जाते हैं तो सत्ता कहां बचती है। तब ब्राह्माजी ने योगनिद्रा की स्तुति की निन्द्रा श्रीहरि विष्णु के शरीर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

से निकलकर खड़ी हो गई। शक्ति खड़े होते ही भगवान श्रीहरि विष्णु की निद्रा दूर हो गई ब्राह्माजी से बोले कि अपना जप-तप छोड़कर क्यों आ गए। तब ब्राह्माजी बोले कि मधुकैटभ नाम के दो राक्षस आपके कान के मैल से उत्पन्न हुए हैं, बड़ें भयंकर है। उन्होंने मुझे युद्ध के लिए ललकारा है। मैं वहां से भागकर आपके पास आया हूँ। तभी दोनों दैत्य ब्राह्माजी को खोजते हुए समुद्र में आ पहुँचे।

इस प्रकार श्रीहरि विष्णु ने मधुकैटभ से युद्ध किया। 5 हजार वर्षों तक मधुकैटभ के साथ युद्ध किया परन्तु जीत नहीं पाए। श्रीहरि विष्णु ने मृत्यु के कारण के लिए शांतचित भाव से सोचा इन्हें इच्छा मृत्यु का वरदान है। यह सोचकर श्रीहरि विष्णु की नींद लग गई और उन्होंने देखा कि माँ कल्याणमयी देवी भगवती भुवनेश्वरी के द्वारा वरदान दिया है तो इसका उपाय भी उन्हीं के पास है। देवी द्वारा बताया गया कि मैं उन्हें अपने मोह में डालूंगी और तुम उनको ठग कर मार देना।

पुनः युद्ध शुरू हुआ वहीं पर भगवती उपस्थित हुई और उन्होंने दोनों मधुकैटभ को अपने मायावी प्रभाव से प्रेम और मोह में डाल दिया दोनों का शरीर मोहित हो गया। जब दैत्य मोहित हो गए, तब श्रीविष्णु ने दैत्यों से कहा वीरों तुम्हारे युद्ध कौशल से हम अत्यंत प्रसन्न हैं तुम्हें जो इच्छा हो वह वर मांग लो– तब दैत्यों ने विष्णु जी से कहा हम मांगने नहीं आए हैं तुम हमें क्या दोगे। **अभिमान में भरकर दैत्यों ने कहा विष्णु तुम्हें ही हम देने को तैयार हैं हम याचक नहीं दाता हैं। तुम्हें जिस वर की अभिलाषा हो वह मांग लो।** तभी मधुकैटभ की बात सुनकर श्रीहरि बोले तुम लोग मुझ पर प्रसन्न हो और देना चाहते हो तो यह वर दो कि तुम दोनो (मधुकैटभ) मेरे हाथ से मारे जाओ। यह सुनकर दोनों राक्षस आश्चर्य में पड़ गए और सोचा कि हम ठग गए हमारे साथ धोखा हुआ। फिर मधुकैटभ ने श्रीहरि विष्णु से

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एक वर मांगा कि **जहाँ पर जल न हो उस स्थान पर हमारा वध हो।** इस प्रकार श्रीहरि विष्णु ने अपने शरीर को इतना फैलाया कि समुद्र से उनका शरीर ऊपर आया और अपनी जांघ पर उनके शरीर को रखकर अपने चक्र से काट डाला। इस प्रकार मधुकैटभ का वध हुआ तथा उनका शरीर वध के पश्चात् समुद्र में रह गया था। उसे पृथ्वी के रूप में जाना जाने लगा। तभी से पृथ्वी का नाम मेदिनी पड़ा। **मधुकैटभ के मारे जाने की वज़ह से समुद्र की मिट्टी खाना निषेध है** और इसको **घर पर लाना भी निषेध है।** (स्तुति – मधुकैटभ विद्राविविधात्र) मधु का अर्थ शहद, शहद मीठा होता है। कैटभ का अर्थ कांटे होता है। दोनों एक दूसरे के विपरीत हैं फिर भी दोनों साथ रहते हैं। इसका अर्थ है कि जो मनुष्य आपके पास आकर शहद जैसा मीठा बोलने लगे, आपकी चमचागिरी करने लगे, बार–बार चरणों में गिरने लगे तो समझो मधु नाम राक्षस आपके घर में प्रवेश हो चुका है। वह व्यक्ति निश्चित् तौर से नुकसान करेगा। क्योंकि जो मनुष्य मीठा–मीठा बोलेगा तो हमें कानों से ही सुनना पड़ेगा और मधु नाम के राक्षस की उत्पत्ति भी कानों के मैल से हुई थी।

कैटभ (द्वेष) – कोई व्यक्ति आपको ज्यादा उल्टी सीधी बातें बोले, मन को खिन्न कर दे, कटुवचन बोले, तो समझो आपके जीवन में कांटे बोने वाला राक्षस कैटभ उत्पन्न हो गया है। मधुकैटभ की वज़ह से कच्चे कान होने की वज़ह से दो भाईयों मे शत्रुता हो जाती है। एकता को भंग कर देते हैं। इस समय पर मनुष्य को अपनी **बुद्धी का प्रयोग कर** इसका हल करना चाहिए। हल निकलने पर निदान मिल जाता है। आत्मविश्वास बढ़ जाता है, साहस बढ़ जाता है, इच्छा शक्ति बढ़ जाती है।

समुद्र का मतलब–जल, जल का मतलब–पानी, पानी हमेशा अस्थिर होता है। **पानी का बंधन मन से है** इसलिए मधुकैटभ दोनों **मन को खराब** करते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उदाहरण – एक परिवार में सास–ससुर और दो पुत्र और दो पुत्रवधु रहते थे। इसी समय पड़ोस की एक स्त्री द्वारा सास को बोला गया कि तुम्हारी दोनों बहुएं बहुत अच्छी हैं, परन्तु तुम उनसे अपने हाथ–पैर दबवाकर सेवा करवाया करो। उनकी कान में उस पड़ोसन द्वारा मधुर वचन के साथ–साथ कांटे वाले वचन भी बोल दिए गए। **हाथ पैर दबवाना–कैटभ, बहुत अच्छी बहुएं–मधु**। दोनों भाइयों में बड़ा प्रेम था। बड़े भाई के मित्र ने कान में बात डाली कि तुम्हारा भाई दिन भर पड़ा रहता है। उसके बीवी बच्चों को तुम कमाकर खिला रहे हो, बहुत अच्छा नेक काम कर रहे हो, परन्तु कब तक तुम उस निठल्ले भाई के परिवार को खिलाते रहोगे। यह सुनकर बड़े भाई के **मन में रोष उत्पन्न** हुआ और घर आकर उसने माता–पिता से कहा कि कब तक मै ही सबेरे से शाम तक लगा रहूं, कब तक मैं ही खिलाता रहूंगा, ये काम पर क्यों नहीं जाता है। मैं अलग हो जाऊंगा। मैं इसको बैठाकर नहीं खिला सकता। इस प्रकार मधुकैटभ **कान के माध्यम से श्रवण के माध्यम** से उत्पन्न हुए और घर को तोड़ दिया। एकता को भंग कर दिया, इसलिए मनुष्य को मधुकैटभ नाम के दैत्यों से बचना चाहिए।

देश का पहला तंत्र स्कूल
देवराधा ट्रस्ट (पंजीकृत)
बुधनी तहसील, ग्राम बुधनी
जिला सिहोर, मध्यप्रदेश
तन्त्र स्कूल, मन्त्र सिखने का स्कूल
भागवत प्रवचन स्कूल, ज्योतिष सिखाने
का स्कूल वास्तु ज्ञान, साधना स्थली

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महिषासुर की उत्पत्ति कैसे हुई/रक्तबीज की उत्पत्ति कैसे हुई?

सुमेरू पर्वत ने दस हजार वर्षों तक तपस्या की।

महाराज – दनु के दो पुत्र थे – रंभ, करंभ दोनों संतान हीन थे।

करंभ ने जल में बैठकर, रंभ दूध वाले वटवृक्ष के नीचे बैठकर अग्नि की तपस्या की।

इंद्र ने अपना आसन हिलता देख जल में प्रवेश कर करंभ को वहीं समाप्त कर दिया। रंभ के भाई के मरण ऐहसास होते ही क्रोध की उत्पत्ति हुई, अग्नि देव प्रकट हुए।

अग्नि देव से वरदान लिया–रंभ ने

वरदान मिला– त्रिलोकी पर विजय पाने वाला पुत्र उत्पन्न हो, देव, दानव, मानव, उसे मार न सके, केवल स्त्री ही मार सके, इच्छानुसार रूप परिवर्तन कर सके।

पशुभाव के कारण कामवासना से सहित होने के कारण एक भैंस (महिषी), पर उस दानव की दृष्टि पड़ गई। भैस जवानी के मद से चूर थी। रंभ उस पर आसक्त हो गया। उसके वीर्य से महिषी गर्भवती हो गई थी। रंभ दूसरे भैसे की लड़ाई में मारा गया। महिषी को यक्षों ने बचाया। यक्षों ने रंभ का दाह संस्कार किया, महिषी में पति के शरीर के साथ गर्भवती होकर भी सती हो गई उसी समय **चिता के बीचों बीच से महाबली महिषासुर निकला** और अपने तपस्या के तेजबल से रंभ भी दूसरा शरीर धारण कर **रक्तबीज के रूप में चिता** से निकला। इस प्रकार दोनों दानवों की उत्पत्ति हुई।

इस कहानी से यह शिक्षा मिलती हैं कि जब भी शमशान में जावें ये दोनों असुर मनुष्य के साथ चिपक कर आते हैं, क्योंकि शव में से जलती हुई चिता से धुआँ निकलता हैं। अतः घर के बाहर नहाना चाहिए, कपड़े गीले करना चाहिए, ताकि दरवाजे के बहार दहलीज पर ही दोनों रुक जावें। यदि ये दोनों **महिषासुर**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(जुडत्व) **याने पशु प्रवृत्ति और रक्तबीज** (तृष्णा) (नकारात्मक विचार) घर में आ जाते हैं तो घर तबाह हो जाता है।

महिलाओं को श्मशान नहीं जाना चाहिए, इसके पीछे कारण है कि शमशान में नकारात्मक ऊर्जा अधिक होती है (जैसे भूत, प्रेत, पिशाच, चुडैल, डाकन, काली, क्रोध, अघोर, ओघड़, वीर इत्यादि चाण्डालिनी, चण्डी)। स्त्री का शरीर ईश्वर ने कोमल बनाया हुआ है, आत्मा कमजोर होती है, उसमें चन्द्रमा का प्रभाव अधिक होता है। रजस्वला से वह प्रतिमाह अशुद्ध होती है। नकारात्मक ऐसे कमजोर दिल वालों पर अशुद्धता वालों पर, अपवित्र वाले मनुष्यों पर जल्दी लगती है, क्योंकि नकारात्मक ऊर्जा में कामवासना अधिक होती है।

श्मशान से सीधे अपनी दुकान, मकान, फैक्ट्री, आहता, कार्य करने के स्थान पर नहीं जाना बिना नहाये–धोये बच्चे को गोदी में नहीं उठाना। बच्चे को श्मशान नहीं ले जाना चाहिए। लड़की/स्त्री/पत्नी के द्वारा दाह संस्कार नहीं करवाना चाहिए।

महिषासुर वध कथा –

श्री दुर्गाजी की उत्पत्ति

परम तेजस्वी दुर्गाजी आदि शक्ति असुरों के अत्याचार से तंग आकर जब देवता ब्रह्माजी के पास गये तब ब्रह्माजी ने बताया कि असुरराज देत्यराज महिषासुर (भैसा) के पास वरदान है कि उसकी कुंवारी कन्या के हाथ से मृत्यु होगी उसे इच्छानुसार रूप धारण करने का आशीर्वाद प्राप्त था। तब देवताओं ने अपने सम्मिलित तेज से देवी के इस रूप को प्रकट किया –

भगवान शंकर –मुख

यमराज – मस्तक के केश, विष्णु –भुजाएँ, वरुण – जंघा, पृथ्वी –नितम्ब, ब्रह्मा –चरण, सूर्य – दोनों पैरों की अंगुलियाँ, प्रजापति – दांत , अग्नि – नेत्र, संध्या – भौहें, वायु –कान, अन्य

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देवता – देवी के भिन्न–भिन्न अंग बने।

माँ दुर्गाजी के दस रूप हैं जिनको अधिकांश व्यक्तियों द्वारा, साधकों द्वारा पूजा जाता है। यह दश महाविद्या अचूक सिद्धि प्रदान करती है।

कथा –

महिषासुर (पशु प्रवृत्ति) (पाशविक प्रवृत्ति) के पिता रंभ असुरों का राजा था जो जल में रहने वाले भेंस से प्रेम कर बैठा इन्हीं योग से महिषासुर का जन्म हुआ। इसी वज़ह से महिषासुर इच्छानुसार जब चाहे तब मनुष्य का और भैसे का रूप धारण कर सकता था।

महिषासुर ने ब्रह्माजी की बहुत तपस्या की (10 हजार वर्षों तक) और वर प्राप्त कर लिया कि कोई भी दानव या देवता उस पर विजय प्राप्त नहीं कर सकता। नौ दिन तक दुर्गाजी ने युद्ध किया। महिषासुर जो आधा इंसान है और आधा भैसा के रूप में हम तस्वीर देखते हैं वह इंसान की पाशिवक, पशु प्रवृत्ति का प्रतीक है। मनुष्य अपनी पशु प्रवृत्ति को समाप्त करे एवं श्री देवी जगदम्बा को नौ दिन व्रत उपवास, त्याग, तपस्या से अपने अंदर की पशु प्रवृत्ति को समर्पित करे।

देवी द्वारा महिषासुर का वध संहार इंसान में पशु प्रकृति को समाप्त करने का प्रतीक है।

धुम्रलोचन – धुधंली दृष्टि (उद्देश्य ही जीवन)–

हिमालय पर माता जगतजननी पार्वती दुर्गा रूप में हुंकार भर रहीं महासुन्दरी ने जब शुम्भ से विवाह प्रस्ताव ठुकरा दिया तब धुम्रलोचन को कहा गया कि उस देवी के केश पकड़कर घसीटते हुए लाया जाय, यदि इसी बीच मे कोई भी देवता, यक्ष, गंधर्व बाधा बने तो उसे मार दिया जाये। यह आज्ञा पाकर धुम्रलोचन 60000 हजार राक्षसों की सेना को लेकर देवी जी से युद्ध करने चल दिया। माँ की हुंकार से व देवीजी के सिंह ने उसको एवं उसकी सेना को क्षणभर में मार गिराया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

धुम्रलोचन का अर्थ –

धुम्र यानी धुंआ, लोचन माने नेत्र, नेत्रों के सामने धुंआ आ जाता है तो कुछ दिखाई नहीं देता, वह भटकता है। उद्देश्यहीन जीवन को धुम्रलोचन अपने आने का उद्देश्य जानकर अपने जीवन से धुम्रलोचन को भस्म कर देवी शरणामृत मे जाता हैं ।

देवभूमि, हिमाचल प्रदेश में कांगड़ा जिला में 51 शक्तिपीठ में से एक पीठ चामुण्डा मन्दिर के रूप में विख्यात है। यहाँ पर माता सती के चरण गिरे थे।

चण्डमुण्ड का अर्थ –

चण्डमुण्ड का अर्थ प्रवृत्ति व निवृत्ति है। याने काम व कोध है। बेमतलब का तर्क–वितर्क या बेमतलब हिंस करने वाला। इसमें भी कालिका की उत्पत्ति हुई है। दुर्गा सप्तशती के सप्तम अध्याय में वर्णित कथा के अनुसार एक बार चण्डमुण्ड नामक दो महादैत्य देवी से युद्ध करने के लिए आये। महादेवी ने अपनी भृकुटी के तेज से कालिका को उत्पन्न किया और उन्होंने उन दोनों दैत्यों असुरों का संहार करके, जब चण्डमुण्ड के सिर देवी को उपहार स्वरूप भेंट किये तो देवी ने प्रसन्न होकर काली को वर दिया कि तुमने चण्डमुण्ड का वध किया है इसलिए आज से तुम चामुण्डा देवी के नाम से विख्यात होगी। तब से काली को चामुण्डा के रूप में पूजा जाता है। चामुण्डा पार्वती का ही एक रूप है।

मुण्ड – बिना बात का (बेमतलब)

चण्ड – कोध, उग्र, तीव्र

1. उग्र बिना बात का
2. बिना वजह कोध करने वाला
3. बिना वजह हिंसा करने वाला

रक्तबीज –

रक्तबीज ऐसा दानव था जिसे यह वरदान था कि जब–जब उसके खून की बूंद इस धरती पर गिरेगी तब–तब हर खून की

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बूंद से उसके जैसा, प्रतापी, बलशाली, शूरवीर नया रक्तबीज जन्म लेगा। जब माँ देवी चण्डिका को यह पता चला तो देवी चण्डिका ने अपने भयंकर क्रोध से विकराल काली को उत्पन्न किया। देवी चण्डिका ने काली से कहा इस असुर की हर बूंद को पीती जाओ ताकि दूसरा रक्तबीज उत्पन्न न हो सके। काली ने ऐसा ही किया। प्रत्येक बूंद को खप्पर में भर–भर पी गई ताकि रक्त की बूंद नीचे न गिरे। जो दानव रक्त की बूंद से जिव्हा पर उत्पन्न हो गये उन्हें वह चट कर के खा गई इस तरह समस्त रक्तबीज का रक्त समाप्त होने पर वह रक्तहीन होकर देवी द्वारा मारा गया।

रक्तबीज का अर्थ क्या है?

(आकांक्षा , प्यास, इच्छा, तृष्णा) रक्तबीज एक तृष्णा है। जो मनुष्य में उत्पन्न हो जाये तो कभी समाप्त नहीं होती है। दिनों दिन बढ़ती जाती है। ठीक इसी प्रकार

राक्षस– वह जिससे लड़ता वह बढ़ता ही जाता था।

अर्थ – मनोग्रन्थियाँ, जड़ता, गहरी नकारात्मकता

तृष्णा की नदियां मनुष्य को बहुत प्यारी और मनोहर लगती हैं जो इनमें नहाकर सुख खोजते हैं उन्हें बार–बार जन्म मरण और बुढापे के चक्कर में पड़ना पड़ता है। तृष्णा एक प्यास है, इच्छा है, आकांक्षा है दान से ही परलोक–लोक सुधरता है। पहले साधारण इच्छा उत्पन्न होती है वह बढ़कर तृष्णा बनती है। तृष्णा पैदा होने पर प्रमाद और पाप आकर उसका साथ देते हैं। (ऐश–आराम, अय्याशी) फिर मनुष्य अपने होश गंवा बैठता है और अंध बनकर मन के पीछे लगता है और उसका सहारा लेकर वह अंधे हाथी की तरह गहरे गड्डे में गिरता है।

तृष्णा –

मनुष्य को जिसकी भूख होती है, तृष्णा होती है। उसको प्राप्त करने के लिए यंत्र, मंत्र, तंत्र के द्वारा उस भूख को शान्त करना चाहिए। उस (भूख) कार्य के अधिपति देवता की अंत तक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आराधना करना चाहिए। जैसे धन की भूख, प्रतिष्ठा की भूख, मान–सम्मान, लक्ष्मी की भूख, बेटे की भूख, मुक्ति, भुक्ति, धन, दौलत इत्यादि। जहाँ से उसका निकलना कठिन होता है। जहाँ पर तृष्णा रहती है वहाँ पर चिन्ता साथ में रहती है।

तृष्णा कई प्रकार की होती है –

1. अप्राप्त को पाने की ईच्छा
2. पिपासा, लालसा
3. प्रबल वासना या कामना वासना की प्यास कभी नहीं बुझती।

तृष्णा पाँच प्रकार की होती है –

1. **अति तृष्णा**– अत्यन्त लोभ, लालच, वासना
2. **भव तृष्णा**– उपभोग सुख की वस्तुएँ पाने की लालसा
3. **भोग तृष्णा** – विलास की कामना भोग की प्रबल इच्छा
4. **मृग तृष्णा** – भ्रम उत्पन्न करती है।
5. **विरक्ती तृष्णा** – विरक्ति, तृष्णा का अभाव, घृणा, अरुचि

जवानी गई बुढ़ापा आया, शरीर की शक्ति चली गई। परन्तु तृष्णा नहीं मिटती है। कुछ और भी कर लूं बच्चों के लिए कुछ कर जाऊं, संसार का सुख भोग लूं, बच्चों का विवाह हो जाये, बच्चे पैदा हो जायें, नौकरी परिवार बस जाये।

महाकाली और काली में क्या अन्तर है?

साधारणतः सामान्य मनुष्य दोनों को काली माता मानकर पूजन–अर्चन करता है। परन्तु दोनों मे अन्तर है। शिवजी पर जिस शक्ति ने पैर रखा था वह काली थी, महाकाली का पैर शिवजी पर नहीं है। महाकाली शिवजी की पत्नी है। काली की उत्पत्ति चण्डिका के शरीर से युद्ध में हुई इसलिए काली है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महाकाली का सम्पूर्ण प्रकृति पर अधिकार है। उनका एक पैर शिवजी पर नहीं है। महाकाली के 20 हाथ हैं 10 मुहवाली है। काली के केवल चार हाथ हैं। एक हाथ में मुण्ड, दूसरे में खप्पर, तीसरे में खड्ग, तो चौथे में अभय मुद्रा है। एक पैर शिवजी पर है।

शुम्भ – निशुम्भ का वध –

शुम्भ निशुम्भ महर्षि कश्यप और दनु की सन्तान थे। चण्डिका और उग्र तारा दोनों ने मिलकर भयंकर, विकट युद्ध करते हुए शुम्भ का वध किया। शुम्भ याने अहंकार। अहंकार का नाश करना चाहिए। नौ दिनों में मनुष्य को जगत जननी आदि भवानी की कृपा प्राप्त करना हो तो अपना अहंकार का त्याग कर देना चाहिए। अपने अहंकार का वध करना है। क्योंकि अहंकार से बुद्धि नष्ट होती है और ज्ञान का भी नाश होता हैं अहंकारी मनुष्य के सब काम बिगड़ जाते है।

देश का पहला तंत्र स्कूल
देवराधा ट्रस्ट (पंजीकृत)
बुधनी तहसील, ग्राम बुधनी
जिला सिहोर, मध्यप्रदेश
तन्त्र स्कूल, मन्त्र सिखने का स्कूल
भागवत प्रवचन स्कूल, ज्योतिष सिखाने
का स्कूल वास्तु ज्ञान, साधना स्थली

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उदाहरण – क्या मनुष को दीवाल पकड़ सकती है। कोई रास्ता बतावें की दीवाल मुझे छोड़ दे क्या कोई दीवाल किसी मनुष्य को पकड़ा सकती है और उसे छोड़ने को तैयार नहीं यह भ्रम हैं की दीवाल ने पकड़ रखा है। हम स्वयं उसको पकड़े है न कि उसके आने से जिसकी आँखों पर अहंकार का पर्दा पड़ा हो उसे न तो दूसरों के गुण दिखाई देते हैं और न ही अपने अवगुणों का पता चलता है। जो जानते हुए भी अहंकार वश सच को स्वीकार नहीं करता उसे बृहस्पति जैसा गुरु भी कुछ नहीं सिखा सकता है और जिसमें **लेशमात्र भी अहंकार नहीं** होता है वह महामूर्ख होने के बावजूद एक दिन महान व्यक्ति बनता है।

अहंकार में तीन गये – धन, वैभव और वंश
ना मानो तो देख लो रावण, कौरव ओर कंश

निशुम्भ दनु नामक राक्षस का पुत्र था, इसका अर्थ हिन्सा, झुकाना, तोड़ना, शर्म लाज, शर्मंहया बचाए रखनी चाहिए। चण्डिका ने, उग्र तारा ने दोनों को भयंकर युद्ध करते हुए मारा।

मनुष्य को अपने अहंकार का वध करना चाहिए। क्योंकि अहंकार से बुद्धि नष्ट होती है, ज्ञान का नाश होता है।

दुर्गा देवी का देवताओं और मनुष्यों को संदेश –यह दुर्गा सप्तशती का सारांश है

जो रोजाना, विधि–विधान से पाठ करता है, स्तुति करता है, स्तवन करता है उसकी सारी बाधा दूर हो जाती है, कष्ट नहीं आवेगा, गरीबी नहीं रहेगी, प्रेमी जनों से बिछोह नहीं होगा।(पति–पत्नी अलग–अलग, लड़ाई, झगड़ा, कोर्ट केस) शत्रु राजा, चोर, अग्नि और जल से भी कोई भय नहीं होगा।

सभी प्रकार के सुख देता है। बुरे सपने नहीं आते हैं, गृह शान्ति में भी इसका पाठ कर लेना चाहिए घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। नकारात्मक ऊर्जा समाप्त होती है।

राम–रावण युद्ध नवरात्रि में हुआ। रावण की मृत्यु अष्टमी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नवमी के मिलन के समय में हुई थी और दाह संस्कार दशमी तिथि को हुआ था। इसके बाद विजयदशमी मनाने का रिवाज है। अष्टमी नवमी के मिलन में ही नवरात्रि के हवन की पूर्णाहुति की जाती है। नियमानुसार तांत्रिकों को इसी मिलनकाल में ही पूर्णाहुति कर अपने संकल्प को नवमी के दिन कन्या पूजन के बाद व्रत उपवास छोड़ देना चाहए।

स्त्रियों को, लड़कियों को, नारियों को नारियल क्यों नहीं फोड़ना चाहिए?

नारियल को श्रीफल के नाम से भी जाना जाता है। ऐसी मान्यता है कि जब भगवान विष्णु ने पृथ्वी पर अवतार लिया तो वे अपने साथ तीन चीजें – लक्ष्मी, नारियल का वृक्ष तथा कामधेनु लेकर आये थे। इसलिए नारियल के वृक्ष को श्रीफल भी कहा जाता है।

श्री का अर्थ है लक्ष्मी अर्थात नारियल लक्ष्मी व विष्णु का फल। नारियल में त्रिदेव अर्थात ब्रह्मा, विष्णु और महेश का वास माना गया है। श्रीफल भगवान शिव का परम प्रिय फल है। मान्यता अनुसार नारियल में बनी तीन आँखों को त्रिनेत्र के रूप में देखा जाता है।

भारतीय पूजन पद्धति में नारियल अर्थात श्रीफल का महत्वपूर्ण स्थान है। कोई भी वैदिक या दैविक पूजन प्रणाली श्रीफल के बलिदान के बिना अधूरी मानी जाती हैं। यह भी एक तथ्य है कि महिलाएं नारियल नहीं फोड़ती। श्रीफल बीज रूप है। इसलिए इसे उत्पादन अर्थात प्रजनन का कारक माना जाता है। श्रीफल को प्रजनन क्षमता से जोड़ा गया है। स्त्रियों बीज रूप से शिशु को जन्म देती है और इसलिए नारी के लिए बीज रूपी नारियल फोड़ना अशुभ माना गया है। इसलिए देवी जी को श्रीफल चढ़ाया जाता है परन्तु स्त्रियों को नारियल नहीं फोड़ना चाहिए।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्त्रियों को दंड़वत प्रणाम निषेध क्यों

1. शास्त्रों के अनुसार स्त्री का गर्भ और उसके वक्ष स्तन कभी जमीन से स्पर्श नहीं होना चाहिए। गर्भ से सृष्टि का चक्र चलता है।

2. ऐसा इसलिए की गर्भ एक जीवन को सहेजकर रखता है।

3. वक्ष स्तन उस जीव को पोषण देते है। इसलिए स्त्रियां दण्डवत प्रणाम नहीं कर सकती।

4. साष्टांग प्रणाम करने में ठुड्डी, छाती, दौनों हाथ, दोनों घुटने और पैर अर्थात व्यक्ति का पूरा शरीर पैरों से लेकर सिर तक जमीन का स्पर्श करता है। साष्टांग (दण्डवत) प्रणाम करते समय पेट का स्पर्श नहीं होना चाहिए।

जब शतचण्ड़ी यज्ञ किया जाता है या शतचण्ड़ी अनुष्ठान किया जाता है उस समय हेमाद्रिकृत स्नान या दशविधि स्नान यजमान को अवश्य कराना चाहिए। यह इसलिए भी कराया जाता है कि यदि अनुष्ठान के बीच में सूतक/पातक हो जाय तो अनुष्ठान खण्डित नहीं होता है। इसमें लगने वाले सामान की सूची पीछे दी गयी है।

दिव्य चेतना का संचार होता है।

प्रश्नः– चतुर्थ अध्याय में मंत्र संख्या 24 से 27 की आहुति क्यों नहीं दी जाती है?

उत्तरः– इन चार मंत्रों का केवल पाठ किया जाता है। हवन नहीं किया जाता हैं यदि गलती से हवन कर लिया गया तो देह का नाश हो जाता है बहुत से नव सिखिये पण्डित साधक इसका भी हवन कर देते है जो गलत है।

इन मंत्रों का पाठ करने के बाद ऊँ श्री महालक्ष्म्यैं नमः या ऊँ ह्रीं चण्डिकायै नमः बोलकर एक साथ चार आहुति देना चाहिए।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्राण प्रतिष्ठा मुहूर्त एवं विधान / नियम

मूर्ति की कैसे प्राण प्रतिष्ठा करें?

सामान्यतः – देवी–देवताओं की प्राण प्रतिष्ठा उनके जन्म दिन या जिस दिन उनका त्यौहार मनाया जाता है, उस दिन करना चाहिए जिससे कोई भी मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं होती है।

जैसे उदाहरण के लिए श्री लक्ष्मीजी के लिए महालक्ष्मी दीपावली के दिन, श्री दुर्गाजी के लिए नवरात्रि का समय, श्री भैरोजी के लिए भैरव जयन्ती, नाग महाराज के लिए नागपंचमी, श्री कालीजी के लिए नवरात्रि अष्टमी की रात्री, श्री हनुमानजी के लिए हनुमान जयन्ती, श्री रामजी के लिए राम नवमी का दिन इत्यादि।

यदि बहुत सारे देवता एक साथ बिठाना होतो जब सूर्य उत्तरायण में रहता हो साथ ही सर्वार्थसिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग, या गुरू पुष्य नक्षत्र हो, गुरू और शुक्र दोनों तारे उदित हो ऐसे समय में प्राण प्रतिष्ठा करना चाहिए ।

1. मूर्ति की व्यवस्था करना।
2. देवता या देवीजी को बिठाने के लिए चबूतरे या मन्दिर की व्यवस्था जो नियमानुसार बना हुआ हो वास्तु से सम्बन्धित नियमों को ध्यान में रखा गया हो।
3. स्थान की व्यवस्था जहाँ पर पीठ पूजन होना है।
4. पीठ के पूजन का सामान।
5. मूर्ति के भ्रमण की व्यवस्था।
6. वास के सामग्री की व्यवस्था।
7. दस विधि स्थान की व्यवस्था।
8. हवन सामग्री
9. क्षेत्रपालजी की बलि देने के बाद पूर्णाहुति होती है।
10. पूर्ण आहुति सामान।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

11. प्राण प्रतिष्ठा के बाद श्रृंगार का सामान।
12. प्रसाद वितरण।

हेमाद्रिकृत स्नान/दशविधि स्नान

जो व्यक्ति/मानव मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा करवाना चाहता है उसे हेमाद्रिकृत स्नान/दशविधि स्नान करना अनिवार्य है।

1. भस्म से स्नान 2. मृतिका से स्नान 3. गोमय से स्नान 4. पंचगव्य से स्नान 5. गोरज से स्नान

6. धान्य से स्नान 7. फल से स्नान 8. सर्वोषधि स्नान 9. दुर्वा से स्नान 10. स्वर्ण से स्नान

पीठ पूजन व्यवस्था –

पीठों की संख्या ग्यारह होती है। पीठों पर बैठने वाले देवी–देवताओं के नाम और स्थान दिशाओं के हिसाब से

1. आग्नेय कोण में षोडष मातृका और सप्तघृत मातृका गौरी गणेश और वरूण कलश, योगिनी मण्डल।
2. ईशान कोण में पहले नवग्रह और बाद में रूद्र कलश, फिर दीपक का स्थान।
3. बीच में मुख्य कर्म प्रधान देवता और सर्वतोभद्रमण्डल और लिगंतोभद्र यह अन्य मंडल से चौगुना होता है।
4. वायव्य कोण (उत्तर पश्चिम) में क्षेत्रपाल देवता का स्थान होता है।
5. नैर्ऋत्य कोण (पश्चिम दक्षिण) में वास्तु भगवान का स्थान होता है।

पीठों की पूजा का क्रम –

फिर गौरी गणेश की पूजा की जाती है।

सर्वप्रथम वरूण कलश की पूजा की जाती है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आग्नेय कोण पर बैठे हुए देवता की पूजा।
नैर्ऋत्य कोण पर बैठे हुए देवता की पूजा।
वायव्य कोण पर बैठे हुए देवता की पूजा।
ईशान कोण पर बैठे हुए देवता की पूजा।

सबसे आखिरी में प्रधान पीठ और सर्वतोभद्रमण्डल की पूजा की जाती है।

पीठ पूजन पर लगने वाले सामान की सूची –

1. सफेद कपड़ा सवा मीटर, लाल कपड़ा पांच मीटर, पीला कपड़ा सवा मीटर, काला कपड़ा सवा मीटर, झण्डा/चिन्ह/निशान सफेद 01 नग, पीला 01 नग , काला 01 नग, लाल 05 नग।
2. माला मंत्र जपने की। गौ मुखी पंचपात्र आचमनी ब्राह्मणों की संख्या के हिसाब से।
3. हरा, काला, सफेद, लाल, पीला कलर/रंग प्रत्येक 10–10 रूपये का।
4. पीठ के देवताओं के लिए कपड़े, गमछे इत्यादि।
5. चावल 10 किलो, गेहूँ 10 किलो, कलश एवं कलश के ढक्कन 11 नग।
6. दीपक बड़े 05 नग, दीपक छोटे 21 नग।
7. रूई कपास 20 रूपये।
8. पान के पत्ते, आम के पत्ते, अशोक के पत्ते, दूर्वा अंकुर, बेल पत्री, फूलमाला, कलावा/मोली/आटी/लाल धागा 30 रूपये का।
9. हल्दी 100 ग्राम, रोली, अबीर, गुलाल, सुपारी, पंचमेवा 250 ग्राम, सिन्दूर 250 ग्राम, दोने–पत्तल, चम्मच आवश्यकतानुसार।
10. पंचामृत, के लिए शक्कर, घी, शहद, दूध, दही।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

11. नारियल का गोला पूर्णाहुति के लिए।
12. मिठाई, लौंग, इलायची, जनेउ, कपूर, इत्र, अगरबत्ती, माचिस, लाईटर कोई भी ऋतुफल,दक्षिणा चिल्लर, फूलमाला, नीबू, नारियल, पीली सरसों, उड़द आदि।

ध्वजा लगाने के नियम –

मंडप के चारों ओर ध्वजा पताका लगाना चाहिए। जो कि दश दिग्पालों की होती है। पताका दो हाथ चौड़ी पाच हाथ लम्बी होना चाहिए। बांस दस हाथ का होना चाहिए जिस पर पताका लगाना है। बांस 10 हाथ, 16 हाथ, 21 हाथ या 23 हाथ का हो सकता है।

महाध्वज पचरंगा –

10 हाथ लम्बा, 3 हाथ चौड़ा या 3 हाथ लम्बा, 5 हाथ चौड़ा होना चाहिए। उसमें बैल चिन्ह होना चाहिए। कोण पर घण्टी व घुँघरु बांधना चाहिए। यह ईशान कोण में लगाना चाहिए।

दश दिगपाल के स्थान उनका वाहन उनकी ध्वजा पर रंग और शस्त्र भी पताका पर अंकित होना चाहिए।

1. पूर्व की पीली ध्वजा में हस्ति/हाथी और व्रज ध्वजा पर होना चाहिए।
2. उत्तर की सफेद रंग की ध्वजा में अश्व और गदा ध्वजा पर होना चाहिए।
3. दक्षिण की काली ध्वजा में महिष और पाश का चिन्ह ध्वजा पर होना चाहिए।
4. पश्चिम की सफेद ध्वजा में मछली और पाश का चिन्ह ध्वजा पर होना चाहिए।
5. ईशान की सफेद ध्वजा में बैल और त्रिशूल ध्वजा पर होना चाहिए।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

6. अग्नि की रक्त ध्वजा में मैढ़ा और शक्ति का चिन्ह ध्वजा पर होना चाहिए।
7. नैर्ऋत्य की नीली ध्वजा में सिंह और खड़ग का चिन्ह ध्वजा पर होना चाहिए।
8. वायव्य की हरे रंग की ध्वजा में हिरण और अंकुश ध्वजा पर होना चाहिए।
9. पूर्व ईशान के बीच में लाल ध्वजा जिसमें हंस और कमंडलु ध्वजा पर होना चाहिए।
10. पश्चिम नैऋव्य के बीच में पीली ध्वजा पर गरूड चक्र ध्वजा पर होना चाहिए।

मूर्ति के भ्रमण के पहले मूर्ति की आँखें लाल कपड़े या काले कपड़े से बांध दी जाती है और उनका संक्षिप्त पंचोपचार पूजन होता है।

मूर्ति के भ्रमण की व्यवस्था –

किसी टेक्टर या बड़ी कार की व्यवस्था। पूजा की थाली जिसमें हल्दी, रोली, अबीर गुलाल, सिन्दूर, चावल, का दोना, दीपक, अगरबत्ती, माचिस, नीबू कम से कम 50 नग, नारियल कम से कम 25 नग, पीली सरसों एक दोना, एक चक्कू, प्रसाद लोंग, लाल कपडा, पीले चावल का दोना, झण्डे सभी प्रकार के आगे लेकर चलना है जिसमें सफेद झण्डा सबसे आगे होगा। फिर लाला झण्डा और काला झण्डा होगा। इसके लिए बांस, डोरी, रस्सी, त्रिशूल, तलवार, खड़ग, दीपक को बुझने से बचाने के लिए लालटेन का कांच, ढोल, नगाड़े, गाजे–बाजे, गुलाल उड़ाना है।

सभी मूर्ति को नगर भ्रमण करने के बाद वापिस स्थापित करने वाले स्थान पर उतारने के पहले नीबू काटा जाता है। नारियल को फोड़ा जाता है। संक्षिप्त पूजन होता है। फिर उतारा जाता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वास के सामग्री की व्यवस्था –

जलाधिवास, फूलाधिवास, फलाधिवास, शयनाधिवास, अन्नाधिवास/धान्याधिवास, घृताधिवास भगोना या कोठी

1. ऋतुओं के विभिन्न पांच प्रकार के फल जिससे मूर्ति पूरी तरह ढक जाये।
2. ऋतुओं से सम्बन्धित फूल जिससे मूर्ति पूरी तरह ढक जाये! इतनी मात्रा में फूल की आवश्यकता होगी।
3. कम्बल या रजाई या गादी जिससे मूर्ति पूरी तरह ढक जाये।

धान्याधिवास :– गेंहु, चावल सात प्रकार का अनाज जिससे मूर्ति पूरी तरह ढक जाये। प्रत्येक बार वास कराने के पहले गन्ध, अक्षत, पुष्प से पूजा करना है। जब तक वास चलता रहता है तब तक श्री देव्यथर्वशीर्षम् का पाठ लगातार होते रहना चाहिए। इसी पाठ से मूर्ति में प्राण आते हैं। मूर्ति सिद्ध होती है। कम से कम प्रत्येक वास 15–15 मिनिट का कराना अनिवार्य है।

मूर्ति के स्नान की व्यवस्था –

मूर्ति को विभिन्न प्रकार के पदार्थों से स्नान, कराया जाता है जैसे – हल्दी, रोली, गुलाल, सिन्दूर, इत्र, दूध, दही, शक्कर, घी, शहद, आम रस, मौसंबी रस, आंवला रस, अनार रस, नीबू का रस, गोमूत्र, गंगाजल, सोने का पानी, नर्मदाजल, नारियल पानी, कुश का पानी, दुर्वांकुर पानी, स्नान के बाद उनमें प्राण डालने की प्रक्रिया होती हैं जो शहद और घी को आपस में मिलाकर सोने की अंगूठी से पूरी भुजाओं पर, पूरे शरीर के प्रत्येक अंग पर लगाया जाता है। एक काँच या आईना की आवश्यकता होती है। जब उनकी आँखों को खोला जाता है तब आँखों के सामने काँच को लगाया जाता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्राण प्रतिष्ठा मंत्र निम्नानुसार होगा –

पहले विनियोग करें –

ॐ अस्य श्री प्राण प्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वरा ऋषयः ।

यजुर्वेद सामवेदः अथर्वःवेद छन्दांसि क्रियामयवपुः प्राणख्या देवता ओं बीजम् ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकम् अस्य नूतनमूर्ति प्राण प्रतिष्ठापने विनियोगः ।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं ह लं क्षं हं सः सोहम अस्याः ... .. मूर्ति प्राणाः इह तिष्ठन्तु ।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हं सः सोहम अस्याः ... .. मूर्ति जीव इह स्थितः ।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हं सः सोहम अस्याः ... .. मूर्ति सर्वों इन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्र जिब्हाघ्राण पाणि पाद पायूप स्थानि इहैव आगत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

प्रतिमा के हृदय पर अंगुष्ठ लगाकर बोलें।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठिन्तु अस्यै प्राणाश्चरंतु च।

अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन्।

अब प्रतिष्ठा के लिए निम्न मंत्र बोलें :–

ॐ मनो जूतिर जुषतामा ज्यस्य बृहस्पतिर यज्ञ मिमन्तनों त्वरिष्टं यज्ञ गुम समि मन्द धातु।

विश्वेदेवास इह मादयन्तामो प्रतिष्ट।।

एष वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्रैतने यज्ञन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितो भव।

"सुप्रतिष्ठितो भव" ऐसा बोलकर देवता के कर्ण में गायत्री मंत्र बोलना है। फिर नई मूर्ति की पंचोपचार पूजा करके संस्कार सिद्धि के लिए पंद्रह बार ॐ का उच्चारण करके "मूर्तिनां जात कर्म आदि पंचदश संस्कारन सम्पादये।

अब उनकी प्रार्थना बोले। फिर जल हाथ में लेकर मंत्र बोले

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

– अनेन अमुक नूतन मूर्ति मूर्तिषु वा प्राण प्रतिष्ठा कर्म '–कृतेन अमुक देवता प्रीयतांन मम्।

ऊँ तत्सत् ब्रह्मार्यणमुस्तु।।

फिर षोड्शोपचार से पूजा करें तथा शिव प्रतिमा हो तो रूद्राअभिषेक भी करें।

हवन सामग्री एवं पूर्णाहुति सामान –

विभिन्न प्रकार की हवन सामग्री का प्रयोग होता है :– लाल कपड़ा पूर्णाहति के लिए और दही, नारियल का गोला और घी।

हवन पूर्ण होने पर प्रदक्षिणा मंत्र –

"यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणां पदे पदे।।"

यज्ञ की हमेशा कम से कम 5 प्रदक्षिणा करना चाहिए।

हवन के बाद याज्ञाचार्य को यथाशक्ति दक्षिणा, कपड़े, धातु और अनाज का दान दिया जाता है।

प्राण प्रतिष्ठित मूर्ति के बारे में विशेष नियम –

एक बार किसी भी मूर्ति में अचल प्राण प्रतिष्ठा हो जाती है फिर उस मूर्ति को स्थापित करने के बाद आजन्म में हिलाया नहीं जाता है। और न ही उस स्थान से उखाड़ा जाता है और न ही हटाया जाता है। क्योंकि मूर्ति में बिठाने के बाद प्राण डाल दिये जाते है। यदि उस मूर्ति को उठा दिया या हिलाया गया तो जिसके भी द्वारा यह कृत्य कार्य किया जाता है उसे शरीर हिलने की बीमारी लग जाती है। जिसे पारकिन्ससं बीमारी कहा जाता है और उसके परिवार में प्रत्येक वर्ष एक व्यक्ति की मृत्यु होना प्रारम्भ हो जाती है। भयंकर ला–इलाज बीमारियाँ लगने लगती हैं। वह परिवार दरिद्रता को, व्याधियों को, दु:खों को भोगता है। उसका परिवार भयंकर तन्त्र मंत्र के गलत प्रयोग का शिकार होता है। मानसिक बीमारी लग जाती है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कुंजिका स्तोत्र

उवाच –

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुंजिका स्तोत्रमुत्तमम्।
येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीपाठः शुभो भवेत्।।1।।
न कवचं नार्गलास्तोत्रं, कीलकं न रहस्यकम्।
न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम्।।2।।
कुंजिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत्।
अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम्।।3।।
गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति।।3.1।।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम्।
पाठमात्रेण संसिद्धयेत् कुंजिकास्तोत्रमुत्तमम्।।4।।

।। अथ मंत्रः ।।

ॐ श्रूं श्रूं शं फट! ऐं ह्रीं क्लीं ज्वलोज्वल प्रज्वल ह्रीं ह्रीं क्लीं स्त्रावय स्त्रावय शापं मोचय मोचय श्रां श्रीं रं जूं सः आदाय आदाय स्वाहा।।1।।

ॐ श्लों हुं ग्लों जूं सः ज्वलोज्वल मन्त्रान् प्रबलय प्रबलय हं सं लं क्षं स्वाहा।।2।।

ॐ अं कं चं टं तं पं सां बिन्दुर्–आविर्भव बिन्दुर्आविर्भव विमर्दय विमर्दय हं क्षं क्षीं स्त्रीं जीवय जीवय त्रोटय त्रोटय जम्भय जम्भय दीपय दीपय मोचय मोचय हुं फट् ज्रां वौषट् ऐं ह्रीं क्लीं रंजय रंजय संजय संजय गुंजय गुंजय बन्धय बन्धय भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे संकुच संकुच संचल संचल त्रोटय त्रोटय म्लीं स्वाहा।।3।।

।। इति मंत्रः ।।

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधु–मर्दिनि। नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनी
नमस्ते शुंभहन्त्र्यै च निशुंभासुर–घातिनि। जाग्रतं हि महादेविजपं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सिद्धिं कुरुष्व मे।।
ऐंकारी सृष्टिरुपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका।
क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते।।6।।
चामुण्डा चण्ड्घाती च यैकारी वर–दायिनी।
विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि।।7।।
धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी तथा।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं करु।।8।।
हूं हूं हूंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः।।9।।
पां पीं पूं पावर्ती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा।
म्लां म्लीं म्लूं मूलविस्तीर्ण कुन्जिकायै नमो नमः।।10।।
इदंतु कुंजिकास्तोत्रं मंत्र जागर्ति हेतवे। अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति।।11।।
कुंजिका रहितां देवी यस्तु सप्तशतीं पठेत्। न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा।।12।।
।। श्री गौरीतंत्रे ईश्वर पार्वती संवादे कुंजिका स्तोत्रं संपूर्णम्।।

रहस्यमयी ज्ञान

कुन्जिका स्त्रोत का पाठ करने से मनुष्य के शरीर पर कैसा प्रभाव पड़ता है:–

1. रोजाना श्री कुन्जिका स्त्रोत का पाठ करने से सब प्रकार से विघ्न नष्ट हो जाते है।
2. सिद्धि प्राप्त करने में बहुत सहायता करता है।
3. इसका पाठ करने से काम, क्रोध का नाश होता है। याने मारण की सिद्धि मिलती है।
4. इष्ट देव प्रसन्न होते हैं याने मोहन की शक्ति प्राप्त होती है मुग्ध करने की शक्ति प्राप्त होती हैं।
5. साधक के मन का वशीकरण हो जाता है याने तृष्णा समाप्त

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हो जाती है। वशीकरण की शक्ति प्राप्त हो जाती है। मन भटकता नहीं है।

6. मनुष्य की साधक की इन्द्रियों पर नियंत्रण हो जाता है। विषय वासना के प्रति मन खिन्न हो जाता है। काम, क्रोध, लोभ, तृष्णा, मोह, माया।
7. उच्चाटन हो जाता है। साधक को सत्य का ज्ञान हो जाता हैं। मोक्ष प्राप्ति के लिए छटपटाहट होने लगती है। मन भौतिकवादी बन्धन से मुक्त हो जाता है।
8. यह संसार उसे बेमानी जैसा लगता है।
   यह भी इस स्त्रोत का पाठ करने मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, स्तम्भन कार्य में सफल होता है।
9. सिद्ध कुन्जिका स्त्रोत के पाठ से दुर्गा पाठ का फल प्राप्त हो जाता हैं।
10. इसके पाठ से फल प्राप्त करने लिए कवच, अर्गला, कीलक, रहस्य, सुतक, ध्यान यहाँ तक की न्यास करने की भी आवश्यकता नहीं होती है। पाठ अपने आप में पूर्ण है।
11. चौकी काटने की शक्ति, भूतप्रेत पकड़ने की शक्ति, डाकिनी, शाकिनी, नकारात्मक ऊर्जा हटाने की शक्ति सभी प्राप्त होती है।
12. चारो नवरात्र में केवल रात्री कालीन ब्रम्ह मुहुर्त तक पाठ करें। हवन करें। कन्या पूजन करें।
13. स्त्रीयों का मान सम्मान करें। माँ, बहन, बेटी, एवं प्रेमीका, सेविका, शिष्या का सम्मान करें।
14. (1) यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः यत्रै तास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रिया।

(2) यत्र जामयः शोचन्ति तत्, कुलम, आशु विनश्यति यत्र तु एवाः न शोचन्ति तत् हि सर्वदा वर्धते

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्री कृष्ण कृत –देवी की स्तुति

त्वमेव सर्वजननी मूलप्रकृतिश्वरी।
त्वमेवाद्या सृष्टिविधौ स्वेच्छया त्रिगुणात्मिका।।

हे देवी! आप ही सबकी जननी, मूल प्रकृति ईश्वरी हो, आप ही सृष्टि की उत्पत्ति के समय आद्याशक्ति के रूप में विराजमान रहती हो। आप अपनी इच्छा से त्रिगुणामयी बनी हुई हो।

कार्यार्थें सगुणा त्वं च वस्तुतो निर्गुणा स्वयं।
परब्रह्मस्वरूपा त्वं सत्या नित्या सनातनी।।

कार्यवश सगुण रूप धारण करती हो। वास्तव में स्वयं निर्गणा हो। सत्या, नित्या, सनातनी तथा परब्रह्म स्वरूपा हो।

तेजः स्वरूपा परमा भक्तानुग्रहविग्रहा।
सर्वस्वरूपा सर्वेशा सर्वाधारा परात्परा।।

परम तेजः स्वरूपा हो। भक्तों पर कृपा करने के लिए दिव्य शरीर धारण करती हो। आप सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी, सर्वाधारा एवं परात्परा हों।

सर्वबीजस्वरूपा च सर्वपूज्या निराश्रया।
सर्वज्ञा सर्वतोभद्रा सर्वमंगलमंगला।।

आप सर्वबीज–स्वरूप, सर्वपूज्या एवं आश्रयरहित हो। आप सर्वज्ञ, सर्वप्रकार से मंगल करने वाली एवं सर्वमंगलों का भी मंगल हो।

सर्वबुद्धिस्वरूपा च सर्वशक्तिस्वरूपिणी।
सर्वज्ञानप्रदा देवी सर्वज्ञा सर्वभाविनी।।

हे देवी! आप सभी बुद्धियों का स्वरूप, सभी शक्तियों का स्वरूप, सभी ज्ञान प्रदान करने वाली, सब कुछ जानने वाली और सभी को उत्पन्न करने वाली हो।

त्वं स्वाहा देवदाने च पितृदाने स्वधा स्वयम्।
दक्षिणा सर्वदाने च सर्वशक्तिस्वरूपिणी।।

देवताओं के लिए हविष्य दान करने के निमित्त आप ही स्वाहा हो, पितरों को श्राद्ध अर्पण करने के लिए आप ही स्वधा हो, सभी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रकार के दान यज्ञों में दक्षिणा हो तथा सम्पूर्ण शक्तियां तुम्हारा ही स्वरूप हैं।

निद्रा त्वं च दया त्वं च तृष्णा त्वं चात्मनः प्रिया।
क्षुधा, क्षान्तिः शान्ति रीशा च कान्तिः सृष्टिश्च शाश्वती।।

आप ही निद्रा, दया और मन को प्रिय लगने वाली तृष्णा हो। क्षुधा, क्षमा, शान्ति, ईश्वरी, कान्ति तथा शाश्वती सृष्टि भी आप ही हो।

श्रद्धा पुष्टिश्च तन्द्रा च लज्जा शोभा दया तथा।
सतां सम्पत्स्वरूपा च विपत्ति सतामिह।।

आप ही श्रद्धा, पुष्टि, तन्द्रा, लज्जा, शोभा और दया हो। सत्पुरुषों के यहाँ सम्पत्ति और दुष्टों के घर में विपत्ति भी आप ही हो।

प्रीतिरूपा पुण्यवतां पापिनां कलह अहंकारा।
शश्वकर्ममयी शक्तिः सर्वदा सर्वजीविनाम्।।

आप ही पुण्यवानों क़े लिए प्रतिरूप हो, पापियों के लिए कलह का अहंकार हो तथा समस्त जीवों की कर्ममयी शक्ति भी सदा आप ही हो।

देवेभ्यः स्वपदोदात्री धातुर्धात्री कृपामयी।
हिताय सर्वदेवानां सर्वासुरविनाशिनी।।

देवताओं को उनका पद प्रदान करने वाली आप ही हो। धाता (ब्रह्मा) का भी धारण पोषण करने वाली दयामयी धात्री आप ही हो। सम्पूर्ण देवताओं के हित के लिए आप ही समस्त असुरों का विनाश करती हो।

योगनिद्रा योगरूपा योगदात्री च योगिनाम्।
सिद्धिस्वरूपा सिद्धानां सिद्धिदा सिद्धयोगिनी।।

आप योगनिद्रा हो, योग तुम्हारा स्वरूप है। आप योगियों को योग प्रदान करने वाली हो। सिद्धों की सिद्धि भी आप ही हो। आप सिद्धिदायिनी और सिद्धयोगिनी हो।

ब्रह्माणी माहेश्वरी च विष्णुमाया च वैष्णवीं।
भद्रदा भद्रकाली च सर्वलोक भयंकरी।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ब्राह्माणी, माहेश्वरी, विष्णु–माया, वैष्णों तथा भद्रदायिनी भद्रकाली भी आप ही है। आप ही समस्त लोकों के लिए भय उत्पन्न करती हो।

ग्रामे ग्रामे ग्रामदेवी गृहदेवी गृहे गृहे।
सतां कीर्तिः प्रतिष्ठा च निन्दा त्वमसतां सदा।।

प्रत्येक गाँव में ग्रामदेवी और प्रत्येक गृह में गृहदेवी भी आप ही हो। आप ही सत्पुरुषों की कीर्ति और प्रतिष्ठा हो। दुष्टों की होने वाली सदा निंदा भी तुम्हारा ही स्वरूप है।

महायुद्धे महामारी दुष्टसंहाररूपिणी।
रक्षास्वरूपा शिष्टानां मातेव हितकारिणी।।

आप महायुद्ध में दुष्ट संहार रूपिणी महामारी हो और शिष्ट पुरुषों के लिए माता की भांति हितकारिणी एवं रक्षारूपिणी हो।

वन्द्या पूज्या स्तुता त्वं च ब्रह्मादीनां च सर्वदा।
ब्राह्मण्यरूपा विप्राणां तपस्या च तपस्विनाम्।।

ब्रह्मा आदि देवताओं ने सदा तुम्हारी वंदना, पूजा एवं स्तुति की है। ब्राह्मणों की ब्राह्मणता और तपस्वीजनों की तपस्या भी आप ही हो।

विद्या विद्यावतां त्वं च बुद्धिबुद्धिमतां सताम्।
मेधास्मृति स्वरूपा च प्रतिभा प्रतिभावताम्।

विद्वानों की विद्या, बुद्धिमानों की बुद्धि, सत्पुरुषों की मेधा और स्मृति और प्रतिभाशाली, पुरुषों की प्रतिभा भी तुम्हारा ही स्वरूप है।

राज्ञां प्रतापरूपा च निशां वाणिज्यरूपिणी।
सृष्टौ सृष्टिस्वरूपा त्वं रक्षारूपा च पालने।।

राजाओं का प्रताप और वैश्यों का वाणिज्य भी आप ही हो। विश्वपूजिते! सृष्टिकाल में सृष्टिरूपिणी तथा पालनकाल में रक्षा रूपिणी आप ही हो।

विनाशन्ते च महामारी विश्वस्य विश्वपूजिते।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च मोहिनी।।

संहारकाल में विश्व का विनाश करने वाली महामारी रूपिणी भी आप ही हो। आप ही कालरात्रि, महारात्रि तथा मोहरात्रि हो।

दुर्लभ्या में माया त्वं यया सम्मोहितं जगत्।
यया मुग्धौ हि विद्वांश्च मोक्षमार्ग न पश्यति।।

आप दुर्लभ्य माया हो, जिसने सम्पूर्ण जगत को मोहित कर रखा है तथा जिससे मुग्ध हुआ विद्वान् पुरुष भी मोक्षमार्ग को नहीं देख पाता।

परमात्मा कृष्णं कृतं स्तोत्रं दुर्गाया दुर्गनाशनम्।
पूजाकाले पठेद्यो हि सिद्धिर्भवनि वाच्छिता।।

इस प्रकार परमात्मा श्रीकृष्ण कृत दुर्गा के दुर्गम संकटनाश स्तोत्रं का जो पूजाकाल में पाठ करता है, उसे मनवांछित सिद्धि प्राप्त होती है।

।। ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय।।

वैसे तो दुर्गा के 108 नाम गिनाये जाते हैं लेकिन नवरात्रों में उनके स्थूल रूप को ध्यान में रखते हुए नौ दुर्गाओं की स्तुति और पूजा–पाठ करने का गुप्त मंत्र ब्रह्मा जी ने अपने पौत्र मार्कण्डेय ऋषि को दिया। इसको देवी कवच भी कहते हैं। देवी कवच का पूरा पाठ दुर्गा सप्तशती के 56 श्लोक के अन्दर मिलता है। नौ दुर्गाओं के स्वरूप का वर्णन ब्रह्मा जी ने इस प्रकार से किया है –

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कुष्माण्डेति चतुर्थकम्।।
पंचमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम्।।
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः।
अग्निना दह्मानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे।
विषमें दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः।

उपरोक्त नौ दुर्गाओं ने देव दानव युद्ध में विशेष भूमिका

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निभाई है। इनकी सम्पूर्ण कथा देवी भागवत पुराण और मार्कण्डेय पुराण में लिखित है। शिवपुराण में भी इन दुर्गाओं के उत्पन्न होने की कथा का वर्णन आता है कि कैसे हिमालय राज की पुत्री पार्वती ने अपने भक्तों को सुरक्षित रखने के लिए तथा धरती आकाश पाताल में सुख शान्ति स्थापित करने के लिए दानवों, राक्षसों और आतंक फैलाने वाले तत्वों को नष्ट करने की प्रतिज्ञा की और समस्त नवदुर्गाओं को विस्तारित करके उनके 108 रूप धारण करने से तीनों लोकों में दानव और राक्षस साम्राज्य का अन्त किया। इन नौदुर्गाओं में सबसे प्रथम् देवी का नाम है शैलपुत्री जिसकी पूजा नवरात्र के पहले दिन होती है। दूसरी देवी का नाम है ब्रह्मचारिणी जिसकी पूजा नवरात्र के दूसरे दिन होती है। तीसरी देवी का नाम है चन्द्रघण्टा जिसकी पूजा नवरात्र के तीसरे दिन होती है। चौथी देवी का नाम है कुष्माण्डा जिसकी पूजा नवरात्र के चौथे दिन होती है। पांचवी दुर्गा का नाम है स्कन्दमाता जिसकी पूजा नवरात्र के पांचवे दिन होती है। छठी दुर्गा का नाम है कात्यायनी जिसकी पूजा नवरात्र के छठे दिन होती है। सातवी दुर्गा का नाम है कालरात्रि जिसकी पूजा नवरात्र के सातवें दिन होती है। आठवी देवी का नाम है महागौरी जिसकी पूजा नवरात्र के आठवें दिन होती है। नवीं दुर्गा का नाम है सिद्धिदात्री जिसकी पूजा नवरात्र के अन्तिम दिन होती है। इन सभी दुर्गाओं के प्रकट होने और इनके कार्यक्षेत्र की बहुत लम्बी चौड़ी कथाएं है।

देश का पहला तंत्र स्कूल
देवराधा ट्रस्ट (पंजीकृत)
बुधनी तहसील, ग्राम बुधनी
जिला सिहोर, मध्यप्रदेश
तन्त्र स्कूल, मन्त्र सिखने का स्कूल
भागवत प्रवचन स्कूल, ज्योतिष सिखाने
का स्कूल वास्तु ज्ञान, साधना स्थली

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दुर्गा स्तुति

रक्ष रक्ष महादेवि दुर्गे दुर्गतिनाशिनि।
मां भक्त मनुरक्तं च शत्रुग्रस्तं कृपामयि।।
विष्णुमाये महाभागे नारायणि सनातनि।
ब्रह्मस्वरूपे परमे नित्यानन्दस्वरूपिणी।।
त्वं च ब्रह्मादि देवाना अम्बिके जगदम्बिके।
त्वं साकारे च गुण तो निराकारे च निर्गुणात्।।
मयया पुरुषस्त्वं च मायया प्रकृतिः स्वयम्।
तयोः परं ब्रह्म परं त्वं विभर्षि सनातनि।।
वेदानाः जननी त्वं च सावित्री च परात्परा।
वैकुण्ठे च महालक्ष्मीः सर्वसम्पत्स्वरूपिणी।।
मर्त्यलक्ष्मीश्च क्षीरोदे कामिनी शेषशायिनः।
स्वर्गेषु स्वर्गलक्ष्मीस्त्वं राजलक्ष्मीश्च भूतले।।
नागादिलक्ष्मीः पाताले गृहेषु गृहदेवता।
सर्वशस्यस्वरूपा त्वं सर्वएश्वर्यविधायिनी।।
रागाधिष्ठातृदेवी त्वं ब्रह्मणश्च सरस्वती।
प्राणानामधिदेवी त्वं कृष्णश्च परमात्मनः।।
गोलोके च स्वयं राधा श्रीकृष्णस्यैव वक्षसि।
गोलोकाधिष्ठिता देवी वृन्दावनवने वने।।
श्रीरासमण्डले रम्या वृन्दावनविनोदिनी।
शतश्रृङ्.गाधिदेवी त्वं नामन चित्रावलीति च।।
दक्षकन्या कुत्र कल्पे कुत्र कल्पे च शैलजा।
देवमातादितिस्त्वं च सर्वाधारा वसुन्धरा।।
ज्वमेव गङ्.गा तुलसी त्वं च स्वाहा स्वधा सती।
त्वदंशांशांशकलया सर्वदेवादियोषितः।।
स्त्रीरूपं चापिपुरुषं देवि त्वं च नपुंसकम्।
वृक्षाणां वृक्षरूपा त्वं सृष्टा चाङ्.कुररूपिणी।।
वह्नो च दाहिकाशक्ति र्जले शैत्यस्वरूपिणी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सूर्ये तेजःस्वरूपा च प्रभारूपा च संततम्।।
गन्धरूपा च भूमौ च आकाशे शब्दरूपिणी।
शोभास्वरूपा चन्द्रे च पद्मसङ्घे च निश्चितम्।।
सृष्टौ सृष्टिस्वरूपा च पालने पारिपालिका।
महामारी च संहारे जले च जलरूपिणी।।
क्षुत्त्वं दया त्वं निद्रा त्वं तृष्णा त्वं बुद्धिरूपिणी।
तुष्टिस्त्वं चापि पुष्टिस्त्वं श्रद्धा त्वं च क्षमा स्वयम्।।
शान्तिस्त्वं च स्वयं भ्रान्तिः कान्तिस्त्वं कीर्तिरेव च।
लज्जा त्वं च तथा माया भुक्ति मुक्ति स्वरूपिणी।
सर्वशक्ति स्वरूपा त्वं सर्वसम्पत्प्रदायिनी।
वेदेऽनिर्वचनीया त्वं त्वां न जानाति कश्चन।।
सहस्त्रवक्त्रस्त्वां स्तोतुं न चशक्तः सुरेश्वरी।
वेदा न शक्ति को विद्वान् न च शक्तिसरस्वती।।
स्वयं विधाता शक्तो न न च विष्णुः सनातनः।
किं स्तौमि पञ्चवक्त्रेण रणत्रस्तो महेश्वरि।।
कृपां कुरु महामाये मम शत्रुक्षयं कुरु।
शत्रुनाश करने के लिए स्तुति का पाठ करें।

माँ दुर्गा के 108 नाम अर्थ सहित –

हम सभी माँ दुर्गा के इन नामों का पाठ करते हुए माँ की सहज भक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

1. **सती**– अग्नि में जल कर भी जीवित होने वाली
2. **साध्वी**– आशावादी
3. **भवप्रीता**– भगवान शिव पर प्रीति रखने वाली
4. **भवानी**– ब्रह्मांड में निवास करने वाली
5. **भवमोचनी**– सांसारिक बंधनों से मुक्त करने वाली
6. **आर्या**– देवी
7. **दुर्गा**– अपराजेय

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

8. **जया**– विजयी
9. **आद्य**– शुरुआत की वास्तविकता
10. **त्रिनेत्र**– तीन आंखों वाली
11. **शूलधारिणी**– शूल धारण करने वाली
12. **पिनाकधारिणी**– शिव का त्रिशूल धारण करने वाली
13. **चित्रा**– सुरम्य, सुंदर
14. **चण्डघण्टा**– प्रचण्ड स्वर से घण्टा नाद करने वाली, घंटे की आवाज निकालने वाली
15. **सुधा**– अमृत की देवी
16. **मन**– मनन–शक्ति
17. **बुद्धि**– सर्वज्ञाता
18. **अहंकारा**– अभिमान करने वाली
19. **चित्तरूपा**– वह जो सोच की अवस्था में है
20. **चिता**– मृत्युशय्या
21. **चिति**– चेतना
22. **सर्वमन्त्रमयी**– सभी मंत्रों का ज्ञान रखने वाली
23. **सत्ता**– सत–स्वरूपा, जो सब से ऊपर है
24. **सत्यानंद स्वरूपिणी**– अनन्त आनंद का रूप
25. **अनन्ता**– जिनके स्वरूप का कहीं अंत नहीं
26. **माविनी**– सबको उत्पन्न करने वाली, खूबसूरत औरत
27. **भाव्या**– भावना एवं ध्यान करने योग्य
28. **भव्या**– कल्याणरूपा, भव्यता के साथ
29. **अभव्या**– जिससे बढ़कर भव्य कुछ नहीं
30. **सदागति**– हमेशा गति में, मोक्ष दान
31. **शाम्भवी**– शिवप्रिया, शंभू की पत्नी
32. **देवमाता**– देवगण की माता
33. **चिन्ता**– चिन्ता
34. **रत्नप्रिया**– गहने से प्यार करने वाली

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

35. **सर्वविद्या**– ज्ञान का निवास
36. **दक्षकन्या**– दक्ष की बेटी
37. **दक्षयज्ञविनाशिनी**– दक्ष के यज्ञ को रोकने वाली
38. **अपर्णा**– तपस्या के समय पत्ते को भी न खाने वाली
39. **अनेकवर्णा**– अनेक रंगों वाली
40. **पाटला**– लाल रंग वाली
41. **पाटलावती**– गुलाब के फूल
42. **पट्टाम्बरपरीधाना**– रेशमी वस्त्र पहनने वाली
43. **कलामंजीरारंजिनी**– पायल को धारण करके प्रसन्न रहने वाली
44. **अमेय**– जिसकी कोई सीमा नहीं
45. **विक्रमा**– असीम पराक्रमी
46. **क्रूरा**– दैत्यों के प्रति कठोर
47. **सुन्दरी**– सुंदर रूप वाली
48. **सुरसुन्दरी**– अत्यंत सुंदर
49. **वनदुर्गा**– जंगलों की देवी
50. **मातंगी**– मतंगा की देवी
51. **मातंगमुनिपूजिता**– बाबा मतंगा द्वारा पूजनीय
52. **ब्राह्मी**– भगवान ब्रह्मा की शक्ति
53. **माहेश्वरी**– प्रभु शिव की शक्ति
54. **इंद्री**– इंद्र की शक्ति
55. **कौमारी**– किशोरी
56. **वैष्णवी**– अजेय
57. **चामुण्डा**– चंड और मुंड का नाश करने वाली
58. **वाराही**– वराह पर सवार होने वाली
59. **लक्ष्मी**– सौभाग्य की देवी
60. **पुरुषाकृति**– वह जो पुरुष धारण कर ले
61. **विमिलौत्त्कार्शिनी**– आनन्द प्रदान करने वाली

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

62. **ज्ञाना**— ज्ञान से भरी हुई
63. **क्रिया**— हर कार्य में होने वाली
64. **नित्या**— अनन्त
65. **बुद्धिदा**— ज्ञान देने वाली
66. **बहुला**— विभिन्न रूपों वाली
67. **बहुलप्रेमा**— सर्व प्रिय
68. **सर्ववाहनवाहना**— सभी वाहन पर विराजमान होने वाली
69. **निशुम्भशुम्भहननी**— शुम्भ, निशुम्भ का वध करने वाली
70. **महिषासुरमर्दिनि**— महिषासुर का वध करने वाली
71. **मधुकैटभहन्त्री**— मधु व कैटभ का नाश करने वाली
72. **चण्डमुण्ड विनाशिनी** – चंड और मुंड का नाश करने वाली
73. **सर्वासुरविनाशी**— सभी राक्षसों का नाश करने वाली
74. **सर्वदानवघातिनी**— संहार के लिए शक्ति रखने वाली
75. **सर्वशास्त्रमयी**— सभी सिद्धांतों में निपुण
76. **सत्या**— सच्चाई
77. **सर्वास्त्रधारिणी**— सभी हथियारों धारण करने वाली
78. **अनेकशस्त्रहस्ता**— कई हथियार धारण करने वाली
79. **अनेकास्त्रधारिणी**— अनेक हथियारों को धारण करने वाली
80. **कुमारी**— सुंदर किशोरी
81. **एककन्या**— कन्या
82. **कैशोरी**— जवान लड़की
83. **युवती**— नारी
84. **यति**— तपस्वी
85. **अप्रौढा**— जो कभी पुराना ना हो
86. **प्रौढा**— जो पुराना है
87. **वृद्धमाता**— शिथिल
88. **बलप्रदा**— शक्ति देने वाली
89. **महोदरी**— ब्रह्मांड को संभालने वाली

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

90. **मुक्तकेशी**– खुले बाल वाली
91. **घोररूपा**– एक भयंकर दृष्टिकोण वाली
92. **महाबला**– अपार शक्ति वाली
93. **अग्निज्वाला**– मार्मिक आग की तरह
94. **रौद्रमुखी**– विध्वंसक रुद्र की तरह भयंकर चेहरा
95. **कालरात्रि**– काले रंग वाली
96. **तपस्विनी**– तपस्या करने वाली
97. **नारायणी**– भगवान नारायण की विनाशकारी रूप
98. **भद्रकाली**– काली का भयंकर रूप
99. **विष्णुमाया**– भगवान विष्णु का जादू
100. **जलोदरी**– ब्रह्मांड में निवास करने वाली
101. **शिवदूती**– भगवान शिव की राजदूत
102. **कराली**– हिंसक
103. **अनन्ता**– विनाश रहित
104. **परमेश्वरी**– प्रथम देवी
105. **कात्यायनी**– ऋषि कात्यायन द्वारा पूजनीय
106. **सावित्री**– सूर्य की बेटी
107. **प्रत्यक्षा**– वास्तविक
108. **ब्रह्मवादिनी**– वर्तमान में हर जगह वास करने वाली

बावन वीर के नाम –

क्षेत्रपाल वीर, कपिल वीर, बटुक वीर, नृसिंह वीर, गोपाल वीर, भैरव वीर, गरूढ़ वीर, महाकाल वीर काल वीर, स्वर्ण वीर, रक्तस्वर्ण वीर, देवसेन वीर, घंटापथ वीर, रुद्रवीर, तेरासंघ वीर, वरुण वीर, कंधर्व वीर, हंस वीर, लौन्कडिया वीर, वहि वीर, प्रियमित्र वीर, कारु वीर, अदृश्य वीर, वल्लभ वीर, वज्र वीर, महाकाली वीर, महालाभ वीर, तुंगभद्र वीर, विद्याधर वीर, घंटाकर्ण वीर, बैद्यनाथ वीर, विभीषण वीर, फाहेतक वीर, पितृ वीर, खड्ग

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वीर, नघस्ट वीर, प्रदुम्न वीर, श्मशान वीर, भरुदग वीर, काकेलेकर वीर, कंफिलाभ वीर, अस्थिमुख वीर, रेतोवेद्य वीर, नकुल वीर, शौनक वीर, कालमुख वीर, भूतबैरव वीर, पैशाच वीर, त्रिमुख वीर, डचक वीर, अट्टलाद वीर, वास्मित्र वीर ।

दुर्गा सप्तश्लोकी

सम्पूर्ण दुर्गासप्तशती का अगर पाठ न भी कर सकें तो निम्नलिखित सप्तश्लोकी पाठ को पढ़ने से सम्पूर्ण दुर्गासप्तशती और नवदुर्गाओं के पूजन का फल प्राप्त हो जाता है।

ओम् ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।।1।।
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुंभा ददासि।
दारिद्रयदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।।2।।
सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।3।।
शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।4।।
सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।5।।
रोगान शेषान पहंसि तुष्टा रूष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामा श्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।।6।।
सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्।।7।।

32 नाम का महत्व

1. उपासक का साधक को मन की इच्छानुसार फल प्राप्त
2. संकट से बचाने का काम करते हैं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

3. दु:ख दूर होते है आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करना है।
4. सभी प्रकार के भय दूर होते है
5. शत्रुओ से पूर्ण रक्षा होगी।
6. बन्धन हो गया हो संकट आ गया हो तो हट जावेगा
7. रोजाना 21 माला याने 100 X 21 = 2100 (8 X 21) 1682100 X 2268 बार आपको रोजाना बोलना है और दशांश हवन, मालपुए से या सफेद तिल में शहद मिलाकर करना है।
8. जो कार्य असम्भव हो वह कार्य सम्भव हो सकता है।
9. इसको संकटहारिणी नामावली भी बोला जाता हैं।
10. इसको सिद्ध करने का तरीका –

नवरात्रि के पहले दिन 1 माला, दूसरे दिन 2 माला इस तरह प्रत्येक दिन एक–एक माला बढ़ाते जाना है नौवे दिन 9 माला जप करके दशांश हवन/यज्ञ करना है। जिससे यह स्त्रोत सिद्ध हो जाता है और रोजाना एक बार पाठ अवश्य करें। विघ्न के समय पाठ करने से साधक उस विपत्ति से अवश्य मुक्त होता है यह क्रिया गुप्त नवरात्रि में करना चाहिए। यह गुरू के निर्देशन में करें।

देवी पुष्पांजली स्त्रोतम्

शुक्लाम्भधरं विष्णु शशिवर्णम् चर्तुभुजं प्रसन्न वदनं ध्यायेत सर्व विघ्नोपशान्तयेत

अयि गिरी–नन्दिनी नन्दितमेदिनी विश्व- विनोदिनी नन्दिनुते
गिरिवर विध्य–शिरोऽधि निवासिनि विष्णु विलासिनि जिष्णुनुते
भगवती हे शितिकण्ठ कुटुम्बिनी भूरि–कुटुम्बिनी भूरिकृते
जय जय हे महिषासुर–मर्दिनी! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! 01
सुरवर–वर्षिणि दुर्धर–धर्षिणि दुर्मुख–मर्षिणि हर्षरते।
त्रिभुवन पोषिणि शंकर तोषिणि कल्मष मोषिणि–घोषरते
दनुज–निरोषिणि दुर्मद–शोषिणि दुर्मुनि–रोषिणि सिन्धुसुते

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जय जय हे महिषासुर-मर्दिनी! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! 02
अयि जगदम्ब! कदम्ब वन प्रियवासिनी तोषिणि हासरते
शिखरि-शिरोमणि तुगंहिमालय-श्रृगं-निजालय-मध्यगते।
मधु-मधुरे मधु-कैटभ भन्जिनि महिष-विदारिणि रासरते।
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनी! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! 03
अयि निजहुंकृति मात्रनिराकृत-धूम्रविलोचन-धुम्रशते
समर-विशोषित रोषित-शोणित बीजसमुद्भव-बीजलते
शिव-शिव शुम्भ-निशुम्भ-महाहव-दर्पित भूत पिशाचरते
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनी! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! 04
अयि शतखण्ड-विखण्डित रूण्ड-वितुण्डित-शुण्ड-गजाधिपते
निज-भुजदण्ड-निपातित-चण्ड-विपाटित-मुण्ड-भटाधिपते
रिपुगजगण्ड-विदारण-चण्ड-पराक्रम-शौण्ड-मृगाधिपते
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनी! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! 05
धनु-रनु-षगं-रणक्षणसगं-परिस्फुरदगं-नटत्कटके
कनक-पिशगं-पृषत्क-निषगं-रसद्-भटश्रृगं-हटाबटुके
हत-चतुरगं-बल-क्षितिरगं-घट्ट-बहुरंग-रटद्-बटुके
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनी! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! 06
अयि रणदुर्मद-शत्रुवधोर-दुर्धर-निर्भर-शक्तिभृते
चतुर-विचार-धुरीण-महाशिव-दूरकृत-प्रमथाधिपते
दुरित-दुरिह-दुराशय-दुर्मति-दानवदूत-दुरन्तगते
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनी! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! 07
अयि शरणागत-वैरिवधू-वर-वीरवराभव-दायिकरे
त्रिभुवन-मस्तक-शूलविरोधि-शिरोधि-कृतामल-शूलकरे
दुमि-दुमि-तामर-दुन्दुभिनाद-मुहुर्मुखरीकृत-दिननि-करे
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनी! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! 08
सुरललना-ततथेयित-थेयित-थाभिनयोतर-नृत्यरते

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कृतकुकुथा-कुकुथोदि-डदाडिक-ताल-कुतूहल-गानरते
धुधु-कुट-धूधुट-धिन्धि-मितध्वनि-धीर-मृदगं-निनादरते
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनी! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! 09
जय जय जाप्यजये जयशब्द-परस्तुति-तत्पर-विश्वनुते
झणझण-झिंझिम-झिंकृत-नूपुर-शिन्ति-मोहित-भूतपते
नटित-नटार्ध-नटीनटनायक-नाट-ननाटित-नाट्यरते
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनी! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! 10
अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोरम-कान्तियुते
श्रितरजनी रजनी रजनी रजनी रजनीकर-वक्त्रभृते
सुनयन-विभ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमराभिपते
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनी! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! 11
महित-महाहव-मल्ल-मतल्लिक-वल्लित-रल्लित-भल्लिरते
विरचित-वल्लि-कपालिक-पल्लिक-झिल्लिक-भिल्लिक-वर्गवृते
श्रुतकृत-पुल्ल-समुल्ल-सितारूण-तल्लज-पल्लव-सल्ललिते।
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनी! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! 12
अयि सुदतीजन-लालस-मानस-मोहन-मन्मथ-राजसुते
अविरल-गण्डगलन्-मदनेदुर-मत-मतगं-जराजगते
त्रिभुवन-भूषण-भूतकलानिधि-रूप-पयोनिधि-राजसुते
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनी! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! 13
कमल-दलामल-कोमल-कान्ति-कला-कलितामल-भालतले
सकल-विलास-कलानिलय-क्रम-केलि-चलत्-कलहंस-कुले
अलिकुल-संकुल-कुन्तल-मण्डल-मौलि-मिलद्-बकुला-लिकुले
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनी! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! 14
कर-मुरलीरव-वर्जित-कूजित-लज्जित-कोकिल-मन्जुमते
मिलित-मिलिन्द-मनोहर-गुन्जित-रन्जित-शैल-निकुन्जगते
निजगणभूत-महाशबरीगण-रगंण-सम्भृत-केलिरते

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जय जय हे महिषासुर-मर्दिनी! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! 15
कटितट-पीत-दुकूल-विचित्र-मयूर-तिरस्कृत चण्डरूचे
जित-कनकाचल-मौलि-मदोर्जित-गर्जित-कुन्जर-कुम्भकुचे
प्रणत-सुराऽसुर-मौलिमणि-स्फुरदशुं-लसन्नख-चन्द्ररूचे
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनी! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! 16
विचित्र-सहस्त्र-करैक, सहस्त्र-करैक, सहस्त्र-करैक, नुते
कृत-सुर-तारक सगंरतारक सगंरतारक सूनु-सुते
सुरथ-समाधि-समान-समाधि-समान समाधि सु-जाप्यरते
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनी! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! 17
पदकमलं करूणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं सुशिवे
अयि कमले कमलानिलये-कमलानिलयः स कथं न भवेत्
तव मदमेव परं मदमस्त्विवति शील-यतो मम किं न शिवे
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनी! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! 18
कनक-लसत्-कलशीकजलै-रनुषिन्चति तऽगंण-रगंभुवम्।
भजति स किं न शची-कुच-कुम्भ-नटी-परि-रम्भ-सुखानुभवम्
तव चरणं शरणं करवाणि सुवाणि पथं मम देहि शिवम्
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनी! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! 19
व विमलेन्दु-कुलं वदनेन्दुमलं कलयन्नसुकूलयते
किमु पुरूहूत-पुरीन्दुमुखी- सुमुखी भिरसौ विमुखीक्रियते
मम तु मतं शिवमानधने भवती कृपया किमु न क्रियते
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनी! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! 20
अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे
अयि जगतो जननीति यथाऽसि मयाऽसि तथाऽनुमतासि रमे
यदुचित-मत्र-भवत्पुरंग कुरू शाम्भवि देवि दयां कुरू मे
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनी! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! 21

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बीजात्मक दुर्गा सप्तशती साधना के नियम

1. साधना करने के पहले गुरू से दीक्षा लेना जो देवी साधक हो।
2. गुरू द्वारा बताये गये नियम निर्देशो का अक्षरशः पालन करना।
3. गुरू को यथाशक्ति, यथायोग्य दक्षिणा, वस्त्र, धातु, फल अवश्य प्रदान करें।
4. शुद्धता, स्वच्छता, पवित्रता का पूर्ण ध्यान रखे।
5. लाल आसन, ऊनी या कुश का हो सकता है।
6. पूर्वा दिशा की ओर मुख करके बैठना है।
7. सफेद वस्त्र या लाल वस्त्र धारण करें।
8. रूद्राक्ष की माला या मुण्डमाला या मूंगा की माला का प्रयोग करें पहनने के लिए।
9. जिस माला को गले में धारण करते है उस माला को जल में प्रयोग नहीं करना चाहिए।
10. शोचालय जाने पर स्नान करना अनिवार्य है।
11. मासिक धर्म से युक्त स्त्री से दूर रहना है।
12. स्वयं के घर में साधना कर सकते है परन्तु वहाँ पर मासिक धर्म, माहवारी, एम सी पीरियड वाली स्त्री नहीं होना चाहिए। चाहे वह पत्नी, माँ, बेटी, बहु ही क्यों न हों।
13. स्वयं के हाथ का बना हुआ भोजन ग्रहण करना है।
14. न्यास अवश्य किया जाय।
15. ऋषियादिन्यास, करन्यास, हृदयादिन्यास, अक्षरन्यास, दिङ्न्यास और ध्यान बोलकर नवार्ण मन्त्र की 108 बार जाप करें, फिर सप्तशती न्यास करें।
16. प्रारम्भ करने से पहले संकल्प लेना है।
17. गोमूत्र, गाय का गोबर से घर को शुद्ध करें।
18. बीजात्मक दुर्गा सप्तशती तंत्र का एक भाग है। इसलिए इसके नियम का पालन करना अनिवार्य है।
19. रोजाना एक नारियल का होम करना हैं। यज्ञ करना हैं सप्तशती पूर्ण होने पर या एक नीबू रोजाना हवन करना है।
20. गुप्तनवरात्रि में या दुर्गा जी की स्थापना के दिन नवरात्रि से

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रारम्भ कर सकते है।

21. 41 दिन की कम से कम साधना होती है प्रथम बार।
22. उसके बाद 27 दिन साधना, फिर उसके बाद 18 दिन की, फिर 9 दिन की साधना होती है।
23. एक बार यह क्रम पूरा कर ले तो फिर साधक कभी भी इसका पाठ/हवन कर सकता है।
24. साधना काल में मान्स का सेवन, मदिरा का सेवन और स्त्री रमण पूर्णतः वार्जित होता हैं
25. बाद में भी सम्पूर्ण जीवन भर यह तीनों का सेवन नहीं करना हैं
26. यह साधना दैवीय मन्दिर, शक्तिपीठ, नदी किनारे, श्मशान भूमि, पीपल के नीचे, वृक्ष के नीचे, एकान्त, वन, चट्टान की चोटी पर की जा सकती हैं
27. एक नीबू रोजाना पाठ प्रारम्भ करने के पहले चार टुकड़े करके चारों दिशाओं में फेके।
28. रोजाना नीबू को काटकर कलश के पास रोली लगाकर रखना है।
29. पीली सरसो से स्थान का कीलन और स्वयं की रक्षा के लिए चौकी लगाना चाहिए क्योंकि बीज मंत्रों में शक्ति अधिक होती है।
30. प्रारम्भ में ही संकल्प लेने के बाद 108 बार ऊँ नमः शिवायः का जाप अवश्य करना चाहिए।
31. अनुष्ठान पूर्ण होने पर नौ कन्याओं को जो 3 वर्ष से बड़ी और 9 वर्ष तक की ही हो उनके पैर पूजकर मीठा भोजन करना है बिदाई में दक्षिणा, और कुछ सामान अवश्य दें।
32. साधना काल में काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद मद्सर, ईष्या, तृष्णा, राग, द्वेष का त्याग करना है।
33. आगे भी जीवन में धीरे धीरे इनका त्याग करें।
34. यह हवन और पाठ दिन रात कभी भी किया जा सकता हैं
35. कोई भी स्त्री, पुरूष, कन्या, विवाहित, अविवाहित, वृद्ध, जवान, युवा, व 8 वर्ष से बड़ा कोई भी इस साधना को कर सकता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

36. सूतक/पातक का ध्यान रखे।
37. अगर नियम का पालन करके साधना करते है तो अवश्य फलदायी होगी। नियम की अवहेलना करके की गयी साधना आपको नुकसान पहुँचा सकती है। इसके लिए लेखक जिम्मेदार नहीं है।
38. लहसन, प्याज, जमीन में गड़ी हुई वस्तुओं, गाजर, मूली, शलजम, मसूर, कुल्ती का भोजन में प्रयोग नहीं करना।

साधना से सम्बन्धित पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए देवराधा ट्रस्ट के द्वारा साधना प्रयोगात्मक सिखायी जाती हैं। एवं साधना पर साधना सिद्धि नामक किताब भी उपलब्ध हैं जिस किसी धर्म प्रेमी बन्धु को चाहिए वह ट्रस्ट का सदस्य बनकर मंगा सकता है।

ॐ श्रीमन, महागणाधिपतयै। ॐ उमा महेश्वराभ्यौ नमः, ॐ शचि पुरंद्रराभ्यौ नमः, ॐ वाणि हिरण्य गर्भाभ्यौ नमः, ॐ लक्ष्मीनारायभ्यौ नमः, ॐ कुलदेवताभ्यौ नमः, ॐ इष्टदेवताभ्यौ नमः, ॐ ग्राम देवताभ्यौ नमः, ॐ स्थान देवताभ्यौ नमः, ॐ स्थापित देवताभ्यौ नमः, ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यौ नमः, ॐ सर्वेभ्यो तीर्थभ्यौ नमः, ॐ सर्वेभ्यो ब्राम्हणेभ्यौ नमः, ॐ सर्वेभ्यौ ऋषिभ्यौ नमः, ॐ सर्वेभ्यो सिद्धायै नमः, ॐ नवग्रह देवताभ्यौ नमः, ॐ वास्तुदेवताभ्यौ नमः, ॐ गुरूभ्यौ नमः, ॐ मातृपितृ चरण कमलेभ्यौ नमः, ॐ चतुःषष्टियोगिनी नमः, ॐ क्षेत्रपालाय नमः, ॐ सर्वात्रोभद्रमण्डल देवाभ्यौ नमः, ॐ षोडशमातृकाभ्यौ नमः, ॐ सप्तधृतमातृका देवीभ्यौ नमः, ॐ अधिदेवता एवं प्रत्याधि देवताभ्यौ नमः, ॐ रूद्रदेवाभ्यौ नमः।

देश का पहला तंत्र स्कूल
देवराधा ट्रस्ट (पंजीकृत)
बुधनी तहसील, ग्राम बुधनी
जिला सिहोर, मध्यप्रदेश
तन्त्र स्कूल, मन्त्र सिखने का स्कूल
भागवत प्रवचन स्कूल, ज्योतिष सिखाने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्रीदुर्गासप्तशती ध्यानम्

ॐ खड्गं चक्र गदेषु चाप परिघान्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शंख संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वांगं भूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरो कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्।।1।।
ॐ अक्षस्त्रक्परशु गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।।2।।
ॐ उद्यद्भानुसहस्त्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां
रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम्।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं
देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वनदेऽरविन्दस्थिताम्।।3।।
ॐ कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां
शंख चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं
ध्यायेद् दुर्गा जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः।।4।।
ॐ घण्टाशूलहलानि शंखमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा–
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्।।5।।
ॐ नागाधीश्वरविष्टरां फणिफणोत्तंसोरुरत्नावली
भास्वदेहलतां दिवाकरनिभां नेत्रत्रयोद्भासिताम्।
मालाकुम्भकपालनीरजकरां चन्द्रार्धचूडां परां
सर्वज्ञेश्वर भैरवांग निलयां पद्मवतीं चिन्तये।।6।।
ॐ ध्यायेयं रत्नपीठे शुककलपठितं शृण्वतीं श्यामलांगीं
न्यस्तैकाङ्घ्रिं सरोजे शशिशकलधरां वल्लकीं वादयन्तीम्।
कल्हाराबद्धमालां नियमितविलसच्चोलिकां रक्तवस्त्रां
मातंगीं शंख पात्रां मधुरमधुमदां चित्रकोद्भासिभालम्।।7।।
ॐ अरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

धृतपाशाङ्.कुशबाणचापहस्ताम्
अणिमादिभिरावृतां मयूखै
रहमित्येव विभावये भवानीम् । ।8 । ।
ॐ बन्धूककान्चननिभं रुचिराक्षमालां
पशांकुशौ च वरदां निजबाहुदण्डैः ।
बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्र
मर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि । ।9 । ।
ॐ उत्तप्तहेमरुचिरां रविचन्द्रवह्नि
नेत्रां धनुश्शरयुताङ्कुशपाशाशूलम् ।
रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिवशक्तिरूपां
कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दुलेखाम् । ।10 । ।
ॐ बालरविद्युतिमिन्दुकिरीटां तुंगकुचां नयनत्रययुक्ताम् ।
स्मेरमुखीं वरदाङ्.कुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम् । ।11 । ।
ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् ।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गा त्रिनेत्रां भजे । ।12 । ।
ॐ बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ।
पशांगकुशवराभीतीर्धारयन्तीं शिवां भजे । ।13 । ।

सिद्धकुन्जिकास्तोत्रम्

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुन्जिका स्तोत्र मुत्तमम् ।
येन मन्त्र प्रभावेण चण्डी जापः शुभो भवेत् । ।1 । ।
न कवचं न अर्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम् ।
न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम् । ।2 । ।
कुन्जिका पाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत् ।
अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम् । ।3 । ।
गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति ।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम् ।
पाठमात्रेण संसिद्धयेत् कुन्जिकास्तोत्रमुत्तमम् । ।4 । ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अथ मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौ हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल

प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा।

इति मंत्रः

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि।
नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि।।1।।
नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि ।।22।।
जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरूष्व मे।
ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका।।3।।
क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते।
चमुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी।।4।।
विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मंत्ररूपिणि।।5।।
धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं करु।।6।।
हुं हु हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः।।7।।
अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं
धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा।।
पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा।।8।।
म्लां म्लीं म्लूं मूल विस्तीर्ण कुन्जिकाए नमो नमः
सां सीं सूं सप्तशती देव्या मंत्रसिद्धिं कुरुष्व मे।।
इदं तु कुन्जिका स्तोत्रं मंत्रजागर्तिहेतवे।
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति।।
यस्तु कुंजिकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत्।
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शाप विमोचन स्तोत्र –

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्रां क्रीं चण्डिकादेव्यै शापनाशानुग्रहं कुरु कुरु स्वाहा

ॐ नमों देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।

नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशति चण्डिके उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ह्रीं ह्रीं वं वं ऐं ऐं मृतसंजीवनि विद्ये मृतमुत्थापयोत्थापय क्रीं ह्रीं ह्रीं वं स्वाहा।

ॐ श्रीं श्रीं क्लीं हूं ॐ ऐं क्षोभय मोहय उत्कीलय उत्कीलय उत्कीलय ठं ठं।

ॐ अस्य श्रीचण्डिकाया ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापविमोचनमन्त्रस्य वसिष्ठ।

नारदसंवादसामवेदाधिपतिब्रह्माण ऋषयः सर्वेश्वर्यकारिणी श्रीदुर्गा देवता।

चरित्रत्रयं बींज ह्रीं शक्तिः त्रिगुणात्मस्वरूपचण्डिकाशापविमुक्तौ मम संकल्पितकार्यसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ॐ(ह्रीं) रीं रेतः स्वरूपिण्यै मधुकैटभमर्दिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।1।।

ॐ श्रीं बुद्धिस्वरूपपिण्यै महिषासुरसैन्यनाशिन्यै ब्रह्मवसिष्ठ विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।2।।

ॐ रं रक्तस्वरूपिण्यै महिषासुरमर्दिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।3।।

ॐ क्षुं क्षुधास्वरूपिण्यै देववन्दितायै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।4।।

ॐ छां छायास्वरूपिण्यै दूतसंवादिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।5।।

ॐ शं शक्तिस्वरूपपिण्यै धूम्रलोचनाघातिन्यै ब्रह्मवसिष्ठ विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव।।6।।

ॐ तृं तृषास्वरूपिण्यै चण्डमुण्डवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठ विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव।।7।।

ॐ क्षां क्षान्तिस्वरूपिण्यै रक्तबीजवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठ विश्वामित्र

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शापाद् विमुक्ता भव।।8।।
ॐ जां जातिस्वरूपिण्यै निशुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वा मित्र शापाद् विमुक्ता भव।।9।।
ॐ लं लज्जास्वरूपिण्यै शुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।10।।
ॐ शां शान्तिस्वरूपिण्यै देवस्तुत्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।11।।
ॐ श्रं श्रद्धास्वरूपिण्यै सकलफलदाष्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।12।।
ॐ कां कान्तिस्वरूपिण्यै राजवरप्रदायै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।13।।
ॐ मां मातृस्वरूपिण्यै अनर्गलमहिमसहितायै ब्रह्मवसिष्ठविश्वा मित्र शापाद् विमुक्ता भव।।14।।
ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै सं सर्वैश्वर्यकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।15।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिवायै अभेद्यकवचस्वरूपिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वा मित्र शापाद् विमुक्ता भव।।16।।
ॐ क्रीं काल्यै कालि ह्रीं फट् स्वाहायै ऋग्वेदस्वरूपिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वा मित्र शापाद् विमुक्ता भव।।17।।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाकाली महालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यैनमः।।18।।

देश का पहला तंत्र स्कूल
देवराधा ट्रस्ट (पंजीकृत)
बुधनी तहसील, ग्राम बुधनी
जिला सिहोर, मध्यप्रदेश
तन्त्र स्कूल, मन्त्र सिखने का स्कूल
भागवत प्रवचन स्कूल, ज्योतिष सिखाने
का स्कूल वास्तु ज्ञान, साधना स्थली

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विनियोगः एवं ध्यानम् एवं पूर्ण आहुति मंत्र –

प्रथमोऽध्यायः विनियोग –

ॐ प्रथमचरित्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, महाकाली देवता, गायत्री छन्दः, नन्दा शक्तिः, रक्तदन्तिका बीजम्, अग्निस्तत्त्वम्, ऋग्वेदः स्वरूपम्, श्रीमहाकालीप्रीत्यर्थे प्रथमचरित्रजपे विनियोगः।

ध्यानम् –

ॐ खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्ख संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्।।1।।

1. ॐ ऐं श्रीं अद्यायै नमः
2. ॐ ऐं ह्रीं काल्यै नमः
3. ॐ ऐं क्लीं कराल्यै नमः
4. ॐ ऐं श्री कल्याणै नमः
5. ॐ ऐं प्रीं कलावत्यै नमः
6. ॐ ऐं ह्रां कालिकायै नमः
7. ॐ ऐं ह्रीं कालमात्रे नमः
8. ॐ ऐं सौं कपर्दिन्यै नमः
9. ॐ ऐं प्रें करालास्यायै नमः
10. ॐ ऐं म्रीं कुशान्वै नमः
11. ॐ ऐं हलरीमं कपिलायै नमः
12. ॐ ऐं म्लीं कृष्णायै नमः
13. ॐ ऐं स्त्रीं विवर्धिन्यै नमः
14. ॐ ऐं क्रां कादम्बिनीदैव्यै नमः
15. ॐ ऐं हस्लीं कलाधारायै नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

16. ऊँ ऐं क्रीं विमलादेव्यै नमः
17. ऊँ ऐं चां कुलकरीं नमः
18. ऊँ ऐं भें सर्वशत्रुक्ष्यकरी देव्यै नमः
19. ऊँ ऐं क्रीं कलकण्ठायै नमः
20. ऊँ ऐं वैं धनकरी नमः
21. ऊँ ऐं ह्रौं पुष्टीकरीदेव्यै नमः
22. ऊँ ऐं युं कोमलांगयै नमः
23. ऊँ ऐं जुं कृषोदर्ये नमः
24. ऊँ ऐं हं स्कन्धमात्रे नमः
25. ऊँ ऐं शं नागकन्यायै नमः
26. ऊँ ऐं रौं कस्तुर्ये नमः
27. ऊँ ऐं यं सुनन्दायै नमः
28. ऊँ ऐं विं कुलिनायै नमः
29. ऊँ ऐं वैं कौतुकिन्यै नमः
30. ऊँ ऐं चें काशीश्वर्ये नमः
31. ऊँ ऐं ह्रीं सर्वसिद्धिदात्र्यै नमः
32. ऊँ ऐं कुं सिद्धेश्वर्ये नमः
33. ऊँ ऐं सं सर्वानन्दकर्ये नमः
34. ऊँ ऐं कं कोटराक्षीर्ये नमः – ?
35. ऊँ ऐं श्रीं कालकाल्यै नमः
36. ऊँ ऐं त्रों क्लींकारी देव्यै नमः
37. ऊँ ऐं स्त्रां कपालिन्यै नमः
38. ऊँ ऐं ज्यें किशोरीदेव्यै नमः
39. ऊँ ऐं रौं कादम्बिन्यै नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

40. ऊँ ऐं द्रां क्रोधकर्ये नमः
41. ऊँ ऐं द्रों कन्चनार्यै नमः
42. ऊँ ऐं ह्रां कुलप्रीयायै नमः
43. ऊँ ऐं द्रूं कृपाकर्ये नमः
44. ऊँ ऐं शां कृत्यै नमः
45. ऊँ ऐं मीं कौलिकायै नमः
46. ऊँ ऐं श्रौं कान्तायै नमः
47. ऊँ ऐं जूं कुलिनायै नमः
48. ऊँ ऐं हल्रूम क्रूरायै नमः
49. ऊँ ऐं श्रूं क्रीं रूपायै नमः
50. ऊँ ऐं प्रीं कार्तिक्यै नमः
51. ऊँ ऐं रं कौलिन्यै नमः
52. ऊँ ऐं वं कोटर्ये नमः
53. ऊँ ऐं व्रीं क्रीडायै नमः
54. ऊँ ऐं ब्लूं कालरूपायै नमः
55. ऊँ ऐं स्त्रौं कोटिसूर्यो नमः
56. ऊँ ऐं ब्लां कामिन्यै नमः
57. ऊँ ऐं लूं कुल श्रोष्ठायै नमः
58. ऊँ ऐं सां कुलजायै नमः
59. ऊँ ऐं रौं कुब्जिकायै नमः
60. ऊँ ऐं हसौं ज्ञानदायै नमः
61. ऊँ ऐं क्रूं मेधायै नमः
62. ऊँ ऐं शौं विष्णुमायायै नमः
63. ऊँ ऐं श्रौं मोहिन्यै नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

64. ऊँ ऐं वं सर्वानन्दकर्यै नमः
65. ऊँ ऐं त्रूं तपोरूपायै नमः
66. ऊँ ऐं क्रौं जगद्धात्र्यै नमः
67. ऊँ ऐं क्लूं वरप्रदायै नमः
68. ऊँ ऐं क्लीं राज्यप्रदायै नमः
69. ऊँ ऐं श्रीं धनदायै नमः
70. ऊँ ऐं ब्लूं जनन्यै नमः
71. ऊँ ऐं ठां वरदायै नमः
72. ऊँ ऐं ट्रीं लक्ष्यदायिन्यै नमः
73. ऊँ ऐं स्त्रां मनुरूपायै नमः
74. ऊँ ऐं स्लूं सर्वदायै नमः
75. ऊँ ऐं क्रैं बुद्धिप्रदायै नमः
76. ऊँ ऐं च्रां अजायै नमः
77. ऊँ ऐं फ्रां नित्यायै नमः
78. ऊँ ऐं जीं अभयायै नमः
79. ऊँ ऐं लूं मंत्रप्रियायै नमः
80. ऊँ ऐं स्लूं यज्ञप्रियायै नमः
81. ऊँ ऐं नों निर्भयप्रदायिन्यै नमः
82. ऊँ ऐं स्त्रीं रिपुनाशिन्यै नमः
83. ऊँ ऐं प्रूं ग्रहपीडाहर्ये नमः
84. ऊँ ऐं स्त्रूं पापहराये नमः
85. ऊँ ऐं ज्व्रां भक्तरक्षकायै नमः
86. ऊँ ऐं वां बन्धन मोचन्यै नमः
87. ऊँ ऐं ऊँ संकटहारिण्यै नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

88. ऊँ ऐं श्रौं शेलपुत्र्यै नमः
89. ऊँ ऐं ऋं भयनाशिन्यै नमः
90. ऊँ ऐं रूं सुखकर्ये नमः
91. ऊँ ऐं क्लीं सर्वबाधप्रशमन्यै नमः
92. ऊँ ऐं दुं देविलोक प्रदायिन्यै नमः
93. ऊँ ऐं ह्रीं पापनाशिन्यै नमः
94. ऊँ ऐं गूं भोगदायै नमः
95. ऊँ ऐंल लां दैत्यनाशिन्यै नमः
96. ऊँ ऐं हृीं प्रभावत्यै नमः
97. ऊँ ऐं गं सिद्धिप्रदायिन्यै नमः
98. ऊँ ऐं ऐं ऋद्धि प्रदायिन्यै नमः
99. ऊँ ऐं श्रौं ब्रह्मचारिण्यै नमः
100. ऊँ ऐं जूं श्मशानकाल्यै नमः
101. ऊँ ऐं डें रूद्रकाल्यै नमः
102. ऊँ ऐं श्रौं दक्षिणकाल्यै नमः
103. ऊँ ऐं छ्रां भैरव आराध्यायै नमः
104. ऊँ ऐं क्लीं चन्द्रघण्टयै नमः

पूर्ण आहुति मंत्र –
ह्रीं सांगाये सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायैं सवाहनायै श्री महालक्ष्मी अष्टाविंशति वर्णात्मिकयै लक्ष्मी बीजाधिष्ठायै नमः महाआहुति होम समर्पयामी स्वाहा।

तीन घी से आहुति देना है – ऊँ अम्बें स्वाहा, ऊँ अम्बिके स्वाहा, ऊँ अम्बालिके स्वाहा, अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वाहा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

द्वितीयोऽध्यायः

विनियोगः

ॐ मध्यमचरित्रस्य विष्णुर्ऋषिः, महालक्ष्मीदैवता, उष्णिक् छन्दः, शाकम्भरी शक्तिः, दुर्गा बीजम्, वायुस्तत्त्वम्यजुर्वेदः स्वरूपम्, श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थ मध्यमचरित्रजपे विनियोगः।

ध्यानम् –

ॐ अक्षस्त्रक्परशु गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।।2।।

अध्याय 2 महिषासुर सैन्य वधः

ॐ बीजत्रायै विद्महे तत्प्रधानाय धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्

1. ॐ ऐं ह्रीं श्रौं कुष्माण्ड़ायै नमः
2. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शिवायै नमः
3. ॐ ऐं ह्रीं ह्सूं सर्वज्ञायै नमः
4. ॐ ऐं ह्रीं ह्रौं भद्रकाल्यै नमः
5. ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं पुण्यायै नमः
6. ॐ ऐं ह्रीं अं शक्तिरूपायै नमः
7. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाकालिकायै नमः
8. ॐ ऐं ह्रीं चां कात्यायन्यै नमः
9. ॐ ऐं ह्रीं मुं तेजोवत्यै नमः
10. ॐ ऐं ह्रीं डां वाग्यै नमः
11. ॐ ऐं ह्रीं यैं मंगलायै नमः
12. ॐ ऐं ह्रीं विं निर्गुणायै नमः
13. ॐ ऐं ह्रीं च्चें बहुलायै नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

14. ऊँ ऐं ह्रीं ईं आधारशक्त्यै नमः
15. ऊँ ऐं ह्रीं सौं पिनाकिन्यै नमः
16. ऊँ ऐं ह्रीं व्रां कर्मज्ञान्यै नमः
17. ऊँ ऐं ह्रीं त्रौं गुणत्रयै नमः
18. ऊँ ऐं ह्रीं लूं श्यामायै नमः
19. ऊँ ऐं ह्रीं वं शाभव्यै नमः
20. ऊँ ऐं ह्रीं ह्रां शान्तायै नमः
21. ऊँ ऐं ह्रीं क्रीं नित्यायै नमः
22. ऊँ ऐं ह्रीं सौं शुद्धायै नमः
23. ऊँ ऐं ह्रीं यं चण्डहस्तायै नमः
24. ऊँ ऐं ह्रीं ऐं विशालाक्षी दैव्यै नमः
25. ऊँ ऐं ह्रीं मूं ज्येष्ठायै नमः
26. ऊँ ऐं ह्रीं सः जगतहारिण्यै नमः
27. ऊँ ऐं ह्रीं हं दुःखनाशिन्यै नमः
28. ऊँ ऐं ह्रीं सं योगमायायै नमः
29. ऊँ ऐं ह्रीं सों तपस्विन्यै नमः
30. ऊँ ऐं ह्रीं शं ज्ञानीरूपायै नमः
31. ऊँ ऐं ह्रीं हं निराकारायै नमः
32. ऊँ ऐं ह्रीं ह्रौं वृद्धमातायै नमः
33. ऊँ ऐं ह्रीं म्लीं शुभावहायै नमः
34. ऊँ ऐं ह्रींयूं सर्वगतायै नमः
35. ऊँ ऐं ह्रीं त्रूं भवानीदैव्यै नमः
36. ऊँ ऐं ह्रीं स्त्रीं सत्यायै नमः
37. ऊँ ऐं ह्रीं आं अनन्तायै नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

38. ॐ ऐं ह्रीं प्रें हिंगलाजायै नमः
39. ॐ ऐं ह्रीं शं जयन्तयै नमः
40. ॐ ऐं ह्रीं ह्वां निलेश्वर्ये नमः
41. ॐ ऐं ह्रीं स्मूं पदमायै नमः
42. ॐ ऐं ह्रीं ऊं ललीतायै नमः
43. ॐ ऐं ह्रीं गूं श्रीयै नमः
44. ॐ ऐं ह्रीं व्यूं हरिप्रियायै नमः
45. ॐ ऐं ह्रीं ह्रूं देवसिद्धायै नमः
46. ॐ ऐं ह्रीं भैं दुर्गदायै नमः
47. ॐ ऐं ह्रीं ह्वां शोभनायै नमः
48. ॐ ऐं ह्रीं क्रूं पद्मवासायै नमः
49. ॐ ऐं ह्रीं सूं देविप्रियायै नमः
50. ॐ ऐं ह्रीं ल्रीं गौर्ये नमः
51. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नारायण्यै नमः
52. ॐ ऐं ह्रीं द्रूं क्रोधिन्यै नमः
53. ॐ ऐं ह्रीं हव्रुं कुशलायै नमः
54. ॐ ऐं ह्रीं ह्सौं शस्त्रायै नमः
55. ॐ ऐं ह्रीं क्रां उमादेव्यै नमः
56. ॐ ऐं ह्रीं स्हौं बुद्धिदायै नमः
57. ॐ ऐं ह्रीं म्लूं चरास्यायै नमः
58. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नवीनायै नमः
59. ॐ ऐं ह्रीं गैं क्षमायै नमः
60. ॐ ऐं ह्रीं क्रूं भ्रामरी नमः दैव्यै नमः
61. ॐ ऐं ह्रीं त्रीं तारा दैव्यै नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

62. ऊँ ऐं ह्रीं क्स्त्रीं कराल्यै नमः
63. ऊँ ऐं ह्रीं कं योग निष्ठायै नमः
64. ऊँ ऐं ह्रीं फ्रों रूधिरप्रियायै नमः
65. ऊँ ऐं ह्रीं ह्रीं कालरात्यै नमः – ?
66. ऊँ ऐं ह्रीं शां कात्यायिन्यै नमः
67. ऊँ ऐं ह्रीं क्ष्म्रीं महालक्ष्म्यै नमः
68. ऊँ ऐं ह्रीं रों रौद्रायै नमः
69. ऊँ ऐं ह्रीं डुं. क्षिरोदत नायिकायै नमः

पूर्ण आहुति मंत्र –
ऊँ सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै ऐं बीजाधिष्ठाये महाकालिकायै नमः महाआहुति होम समर्पयामी स्वाहा

तीन बार घी से आहुति देना है – ऊँ अम्बे स्वाहा, ऊँ अम्बिके स्वाहा, ऊँ अम्बालिके स्वाहा, अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वाहा

तृतियाोऽध्यायः
ध्यानम् –
ऊँ उद्यद्भानुसहस्त्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां
रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम् ।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं
देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वनदेऽरविन्दस्थिताम् । ।3 । ।

अध्याय 3 महिषासुर वध :
ऊँ बीजत्रायै विद्महे तत्प्रधानाय धीमहि तन्नोः शक्ति प्रचोदयात्
1. ऊँ ऐं ह्रीं श्रौं दक्षिणायै नमः
2. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं तारिण्यै नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

3. ऊँ ऐं ह्रीं सां श्यामायै नमः
4. ऊँ ऐं ह्रीं त्रों तुरीयायै नमः
5. ऊँ ऐं प्रूं तरूण्यै नमः
6. ऊँ ऐं ह्रीं ग्लौं आद्यभवान्यै नमः
7. ऊँ ऐं ह्रीं क्रौं नवाक्षयै नमः
8. ऊँ ऐं ह्रीं व्रीं भीमभैरवायै नमः
9. ऊँ ऐं ह्रीं स्लीं दक्षायै नमः
10. ऊँ ऐं ह्रीं ह्रीं पिंगलायै नमः
11. ऊँ ऐं ह्रीं हौं सुनन्दायै नमः
12. ऊँ ऐं ह्रीं श्रां अम्बिकायै नमः
13. ऊँ ऐं ह्रीं ग्रीं शुभायै नमः
14. ऊँ ऐं ह्रीं क्रूं साधुसेव्यै नमः
15. ऊँ ऐं ह्रीं क्रीं अन्नपूर्णायै नमः
16. ऊँ ऐं ह्रींयां शान्तायै नमः
17. ऊँ ऐं ह्रीं द्लूं बलायै नमः
18. ऊँ ऐं ह्रीं द्रूं सर्वार्थसाधिकायै नमः
19. ऊँ ऐं ह्रीं क्षं ज्ञानीरूपायै नमः
20. ऊँ ऐं ह्रीं ऊँ महाधुम्रायै नमः
21. ऊँ ऐं ह्रीं क्रौं बलाकायै नमः
22. ऊँ ऐं ह्रीं क्ष्म्व्रीं छायायै नमः
23. ऊँ ऐं ह्रीं वां रम्भायै नमः
24. ऊँ ऐं ह्रीं श्रूं रेवत्यै नमः
25. ऊँ ऐं ह्रीं ग्लूं पाताल भैरव्यै नमः
26. ऊँ ऐं ह्रीं ल्रीं मत्तायै नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

27. ऊँ ऐं ह्रीं प्रें महामागोर्यै नमः
28. ऊँ ऐं ह्रीं हूं तारादेव्यै नमः
29. ऊँ ऐं ह्रीं ह्रौं स्वाहायै नमः
30. ऊँ ऐं ह्रीं दें स्वधायै नमः
31. ऊँ ऐं ह्रीं नूं पद्मनेत्रायै नमः
32. ऊँ ऐं ह्रीं आं सुकेभ्यै नमः
33. ऊँ ऐं ह्रीं फ्रां उमायै नमः
34. ऊँ ऐं ह्रीं प्रीं षोड़शयै नमः
35. ऊँ ऐं ह्रीं दं जलोदयै नमः
36. ऊँ ऐं ह्रीं फ्रीं आकाश्यै नमः
37. ऊँ ऐं ह्रीं ह्रीं विमलायै नमः
38. ऊँ ऐं ह्रीं गूं धात्रयै नमः
39. ऊँ ऐं ह्रीं श्रौं कालरूपायै नमः
40. ऊँ ऐं ह्रीं सां शिवायै नमः
41. ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं वरदायै नमः
42. ऊँ ऐं ह्रीं जुं भुवनेश्वयै नमः
43. ऊँ ऐं ह्रं विकरालायै नमः
44. ऊँ ऐं सं त्रिसन्ध्यै नमः

पूर्ण आहुति मंत्र –

ऊँ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनि दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठायै नमः महाआहुति होम समर्पयामी स्वाहा

तीन घी से आहुति देना – ऊँ अम्बें स्वाहा ऊँ अम्बिके स्वाहा, ऊँ अम्बालिके स्वाहा। अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वाहा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चतुर्थोऽध्यायः ध्यानम् –

ॐ कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां
शङ्ख चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः।।4।।

अध्याय 4 इन्द्रादि स्तुतिः

ॐ बीजत्रायै विद्महे तत्प्रधानाय धीमहि तन्नोः शक्ति प्रचोदयात्

1. ॐ ऐं ह्रीं श्रौं सत्यै नमः
2. ॐ ऐं ह्रीं सौं साध्वी दैव्यै नमः
3. ॐ ऐं ह्रीं दीं भव मोचिन्यै नमः
4. ॐ ऐं ह्रीं प्रें सिद्धसेवितायै नमः
5. ॐ ऐं ह्रीं यां दुर्गायै नमः
6. ॐ ऐं ह्रीं रूं जयायै नमः
7. ॐ ऐं ह्रीं भं त्रिनेत्रायै नमः
8. ॐ ऐं ह्रीं सूं शुलधारिण्यै नमः
9. ॐ ऐं ह्रीं श्रां पिनाकधारिण्यै नमः
10. ॐ ऐं ह्रीं औं चन्द्रघण्टायै नमः
11. ॐ ऐं ह्रीं लूं भेरव्यै नमः
12. ॐ ऐं ह्रीं डूं अहंकारायै नमः
13. ॐ ऐं ह्रीं जूं चित्तरूपायै नमः
14. ॐ ऐं ह्रीं धूं ब्रह्मचारिन्यै नमः
15. ॐ ऐं ह्रीं त्रें अनंतायै नमः
16. ॐ ऐं ह्रीं ल्हीं रक्तजैष्ठायै नमः
17. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वविद्यायै नमः
18. ॐ ऐं ह्रीं ईं दक्षकन्यायै नमः
19. ॐ ऐं ह्रीं ह्वां शोभायै नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

20. ऊँ ऐं ह्रीं हलरूम पाटलावत्यै नमः
21. ऊँ ऐं ह्रीं क्लूं क्रूरादैव्यै नमः
22. ऊँ ऐं ह्रीं क्रां छिन्नमस्तायै नमः
23. ऊँ ऐं ह्रीं ल्लूं मान्सभोज्यै नमः
24. ऊँ ऐं ह्रीं फ्रें विमला देव्यै नमः
25. ऊँ ऐं ह्रीं क्रीं युवत्यै नमः
26. ऊँ ऐं ह्रीं म्लूं मुक्तकैश्यै नमः
27. ऊँ ऐं ह्रीं घ्रें अग्निज्वालायै नमः
28. ऊँ ऐं ह्रीं श्रौं पार्वत्यै नमः
29. ऊँ ऐं ह्रीं ह्रौं हिगंलाजायै नमः
30. ऊँ ऐं ह्रीं व्रीं योगनिद्रायै नमः
31. ऊँ ऐं ह्रीं ह्रीं प्रभावत्यै नमः
32. ऊँ ऐं ह्रीं त्रौं मधुमत्यै नमः
33. ऊँ ऐं ह्रीं हल्लौं चेतनायै नमः
34. ऊँ ऐं ह्रीं गीं विश्वमातायै नमः
35. ऊँ ऐं ह्रीं यूं शैलपुत्रयै नमः
36. ऊँ ऐं ह्रीं ल्हीं वसुंधरायै नमः
37. ऊँ ऐं ह्रीं ल्हूं चन्द्रभागायै नमः
38. ऊँ ऐं ह्रीं श्रौं वरदायै नमः
39. ऊँ ऐं ह्रीं ओं त्रिशक्तयै नमः
40. ऊँ ऐं ह्रीं अं मुण्डमालाधारिण्यै नमः
41. ऊँ ऐं ह्रीं म्हौं मृगाक्ष्यै नमः
42. ऊँ ऐं ह्रीं प्रीं गन्धप्रीयायै नमः

पूर्ण आहुति मंत्र –

ह्रीं जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनि दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवायै

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सवाहनारायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठायै नमः महाआहुति होम समर्पयामी स्वाहा

तीन बार घी से आहुति देना – ऊँ अम्बें स्वाहा ऊँ अम्बिके स्वाहा, ऊँ अम्बालिके स्वाहा। अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वाहा।

पंचम अध्यायः विनियोग :–

ऊँ अस्य श्रीउत्तरचरित्रस्य रुद्र ऋषिः महासरस्वती देवता, अनुष्टुप् छन्दः, भीमा शक्तिः, भ्रामरी बीजम्, सूर्यस्तत्त्वम्, सामवेदः स्वरूपम्, महासरस्वतीप्रीत्यर्थे उत्तरचरित्रपाठे विनियोगः

ध्यानम् –

ऊँ घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा–
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्।।5।।

अध्याय 5 देव्या–दूत संवाद

ऊँ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानाय धीमहि तन्नोः शक्ति प्रचोदयात्

1. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं कुष्माण्डायै नमः
2. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्रीं स्कन्धमातायै नमः
3. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ओं शूलिण्यै नमः
4. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं चर्चिकायै नमः
5. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्रीं बगलायै नमः
6. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं त्रों वत्सलायै नमः
7. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रीं हुंकारायै नमः
8. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हसौं सौम्यायै नमः
9. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं सिद्धायै नमः
10. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं तेजोमयीयै नमः
11. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हूं जयायै नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

12. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं शुन्यागम्यै नमः
13. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं रौं सिद्धायै नमः
14. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रीं रूक्मिण्यै नमः
15. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्लीं राजराजेश्वर्यै नमः
16. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं प्लूं सिद्धदायै नमः
17. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्हौं सुधायै नमः
18. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रीं प्रीतयै नमः
19. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ग्लूं शूलपाणिन्यै नमः
20. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं व्रीं कामीनीयै नमः
21. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सौः सुगोत्रायै नमः
22. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लूं शारदायै नमः
23. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्लूं शंकरयै नमः
24. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं द्रां माहिन्यै नमः
25. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्सां आग्निपाषै नमः
26. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्ष्म्रीं कुमारीपूजन प्रीतायै नमः
27. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ग्लौं त्रिपुर सुन्दरी दैव्यै नमः
28. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्कं कुमारी भोजन आनन्दायै नमः
29. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं त्रूं कुमारी रूपधारिण्यै नमः
30. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्क्लूं विशालाक्षीदेव्यै नमः
31. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रौं कंकालमाल्यधारिण्यै नमः
32. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं च्छ्रीं दिगम्बर्ये नमः
33. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्लूं सिहवाहिन्यै नमः
34. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं अर्पणादैव्यै नमः
35. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं शां शवासनादैव्यै नमः
36. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्हीं वीजयायै नमः
37. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रूं कालकाल्यै नमः
38. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्लीं शक्तिरूपिन्यै नमः
39. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लीं विन्ध्यवासिन्यै नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

40. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सं पट्टनेश्वरी दैव्य नमः
41. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लूं जयदुर्गायै नमः
42. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हसूं शास्त्रायै नमः
43. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रूं विशालाक्षीदेव्यै नमः
44. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं जूं आस्था दैव्यै नमः
45. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हस्लरीं शस्त्राय्यै नमः
46. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्कीं राजराजेश्वरी दैव्यै नमः
47. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लां गिरिनदिंनीदेव्यै नमः
48. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रूं पूर्णमास्यै नमः
49. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हं जयदुर्गायै नमः
50. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्लीं वीणाधारिण्यै नमः
51. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्स्त्रूं विकरालायै नमः
52. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं द्रौं जयायै नमः
53. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्लूं हवनायै नमः
54. ऊँ ऐंग ह्रीं क्लीं गां जगतधाष्यै नमः
55. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सं उग्रायै नमः
56. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्स्त्रां उग्रप्रभायै नमः
57. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रीं गुहेश्वर्ये नमः
58. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्लां कलहायै नमः
59. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्लूं बुद्धिरूपायै नमः
60. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रें शोकहारिण्यै नमः
61. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ओं पापनाशिण्यै नमः
62. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्म्लीं निशुम्भ शुम्भ हन्नयै नमः
63. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्वां महिषासुर मर्दिन्यैं नमः
64. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ऊं मधुकैटभहन्ष्यै नमः
65. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हल्लूम मधुकैटभ मथन्यै नमः
66. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हूं शुम्भ असुर विनाशिन्यै नमः
67. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं नं निशुम्भ आदि हरायै नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

68. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्त्रां चण्डगत्यै नमः
69. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं वं चण्ड मुण्ड नाशिन्यै नमः
70. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं मं धुम्रलोचन मर्दनाये नमः
71. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं म्क्लीं रक्तबीज निहत्र्यै नमः
72. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं शां शुम्भ असुर मर्दिन्यै नमः
73. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लं चण्ड नाशिन्यै नमः
74. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं भैं चण्डरूपाये नमः
75. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्लूं महाचण्डाये नमः
76. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हौं चण्डखण्डिन्यै नमः
77. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ईं चण्ड स्वरूपाये नमः
78. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चें चण्डवेगाये नमः
79. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं कल्रीं चामुण्डाये नमः
80. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हलरीं चण्ड्यै नमः
81. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्ष्मलरीम चण्डेश्वर्ये नमः
82. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं पूं चण्डिकाये नमः
83. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं चण्डमात्रे नमः
84. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रौं चण्डविनाशिन्यै नमः
85. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं भ्रूं मुण्ड विनाशिन्यै
86. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्स्त्रीं चाण्डालिन्यै नमः
87. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं आं मुख्यचण्डाये नमः
88. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रूं प्रचण्ड प्रचण्डाये नमः
89. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं त्रूं शच्यै नमः
90. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं डूं ललजिव्हाय्ये नमः
91. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं जां अट्टाहासाये नमः
92. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हल्रूम महाशुन्याये नमः
93. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रौं मुण्डधारिण्यै नमः
94. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्रौं खर्पराये नमः
95. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं किं मुण्डाये नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

96. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ग्लूं श्मशानवासिन्यै नमः
97. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं छ्रंक्लीं मनसादेव्यै नमः
98. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं रं क्षमायै नमः
99. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्सैं रतिप्रियायै नमः
100. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्हुं शिवशक्तय्यै नमः
101. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं कमनीयायै नमः
102. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रश्रीं अदृश्यायै नमः
103. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ओं मातंग्यै नमः
104. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लूं शवरूढायै नमः
105. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हल्लुम बलिखायै नमः
106. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ल्लूं शवगतायै नमः
107. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्क्रीं शितलायै नमः
108. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्स्त्रौं क्रूरतापिन्यै नमः
109. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्भ्रूं ज्वालामालिन्यै नमः
110. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं क्ष्मक्लीं ज्वालरूपिन्यै नमः
111. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं व्रीं क्रोधिन्यै नमः
112. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सीं विकरालायै नमः
113. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं भूं कपाल खडगधारिन्यै नमः
114. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं लां खड्गखप्परधारिण्यै नमः
115. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रौं शमशानवासिन्यै नमः
116. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्हैं खड्गहस्तायै नमः
117. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं काल्यै नमः
118. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं तारायै नमः
119. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं फ्रें षोडशीदैव्यै नमः
120. ऊँ ऐं ह्रीं क्लींरूं भुवनेश्वरी दैव्यै नमः
121. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं च्छ्रूं भैरव्यै नमः
122. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं हलूम् छिन्नमस्तायै नमः
123. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं कं धुमावत्यै नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

124. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं द्रें बगलामुख्यै नमः
125. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं मातंग्यै नमः
126. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सां कमलात्मिकायै नमः
127. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रीं प्रचन्डायै नमः
128. ऊँ ऐं ह्रीं क्लींऐं चण्डायै नमः
129. ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्कीं दुर्गायै नमः

पूर्ण आहुति मंत्र –

क्लीं जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनि दुर्गा क्षमा शिव धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै धूम्राक्ष्यै विष्णु मायादि चतुर्विशं देवताभ्यौ नमो नमः महाआहुति होम समर्पयामी स्वाहा

तीन बार घी से आहुति देना है – ऊँ अम्बें स्वाहा ऊँ अम्बिके स्वाहा ऊँ अम्बालिके स्वाहा। अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वाहा।

षष्ठोऽध्यायः ध्यानम् –

ऊँ नागाधीश्वरविष्टरां फणिफणोत्तंसोरुरत्नावली
भास्वदेहलतां दिवाकरनिभां नेत्रत्रयोद्भासिताम्।
मालाकुम्भकपालनीरजकरां चन्द्रार्धचूडां परां
सर्वज्ञेश्वरभैरवाड.कनिलयां पद्मवतीं चिन्तये।।6।।

अध्याय 6 धूम्रलोचन वध :

ऊँ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानाय धीमहि तन्नोः शक्ति प्रचोदयात्

1. ऊँ ऐं श्रौं महामंगलायै नमः
2. ऊँ ऐं ऊँ महामायायै नमः
3. ऊँ ऐं त्रूं महातपायै नमः
4. ऊँ ऐं ह्रौं महाविध्यायै नमः
5. ऊँ ऐं क्रौं महामत्यै नमः
6. ऊँ ऐं श्रौं महायौग्यै नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

7. ऊँ ऐं त्रीं महाबलायै नमः
8. ऊँ ऐं क्लीं महाशुन्यायै नमः
9. ऊँ ऐं प्रीं महाभगवत्यै नमः
10. ऊँ ऐं ह्रीं महादैव्यै नमः
11. ऊँ ऐं ह्रौं महाचण्डवेगायै नमः
12. ऊँ ऐं श्रौं महाक्रोधायै नमः
13. ऊँ ऐं ऐं महाकाल्यै नमः
14. ऊँ ऐं ऊँ महामोहायै नमः
15. ऊँ ऐं श्रीं महावीरायै नमः
16. ऊँ ऐं क्रां महाबलायै नमः
17. ऊँ ऐं हूं महाराज्ञै देंव्यै नमः
18. ऊँ ऐं छ्रां महामतायै नमः
19. ऊँ ऐं क्ष्मक्ल्रीं महामात्रे नमः
20. ऊँ ऐं ल्लुं महायज्ञायै नमः
21. ऊँ ऐंसौः महावाण्यै नमः
22. ऊँ ऐं ल्हौं महानिर्भायै नमः
23. ऊँ ऐं क्रूं महाचण्डायै नमः
24. ऊँ ऐं सौं महाचण्डवेगायै नमः

पूर्ण आहुति मंत्र – क्लीं जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनि दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते सांगायौ सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै धूम्राक्ष्यै विष्णु मायादि चतुर्विशं देवताभ्यौ नमो नमः महाआहुति होम समर्पयामी स्वाहा।

तीन घी से आहुति देना है – ऊँ अम्बे स्वाहा ऊँ अम्बिके स्वाहा ऊँ अम्बालिके स्वाहा। अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वाहा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सप्तमोऽध्यायः ध्यानम् –
ऊँ ध्यायेयं रत्नपीठे शुककलपठितं शृण्वतीं श्यामलाङ्गीं
न्यस्तैकाङ्घ्रिं सरोजे शशिशकलधरां वल्लकीं वादयन्तीम्।
क्ह्लाराबद्धमालां नियमितविलसच्चोलिकां रक्तवस्त्रां
मातङ्गीं शङखपात्रां मधुरमधुमदां चित्रकोद्भासिभालम्।।7।।

अध्याय 7 चण्ड–मुण्ड वध :

ऊँ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानान्यै धीमहि तन्नोः शक्ति प्रचोदयात्

1. ऊँ ऐं क्लीं श्रौं कलहनाशिन्यै नमः
2. ऊँ ऐं क्लीं कुं क्लेशनाशिन्यै नमः
3. ऊँ ऐं क्लीं ल्हीं महामारिन्यै नमः
4. ऊँ ऐं क्लींरूं कष्टनाशिन्यै नमः
5. ऊँ ऐं क्लीं मूं कुमतिनाशिन्यै नमः
6. ऊँ ऐं क्लीं त्रौं कुनीतिनाशिन्यै नमः
7. ऊँ ऐं क्लीं ह्रौं दुःखनाशयै नमः
8. ऊँ ऐं क्लीं ऊँ विध्ननाशिन्यै नमः
9. ऊँ ऐं क्लीं ह्सूं दक्षयज्ञविनाशिन्यै नमः
10. ऊँ ऐं क्लीं क्लूं महाकाल्यै नमः
11. ऊँ ऐं क्लीं क्रें महावीकरालायै नमः
12. ऊँ ऐं क्लीं नें महालक्ष्यै नमः
13. ऊँ ऐं क्लीं लूं महाकराल्यै नमः
14. ऊँ ऐं क्लीं ह्स्लीं दशअस्त्रधारिण्यै नमः
15. ऊँ ऐं क्लीं प्लूं दुःखहन्त्र्यै नमः
16. ऊँ ऐं क्लीं शां व्याधिविनाशिन्यै नमः
17. ऊँ ऐं क्लीं स्लूं रोगनाशिन्यै नमः
18. ऊँ ऐं क्लीं प्लीं पापहरायै नमः
19. ऊँ ऐं क्लीं प्रें महामारीरूपायै नमः
20. ऊँ ऐं क्लीं अं दुःखनिवारिणीयै नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

21. ऊँ ऐं क्लीं औं क कष्टनिवारिण्यै नमः
22. ऊँ ऐं क्लीं म्ल्रीं महाकालायै नमः
23. ऊँ ऐं क्लीं श्रां पापनाशिन्यै नमः
24. ऊँ ऐं क्लीं सौं महाभैरव्यै नमः
25. ऊँ ऐं क्लीं श्रौं महागौर्ये नमः
26. ऊँ ऐं क्लीं प्रीं महाशुन्यायै नमः
27. ऊँ ऐं क्लीं हस्त्रीं महाविरेन्दायै नमः

पूर्ण आहुति मंत्र –
ऊँ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनि दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै काली चामुण्डादेव्यै कर्पूर बीजाधिष्ठायै नमः महाआहुति होम समर्पयामी स्वाहा।
तीन बार घी से आहुति देना है – ऊँ अम्बे स्वाहा ऊँ अम्बिके स्वाहा ऊँ अम्बालिके स्वाहा । अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वाहा।

अष्टमोऽध्यायः ध्यानम् –
ऊँ अरुणां करुणां तरगिंताक्षीं
धृत पाशांकुश बाण चापहस्ताम्
अणिमा दिभिरा वृतां मयूखै
रहमित्येव विभावये भवानीम्।।8।।

अध्याय 8 रक्तबीज वध :
ऊँ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानाय धीमहि तन्नोः शक्ति प्रचोदयात्
1. ऊँ ऐं श्रौं वामाचारायै नमः
2. ऊँ ऐं म्हल्रीं शिवसानिध्न्यै नमः
3. ऊँ ऐं प्रूं कामेश्वर्ये नमः
4. ऊँ ऐं ऐं कामशक्त्यै नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

5. ॐ ऐं क्रों रक्तक्रियायै नमः
6. ॐ ऐं ईं पापहन्त्र्यैं नमः
7. ॐ ऐं ऐं कामप्रियायै नमः
8. ॐ ऐं ल्रीं प्राणप्रियै नमः
9. ॐ ऐं फ्रौं कामांग्वर्धिन्यै नमः
10. ॐ ऐं म्लूं कोमार्य नमः
11. ॐ ऐं नों कामदायै नमः
12. ॐ ऐं हूं कामप्रदायै नमः
13. ॐ ऐं फ्रौं रमणीयै नमः
14. ॐ ऐं ग्लौं कामहन्त्र्यै नमः
15. ॐ ऐं स्मौं निलान्चलाय्यै नमः
16. ॐ ऐं सौं कामदेवकलायै नमः
17. ॐ ऐं श्रीं कामजनन्यै नमः
18. ॐ ऐं स्हौं बलिरतायै नमः
19. ॐ ऐं ख्सें कामरूपायै नमः
20. ॐ ऐं क्ष्म्लीं कामसुन्दर्ये नमः
21. ॐ ऐं ह्वौं कामरूपिन्यै नमः
22. ॐ ऐं वीं कामबलायै नमः
23. ॐ ऐं लूं कामकान्तायै नमः
24. ॐ ऐं ल्सीं काम आर्कषण रूपायै नमः
25. ॐ ऐं व्लीं कामपीठनिवासिन्यै नमः
26. ॐ ऐं त्स्त्रों कामिन्यै नमः
27. ॐ ऐं ब्रुं कामसौम्यै नमः
28. ॐ ऐं श्क्लीं कामेश्वर्ये नमः
29. ॐ ऐं श्रूं कमनीयायै नमः
30. ॐ ऐं ह्रीं कामपूरण्यै नमः
31. ॐ ऐं शीं रक्तांग्यै नमः
32. ॐ ऐं क्लीं कामवासिन्यै नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

33. ऊँ ऐं क्लौं कामसम्पन्नायै नमः
34. ऊँ ऐं फ्रूं रजोरूपाय नमः
35. ऊँ ऐं ह्रूं कामेश्वयै नमः
36. ऊँ ऐं क्लूं कामाख्यायै नमः
37. ऊँ ऐं त्रीं रजस्वलायै नमः
38. ऊँ ऐं म्लूं योनी मुद्राप्रसन्ने नमः
39. ऊँ ऐं हं भगमाल्लायै नमः
40. ऊँ ऐं स्लूं योनिगम्यायै नमः
41. ऊँ ऐं औं योन्यै नमः
42. ऊँ ऐं ल्हौं योनीमध्यस्थितायै नमः
43. ऊँ ऐं श्लीं योनीचक्रमय्यै नमः
44. ऊँ ऐं यां यौवनस्थायै नमः
45. ऊँ ऐं क्ष्लीं योनीमुद्रायै नमः
46. ऊँ ऐं हलीं रमण्यै नमः
47. ऊँ ऐं ग्लौं प्रचण्डारूपायै नमः
48. ऊँ ऐं ह्लौं योनीगम्यायै पमः
49. ऊँ ऐं प्रां त्रिशूलधारिण्यै नमः
50. ऊँ ऐं क्रीं बलिवियायै नमः
51. ऊँ ऐं क्लीं शवरूढ़ायै नमः
52. ऊँ ऐं न्स्लुं शवगतायै नमः
53. ऊँ ऐं ह्रीं कामशक्त्यै नमः
54. ऊँ ऐं ह्लौं कामपूर्णे नमः
55. ऊँ ऐं ह्रैं श्मशानवासिन्यै नमः
56. ऊँ ऐं भ्रुं मृत्युनाशिन्यै नमः
57. ऊँ ऐं सौं रक्तनयनायै नमः
58. ऊँ ऐं श्रीं योनिन्यै नमः
59. ऊँ ऐं पसूं सौभाग्यदायिन्यै नमः
60. ऊँ ऐं द्रौं अष्टभुजायै नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

61. ऊँ ऐं स्त्रां सिहवाहिन्यै नमः
62. ऊँ ऐं ह्स्लीं रक्तमध्यायै नमः
63. ऊँ ऐं स्ल्रीं रक्तायै नमः

पूर्ण आहुति मंत्र –

ऊँ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनि दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै भैरव्यै तारादेव्यै नमः महाआहुति होम समर्पयामी स्वाहा।
तीन बार घी से आहुति देना है – ऊँ अम्बे स्वाहा ऊँ अम्बिके स्वाहा ऊँ अम्बालिके स्वाहा। अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वाहा।

नवमोऽध्यायः ध्यानम् –

ऊँ बन्धूककान्चननिभं रुचिराक्षमालां
पशाङ्.कुशौ च वरदां निजबाहुदण्डैः।
बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्र
मर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि।।9।।

अध्याय 9 निशुम्भ वधः

ऊँ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानाय धीमहि तन्नोः शक्ति प्रचोदयात्

1. ऊँ ऐं रौं रजोरूपाय नमः
2. ऊँ ऐं क्लीं रसिकायै नमः
3. ऊँ ऐं म्लौं रक्तपियायै नमः
4. ऊँ ऐं श्रौं रक्तांग्यै नमः
5. ऊँ ऐं ग्लीं उग्रायै नमः
6. ऊँ ऐं ह्रौं उग्रप्रभायै नमः
7. ऊँ ऐं ह्सौं रक्तयै नमः
8. ऊँ ऐं ईं आद्यायै नमः
9. ऊँ ऐं ब्रूं सर्वशत्रुधातिन्यै नमः
10. ऊँ ऐं श्रां उग्रलोचनायै नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

11. ऊँ ऐं लूं मुक्तिप्रदायिन्यै नमः
12. ऊँ ऐं आं दुर्गायै नमः
13. ऊँ ऐं श्रीं ब्राह्मायै नमः
14. ऊँ ऐं क्रौं माहेश्वर्यै नमः
15. ऊँ ऐं प्रूं कौमार्यै नमः
16. ऊँ ऐं क्लीं वैष्णव्यै नमः
17. ऊँ ऐं भ्रूं वाराह्यै नमः
18. ऊँ ऐं ह्रौं इन्द्रान्यै नमः
19. ऊँ ऐं क्रीं विष्णुमायायै नमः
20. ऊँ ऐं म्लीं नारायण्यै नमः
21. ऊँ ऐं ग्लौं अम्बेदेव्यै नमः
22. ऊँ ऐं ह्सूं अम्बिकायै नमः
23. ऊँ ऐं प्लीं अम्बालिकायै नमः
24. ऊँ ऐं ह्रौं अनन्तायै नमः
25. ऊँ ऐं ह्स्त्रां सावित्र्यै नमः
26. ऊँ ऐं स्हों शताक्ष्यै नमः
27. ऊँ ऐं ल्लूं पालिन्यै नमः
28. ऊँ ऐं क्स्लीं जयायै नमः
29. ऊँ ऐं श्रीं त्रिनेत्रायै नमः
30. ऊँ ऐं स्तूं शूलधारिण्यै नमः
31. ऊँ ऐं च्च्वें चण्डघण्टायै नमः
32. ऊँ ऐं वीं शाम्भवीयै नमः
33. ऊँ ऐं क्ष्लूं सर्वमन्त्रमययै नमः
34. ऊँ ऐं श्लूं हरणाक्ष्यै नमः
35. ऊँ ऐं क्रूं सिन्दूरवर्णायै नमः
36. ऊँ ऐं क्रां संध्यार्य नमः
37. ऊँ ऐं ह्रौं दिव्यसिद्धायै नमः
38. ऊँ ऐं कां गणेश्वयै नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

39. ऊँ ऐं स्क्लीं अपराजितायै नमः
40. ऊँ ऐं भ्रुं अनन्तायै नमः
41. ऊँ ऐं फ्रूं क्षमायै नमः

पूर्ण आहुति मंत्र –
ऊँ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनि दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै भैरव्यै तारादेव्यै नमः महाआहुति होम समर्पयामी स्वाहा। अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वहा।
तीन बार घी से आहुति देना है – ऊँ अम्बे स्वाहा ऊँ अम्बिके स्वाहा ऊँ अम्बालिके स्वाहा । अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वाहा।

दशमोऽध्यायः ध्यानम् –
ऊँ उत्तप्तहेमरुचिरां रविचन्द्रवह्नि
नेत्रां धनुश्शरयुताङ्.कुशपाशशूलम्।
रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिवशक्तिरूपां
कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दुलेखाम्।।10।।

अध्याय 10 शुम्भ वध :
ऊँ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानाय धीमहि तन्नोः शक्ति प्रचोदयात्
1. ऊँ ऐं श्रौं सुभद्रायै नमः
2. ऊँ ऐं ह्रीं सुभव्यायै नमः
3. ऊँ ऐं ब्लूं सिद्धीदात्र्यै नमः
4. ऊँ ऐं ह्रीं सुमुख्यै नमः
5. ऊँ ऐं म्लूं विश्वासायै नमः
6. ऊँ ऐं श्रौं जागृत्यै नमः
7. ऊँ ऐं ह्रीं वागीश्वर्ये नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

8. ऊँ ऐं ग्लीं सुकेश्यै नमः
9. ऊँ ऐंश्रीं सत्यै नमः
10. ऊँ ऐं धूं रूद्रचण्डयै नमः
11. ऊँ ऐं हुं कान्तायै नमः
12. ऊँ ऐं द्रौं विश्वमायायै नमः
13. ऊँ ऐं श्रीं कालविनिशिन्यै नमः
14. ऊँ ऐं त्रुं ललितायै नमः
15. ऊँ ऐं ब्रूं कंकाल्यै नमः
16 ऊँ ऐं फ्रें धोरकाल्यै नमः
17 ऊँ ऐं ह्रां गवयै नमः
18 ऊँ ऐं जुं कौलिनायै नमः
19 ऊँ ऐं सौः उग्रायै नमः
20 ऊँ ऐं स्लौं नदीश्वर्यै नमः
21 ऊँ ऐं प्रें सुकुल्यायै नमः
22 ऊँ ऐं हस्वां साधन्यै नमः
23 ऊँ ऐं प्रीं सरोजक्ष्यै नमः
24 ऊँ ऐं फ्रां माहेशान्यै नमः
25 ऊँ ऐं क्रीं रक्तप्रियायै नमः
26 ऊँ ऐं श्रीं नित्यैश्वरी नमः
27 ऊँ ऐं क्रां हरिप्रियायै नमः
28 ऊँ ऐं सः जगतमातायै नमः
29 ऊँ ऐं क्लीं जगतजननयै नमः
30 ऊँ ऐं व्रें कल्याण्यै नमः
31 ऊँ ऐं इं हर्षायै नमः
32 ऊँ ऐं ज्स्हंल्रीं देवसेनायैं नमः

पूर्ण आहुति मंत्र –
ऊँ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनि दुर्गा क्षमा शिवा धात्री

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै भैरव्यै तारादेव्यै नमः महाआहुति होम समर्पयामी स्वाहा। अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वहा।

तीन बार घी से आहुति देना है – ऊँ अम्बे स्वाहा ऊँ अम्बिके स्वाहा ऊँ अम्बालिके स्वाहा । अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वाहा।

एकादशोऽध्यायः ध्यानम् –

ऊँ बालरविद्युतिमिन्दुकिरीटां तुङ.गकुचां नयनत्रययुक्तमृ।
स्मेरमुखीं वरदाङ्.कुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम्।।11।।

अध्याय 11 नारायणी स्तुति

ऊँ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रोदयात

1. ऊँ ऐं श्रौं भवपाशविमोचन्यै नमः
2. ऊँ ऐं क्रूं भोगदायै नमः
3. ऊँ ऐं श्रीं भगवत्यै नमः
4. ऊँ ऐं ल्लीं भक्तरक्षकायै नमः
5. ऊँ ऐं प्रें भक्तप्राणायै नमः
6. ऊँ ऐं स्रौः भक्तप्रियायै नमः
7. ऊँ ऐं स्हौं भय नाशिन्यै नमः
8. ऊँ ऐं श्रूं भामर्ये नमः
9. ऊँ ऐं क्लीं भीमायै नमः
10. ऊँ ऐं स्क्लीं भद्रकाल्यै नमः
11. ऊँ ऐं प्रीं भवमोचनीदैव्यै नमः
12. ऊँ ऐं ग्लौं भद्रायै नमः
13. ऊँ ऐं ह्स्ह्रीं भवान्यै नमः
14. ऊँ ऐं स्त्रौ भैरव्यै नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

15. ऊँ ऐं लीं भुंजगमहिमेदैव्यै नमः
16. ऊँ ऐं म्लीं भुक्ति मुक्ति प्रदेदैव्यै नमः
17. ऊँ ऐं स्तूं भक्तिप्रियायै नमः
18. ऊँ ऐं ज्स्रीं भावुकायै नमः
19. ऊँ ऐं फ्रूं भवानीदैव्यै नमः
20. ऊँ ऐं क्रूं भक्तामिष्ट फलप्रदायै नमः
21. ऊँ ऐं ह्वीं भूतमात्रे नमः
22. ऊँ ऐं ल्लूं भूतात्मिकायै नमः
23. ऊँ ऐं क्ष्रीं भूमिजायै नमः
24. ऊँ ऐं श्रूं रक्षितायै नमः
25. ऊँ ऐं ईं योगवत्यै नमः
26. ऊँ ऐं जुं अट्टाहासायै नमः
27. ऊँ ऐं त्रैं लहुप्रियायै नमः
28. ऊँ ऐं द्रूं अधोरायै नमः
29. ऊँ ऐं ह्रौं विकराल्यै नमः
30. ऊँ ऐं क्लीं विजयायै नमः
31. ऊँ ऐं सूं थगतुष्ठायै नमः
32. ऊँ ऐं हौं भयंकर्यो नमः
33. ऊँ ऐं श्व्रं देवगर्भायै नमः
34. ऊँ ऐं ब्रूं महातेजाये नमः
35. ऊँ ऐं स्फ्रूं अनन्तायै नमः
36. ऊँ ऐं ह्रीं भुजंगायै नमः
37. ऊँ ऐं लं भवप्रीयायै नमः
38. ऊँ ऐं ह्सौं रौद्रायै नमः
39. ऊँ ऐं सें नित्यायै नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

40. ॐ ऐं ह्रीं गोर्ये नमः
41. ॐ ऐं ल्हीं धाष्यै नमः
42. ॐ ऐं वीं सुखायै नमः
43. ॐ ऐं प्लीं कल्याण्यै नमः
44. ॐ ऐं क्ष्म्क्लीं शर्वाण्यै नमः
45. ॐ ऐं त्स्त्रां दुर्गायै नमः
46. ॐ ऐं प्रं दुर्गपारायै नमः
47. ॐ ऐं म्लीं सर्वकारिण्यै नमः
48. ॐ ऐं स्त्रूं कृष्णायै नमः
49. ॐ ऐं क्ष्मां धूम्रायै नमः
50. ॐ ऐं स्तूं दुर्गतिधारिण्यै नमः
51. ॐ ऐं स्रीं दुर्गमोहायै नमः
52. ॐ ऐं थ्रीं दुर्गमाय्यै नमः
53. ॐ ऐं क्रौं दुर्गम्यायै नमः
54. ॐ ऐं श्रां दुर्गभायै नमः
55. ॐ ऐं म्लीं दुर्गमायै नमः

पूर्ण आहुति मंत्र –
क्लीं जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनि दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठाष्ये गरूणवाहिनी नारायणी देव्यै नमः महाआहुति होम समर्पयामी स्वाहा। अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वाहा।

तीन बार घी से आहुति देना है – ॐ अम्बे स्वाहा ॐ अम्बिके स्वाहा ॐ अम्बालिके स्वाहा । अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वाहा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

द्वादशोऽध्यायः ध्यानम् –

ऊँ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।12।।

अध्याय 12 फलस्तुति :

ऊँ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नोः शक्ति प्रोदयात

1. ऊँ ऐं हरीम् मात्ररूपाये नमः
2. ऊँ ऐं ओम जीनमाष्यै नमः
3. ऊँ ऐं श्रीम दुर्गादेव्यै नमः
4. ऊँ ऐं ईम त्रिनेत्रायै नमः
5. ऊँ ऐं क्लीं दुर्गधारिण्यै नमः
6. ऊँ ऐं क्रूं सद्भुत्यै नमः
7. ऊँ ऐं श्रूं सद्गतीयै नमः
8. ऊँ ऐं प्रां सत्यारायै नमः
9. ऊँ ऐं क्रूं नर्मदायै नमः
10. ऊँ ऐं दिं संभगाकाराये नमः
11. ऊँ ऐं फ्रें दाक्षायणीयै नमः
12. ऊँ ऐं हं शिवानी दैव्यै नमः
13. ऊँ ऐं सः मागल्यै नमः
14. ऊँ ऐं चें भूतधष्यै नमः
15. ऊँ ऐं सूं सर्वाण्यै नमः
16. ऊँ ऐं प्रीं मणिदेव्यै नमः
17. ऊँ ऐं ब्लूं शिवान्यै नमः
18. ऊँ ऐं आं अवंत्यै नमः
19. ऊँ ऐं औं रत्नावली देव्यै नमः
20. ऊँ ऐं ह्रीं यशोरेश्वरीयै नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

21. ऊँ ऐं क्रीं फुल्लरायै नमः
22. ऊँ ऐं द्रां त्रिलोकमाल्यै नमः
23. ऊँ ऐं श्रीं मेघायै नमः
24. ऊँ ऐं स्लीं तपचारिन्यै नमः
25. ऊँ ऐं क्लीं विदीप्तायै नमः
26. ऊँ ऐं स्लूं अमृतात्मयै नमः
27. ऊँ ऐं ह्वीं महादैव्यै नमः
28. ऊँ ऐं व्लीं शुक्लाम्बरायै नमः
29. ऊँ ऐं त्रों सुरायै नमः
30. ऊँ ऐं ओम विष्णुवक्षायै नमः
31. ऊँ ऐं श्रौं नवदुर्गायै नमः
32. ऊँ ऐं ऐं तृष्णारूपायै नमः
33. ऊँ ऐं प्रें कर्दमायै नमः
34. ऊँ ऐं द्रूं अनुरागायै नमः
35. ऊँ ऐं क्लूं जातवेद्यै नमः
36. ऊँ ऐं औं गुग्गुलायै नमः
37. ऊँ ऐं सूं बुद्धरूपायै नमः
38. ऊँ ऐं चें लक्ष्मीरूपायै नमः
39. ऊँ ऐं ह्रूं जगतजन्यै नमः
40. ऊँ ऐं प्लीं क्षान्तिरूपायै नमः
41. ऊँ ऐं क्षां क्षान्तिदैव्यैं नमः

पूर्ण आहुति मंत्र –

क्लीं जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनि दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै वर प्रदायै वैष्णवो देव्यै नमः महाआहुति होम समर्पयामी स्वाहा। अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वहा।

तीन बार घी से आहुति देना है – ऊँ अम्बे स्वाहा ऊँ अम्बिके स्वाहा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ऊँ अम्बालिके स्वाहा । अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वाहा।

त्रयोदशोऽध्यायः ध्यानम् –

ऊँ बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्।
पशाङ्.कुशवराभीतीर्धारयन्तीं शिवां भजे।।13।।

अध्याय 13 सुरथ – वैश्ययोर्वरप्रदानम्

ऊँ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्राधान्यै धीमहि तन्नोः श‍क्ति प्रचोदयात्

1. ऊँ ऐं श्रौं यज्ञप्रियायै नमः
2. ऊँ ऐं व्रीं सौमान्यै नमः
3. ऊँ ऐं ओं कमलासनायै नमः
4. ऊँ ऐं औं कमलायै नमः
5. ऊँ ऐं ह्वां अनन्तायै नमः
6. ऊँ ऐं श्रां अद्भूतरूपायै नमः
7. ऊँ ऐं श्रीं ईशानयै नमः
8. ऊँ ऐं ओं ललितायै नमः
9. ऊँ ऐं प्लीं अम्बायै नमः
10. ऊँ ऐं सौं सर्वज्ञायै नमः
11. ऊँ ऐं ह्रीं सारायै नमः
12. ऊँ ऐं क्रीं सत्यै नमः
13. ऊँ ऐं ल्लूं सर्वायै नमः
14. ऊँ ऐं क्लीं शाकम्भर्ये नमः
15. ऊँ ऐं रीं सूक्ष्मायै नमः
16. ऊँ ऐं प्लीं रोद्ररूपिण्यै नमः
17. ऊँ ऐं श्री नारायण्यै नमः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

18. ऊँ ऐं ल्लीं आनन्दायै नमः
19. ऊँ ऐं श्रूं ज्वालामुख्यै नमः
20. ऊँ ऐं रीं तारिण्यै नमः
21. ऊँ ऐं त्रूं हारिण्यै नमः
22. ऊँ ऐं ह्रुं सरस्वत्यै नमः
23. ऊँ ऐं ह्रां शीलायै नमः
24. ऊँ ऐं प्रीं लीलायै नमः
25. ऊँ ऐं ऊँ लतायै नमः
26. ऊँ ऐं सूं कालिकायै नमः
27. ऊँ ऐं ल्हौं नन्दिन्यै नमः
28. ऊँ ऐं षौं महाकाल्यै नमः
29. ऊँ ऐं आं महालक्ष्मी नमः
30. ऊँ ऐं ऊँ सरस्वत्यै नमः

पूर्ण आहुति मंत्र –
क्लीं जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनि दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै श्री विध्यायै नमः महाआहुति होम समर्पयामी स्वाहा। अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वहा।

तीन बार घी से आहुति देना है – ऊँ अम्बे स्वाहा ऊँ अम्बिके स्वाहा ऊँ अम्बालिके स्वाहा । अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमो नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनी स्वाहा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दुर्गाद्वा़त्रिंशन्नम माला –

1. दुर्गा 4. दुर्गर्तिशमनी 3. दुर्गापद्धिनिवारिणी ।
4. दुर्गमच्छेंदिनी 5. दुर्गसाधिनी 6. दुर्गनाशिनी । ।1 । ।
7. दुर्गतोद्धारिणी 8. दुर्गनिहन्त्री 9. दुर्गमापहा ।
10. दुर्गमज्ञानदा 11. दुर्गदैत्यलोकदवानला । ।2 । ।
12. दुर्गमा 13. दुर्गमालोका 14. दुर्गमात्मस्वरूपिणी ।
15. दुर्गमार्गप्रदा 18. दुर्गमविद्या 17. दुर्गमाश्रिता । ।3 । ।
10. दुर्गमज्ञानसंस्थाना 19. दुर्गमध्यानभासिनी ।
20. दुर्गमोहा 21. दुर्गमगा 22. दुर्गमार्थस्वरूपिणी । ।4 । ।
23. दुर्गमासुरसंहन्त्री 24. दुर्गमायुधधारिणी ।
25. दुर्गमांगी 26. दुर्गमता 27. दुर्गम्या 28. दुर्गमेश्वरी । ।5 । ।
29. दुर्गभीमा 30. दुर्ग भामा 31. दुर्गभा 32. दुर्गदारिणी । ।6 । ।

नामावलिमिमां यस्तु दुर्गाया मम मानवः ।
पठेत्सर्वभयान्मुक्तो भविष्यति न संशयः । ।7 । ।

इसका पाठ करने से सभी प्रकार से भय से मुक्ति मिलती है ।

देव्याः श्री अर्गलास्तोत्रम्

ऊँ अस्य श्री अर्गला स्तोत्र मन्त्रस्य विष्णुर्ऋषिः अनुष्टुप छन्दः श्री महालक्ष्मी देवता, श्री जगदम्बा प्रीतयै सप्तशती पाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः

ऊँ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा, क्षमा, शिवा, धात्री, स्वाहा, स्वधा, नमोऽस्तु ते । ।1 । ।
जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि ।
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते । ।2 । ।
मधुकैटभविद्राविविधातृवरदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि । ।3 । ।
महिषासुरनिर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।4।।
रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्डविनाशिनी ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।5।।
शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।6।।
वन्दिताड़्.घ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।7।।
अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।8।।
नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।9।।
स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनि ।
रूपं देहि, जयं देहि, यशो देहि, द्विषो जहि ।।10।।
चण्डिके सततं ये त्वामर्चन्तीह भक्तितः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।11।।
देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।12।।
विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।13।।
विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।14।।
सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।15।।
विध्यावनतं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरू ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।16।।
प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय में ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।17।।
चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रसंस्तुते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।18।।
कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।19।।
हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरी।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।20।।
इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।21।।
देवि प्रचण्डदोर्दण्डदैत्यदर्पविनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।22।
देवि भक्तजनोद्दामदत्ताऽऽनन्दोदयेऽम्बिके।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।23।।
पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम्।।24
इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः।
स तु सप्तशतीसंख्यावरमाप्नोति सम्पदाम्।।25।।

देव्याः कवच विनियोग

ॐ अस्य श्रीचण्डीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः चामुण्डा देवता, अंगन्यासोक्तामातरो बीजम्, दिग्बन्धदेवतास्तत्त्वम्, श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थे सप्तशतीपाठांगत्वेन जपे विनियोगः।

ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम्।
यन्न कस्यचिदाऽऽख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह।।1।।
अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम्।
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने।।2।।
प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् । ।3 । ।
पंचमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च ।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाऽष्टमम् । ।4 ।
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गा' प्रकीर्तिताः ।
उक्तानैतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना । ।5 । ।
अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे ।
विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः । ।6 । ।
न तेषां जायते किंचिदशुभं रणसंकटे ।
नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं न हि । ।7 । ।
यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धि' प्रजायते ।
ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तात्र संशयः । ।8 । ।
प्रेतसंस्था तु चामण्डा वाराही महिषासना ।
ऐन्द्री गजसमारूढ़ा वैष्णवी गरुडासना । ।9 । ।
महेश्वरी वृषाऽऽरूढ़ा कौमारी शिखिवाहना ।
लक्ष्मीः पद्मसना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया । ।10 । ।
श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना ।
ब्राह्मी हंससमारूढ़ा सर्वाभरणभूषिता । ।11 ।
इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः ।
नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः । ।12
दृश्यन्ते रथमारूढ़ा देव्यः क्रोधसमाकुलाः ।
शङ्.खं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलाऽऽयुधम् । ।13 ।
खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च ।
कुन्तायुधं त्रिशूलं च शाङ्.गमायुधमुत्तमम् । ।14 । ।
दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च ।
धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै । ।15 । ।
नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि ।।16।।
त्राहि मां देवि दुष्प्रक्ष्ये शत्रूणां भवर्धिनि ।
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता ।।17।
दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी ।
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी ।।18।।
उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्यां शूलधारिणी ।
ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्ताद् वैष्णवी तथा ।।19।।
एवं दश दिशों रक्षेच्चामुण्डा शववाहना ।
जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः ।।20।।
अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता ।
शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता ।।21।।
मालाधारी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद् यशस्विनी ।
त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके ।।22।
शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्धारवासिनी ।
कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शांकरी ।।23।।
नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका ।
अधरे चा, अमृतकला जिह्वायां च सरस्वती ।।24।।
दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु चण्डिका ।
घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके ।।25।।
कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्वमंगला ।
ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी ।।26
नीलग्रीवा बहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी ।
स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी ।।27।।
हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च ।
नखाष्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी ।।28।।
स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनः शोकविनाशिनी ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी । ।29 । ।
नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा ।
पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिषवाहिनी । ।30 । ।
कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी ।
जंघे महाबला रक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी । ।31 । ।
गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी ।
पादाङ्.गुलीषु श्री रक्षेत्पादाऽधस्तलवासिनी । ।32 । ।
नखान् दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी ।
रोमकूपेषु कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा । ।33 । ।
रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती ।
अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी । ।34 । ।
पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा ।
ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसंधिषु । ।35 । ।
शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा ।
अहंकारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी । ।36
प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम्
वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणं कल्याणशोभना । ।37 । ।
रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी ।
सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा । ।38 । ।
आयू रक्षतु वाराही धर्मं रखतु वैष्णवी ।
यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी । ।39 । ।
गोत्रमिन्द्राणि में रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके ।
पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी । ।40 । ।
पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा ।
राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता । ।41 । ।
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी ।।42।।
पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः ।
कवचेनाऽऽवृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति ।।43।।
तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः ।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ।।44।।
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान् ।
निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः ।।45।।
त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान् ।
इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम् ।।46।।
यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः ।
दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः ।।47
जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः ।
नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूताविस्फोटकादयः ।।48।।
स्थावरं जंगमञ्चैव कृत्रिमं चापि यद्विषम् ।
अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले ।।49।।
भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः ।
सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा ।।50।।
अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः ।
ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः ।।51।।
ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः ।
नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते ।।52।।
मानोन्नतिर्भवेद् राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम् ।
यशसा वर्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले ।।53।।
जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा ।
यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम् ।।54।।
तावत्तिष्ठति मेदिन्यां संततिः पुत्रपौत्रिकी ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देव्याः कीलकम्

ॐ अस्य श्रीकीलकमन्त्रस्य शिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहासरस्वती देवता, श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थं सप्तशतीपाठांगेत्वेन जपे विनियोगः।।

ॐ विशुद्धज्ञानदहाय त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे।
श्रेयःप्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्धधारिणे।।1।।
सर्वमेताद्विजानीयान्मन्त्राणामभिकीलकम्।
सोऽपि क्षेममवाप्नोति सततं जाप्यतत्परः।।2।।
सिद्धयन्त्युच्चाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यपि।
एतेन स्तुवतां देवी स्तोत्रमात्रेण सिद्धयति।।3।।
न मन्त्रो नौषधं तत्र न किनिचदपि विद्यते।
विना जाप्येन सिद्धयेत सर्वमुच्चाटनादिकम्।।4।।
समग्राण्यपि सिद्धयन्ति लोकशङ्.कामिमां हरः।
कृत्या निमन्त्रयामास सर्वमेवमिदं शुभम्।।5।।
स्तोत्रं वै चण्डिकायास्तु तच्च गुप्तं चकार सः।
समाप्तिर्न च पुण्यस्य तां यथावन्नियन्त्रणाम्।।6।।
सोऽपि क्षेममवाप्नोति सर्वमेवं न संशयः।
कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः।।7।।
ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसीदति।
इत्थंरूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम्।।8।।
यो निष्कीलां विधायैनां नित्यं जपति संस्फुटम्।
स सिद्धः स गणः सोऽपि गन्धर्वो जायते नरः।।9।।
न चैवाप्यटतस्तस्य भयं क्वापीह जायते।
नापमृत्युवशं याति मृतो मोक्षमवाप्नुयात्।।10।।
ज्ञात्वा प्रारम्भ कुर्वीत न कुर्वाणों विनश्यति।
ततो ज्ञात्वैव सम्पन्नमिदं प्रारभ्यते बुधैः।।11।।
सौभाग्यादि च यत्किनिचद् दृश्यते ललनाजने।
तत्सर्वं तत्प्रसादेन तेन जाप्यमिदं शुभम्।।12।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे सम्पत्तिरूच्चकैः।
भवत्येव समग्रापि ततः प्रारभ्यमेव तत्।।13।।
ऐश्वर्य यत्प्रसादेन सौभाग्याऽऽरोग्यसम्पदः।
शत्रुहानिः परोमोक्षः स्तूयते सा न किं जनैः।।14।।

तंत्रोक्त रात्रिसूक्तम्

ॐ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम्।
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः।।1।।
त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका।
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता।।2।।
अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः।
त्वमेव संध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा।।3।।
त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैत्सृज्यते जगत्।
त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा।।4।।
विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने।
तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये।।5।।
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः।
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी।।6।।
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी।
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा।।7।।
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा।
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च।।8।।
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शंखिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा।।9।।
सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी।।10।।
यच्च किंचित् क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा।।11।।
यया त्वया जगत्स्त्रष्टा जगत्पात्यति यो जगत्।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ।।12।।
विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च ।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत् ।।13।।
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वरुदारैर्देवि संस्तुता ।
मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ ।।14।।
प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ।
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ।।15।।

क्षमा प्रार्थना

अपराधसहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ।।1।।
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि ।।2।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ।।3।।
अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत् ।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः ।।4।।
सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके ।
इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरू ।।5।।
अज्ञानाद्विस्मृते र्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ।।6।।
कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे ।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि ।।7।।
गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि ।।8।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्री दुर्गा सप्तशती सम्पुट मंत्र

1 प्रथम अध्यायः	श्री काली देवी	क्री क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं दक्षिण कालिके क्री क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं
2 द्वितीय अध्यायः	श्री महालक्ष्मी देवी	ऊँ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालयेप्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं ऊँ महालक्ष्म्यै नमः
3 तृतीय अध्यायः	श्रीत्रिपुर सुन्दरीदेवी	ऊँ श्रीं हीं क्लीं ऐं सौं ऊँ ह्रीं कएइल हीं ह स क ल ह्रीं सकल हीं सौं ऐं क्लीं ह्रींश्रीं
4 चतुर्थ अध्यायः	श्री दुर्गा देवी	ऊँ ह्रीं दुं दुगाये नमः
5 पंचम अध्यायः	श्री सरस्वती देवी	ऊँ ब्रं ब्रं ब्रं ऊँ श्रीं ऊँ ऊँ क्लीं ऊँ
6 छठा अध्यायः	श्रीपदमावतीः देवी	ऊँ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सौ पदमावत्यै नमः
7 सप्तम अध्यायः	श्री मातंगीः देवी	ऊँ ह्रीं क्लीं हुं मातंग्यै फट ऊँ उच्छिष्ट चाण्डालीनी सुमुखीदेवी महापिशाचिनी ह्रीं ठः ठः स्वाहा
8 आठवा अध्यायः	श्री भवानी देवी	ऊँ श्रीं श्रीं ऊँ, ऊँ ह्रीं श्रीं श्रीं, हं फट
9 नौवा अध्यायः	श्रीअर्द्धनारिश्वर देवी	ऊँ ह्रीं श्रीं श्रीं शिवायै नमः
10 दसवा अध्यायः	श्रीकामेश्वरी देवी	ऊँ ह्रीं श्रीं डां डीं क्लीं क्लुं जं जं कामेश्वरी
11 ग्यारहवा अध्याय	श्री भुवनेश्वरीः देवी	ऊँ ऐं हीं श्रीं क्लीं भुवनेश्वर्य नमः
12 बारहवा अध्यायः	श्री दुर्गा देवी	ऊँ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः
13 तेरहवा अध्यायः	श्री शिवा देवी	ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चय्यै

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इक्यावन शक्तिपीठ का वर्णन

इन शक्तिप्रद स्थानों पर साधना करने से पहले यह जान लेना अत्यन्त आवश्यक है कि साधना किये जाने वाले शक्तिपीठ पर कौन से भैरव और कौन सी शक्ति का निवास है। क्योंकि इस ज्ञान के बिना वहाँ पर साधना करने से स्वयं भैरव ही विघ्न पैदा करते हैं और साधक का व साधना का सारा तेज हर लेते हैं। यही कारण है कि कुछ फल प्राप्त नहीं होता है।

मूलतः इक्यावन शक्ति पीठ हैं। यह वो स्थल हैं जहाँ पर देवी सती के अंग–प्रत्यंग गिरे थे। इससे सम्बन्धित कथा तो आप जनते ही होंगे। माता सती के जिस–जिस स्थान पर जो–जो अंग गिरे थे वहाँ पर भैरव व शक्ति निवास कर रही है जिस कारण वह परम पुनीत पवित्र स्थल जाग्रत हो गये हैं। इन्हें इनकी जाग्रत शक्ति के कारण शक्तिपीठ कहा जाता है। नीचे एक सारणी के द्वारा शक्ति पीठ, उनके स्थल, उनके भैरव व शक्ति बताई गई है :–

क्र.	अंग–प्रत्यंग	शक्ति	भैरव	स्थान
1	ब्रह्मरन्ध्र	कोट्टरी	भीमलोचन	हिंगुला
2	त्रिनेत्र	महिषमर्दिनी	क्रोध	करवीर
3	नाक	सुनन्दा	ष्यम्बक	सुगन्धा
4	गला	महामाया	त्रि संधेश्वर	कश्मीर
5	जीभ	अम्बिका	उन्मत	ज्वालामुखी
6	वक्ष	त्रिपुर मालिनी	भीषण	जालन्धर
7	हृदय	जय दुर्गा	वैद्यनाथ	वैद्यनाथ
8	जाँघ	महामाया	कपाली	नेपाल
9	दाहिना हाथ	दाक्षायणी	अमर	मानस
10	नाभि	विरजा	जगन्नाथ	याजपुर
11	गण्ड	चण्डी	चक्रपाणि	गण्डकी
12	बाँई भुजा	बहुला	भीरुक	बहुला
13	दाहिनी भुजा	भवानी	चन्द्रशेखर	चट्टल

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

14	बायाँ पाँव	भ्रामरी	ईश्वर	त्रि स्त्रोता
15	दाहिना पाँव	त्रिपुर सुन्दरी	त्रिपुरेश	त्रिपुरा
16	कूर्पर	मंगलचण्डी	कपिलाम्बर	उज्जैयनी
17	योनि	कामाख्या	उमानन्द	कामगिरी
18	हाथ की अंगुली	ललिता	भव	प्रयाग
19	कुण्डल	विशालाक्षी	काल	वाराणसी
20	मुकुट	विमला	सम्वर्त	किरीट
21	मणिबन्ध	गायत्री	सर्वानन्द	मणिवेद
22	पीठ	शर्वाणी	निमिष	कन्याश्रम
23	बाँई जाँघ	जयन्ती	कृमदीश्वर	जयन्ती
24	दाँयेपाँवका अंगूठा	भूतधात्री	क्षीरकण्ठ	काली पीठ
25	दाहिना गुल्फ	सावित्री	अश्वनाथ	कुरुक्षेत्र
26	ग्रीवा	महालक्ष्मी	संवरानन्द	श्री शैल
27	दाहिना नितम्ब	काली	काली	काल माधव
28	बायाँ नितम्ब	नर्मदा	भद्रसेन	शोण
29	कंकाल	देव गर्भा	रूर	काष्ची
30	नाला	शिवानी	चण्ड	राम गिरि
31	केश	उमा	भूतेश	वृन्दावन
32	दाँत (ऊपरी)	नारायणी	संहार	शुचि
33	दाँत (नीचे के)	वाराही	महारुद्र	पष्व सागर
34	कान (बाँया)	अपर्णा	वामन	करतोयातट
35	उदर	चन्द्रभागा	वक्रतुण्ड	प्रभास
36	मुण्ड	जयदुर्गा	क्रोधीश	काली घाट
37	चिबुक	भ्रामरी	सर्वसिद्धेश्वर	किकुम जलमे
38	गण्ड बाँया	राकिणी	वत्स	गोदावरी
39	गण्ड दाँया	कुमारी	शिव	रत्नावली
40	नला	कालिका	योगीश	नलाहाटी
41	होंठ	फुल्लरा	विश्वेश	अट्टहास

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

42	नूपुर	इन्द्राक्षी	राक्षसेश्वर	लंका
43	हार	नन्दिनी	नन्दिकेश्वर	नन्दिपुर
44	मन	महिषमर्दिनी	वक्रनाथ	वक्रेश्वर
45	बाँया कन्धा	महादेवी	महोदर	मिथिला
46	पाँवकी अंगुलियाँ	अम्बिका	अमृत	विराट
47	पाणि	यशोहरेश्वरी	चण्ड	यशोहर
48	ऊपरी होंठ	अवन्ती	लम्ब कर्ण	भैरव गिरि
49	दाहिना गुल्फ	श्री सुन्दरी	सुनन्दानन्द	श्री पर्वत
50	बाँया गुल्फ	कपालिनी	सर्वानन्द	विभाष
51	दाहिना गण्ड	विश्वमातृका	विश्वेश	गोदावर

उपरोक्त सारणी में व्यक्त सभी शक्ति पीठ हैं। पूर्व वर्णनानुसार पुनः स्पष्ट किया जाता है कि कामगिरि पर जगन्माता की योनि गिरी थी। यहाँ पर उमानन्द भैरव निवास करते हैं और यहाँ पर जाग्रत शक्ति महामाया कामाख्या भक्तों का कल्याण कर रहीं है। कामरूप (आसाम) समस्त अभिलाषाओं का पूरक महापीठ है। मान्यता है और प्रमाणित भी हुआ है कि आजकल अर्थात कलियुग में यहाँ पर जपादि अनुष्ठान्न करने से शीघ्र लाभ प्रकट होता है। यहाँ पर प्रत्येक वर्ष माता को मासिक रुधिर स्त्राव होता है। यहाँ का रुधिर वाला वस्त्र कुछ भक्तों में पुजारी वितरित कर दिया करता है। इस वस्त्र को स्वर्ण के ताबीज में भरकर कण्ठ पर या सिर पर धारण करके जपादि पूजा करने से साधक प्रत्येक कार्य में सफल हुआ करता है। यह साधकों के लिए गुप्त बात है जिसे कि यहाँ स्पष्ट किया गया है।

देश का पहला तंत्र स्कूल
देवराधा ट्रस्ट (पंजीकृत)
बुधनी तहसील, ग्राम बुधनी
जिला सिहोर, मध्यप्रदेश
तन्त्र स्कूल, मन्त्र सिखने का स्कूल
भागवत प्रवचन स्कूल, ज्योतिष सिखाने
का स्कूल वास्तु ज्ञान, साधना स्थली

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गुप्त नवरात्रि में दुर्गा सिद्धि हेतु –

विनियोग ऊँ अस्य श्री चंडिका मालामंत्रस्य मार्कण्डेय ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्री चंडिका देवता। ऊँ ह्रः बीजम् ऊँ सौं शक्तिः। ऊँ ह्रौं कीलकम्। मम श्री चंडिका प्रसादसिद्धयर्थं सकलजनवश्यार्थ श्री चंडिका माला मंत्र जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास –

ऊँ मार्कण्डेयऋषि नमः शिरसि

अनुष्टुपछन्दसे नमः मुखे

ऊँ श्री चंडिका देवतायै नमः हृदि

ऊँ ह्रः बीजाय नमः गह्यो

ऊँ सौं शक्तये नमः पादयोः

ऊँ ह्रौं कीलकाय नमः नाभौ

ऊँ विनियोगाय नमः सर्वांगे

करन्यास –

ऊँ ह्रां फ्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः

ऊँ ह्रीं फ्रीं तर्जनीभ्यां नमः

ऊँ ह्रूं फ्रूं मध्यमाभ्यां नमः

ऊँ ह्रैं फ्रैं अनामिकाभ्यां नमः

ऊँ ह्रौं फ्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः

ऊँ ह्रः फ्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

हृयादिम्नयास –

ऊँ ह्रां फ्रां हृदयाय नमः

ऊँ ह्रीं फ्रीं शिरसे स्वाहा

ऊँ ह्रूं फ्रूं शिखायै वषट्

ऊँ ह्रैं फ्रैं कवचाय हुम्

ऊँ ह्रौं फ्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्

ऊँ ह्रः फ्रः अस्त्राय फट्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

42	नूपुर	इन्द्राक्षी	राक्षसेश्वर	लंका
43	हार	नन्दिनी	नन्दिकेश्वर	नन्दिपुर
44	मन	महिषमर्दिनी	वक्रनाथ	वक्रेश्वर
45	बाँया कन्धा	महादेवी	महोदर	मिथिला
46	पाँवकी अंगुलियाँ	अम्बिका	अमृत	विराट
47	पाणि	यशोहरेश्वरी	चण्ड	यशोहर
48	ऊपरी होंठ	अवन्ती	लम्ब कर्ण	भैरव गिरि
49	दाहिना गुल्फ	श्री सुन्दरी	सुनन्दानन्द	श्री पर्वत
50	बाँया गुल्फ	कपालिनी	सर्वानन्द	विभाष
51	दाहिना गण्ड	विश्वमातृका	विश्वेश	गोदावर

उपरोक्त सारणी में व्यक्त सभी शक्ति पीठ हैं। पूर्व वर्णनानुसार पुनः स्पष्ट किया जाता है कि कामगिरि पर जगन्माता की योनि गिरी थी। यहाँ पर उमानन्द भैरव निवास करते हैं और यहाँ पर जाग्रत शक्ति महामाया कामाख्या भक्तों का कल्याण कर रहीं है। कामरूप (आसाम) समस्त अभिलाषाओं का पूरक महापीठ है। मान्यता है और प्रमाणित भी हुआ है कि आजकल अर्थात कलियुग में यहाँ पर जपादि अनुष्ठान्न करने से शीघ्र लाभ प्रकट होता है। यहाँ पर प्रत्येक वर्ष माता को मासिक रुधिर स्त्राव होता है। यहाँ का रुधिर वाला वस्त्र कुछ भक्तों में पुजारी वितरित कर दिया करता है। इस वस्त्र को स्वर्ण के ताबीज में भरकर कण्ठ पर या सिर पर धारण करके जपादि पूजा करने से साधक प्रत्येक कार्य में सफल हुआ करता है। यह साधकों के लिए गुप्त बात है जिसे कि यहाँ स्पष्ट किया गया है।

देश का पहला तंत्र स्कूल
देवराधा ट्रस्ट (पंजीकृत)
बुधनी तहसील, ग्राम बुधनी
जिला सिहोर, मध्यप्रदेश
तन्त्र स्कूल, मन्त्र सिखने का स्कूल
भागवत प्रवचन स्कूल, ज्योतिष सिखाने
का स्कूल वास्तु ज्ञान, साधना स्थली

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गुप्त नवरात्रि में दुर्गा सिद्धि हेतु –

विनियोग ऊँ अस्य श्री चंडिका मालामंत्रस्य मार्कण्डेय ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्री चंडिका देवता। ऊँ ह्रः बीजम् ऊँ सौं शक्तिः। ऊँ ह्रौं कीलकम्। मम श्री चंडिका प्रसादसिद्धयर्थ सकलजनवश्यार्थ श्री चंडिका माला मंत्र जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास –

ऊँ मार्कण्डेयऋषि नमः शिरसि

अनुष्टुपछन्दसे नमः मुखे

ऊँ श्री चंडिका देवतायै नमः हृदि

ऊँ ह्रः बीजाय नमः गह्यो

ऊँ सौं शक्तये नमः पादयोः

ऊँ ह्रौं कीलकाय नमः नाभौ

ऊँ विनियोगाय नमः सर्वांगे

करन्यास –

ऊँ ह्रां फ्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः

ऊँ ह्रीं फ्रीं तर्जनीभ्यां नमः

ऊँ ह्रूं फ्रूं मध्यमाभ्यां नमः

ऊँ ह्रैं फ्रैं अनामिकाभ्यां नमः

ऊँ ह्रौं फ्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः

ऊँ ह्रः फ्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

हृयादिम्नयास –

ऊँ ह्रां फ्रां हृदयाय नमः

ऊँ ह्रीं फ्रीं शिरसे स्वाहा

ऊँ ह्रूं फ्रूं शिखायै वषट्

ऊँ ह्रैं फ्रैं कवचाय हुम्

ऊँ ह्रौं फ्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्

ऊँ ह्रः फ्रः अस्त्राय फट्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ध्यान –

ॐ कल्याणीं कमलासन स्थशुभदां गौरीं धनश्यामलामाविर्भावित भूषणाम भयदामार्द्रेकरक्षैः शुभैः।
श्रीं ह्रीं क्लीं वरमंत्रराज सहितामानन्दपूर्णात्मिकां श्री शैले भ्रमराम्बिकां शिवयुतां चिन्मात्रमूर्ति भजे।।

मानसोपचार पूजन –

लं पृथिव्यात्मकं गंधं श्रीमहादेव्यै श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि
हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीमहादेव्यै श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि
यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीमहादेव्यै श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि
रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीमहादेव्यै श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीमहादेव्यै श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि
शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीमहादेव्यै श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि

मालामंत्र –

ॐ ह्रः ॐ सौं ॐ ह्रौं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीर्जयजय चण्डिका चामुण्डे चण्डिके त्रिदशमुकुट कोटि, संघट्टित चरणार विन्दे, गायत्रि सावित्रि सरस्वती, अहिकृताभरणे भैरव रूपधारिणी, प्रकटित दंष्ट्रोग्रवदने घोरानन नयने ज्वलज्ज्वाला सहस्त्रपरिवृते महाट्टहास धवलीकृ दिगन्तरे, सर्वयुगपरिपूर्णे कपालहसते, गजगामिनोत्तरीय भूतवेतालपरिवृते अकम्पित धराधरे, मधुकैटभ, महिषासुर, धूम्रलोचन, चण्ड–मुण्ड, रक्तबीज शुम्भनिशुम्भ दैत्यनिकृन्तने, कालरात्रि महामाये, शिवे नित्ये, ॐ ऐं ह्रीं ऐन्द्री आग्नेयि, याम्ये नैर्ऋति, वरुणि वायवि, कौबेरि ऐशानि ब्राह्मी माहेश्वरी कौमारी वैष्णवी वाराहि इंद्राणी ईशानी, महालक्ष्मीः इति स्थिते महोग्रविष महाविषोरग फणा मणि मुकुट रत्न महा ज्वाला मल मणि महाहि हार बाहुकहोत्तमांग नवरत्न निधि कोटितत्व बाहु जिह्वावाणी शब्दस्पर्श रूप रस गन्धात्मिके, क्षितिसाहस मध्यस्थिते महोज्वल महाविषोप, विष, गन्धर्व विधा धराधिपते ॐ ऐंकारा ॐ ह्रींकारा ॐ क्लींकाराहसते ॐ आं ह्रीं क्रौं अनग्रेनग्रेपाते

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रवेशय, ऊँ द्रां द्रीं शोषय शोषय ऊँ द्रां द्रीं मोहय मोहय, ऊँ क्लां क्लीं दीपय दीपय, ऊँ ब्लूं सन्तापय सन्तापय, ऊँ सौं सौं उन्मादय उन्मादय, ऊँ म्लैंम्लैं मोहय मोहय, ऊँ खां खां शोधय शोधय, ऊँ धां धां उन्मादय उन्मादय, ऊँ ह्रीं ह्रीं आवेशय आवेशय, ऊँ स्त्रीं स्त्रीं उच्चाटय उच्चाटय, ऊँ स्त्रीं स्त्रीं आकर्षय आकर्षय, ऊँ हुं हुं आस्फोटय आस्फोटय, ऊँ त्रूं त्रूं त्रोटय त्रोटय, ऊँ छां छां छेदय छेदय, ऊँ कूं कूं उच्चाटय उच्चाटय, ऊँ हूं हूं हन हन, ऊँ त्रूं त्रूं त्रोटय त्रोटय, ऊँ छां छां छेदय छेदय, ऊँ कूं कूं उच्चाटय उच्चाटय, ऊँ जां जां मारय मारय, ऊँ घ्रीं घ्रीं घर्षय घर्षय, ऊँ स्वीं स्वीं विध्वंसय विध्वंसय, ऊँ दां दां दिशां बन्धय बन्धय, ऊँ दीं दीं वर्तिना मेकाग्रचित्ता विशिकुरू कुरूस्वाहा, ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ऊँ फ्रां फ्रीं फ्रूं फ्रैं फ्रौं फ्रः ऊँ चामुंडायै विच्चे स्वाहा, मम सकलमनोरथं देहि सर्वोपद्रवं निवारय निवारय, अमुकं वशे कुरु कुरु, भूतप्रेत पिशाच ब्रह्मापिशाच, ब्रह्मराक्षस यमदूत, शाकिनी, डाकिनी सर्व शाप नाशय नाशय, शत्रून मारय मारय भंजय भंजय ऊँ श्रीं क्लीं स्वाहा।

- 9 दिन के भीतर 1008 बार नवरात्रि में पाठ करें 1008 पाठ सम्पन्न हो जाने के बाद 1008 आहुतियाँ देकर ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडाये विच्चे स्वाहा से हवन करें।
- हवन सामग्री में खीर जरूर मिला लें। फिर कन्याओं को मीठा भोजन अवश्य करावें। माँ को बलि अवश्य देना। बकरे या मुर्गे की
- चण्डिका एवं चामुण्डा को कोई भी अनुष्ठान करें बलि अत्यन्त आवश्यक है। बलि कई प्रकार की होती है। फिर भी बड़ा अनुष्ठान करते हो, विशेष उद्‌देश्य से करते हो तो बलि अनविार्य है।
- यह अनुष्ठान घर पर न करें। अन्यथा हानि के लिए अनुष्ठानकर्ता स्वयं जिम्मेदार रहेगा। उग्र स्वभाव वाले मंत्रों का अनुष्ठान सिद्ध पीठ ही मन्दिर में रहकर करना चाहिए। अनुष्ठान के सभी नियमों का पालन कठोरता से करना है। **अनुष्ठान के नियम हमारी पुस्तक यज्ञ व अनुष्ठान में दिये गये है वहाँ से देखें।**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गुप्त सप्तशती – विशेष प्रयोग

सात सौ मन्त्रों की 'श्री दुर्गा सप्तशती, का पाठ करने से साधकों का जैसा कल्याण होता है, वैसा ही कल्याणकारी इसका पाठ है।

यह "गुप्त सप्तशती" प्रचुर मन्त्र बीजों के होने से आत्म कल्याण के इच्छुक साधकों के लिए अमोघ फल प्रद हैं।

इसके पाठ का क्रम इस प्रकार है –

प्रारम्भ में कुंजिका स्तोत्र, उसके बाद गुप्त सप्तशती तदन्तर स्तवन का पाठ फिर सिद्ध कुंजिका स्तोत्रम्

श्री गणेशाय नमः

ऊँ अस्य श्री कृंजिका स्तोत्र मन्त्रस्य सदाशिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः। श्रीत्रिगुणात्मिका देवता, ऊँ ऐं बींज, ऊँ ह्रीं शक्तिः, ऊँ क्लीं कीलकम्, मम् सर्वाभीष्ट सिद्धयर्थें जपे विनियोगः।

शिव उवाच

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि कृन्जिका स्तोत्र मुत्तमम्।
येन मन्त्र प्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत्।।1।।
न कवचं न अर्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।
न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम्।।2।।
कुन्जिका पाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत्।
अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम्।।3।।
गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भन उच्चाटनादिकम्।
पाठमात्रेण संसिद्धयेत कुजिका स्तोत्र मुत्तमम्।।4।।

अथ मन्त्र

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ऊँ ग्लौ हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल
प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इति मंत्रः

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि।

नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि।।1।।

नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि ।।22।।

जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे।

ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका।।3।।

क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते।

चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी।।4।।

चिच्चे चा भयदा नित्यं नमस्ते मंत्ररूपिणी।।5।।

धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वाग्धीश्वरी।

क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं करु।।6।।

हुं हु हुंकार रूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी।

भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः।।7।।

अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं

धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा।।

पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा।।8।।

म्लां म्लीं म्लूं मूल विस्तीर्ण कुन्जिकाए नमो नमः

सां सीं सूं सप्तशती देव्या मंत्र सिद्धि कुरुष्व मे।।

इदं तु कुन्जिका स्तोत्रं मंत्र जाग्रति हेतवे।

अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति।।

यस्तु कुंजिकया देविहीनां सप्तशतीं पठेत्।

न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा।।

इति श्रीरुद्रयामले गौरीतंत्रे शिवपार्वतीसंवादे कुंजिकास्तोत्रं संपूर्णम्।

गुप्त सप्तशती

ॐ ब्रीं–ब्रीं–ब्रीं वेणु हस्ते, स्तुत–सुर बटुकैर्हां गणेशस्य माता।

स्वानन्दे नन्द–रुपे, अनहत–निरते, मुक्तिदे मुक्ति–मार्गे।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हंसः सोहं विशाले, वलय–गति–हसे, सिद्ध–देवी समस्ता।
हीं–हीं–हीं सिद्ध–लोके, कच–रुचि–विपुले, वीर–भद्रे नमस्ते।।1।।

ऊँ ह्रींकारोच्चारयनती, मम हरति भयं, चण्ड–मुण्डौ प्रचण्डे।
खां–खां–खां खड्ग–पाणे, ध्रक–ध्रक ध्रकिते, उग्र–रुपे स्वरुपे।।
हुँ–हुँ हुँकार–नादे, गगन–भुवि–तले, व्यापिनी व्योम–रुपे।
हं–हं हंकार–नादे, सुर–गण–नमिते, चण्ड–रुपे नमस्ते।।2।।

ऊँ ऐं लोके कीर्तयन्ती, मम हरतु भयं, राक्षसान् हन्यमाने।
घ्रां–घ्रां–घ्रां घोर–रुपे, घघ–घटिते, घर्घरे घोर–रावे।।
निर्मांसे काक–जंघे, घसित–नख–नखा, धूम्र–नेत्रे त्रि–नेत्रे।
हस्ताब्जे शूल–मुण्डे, कुल–कुल कुकुले, सिद्ध–हस्ते नमस्ते।।3।।
ऊँ क्रीं–क्रीं–क्री ऐं कुमारी, कुह–कुह–मखिले, कोकिलेमानुरागे।
मुद्रा–संज्ञ–त्रि–रेखा, कुरु–करु सततं, सततं श्री महा–मारि गुह्ये।।
तेजांगे सिद्धि–नाथे, मन–पवन–चले, नैव आज्ञा–निधाने।
ऐंकारे रात्रि–मध्ये, स्वपित–पशु–जने, तन्त्र कान्ते नमस्ते।।4।।

ऊँ व्रां–व्रीं–व्रूं व्रैं कवित्वे, दहन–पुर–गते रुक्मि–रुपेण चक्रे।
त्रिःशक्तया, युक्त–वर्णादिक,कर–नमिते, दादिवं पूर्व–वर्णे।
ह्रीं–स्थाने काम–राजे, ज्वल–ज्वल ज्वलिते, कोशिनि कोश–पत्रे।
स्वच्छन्दे, कष्ट–नाशे, सुर–वर–वपुषे, गुह्य–मुण्डे नमस्ते।।5।।

ऊँ घ्रां–घ्रीं–घ्रूं घोर–तुण्डे, घघ–घघ घघघे घर्घरान्याङ्ि घ्र–घोषे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ह्रीं क्रीं द्रूं द्रोन्च–चूके रर–रर–रमिते, सर्व–ज्ञाने प्रधाने।।
द्रीं तीर्थेषु च ज्येष्ठे, जुग–जुग जजुगे म्लीं पदे काल–मुण्डे।
सर्वांगे रक्त–धोरा–मथन–कर–वरे, वज्र–दण्डे नमस्ते।।6।।

ॐ क्रां क्रीं क्रूं वाम–नमिते, गगन गड–गडे गुह्य–योनि–स्वरुपे।
वज्रांगे, वज्र–हस्ते, सुर–पति–वरदे, मत्त–मातंग–रुढे।।
स्वस्तेजे, शुद्ध–देहे, लल–लल–ललिते, छेदिते पाश–जाले।
कुण्डल्याकार–रुपे, वृष वृषभ–ध्वजे, ऐन्द्रि मातर्नमस्ते।।7।।

ॐ हुँ हुँ हुंकार–नादे, विषमवश–करे, यक्ष–वैताल–नाथे।
सु–सिद्धयर्थे सु–सिद्धैः, ठ ठ–ठ ठ–ठ ठ ठः, सर्व–भक्षे प्रचण्डे।।
जूं सः सौं शान्ति–कर्मेऽमृत–मृत–हरे, निःसमेसं समुद्रे।
देवि, त्वं साधकानां, भव–भव वरदे, भद्र–काली नमस्ते।।8।।

ब्रह्माणी वैष्णवी त्वं, त्वमसि बहुचरा, त्वं वराह–स्वरुपा।
त्वं ऐन्द्री त्वं कुबेरी, त्वमसि च जननी, त्वं कुमारी महेन्द्री।।
ऐं ह्रीं क्लींकार–भूते,वितल–तल–तले, भू–तले स्वर्ग–मार्गे।
पाताले शैल–श्रृंगे, हरि–हर–भुवने, सिद्ध–चण्डी नमस्ते।।9।।

हं लं क्षं शौण्डि–रुपे, शमित भव–भये,सर्व–विघ्नान्त–विघ्ने।
गां गीं गूं गैं षडंगे, गगन–गति–गते, सिद्धिदे सिद्ध–साध्ये।।
वं क्रं मुद्रा हिमांशोर्प्रहसति–वदने, त्र्यक्षरे ह्सैं निनादे।
हां हूं गां गीं गणेशी, गज–मुख–जननी, त्वां महेशीं नमामि।।10।।
स्तवन या देवी खड्ग–हस्ता, सकल–जन–पदा, व्यापिनी विशऽव–दुर्गा।
श्यामांगी शुक्ल–पाशाब्दि जगण–गणिता, ब्रह्म–देहार्ध–वासा।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ज्ञानानां साधयन्ती, तिमिर–विरहिता, ज्ञान–दिव्य–प्रबोधा।
स देवी, दिव्य–मूर्तिर्प्रदहतु दुरितं, मुण्ड–चण्डे प्रचण्डे।।1।।

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रुं वर्म–युक्ते, शव–गमन–गतिर्भीषणे भीम–वक्त्रे।
क्रां क्रीं क्रूं क्रोध–मूर्तिर्विकृत–स्तन–मुखे, रौद्र–दंष्ट्रा–कराले।
कं कं कंकाल–धारी भ्रमप्ति, जगदिदं भक्षयन्ती ग्रसन्ती।
हुंकारोच्चारयन्ती प्रदहतु दुरितं, मुण्ड–चण्डे प्रचण्डे।।2।।

ऊँ ह्रां ह्रीं हूं रुद्र–रुपे, त्रिभुवन–नमिते, पाश–हस्ते त्रि–नेत्रे।
रां रीं रुं रंगे किले किलित रवा, शूल–हस्ते प्रचण्डे।।
लां लीं लूं लम्ब–जिह्वे हसति, कह–कहा शुद्ध–धोराट्ट–हासैः।
कंकाली काल–रात्रिः प्रदहतु दुरितं, मुण्ड–चण्डे प्रचण्डे।।3।।

ऊँ घ्रां घ्रीं घ्रूं घोर–रुपे घघ–घघ–घटिते घर्घराराव घोरे।
निर्मान्से शुष्क–जंघे पिबति नर–वसा धूम्र–धूम्रायमान।।
ऊँ द्रां द्री द्रूं द्रावयन्ती, सकल–भुवि–तले, यक्ष–गन्धर्व–नागान्।
क्षां क्षीं क्षूं क्षोभयन्ती प्रदहतु दुरितं चण्ड–मुण्डे प्रचण्डे।।4।।

ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रूं भद्र–काली, हरि–हर–नमिते, रुद्र–मूर्ते विकर्णे।
चन्द्रादित्यौ च कर्णौ, शशि–मुकुट–शिरों वेष्ठितां केतु–मालाम्।।
स्त्रक्–सर्व–चोरन्गेन्द्रा शशि–करण–निभा तारकाः हार–कण्ठे।
सा देवी दिव्य–मूर्तिः, प्रदहतु दुरितं चण्ड–मुण्डे प्रचण्डे।।5।।

ऊँ खां–खां–खां खड्ग–हस्ते, वर–कनक–निभे सूर्य–कान्ति–स्वतेजा।
विद्युज्ज्वालावलीनां, भव–निशित महा–कार्त्रिका दक्षिणेन।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वामे हस्ते कपालं, वर–विमल–सुरा–पूरितं धारयन्ती।
सा देवी दिव्य–मूर्तिः प्रदहतु दुरितं चण्ड–मुण्डे प्रचण्डे।।6।।

ऊँ हुँ हुँ फट्काल–रात्रीं पुर–सुरमथनीं धूम्र–मारी कुमारी।
ह्रां ह्रीं ह्रूं हन्ति दुष्टान् कलित किल–किला शब्द अट्टाट्टहासे।।
हा–हा भूत–प्रभूते, किल–किलित–मुखा, कीलयन्ती ग्रसन्ती।
हुंकारोच्चारयन्ती प्रदहतु दुरितं चण्ड–मुण्डे प्रचण्डे।।7।।

ऊँ ह्रीं श्रीं कपालीं परिजन–सहिता चण्डि चामुण्डा–नित्ये।
रं–रं रंकार–शब्दे शशि–कर–धवले काल–कूटे दुरन्ते।।
हुँ हुँ हुंकार–कारि सुर–गण–नमिते, काल–कारी विकारी।
त्रैलोक्यं वश्य–कारी, प्रदहतु दुरितं चण्ड–मुण्डे प्रचण्डे।।8।।

वन्दे दण्ड–प्रचण्डा डमरु–डिमि–डिमा, घण्टटंकार–नादे।
नृत्यन्ती ताण्डवैषा थथ–थइ विभवै र्निर्मला मन्त्र–माला।।
रुक्षौ कुक्षौ वहन्ती, खर–खरिता रवा चार्चिनि प्रेत–माला।
उच्चै स्तैश्च अट्टहासै, हह हसित रवा, चर्म–मुण्डा प्रचण्डे।।9।।

ऊँ त्वं ब्राह्मी त्वं च रौद्री स च शिखि–गमना त्वं च देवी कुमारी।
त्वं चक्री चक्र–हासा घुर–घुरित रवा, त्वं वराह–स्वरुपा।।
रौद्रे त्वं चर्म–मुण्डा सकल–भुवि–तले संस्थिते स्वर्ग–मार्गे।
पाताले शैल–श्रृंगे हरि–हर–नामिते देवि चण्डी नमस्ते।।10।।

रक्षा त्वं मुण्ड–धारी गिरि–गुह–विवरे निर्झरे पर्वते वा।
संग्रामे शत्रु–मध्ये विष विषम–विषे संकटे कुत्सिते वा।।
व्याघ्रे चौरे च सर्पेऽप्युदधि–भुवि–तले वह्नि–मध्ये च दुर्गे।
रक्षेत् सा दिव्य–मूर्तिः प्रदहतु दुरितं मुण्ड–चण्डे प्रचण्डे।।11।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इत्येवं बीज–मन्त्रैः स्तवनमति–शिवं पातक–व्याधि–नाशनम्।
प्रत्यक्षं दिव्य–रुपं ग्रह–गण–मथनं मर्दनं शाकिनीनाम्।।
इत्येवं वेद–वेद्यं सकल–भय–हरं मन्त्र–शक्तिश्च नित्यम्।
मन्त्राणां स्तोत्रकं यः पठति स लभते प्रार्थितां मन्त्र–सिद्धिम्।।12।।
चं–चं–चं चन्द्र–हासा चचम चम–चमा चातुरी चित्त–केशी।
यं–यं–यं योग–माया जननि जग–हिता योगिनी योग–रुपा।।
डं–डं–डं डाकिनीनां डमरुक–सहिता दोल हिण्डोल डिम्भा।
रं–रं–रं रक्त–वस्त्रा सरसिज–नयना पातु मां देवि दुर्गा।।13।।

गुप्त नवरात्रि का महत्व –

देवी भागवत के अनुसार जिस तरह वर्ष में चार बार नवरात्र आते हैं और जिस प्रकार नवरात्रि में देवी के नौ रूपों की पूजा की जाती है। ठीक उसी प्रकार गुप्त नवरात्र में दस महाविद्याओं की साधना की जाती है। कहा जाता है कि माँ के नौ रूपों की भक्ति करने में हर मनोकामना पूरी होती है। नौ शक्तियों के मिलन को ही नवारत्रि कहते हैं।

देवी पुराण के अनुसार एक वर्ष में 4 माह नवरात्रि के लिए निश्चित हैं। मानव के समस्त रोग–दोष व कष्टों के निवारण के लिए गुप्त नवरात्र से बढ़कर कोई साधनाकाल नहीं है। श्री, वर्चस्व, आयु, आरोग्य और धन प्राप्ति के साथ ही शत्रु संहार के गुप्त नवरात्र में अनेक प्रकार के अनुष्ठान व व्रत–उपवास के विधान शास्त्रों में मिलते हैं। इन अनुष्ठानों के प्रभाव से मानव को सहज ही सुख व अक्षय ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

"दुर्गावरिवस्या" नामक ग्रंथ में स्पष्ट लिखा है कि, साल में दो बार अपने वाले गुप्त नवरात्रों में माघ में पड़ने वाले गुप्त नवरात्र मानव को न केवल आध्यात्मिक बल ही प्रदान करते हैं, बल्कि इन दिनों में संयम–नियम व श्रद्धा के साथ माता दुर्गा की उपासना करने वाले

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

व्यक्ति को अनेक सुख व साम्राज्य भी प्राप्त होते हैं। "शिवसंहिता" के अनुसार से नवरात्र भगवान शंकर और आदिशक्ति माँ पार्वती की उपासना के लिए भी श्रेष्ठ हैं। गुप्त नवरात्रों के साधनाकाल में माँ शक्ति का जप, तप, ध्यान करने से जीवन में आ रही सभी बाधाएँ नष्ट होने लगती हैं।

गुप्त नवरात्रि विशेषकर तांत्रिक क्रियाएँ, शक्ति साधना, महाकाल आदि से जुड़े लोगों के लिए विशेष महत्व रखती है। इस दौरान देवी भगवती के साधक बेहद कड़े नियम के साथ व्रत और साधना करते हैं। इस दौरान लोग लंबी साधना कर दुर्लभ शक्तियों की प्राप्ति करने का प्रयास करते हैं। गुप्त नवरात्र में दशमहाविद्याओं की साधना कर हिन्दू धर्म मे, नवरात्र माँ दुर्गा की साधना के लिए बेहद महत्वपूर्ण माने जाते हैं। नवरात्र के दौरान साधक विभिन्न तंत्र विद्याएँ सीखने के लिए माँ भगवती की विशेष पूजा करते हैं। तंत्र साधना आदि के लिए गुप्त नवरात्र बेहद विशेष माने जाते हैं। **आषाढ़ और माघ मास के शुक्ल पक्ष में पड़ने वाली नवरात्र को गुप्त नवरात्र कहा जाता है। इस नवरात्रि के बारे में बहुत ही कम लोगों को जानकारी होती है।**

"शिवपुराण के अनुसार" पूर्वकाल में राक्षस दुर्ग ने ब्रह्मा को तप से प्रसन्न कर चारों वेद प्राप्त कर लिए। तब वह उपद्रव करने लगा। वेदों के नष्ट हो जाने से देव–ब्राह्मण पथ भ्रष्ट हो गए, जिससे पृथ्वी पर वर्षों तक अनावृष्टि रही। पृथ्वी पर रुद्र, वरुण, यम आदि का प्रकोप बढ़ने लगता है। इन विपत्तियों से बचाव के लिए गुप्त नवरात्र में माँ दुर्गा की उपासना की जाती है। सतयुग में चैत्र नवरात्र, त्रेता में आषाढ़ नवरात्र, द्वापर में माघ, कलयुग में आश्विन की साधना–उपासना का विशेष महत्व रहता है।

मार्कण्डेय पुराण में इन चारों नवरात्रों में शक्ति के साथ–साथ इष्ट की आराधना का भी विशेष महत्व है। देवताओं ने माँ परामबा की शरण में जाकर दुर्ग का वध करने का निवेदन किया। माँ ने अपने शरीर से काली, तारा, छिन्नमस्ता, श्रीविद्या, भुवनेश्वरी, भैरवी, बगला, धूमावती, त्रिपुरसुंदरी और मातंगी नाम वाली दस महाविद्याओं को प्रकट कर दुर्ग का वध किया। दस महाविद्याओं की साधना के लिए तभी से गुप्त

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नवरात्र मनाया जाने लगा। गुप्त नवरात्रि विशेष तौर पर गुप्त सिद्धियाँ पाने का समय है साधक इन दोनों गुप्त नारात्रि (माघ तथा आषाढ़) में विशेष साधना करते हैं तथा चमत्कारिक, शक्तियाँ प्राप्त करते हैं।

कालरात्रि और काली, दुर्गा के 9 रूपों में 7 वाँ रूप है। देवी कालरात्रि का इसलिए नवरात्र के 7 वें दिन माँ कालरात्रि की पूजा होती है। कालरात्रि माता गले में विद्युत की माला धारण करती हैं इनके बाल खुले हुए है और गर्दभ की सवारी करती हैं, जबकि काली नरमुंड की माला पहनती है और हाथ में खप्पर और तलवार लेकर चलती हैं। काली माता के हाथ में कटा हुआ सिर है जिससे रक्त टपकता रहता है। भयंकर रूप होते हुए भी माता भक्तों के लिए कल्याणकारी है। कालरात्रि माता को काली और शुभंकरी भी कहा जाता है। कालरात्रि माता के विषय में कहा जाता है कि यह दुष्टों के बाल पकड़कर खड्ग से उसका सिर काट देती हैं। रक्तबीज से युद्ध करते समय माँ काली ने भी इसी प्रकार से रक्तबीज का वध किया था।

देश का पहला तंत्र स्कूल
देवराधा ट्रस्ट (पंजीकृत)
बुधनी तहसील, ग्राम बुधनी
जिला सिहोर, मध्यप्रदेश
तन्त्र स्कूल, मन्त्र सिखने का स्कूल
भागवत प्रवचन स्कूल, ज्योतिष सिखाने
का स्कूल वास्तु ज्ञान, साधना स्थली

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गुप्त नवरात्री –

1. गुप्त नवरात्री में रात्री को ही साधना करें। गुरू से स्वीकृति लेकर, गुरू की आज्ञा लेकर, गुरू से नियम समझकर ही करें।
2. किसी साधक से ही मंत्र दीक्षा लेकर साधना करें।
3. सबसे अच्छा समय रात्रि 10 बजे से सुबह 4 बजे तक।
4. साधना गुप्त रखें, पूजा गुप्त रखें, मंत्र गुप्त रखें।
5. साधना असफल होने पर आप परेशानी में पड़ सकते हो।
6. साधना किसी कर रहे हो, कैसे कर रहे हो यह किसी को नहीं बताना है।
7. गुप्त नवरात्र याने गुप्त सब कुछ गोपनीय।
8. साधना में झूठ नहीं बोलना है। अन्यथा साधना खण्डित होती है।
9. काली तारा महाविद्या षोडशी, भुवनेश्वरी भैरवी छिन्नमस्ता धूमावती–बगलासिद्ध विध्या मातंगी कमलात्मिका।
10. गुप्त नवरात्र में बीजात्मक दुर्गा सप्तशती का पाठ करना चाहिए परन्तु बीज मंत्रों को बोलने का तरीका भी सीखना होगा।
11. पूरी विधि से केवल देवीजी की साधना करें अन्य देवता की नहीं।

दस महाविद्या साधना में पाठ –

1. चण्डिका स्तोत्र का पाठ
2. दस महाविद्या स्तोत्र का पाठ
3. दस महाविद्या के मंत्रों की एक–एक माला रोज करें।
4. काली के मंत्र एवं दसमहाविध्या अलग–अलग दो–दो मंत्र।

गुप्त नवरात्री में प्रार्थना कौन–कौन सी बोलना चाहिए?

1. दस महाविद्या का ध्यान।
2. दस महाविद्या स्तोत्र।
3. त्रिगुणात्मिका शक्ति का ध्यान।
4. श्री भैरव अष्टोत्तर शतनाम।
5. भैरवाष्टकम्
6. शिवतांण्डव स्तोत्र, योनी स्त्रोतम्, दस महाविद्या, रुद्रचण्डी स्त्रोत।
7. शिवजी के स्त्रोत।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गुप्त नवरात्री कैसे मनायें?

गुप्त नवरात्री में की जाने वाली गलतियाँ –

1. गुप्त नवरात्री केवल शक्ति साधना है जिनको शक्ति चाहिए उनको ही करना चाहिए।
2. नियम कानून सब साधारण नवदुर्गा जैसे ही है परन्तु फर्क केवल इतना है कि इसमें नवदुर्गा के बजाय दस महाविद्या की साधना करना चाहिए।
3. काली (प्रथम) दिन कंकाली, महाकाली, भद्रकाली, दक्षिण, शमशान काली, मसान काली, तारा (द्वितीय) दिन षोडशी–तृतीय, भुवनेश्वरी–चतुर्थदिन, भैरवी–पंचम, छिन्नमस्ता–षष्ठी, धूमावती–सात, बगला–अष्टम, मातंगी–नवमी, कमलात्मिका–दसवाँ।
4. यह सभी माता सती के शरीर से निकली हुई देवियाँ हैं। अतः काली स्वरूपा हैं, सभी की पूजा काली स्वरूपा मानकर करना है।
5. सभी को बलि और खून लगता है।
6. बलि नहीं दे सकते हो तो अपना खून निकालकर देवियों को दें। पर घर पर नहीं।
7. नीबू, नारियल, मछली, गन्ना, भूरा कद्दू तुमड़ा, जायफल, बकरे की बलि लगती है।
8. नहीं दे सकते तो पूजा नहीं करना चाहिए। पूजा का फल नहीं लगता है बलि एवं खून का खप्पर अवश्य भरना है।
9. शहद में रोली घोलकर भी रख सकते हैं।
10. दही में उड़द सिन्दूर मिलाकर भी चढ़ाया जा सकता है परन्तु पूर्ण कृपा के लिए औरिजनल मान्स देना अनिवार्य है।
11. सभी के भैरव जी की पूजा अवश्य रोजाना करें।
12. मंत्र दीक्षा किसी दस महाविद्या साधक से ही लें।
13. अपने कुलदेवी, कुल देवता, पितृ, मातृ पितृ, की पूजा पहले करें।
14. षोडश मात्रिका की, सप्तघृत मात्रका, भैरव, वास्तुपूजन, रूद्रपूजन, नवग्रह पूजन अवश्य करें।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

15. चप्पल जूते नहीं पहनना है, दाड़ी, बाल नाखून नहीं काटना है, अन्नग्रहण नहीं करना है। श्मशान नहीं जाना है, नमक का प्रयोग नहीं करें, सहवास नहीं करें, कम्बल के आसन पर बैठें, दूसरे घर का भोजन और पानी ग्रहण नहीं करना है, कम्बल पर सोना है। मासिकधर्म के नियम का पालन कढ़ाई से करें, **स्त्री के एम़सी़ पीरियड के सात दिन बाद ही उस पूजा करने योग्य बनती है।**
16. घर में क्लेश, अशान्ति न हो, क्रोध न करें, काम वासना पर नियंत्रण रखें, लोभ, तृष्णा पर नियंत्रण रखें। घर से दूर रहकर करें।
17. अखण्ड दीपक तिल के तेल का लगाना है।
18. स्त्रीशक्ति को गाली गलौच, मारपीट नहीं करना है।
19. आखिरी में कन्या पूजन अवश्य करना है।
20. श्री भैरवजी को भोग अवश्य देना है।
21. यह सभी देवियाँ श्मशान की हैं अतः शुद्धता, स्वच्छता, पवित्रता का ध्यान रखें। विवाह, जन्मदिन, वर्षगाठ ऐसे किसी कार्यक्रम में नहीं जाना है।

नौवरात्रि में नवमी तिथि को हवन करें या महाअष्टमी को हवन करें, कन्या पूजन करें, मीठा भोजन करावें। किसी काली मन्दिर में माँ का पूर्ण सोलह श्रृंगार भेट करें। कलश में दस महाविद्या का आवाहन करें। भैरव, क्षेत्रपाल, वास्तु, षोडशं मात्रिका, सप्तघृत मातृिका, कुलदेवी, देवता, रूद्रदेवता, नवग्रह का आवहान अवश्य करें। हवन कुंड तिकोना बनावें। लाल आसन या काले आसन का प्रयोग करें। हवन सामग्री में उग्र/तामसिक वस्तुओं का प्रयोग करें। जैसे – पीली सरसों, उड़द, कालीमिर्च, लालमिर्च, नीबू, जायफल, नारियल, काली राई, मखाने, जावित्री, लौंग, पान के पत्ते, शहद, सुपारी, सिन्दूर इन सामान का प्रयोग कैसे करना है, यह अपने गुरू से गुरूदीक्षा में मंत्र के साथ विधान का नियम प्राप्त करें।

बिना गुरू के यह साधना न करें। यह ज्ञान आपको केवल स्वयं का ज्ञान बढ़ाने के लिए दिया जा रहा है। प्रयोग करने के लिए

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

साधक अपने गुरू से बात करें। साधना पूर्ण होने पर भैरव/क्षेत्रपाल को बलि देकर बिदाई दें। यह साधना बिना बलि के पूर्ण नहीं होती है। इसलिए वे ही साधक साधना करें, जो बलि दे सकते हों।

इस दस महाविद्या की साधना में बलि अनिवार्य है। अन्यथा साधक को इसका परिणाम भुगतना होता है। **नवरात्रि है तो रात को ही साधना करें, पाठ करें, स्तुति वाचन करें, हवन करें, जप करें, तप करें, ध्यान करें।**

तुरीय संध्या काल इस साधना के लिए उचित समय होता है। यह साधना श्मशान में, काली मन्दिर में, साधना स्थली में, नदी किनारे, पीपल के वृक्ष के नीचे, एकान्त में, देवीतीर्थ स्थल पर या गुरू की आज्ञा से जहाँ वह कह दें वहाँ पर करना चाहिए। या गुरू के साथ में कहीं पर भी।

दस महाविद्या जगतजननी आद्याशक्ति के दस भाग या दस शक्ति है जो दशो दिशाओं में व्याप्त हैं। सर्वत्र उनका अधिकार है। शुद्धता, स्वच्छता, पवित्रता का ध्यान रखें। **मासिकधर्म युक्त स्त्री के हाथ का बना भोजन ग्रहण नहीं करें, उसके साथ शयन न करें, उसके साथ उठना, बैठना, घूमना, फिरना बिलकुल न करें। रजस्वला युक्त** स्त्री से दूर रहें। भूमि का शोधन करें, मन्त्रों का शोधन करें, स्थान का बन्धन करें, सुरक्षाचक्र साथ रखें। दिल से, आत्मा से, तहेदिल से, तन, मन, धन से साधना करें। साधना पूर्ण होने पर गुरू को सामर्थानुसार, शक्ति अनुसार वस्त्र, उपवस्त्र, अन्न, भोजन, दक्षिणा अवश्य भेट दें। उनका भी आशीर्वाद लें

विशेष :– इस साधना में जलती हुई चिता के सामने बैठकर मंत्र जप करें, नदी किनारे करें, 1000 गुना फायदा होगा। या कंकाल, खोपड़ी के ऊपर आसन लगाकर यह साधना करें, तो 1000 गुना मंत्रों का फायदा होगा। दस महाविद्या की साधना से शत्रुनाश, स्तम्भन, मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन की शक्ति साधक को प्राप्त होती है।

यह साधना वहीं मनुष्य करें जो शरीर और आत्मा से कठोर हो। अंधेरे से डरता नहीं हो, श्मशान एवं शव के साथ एकान्त में रह सकता हो। जलती चिता के ऊपर, मटकी में पकाया हुआ भोजन खा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सकता हो। हवन में आहुति देते समय क्यों कहते हैं स्वाहा ?, स्वाहा कहना क्यो अनिवार्य है?

अग्निदेव की दाहिकाशक्ति है ''स्वाहा''

अग्निदेव में जो जलाने की तेजरूपा (दाहिका) शक्ति है, वह देवी स्वाहा का सूक्ष्मरूप है। हवन में आहुति में दिए गए, पदार्थों को भस्म कर, देवी स्वाहा ही उसे देवताओं को आहार के रूप में पहुँचाती हैं, इसलिए इन्हें ''परिपाककरी'' भी कहते हैं।

सृष्टिकाल में परब्रह्म परमात्मा स्वयं ''प्रकृति'' और ''पुरुष'' इन दो रूपों में प्रकट होते हैं। ये प्रकृतिदेवी ही मूलप्रकृति या पराम्बा कही जाती हैं। ये आदिशक्ति अनेक लीलारूप धारण करती हैं। इन्हीं के एक अंश से देवी स्वाहा का प्रादुर्भाव हुआ जो यज्ञभाग ग्रहणकर देवताओं का पोषण करती है।

स्वाहा के बिना देवताओं को नहीं मिलता है भोजन –

सृष्टि के आरम्भ की बात है, उस समय ऋषिगण यज्ञ में देवताओं के लिएजो हवनीय सामग्री अर्पित करते थे, वह देवताओं तक नहीं पहुँचपाती थी। देवताओं को भोजन नहीं मिल पा रहा था, इसलिए उन्होंने ब्रह्मलोक में जाकर अपने आहार के लिए ब्रह्माजी से प्रार्थना की। देवताओं की बात सुनकर ब्रह्माजी ने भगवान श्रीकृष्ण का ध्यान किया। भगवान के आदेश पर ब्रह्माजी देवी मूलप्रकृति की उपासना करने लगे। इसे प्रसन्न होकर देवी मूलप्रकृति की कला से देवी ''स्वाहा'' प्रकट हो गयीं और ब्रह्माजी से वर मांगने को कहा।

ब्रह्माजी ने कहा – ''आप अग्निदेव की दाहिकाशक्ति होने की कृपा करें। आपके बिना अग्नि आहुतियों को भस्म करने में असमर्थ है। आप अग्निदेव की गृहस्वामिनी बनकर लोक पर उपकार करें। ब्रह्माजी की बात सुनकर भगवान श्रीकृष्ण में अनुरक्त देवी स्वाहा उदास हो गयीं और बोलीं – ''परब्रह्म श्रीकृष्ण के अलावा संसार में जो कुछ भी है, सब भ्रम है। तुम जगत की रक्षा करते हो, शंकर ने मृत्यु पर विजय प्राप्त की है। शेषनाग सम्पूर्ण विश्व को धारण करते हैं। गणेश सभी देवताओं में अग्रपूज्य हैं। यह सब उन भगवान श्रीकृष्ण की उपासना का ही फल है।''

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यह कहकर वे भगवान श्रीकृष्ण को प्राप्त करने के लिए तपस्या करने चली गयीं और वर्षों तक एक पैर पर खड़ी होकर उन्होंने तप किया। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान श्रीकृष्ण प्रकट हो गए। देवी स्वाहा के तप के अभिप्राय को जानकर भगवान श्रीकृष्ण ने कहा– तुम वाराहकल्प में मेरी प्रिया बनोगी और तुम्हारा नाम ''नाग्रजिती'' होगा राजा नग्रजित् तुम्हारे पिता होंगे। इस समय तुम दाहिकाशक्ति से सम्पन्न होकर अग्निदेव की पत्नी बनो और देवताओं को संतृप्त करो। मेरे वरदान से तुम मन्त्रों का अंग बनकर पूजा प्राप्त करोगी। जो मानव मन्त्र के अंत में तुम्हारे नाम का उच्चारण करके देवताओं के लिए हवन–पदार्थ अर्पण करेंगे, वह देवताओं को सहज ही उपलब्ध हो जाएगा।''

देवी स्वाहा बनी अग्निदेवी की पत्नी –

भगवान श्रीकृष्ण की आज्ञा से अग्निदेव का देवी स्वाहा के साथ विवाह–संस्कार हुआ। शक्ति और शक्तिमान के रूप में दोनों प्रतिष्ठित होकर जगत के कल्याण में लग गए। तब से ऋषि, मुनि और ब्राह्मण मन्त्रों के साथ ''स्वाहा'' का उच्चारण करके अग्नि में आहुति देने लगे और वह हव्य पदार्थ देवताओं को आहार रूप में प्राप्त होने लगा।

जो मनुष्य स्वाहायुक्त मन्त्र का उच्चारण करता है, उसे मन्त्र पढ़ने मात्र से ही सिद्धि प्राप्त हो जाती है। स्वाहाहीन मन्त्र से किया हुआ हवन कोई फल नहीं देता है।

देवी स्वाहा के सिद्धिदायक सोलह नाम –

देवी स्वाहा के सोलह नाम है –

1. स्वाहा, वह्निप्रिया , वह्निजाया, संतोषकारिणी, शक्ति, क्रिया, कालरात्री, परिपाककरी
2. ध्रुवा, गति, नरदाहिका, दहनक्षमा, संसारसाररूपा, घोरसंसारतारिणी
3. देवजीवनरूपा, देवपोषणकारिणी

इन नाम़ों के पाठ करने वाले मनुष्य को कोई भी शुभ कार्य अधूरा नहीं रहता। वह समस्त सिद्धियों व मनोकामनाओं को प्राप्त कर लेता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अथ तन्त्रोक्तं देवीसूक्तम्

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥ 1॥
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः॥ 2॥
कल्याण्यै प्रणतां वृद्धयै सिद्धयै कुर्मो नमो नमः।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः॥ 3॥
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः॥ 4॥
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः॥ 5॥
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ 6॥
या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ 7॥
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ 8॥
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ 9॥
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ 10॥
या देवी सर्वभूतेषुच्छायारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ 11॥
या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ 12॥
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ 13॥
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ 14॥
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ 15॥
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 16 ॥
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 17 ॥
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 18 ॥
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 19 ॥
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 20 ॥
या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 21 ॥
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 22 ॥
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 23 ॥
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 24 ॥
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 25 ॥
या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 26 ॥
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेष सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः ॥ 27 ॥
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्त स्थिता जगत्।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 28 ॥
स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया –
त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥ 29 ॥
या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै –
रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः
सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥ 30 ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देवराधा ट्रस्ट

पंजीयन क्रमांक - 01 दिनांक 07-01-2014

माँ जगतजननी मन्दिर

शनि मन्दिर के पास, बुधनी घाट रोड, बुधनी
तह.- बुधनी, जिला- सीहोर (म.प्र.), भारत
ईमेल:- devradhatrust@gmail.com

उद्देश्य :- धर्म का प्रचार प्रसार, तंत्र, मंत्र, यंत्र का प्रचार प्रसार, तंत्र विद्यालय एवं प्रशिक्षण केन्द्र

सी.ए. डॉ. अशोक कुमार गुप्ता

एम.कॉम., एम.ए., चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट, पी.एच.डी., पराशक्ति विशेषज्ञ, तन्त्राचार्य, ज्योतिषाचार्य, मन्त्राचार्य, यज्ञाचार्य, भागवताचार्य, प्रवचनकर्ता
मो. : 7987237885, 9399796418, 9893128047, 9977831616

प्रस्तुति एवं संकलन

अघोरी रामदास महाराज
अघोरी ननकीराम महाराज
सीए. डॉ. अशोक कुमार गुप्ता

यह पुस्तकें किसी भी बुक स्टॉल/स्टोर पर उपलब्ध नहीं है।

पुस्तकें प्राप्त करने के लिए संपर्क करें

यह पुस्तक विक्रय के लिए नहीं है केवल ट्रस्ट के सदस्यों के लिए

अमित सैनी
Arjuna 16, G+3, Apnaghar Shalimar Extension Alwar
Rajsthan - 301001, Mob. : 9251733747, 7649862712

सहयोग राशि - 1500/- (मंदिर निर्माण हेतु)

Youtube : CA DR ASHOK KUMAR GUPTA